ज्वाला का पोषण

(Feeding The Flame)

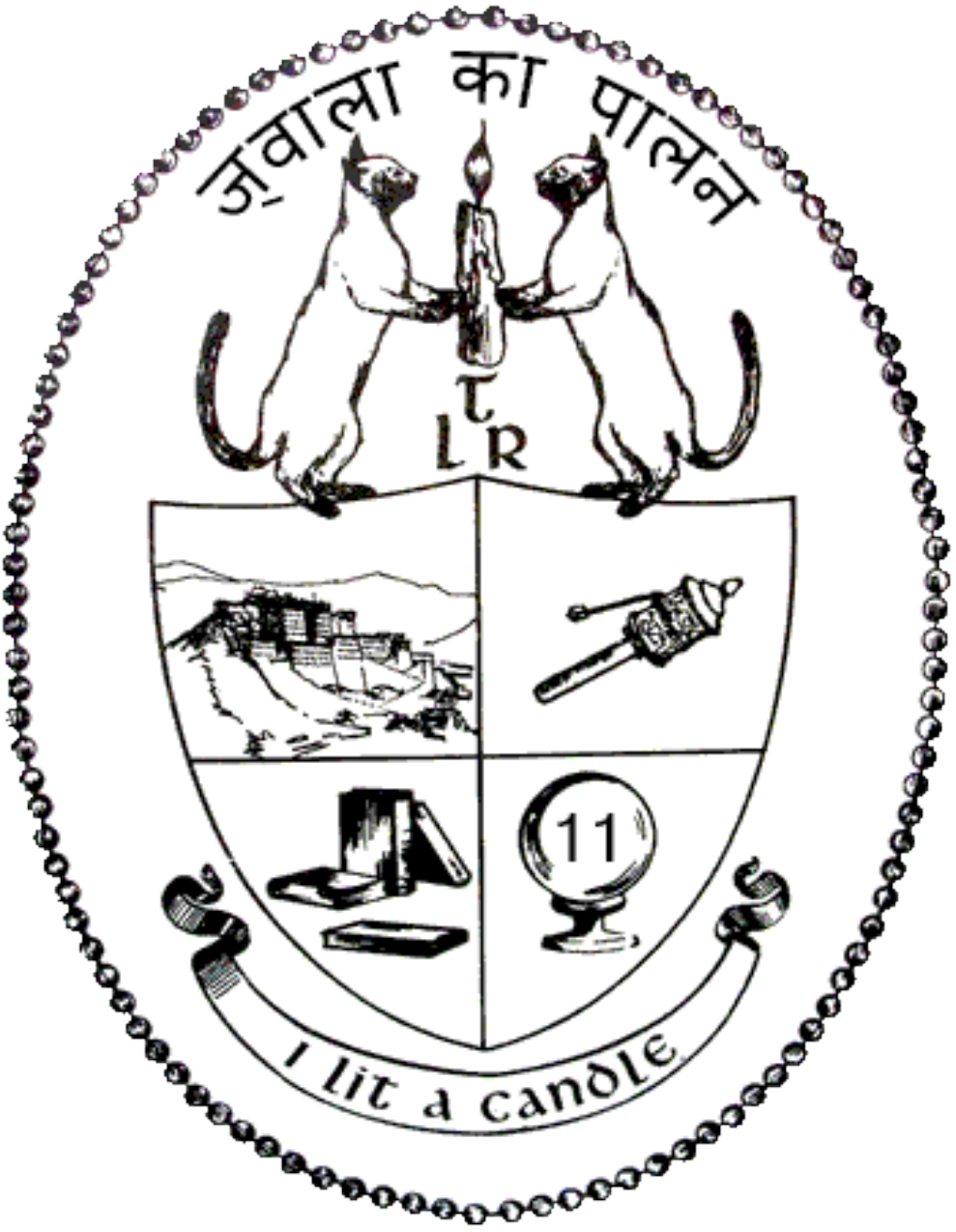

(I Lit a candle)

मैंने दीप जलाया

टी. लोबसांग रंपा

ज्वाला का पोषण

(संपूर्ण संस्करण 07/12/2014)

ज्वाला का पोषण– (मूलतः 1971 में प्रकाशित) पहली दस पुस्तकें, दीप को जलाने का प्रयास कर रहीं थीं, परंतु अब हमें ज्वाला, जीवन की ज्वाला को पोषित करना है। पाठकों के अधिक प्रश्न और उत्तर। इतिहास के एक उदाहरण का संदर्भ देते हुए और उस घटना की विस्तार से व्याख्या करते हुए, पुर्नजन्म का परम प्रमाण।

विषय सूची

अनुवादक का निवेदन	:	i
अध्याय एक	:	1
अध्याय दो	:	11
अध्याय तीन	:	20
अध्याय चार	:	29
अध्याय पॉच	:	37
अध्याय छै	:	46
अध्याय सात	:	56
अध्याय आठ	:	66
अध्याय नौ	:	76
अध्याय दस	:	86
अध्याय ग्यारह	:	95
अध्याय बारह	:	102

एक कनाडाई अस्पताल में, निराशापूर्ण रूप में बीमार, डॉक्टर लोबसांग रंपा जैसे ही लेटे, उन्होंने आनंद के साथ अपने पुराने मित्र और गुरु, लामा मिंग्यार डोंडुप को अपने बिस्तर के बगल से, ऊपर खड़े हुए देखा। परंतु उन्होंने उस संदेश को, जो स्वर्णिम आकृति लाई थी, कुछ निराशा के साथ सुना।

लोबसांग रंपा का काम, इस तल पर, जैसा उन्होंने सोचा था, पूरा नहीं हुआ था; उन्हें एक और पुस्तक, अपनी ग्यारहवीं, लिखनी थी, क्योंकि, गूढ़ सत्य में, विश्व को बताने के लिये, अभी भी, बहुत कुछ शेष था।

तब, ये ग्यारहवीं पुस्तक, ज्वाला का पोषण, मुख्यरूप से, कुछ प्रश्नों, जिन्हें डॉक्टर रंपा के पाठकों ने, वर्षों में उनके सामने रखा, का उत्तर देने से सम्बंधित है। ये उन विषयों, जैसे कि मृत्यु के बाद जीवन, आत्महत्या, ध्यान और ओझाबोर्ड, पर विचार करती है, और आधुनिक विश्व के अनेक अमूल्य निरीक्षणों को सम्मिलित करती है। डॉक्टर रंपा के अनेक प्रशंसक प्रसन्न होंगे कि, अपनी बीमारी, पीड़ा और कष्ट के बावजूद, उन्हें इस मोहक और प्रेरणादायक पुस्तक को लिखने के लिये छोड़ा गया है।

****

समर्पित

क्लियोपेट्रा, सर्वाधिक प्रबुद्ध व्यक्ति, जिससे मैं कभी मिला,

और

टाडालिंका, सर्वाधिक अतीन्द्रिय ज्ञानयुक्त और सर्वाधिक दूरानुभूतिपूर्ण।

इन दो नन्हीं सियामी बिल्लियों ने मुझे बड़ी समझदारी और सहानुभूति दिखायी

कभी न कहें : 'मूर्ख पशु'।

ये दोनों प्रखर, सभ्य **व्यक्ति** हैं! स्वामिभक्तों में भी सर्वाधिक स्वामिभक्त

****

`

ये तमाम पत्रों से बचाता है, यदि मैं आपको बताऊं कि मैंने ये निश्चित शीर्षक क्यों लिया; ऐसा कहा जाता है, 'अंधकार को कोसने की बजाय, दीप जलाना अधिक अच्छा होता है।'

मैंने अपनी पहली दस पुस्तकों में, एक, या संभवतः दो दीप जलाने का प्रयास किया है। इस ग्यारहवीं पुस्तक में, मैं ज्वाला का पोषण करने का प्रयास कर रहा हूँ।

भूरी प्रजाति

ये आदमी तांबा है,
श्वेत दिन के समय का आदमी,
वह आदमी पीला है,
रात के अंधेरे का कोई.....
चार मुख्य रंग,
सभी आदमी के रूप में ज्ञात,
कल की एकता आयेगी,
भूरी जाति को बनाते हुए।

एडमोन्टन अलबर्टा के
डब्ल्यू. ए. डी म्यूनिक के द्वारा कविता ।

(RACE OF TAN)

Copper is this man,
A man of daytime white,
Yellow is that man,
And one of dark night.....
The four main colours,
All known as Man,
Tomorrow's unity will come
Forming the Race of Tan

Poem by W.A. de Munnik of
Edmonton, Albreta

अनुवादक का निवेदन

माननीय लोबसांग रंपा की ग्यारहवीं पुस्तक "Feeding the Flame" का ''ज्वाला का पोषण'' पुस्तक के रूप में हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। इस पुस्तक में रंपा ने पाठकों से मिले पत्रों का विस्तार से उत्तर दिया है, जिनमें, उन पाठकों को, जिन्होंने उनकी पहली पुस्तकें भी पढ़ी हैं, कईबार पुनरावृति होती दिखती है, जो अनावश्यक सी प्रतीत होती है, परन्तु अधिकांशतः वह विषय को अधिक स्पष्ट ही करती है। प्रस्तुत पुस्तक में मृत्यु के बाद जीवन, आत्महत्या, समलैंगिक व्यक्तियों, ध्यान और ओझाबोर्ड, आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया है, जो धार्मिक व्यक्तियों, दार्शनिकों, समाजशास्त्रियों के चिंतन को कुछ दूसरी दिशा दे सकता है। हॉ सामान्य व्यक्ति के लिये ये उतनी रुचिपूर्ण नहीं भी हो सकती हैं।

इस पुस्तक में रंपा ने अधिभौतिकी का अल्प या अधकचरा ज्ञान रखने वालों की जम कर धुनाई की है, सामूहिक ध्यान की कारण सहित अनुपयुक्तता बताई है, माता–पिताओं द्वारा बच्चों की अनदेखी किये जाने पर उन्हें जम कर लताड़ा है, शाकाहार पर बल देते हुए उनसे पूरा पोषण न मिल पाने की बात भी कही है, समय कैप्सयूल पर भी चर्चा की गयी है। चर्चिल तथा कैनेडी के बीच अद्‌भुत संयोगों और समानताओं पर विस्तार से प्रकाश डाला है। आत्महत्या को अत्यन्त बुरा बताते हुए उससे बचने का ही आग्रह किया है। चीनी आधिपत्य के अंतर्गत वर्तमान तिब्बत की स्थिति के ऊपर भी चर्चा की गई है।

कुल मिला कर, रंपा ने गम्भीर रूप से बीमार होने की अवस्था में भी इस पुस्तक के माध्यम से तमाम बिखरे हुए प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास किया है। इसमें वे अपनी प्रिय बिल्लियों के प्रति प्रेम की अभिव्यक्ति और अपनी पत्नी रा'आब तथा अपनी दत्तक पुत्री शीलगाह राउस तथा अपने अनेक मित्रों और परिचितों का आभार मानना और उन्हें धन्यवाद देना नहीं भूलते, मानो वे अपनी मत्यु को आसन्न मान कर अंतिम बिदाई सी लेते हुए प्रतीत होते हैं। इस पुस्तक में रंपा ने इस पृथ्वी पर पुनः जन्म न लेने की घोषणा भी की है, और भविष्य में उन के नाम का उपयोग करने वाले व्यक्तियों से सावधान रहने के लिये आगाह भी किया है।

पुस्तक की विषयवस्तु के बारे में तो सुविज्ञ पाठक ही निर्णय कर सकते हैं, हॉ, अनुवाद को मैंने यथासम्भव सरल बनाये रखने का भरसक प्रयास किया है। अनुवाद के सम्बंध में पाठकों की आलोचनाओं तथा सुझावों का मैं सदैव ही विनम्र स्वागत करूंगा। इस कार्य को करने में मेरे आध्यात्मिक गुरु गोलोकवासी श्री बी एन गच्छ की प्रेरणा और आशीर्वाद सदैव मेरे साथ रहा है। जयगुरुदेव संस्थान के उपाघ्यक्ष श्री मनुभाई पटेल और श्री संजय शर्मा, जिनसे मेरा सम्पर्क केवल रम्पा की पुस्तकों के कारण ही हुआ, का निरन्तर प्रोत्साहन मेरा सम्बल रहा है, इसके लिये मैं हृदय से उनका आभार व्यक्त करता हूँ। अंत में, मैं अपने प्रिय श्री प्रगल्भ शर्मा और श्रीमती प्रीति गोयल को उनके सराहनीय सहयोग के लिये धन्यवाद देता हूँ, जिनके बिना यह कार्य करना कम से कम मेरे लिये सम्भव नहीं हुआ होता।

डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता,

इन्दिरा कॉलोनी, नया बाजार, लश्कर
ग्वालियर – 474009, म.प्र., (भारत)
फोन 0751–2433425
मोबाइल : 9893167361 email : drguptavp@gmail.com

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, भाद्रपद कृष्णा 8,

विरोधकृत संवत्सर, विक्रम सम्वत् 2075

तद्‌नुसार,

सोमवार, 3 सितम्बर 2018 ई0

अध्याय – एक

आप जितना अधिक जानते हैं, उतना ही अधिक सीखना होता है।

पत्र छोटा, तीखा और बहुत कुछ मुद्दे पर था। 'श्रीमान्,' उसमें कहा गया था, 'आप अपनी पुस्तकों में इतना कागज क्यों बेकार करते हैं; तिब्बत के इन छोटे–छोटे वर्णनों को पढ़ना कौन पसंद करता है? इसके बजाय, हमें ये बतायें कि आयरलैंड की लौटरी को कैसे जीता जाये।' दूसरे ने, बहुत अच्छी तरह से इसी विषय का साथ दिया। 'प्रिय डॉक्टर रंपा,' इस टूटे हुए नौजवान व्यक्ति ने लिखा, 'आप **आगामी** जीवन के बारे में लिखने में इतना समय क्यों गंवाते हैं? आप हमें ये क्यों नहीं बताते कि इसी (जीवन) में धन कैसे कमाया जाये? अब, मैं जानना चाहता हूँ कि धन कैसे कमाया जाये। मैं जानना चाहता हूँ कि लड़कियों से वह, जो मैं अब चाहता हूँ, कैसे कराया जाये। आगामी जीवन का ख्याल कभी न करें। मैं अभी भी इस (जीवन) को जीने का प्रयास कर रहा हूँ।'

बूढ़े आदमी ने पत्र को नीचे रख दिया और अपने सिर को दुःख के साथ हिलाते हुए वापस बैठा। 'मैं केवल अपने खुद तरीके से लिख सकता हूँ,' उसने कहा, मैं **सत्य** लिख रहा हूँ, कोई गल्प कथा (fiction) नहीं, इसलिये.....।'

नदी के ऊपर भारी कोहरा था। खिंचते हुए तंतु घुमाव में लिपटे और तरंगित हुये, मल–प्रवाह प्रणाली (sewage) और लहसुन की दुर्गंध ने, पीले संपर्क सूत्रों को, बस्ती में प्रवेश चाहते हुए किसी जीवित जंतु की भांति समेट लिया। अदृश्य पानी में से कर्षण नौका के भोंपू की अत्यावश्यक आवाज, (और) उसके पीछे स्थानीय फ्रांसीसी –कनेडियन (French-Canadian) बोली में क्रोधित जम्हाइयॉ आईं। सिर के ऊपर गहरे लाल सूर्य ने, गंधयुक्त विषाद का भेदन करने के लिये संघर्ष किया। अपनी पहियेदार कुर्सी में बैठे हुए बूढ़े आदमी ने, रोषपूर्वक चिपचिपी इमारत के आसपास घूर कर देखा। सीमेंट की किसी ढली हुई दीवार से, पानी शोकपूर्वक टपका। कुहरे के द्वारा मछलियों के सड़ते हुए सिरों से उत्पन्न की गई खानाबदोश हवा ने, गंधों की दुनियॉ में एक नया आयाम जोड़ा। 'पाह!' बूढ़ा आदमी बड़बड़ाया, 'क्या घटिया घूरा है!' उस गंभीर विचार के साथ, उसने अपनी कुर्सी को वापस अपार्टमेंट में खींचा और दरवाजे को जल्दी से बंद कर दिया।

पत्र, पत्रपेटी में होकर आ धमका। बूढ़े आदमी ने इसे खोला और वह गुर्राया। 'आज रात को कोई पानी नहीं,' उसने कहा, 'कोई गर्मी भी नहीं।' तब, एक पश्च–विचार (after-thought) के रूप में, 'और ये बताता है कि कुछ घंटों के लिये बिजली भी नहीं होगी क्योंकि कोई पाइप या कुछ चीज फट गई है।'

'एक दूसरी पुस्तक लिखो,' जीवन के दूसरी तरफ के लोगों ने कहा। इसलिये बूढ़ा आदमी और बूढ़े आदमी का परिवार, शांति की तलाश में दूर चला गया। शांति? शोरगुल करते हुए रेडियो, घड़घड़ाते हुए हाई–फाई, और उस स्थान में होकर चीखते हुए आर्तनांद करते हुए बच्चे। शांति? खिड़कियों में होकर अंदर झांकते हुए, अंदर के दरवाजों पर जोर से धमाका करते हुए, मूर्खतापूर्ण प्रश्नों के उत्तर की मांग करते हुए, खुले हुए दर्शक।

एक कूड़ेदान, जहॉ शांति नहीं है, एक गद्दी, जहॉ भारी प्रयासों के बिना कुछ नहीं किया जाता। एक पाइप रिसता है, कोई इसकी सूचना देता है। काफी देर बाद, एक नलसाज, स्वयं उसे देखने के लिये पहुँचता है। वह अपने उच्च अधिकारी, इमारत के अधीक्षक को इसकी सूचना देता है। वह, 'कार्यालय' को सूचना देने से पहले, इसको देखने के लिये आता है। 'कार्यालय' अपने उच्च अधिकारी को इसकी सूचना देता है। वह टेलीफोन पर संपर्क करता है, संगोष्ठी की जाती है। काफी बाद में एक निर्णय पर पहुँचा जाता है। ये 'मांन्ट्रियल कार्यालय' से उच्च अधिकारी तक वापस आता है, जो भवन अधीक्षक को बताता है, जो नलसाज को बताता है, जो किरायेदार को बताता है कि 'अगले हफ्ते, यदि हमें समय मिला, हम इसे कर देंगे।'

'एक टूटता हुआ कूड़ेदान,' जैसा कि किसी व्यक्ति ने इसका वर्णन किया। बूढ़े आदमी के पास, उस स्थान का वर्णन करने का ऐसा कोई नजाकती तरीका नहीं था। करनी, कथनी से अधिक ताकतवर होती है (Actions speak louder than words); इससे पहले कि वे इस घिनौने आसपास पड़ौस में मरें, बूढ़े आदमी और परिवार ने उसे किरायेदारी समाप्त होने से काफी पहले छोड़ दिया। वे आनंद के साथ सेंट जोहन (Saint John) शहर में लौटे और वहॉ, मान्ट्रियल (Montrial) के तनाव और दबाव के कारण, जबतक कि, बहुत देर रात, अस्पताल के लिये एक अत्यावश्यक रोगी वाहन न बुलाया गया, बूढ़े आदमी की हालत तेजी से खराब हो गई.....।

नर्म बर्फ, स्वर्ग से गिरते हुए विचारों की भांति फिसलती हुई नीचे आई। सफेद रंग की हल्की सी बौछार

ने, क्रिसमस के केक के ऊपर कुहरे जैसा आभास दिया। बाहर, कैथेड्रल की धब्बेदार कॉच की खिड़कियॉ, और गिरती हुई बर्फ के ऊपर हरे, लाल और पीलों रंगों की सजीव छायायें, अंधेरे में चमकीं। ऑर्गन (organ) की धीमी आवाजें और मानवीय स्वरों के सुरीले जप की आवाजें आईं। खिड़की के ठीक नीचे की ओर से, अपने प्रेम को उत्साह से गाते हुए एक बिल्ले का, अपेक्षाकृत तेज संगीत आया।

बर्फ से ढकी सड़क पर, ब्रेक लगाये जाते हुए टायरों की घिसटने की आवाज, कार के दरवाजों को जोर से बंद करने की धातु की झनकार, और पूरे जूते पहने हुए कदमों की चलने की आवाज। शाम की प्रार्थना में आती हुईं, धर्मसभा की ताजी पंक्तियां। जैसे ही पुराने दोस्त मिले और गुजरे, फुसफुसाकर कहे गये अभिवादन। आलसी को जल्दी करने के लिये प्रेरित करता हुआ, एकान्त घंटी का एक उच्चस्वर। शहर में, ट्रेफिक की दूरस्थ घंटी की दबी हुई आवाज को छोड़कर, शांति। उत्तर के लिये थोड़ा रुकते हुए और फिर से नये सिरे से प्रारंभ करते हुए, प्रेमातुर बिल्ले की, अपना गाना गाती हुई आवाज को छोड़कर शांति थी।

उत्सव के जुलूस में, किसी किशोर उम्र के गुंडे द्वारा तोड़ी गई, कैथेड्रल की खिड़की के टूटे हुए पल्ले में होकर, पोशाक धारी पादरी की एक झलक आई, उसके बाद, उसी समय, हिलते हुए, धकेलते हुए, गूंजते हुए गाते हुए और खिलखिलाते हुए समूहगान वाले लड़के। ऑर्गन की आवाज ऊॅची चढ़ी और समाप्त हो गई। शीघ्र ही, प्राचीन प्रार्थनाओं को गुनगुनाते हुए, एक अकेली आवाज की भिनभिनाहट हुई, ऑर्गन की आवाज और पवित्र स्थान की ओर फिर से लौटते हुईं पोशाकधारी आकृतियों की झलक। शीघ्र ही, वहॉ अनेक कदमों, और कार के दरवाजों को धड़ाम से बंद करने की आवाज आई। जैसे ही कैथेड्रल का यातायात, अगली रात के लिये दूर चला, जैसे ही इंजनों ने अपने जीवन में खांसा, गियरों के बदलने और पहियों के घूमने की तीखी गर्जना हुई। बड़ी इमारतों में रोशनियॉ, जबतक कि अंत में, केवल एक ही बची, एक एक करके बुझ गईं। बादल रहित आकाश में से नीचे चमकती हुई, चंद्रमा की पीली सी रोशनी। बर्फ बंद हो चुकी थी, धर्मसभा के लोग चले गये थे, और उत्सुक बिल्ला भी शाश्वत तलाश में घूमने निकल पड़ा था।

कैथेड्रल के सामने स्थित अस्पताल में, रात के कर्मचारी, बस कर्त्तव्य पर आते ही जा रहे थे। नर्सो के ठिकाने पर, विद्युतचालित सीढ़ियों के सामने, एक अकेला नौसिखिया (intern), एक बहुत बीमार मरीज के इलाज के सम्बंध में, अपने अंतिम मिनिट के निर्देशों को दे रहा था। नर्से अपनी दवा और गोलियों की तश्तरियों की जॉच कर रही थीं। सिस्टर अपनी रिपोर्टों को लिख रहीं थीं, और एक घबराया हुआ नर अर्दली, स्पष्टीकरण दे रहा था कि वह तेजी से चले जाने पर, एक पुलिस के सिपाही द्वारा रोके जाने के कारण, विलंब से कर्त्तव्य पर था।

धीमे धीमे, अस्पताल रात के लिये व्यवस्थित हो गया। अगले दिन आपरेशन होने के कारण, मरीजों के बिस्तरों पर, 'कोई नाश्ता नहीं' के चिन्ह लगा दिये गये। प्रमुख बत्तियॉ बुझा दी गईं, और सफेद कपड़ों में लपेटे हुए सेवक, एक पर्दे वाले बिस्तर की ओर चले। एक पहिये वाली रोगी शायिका, पर्दों के पीछे से, खामोशी के साथ चलाई गई। लगभग न सुनाई पड़ने योग्य घरघराहटें, और फुसफुसाते हुए दिये गये निर्देश, और एक चादर के द्व ारा पूरी तरह से ढकी हुई एक स्थिर आकृति दृष्टि में धकेली गई। बोझ को, फुसफुसाते हुए पहियों पर, गलियारे में सावधानीपूर्वक चलाया गया। सेवक, बुलायी गईं विद्युतचालित सीढ़ियों के रुकने के लिये फिसलने के साथ खामोश खड़े रहे, तब, मानो कि, पहिये वाली लदी हुई रोगी शायिका को विद्युतचलित सीढ़ियों में धकेलने के लिये और इसप्रकार नीचे तलघर में, अनेक लाशों के भंडारण स्थान, लाशघर में एक बड़ी अलमारी के रूप में भरे जाने वाले बड़े रेफ्रीजरेटर में, एकल विचार द्वारा नियंत्रित दो लोग, साथ साथ चले।

जैसे ही हरेक अनिच्छुक मिनट, घृणा करता हुआ, अपने जीवन के संक्षिप्तकाल को छोड़ता हुआ दिखाई दिया, घंटे गुजरते गये। जहॉ एक मरीज ने घरघराहट के शब्द के साथ हांफते हुए सांस ली, वहीं कोई दूसरा उछला और दर्द में कराहा। बगल के प्रकोष्ठ से, किसी बूढ़े आदमी की, अपनी पत्नी के लिये निरंतर टूटती हुई आवाज आई। पत्थर के फर्श पर जूतों के सोल की रबर की धुंधली सी चरमराहट, कलफ लगे हुए कपड़े की खड़ खड़ाहट, कॉच के विरुद्ध धातु की झनझनाहट, और उदास स्वर समाप्त हुआ, और शीघ्र ही, रात की हवा में उठते और गिरते हुए खर्राटों के द्वारा बदल दिया गया।

बाहर, आग बुझाने वाले इंजन का आकस्मिक सायरन, फिर से अंतर्दृष्टि में डूबने और भविष्य के लिये भय, '(आग) कहॉ लगी थी,' से पहले, अनेक निद्राहीन मरीजों को संक्षेप में आश्चर्य करने का कारण बना। थोड़ी खुली हुई खिड़की में होकर, दिल का मरीज होने के कारण, किसी विलंबित आमोद–प्रमोद करने वाले की, ध्वज–पत्थरों पर से एक कर्कश आवाज आई। जैसे ही अल्कोहल की भभक ने उसे फिर से उल्टी करा दी, एक बड़बड़ाहट भरा

अभिशाप, और हेल मेरी की कड़ी (Hail Mary's string)[1], क्योंकि कोई उसके ऊपर जोर से चिल्लाया था।

कैंसर के द्वारा आशा के परे उजड़े हुए निरर्थक संघर्ष को, अंत में, समाप्त करते हुए, एक प्रताड़ित पीड़ित को आराम देते हुए, मृत्यु का देवदूत, अपने कृपापूर्ण मिशन पर, आसपास गया। जैसे ही आत्मा ने शरीर को छोड़ा, घबराहट भरी हांफनी बंद हो गयी, तेज, कष्टरहित, अनैच्छिक क्रिया की गुदगुदाहट हुई, और सेवकों ने अपनी फुसफुसाहट के साथ, पहियेदार शायिका को फिर से, और बाद में, फिर भी दोबारा आगे चलाया। वह, अंतिम आदमी, एक जाना–माना राजनीतिज्ञ था। पीत–पत्रकारिता, कल उसकी नस्तियों को कुरेदेगी और हमेशा की तरह–सामान्य अशुद्धताओं और चर्तुमुखी झूठों के साथ आयेगी।

कैथेड्रल के समीप, और जहॉ से समुद्र की कोर्टेने (Courtenay)[2] खाड़ी की एक जगमगाती झलकी प्राप्त की जा सकती थी, दिखते हुए एक कमरे में, एक बूढ़ा बौद्ध, अनेक चीजों को सोचते हुए, सोचते हुए, दर्द में जगा हुआ, निष्क्रिय पड़ा था। उसके होठों पर एक मंद मुस्कान थिरकी, और दिन के प्रारंभ की घटना पर विचार के साथ, उतनी ही तेजी से चली गई। एक भिक्षुणी, सामान्य की तुलना में अधिक पवित्र दिखती हुई भिक्षुणी, उसके कमरे में प्रविष्ट हो चुकी थी। उसने बूढ़े बौद्ध को दुख के साथ देखा और हरेक ऑख के कोने में एक आंसू झलका। उसने दुख के साथ देखा और मुड़कर दूर चली गयी। 'क्या बात है, सिस्टर?' उस बूढ़े बौद्ध ने पूछा, 'तुम बहुत दुखी दिखाई देती हो।'

उसने अपने कंधे उचकाये और विस्मय के साथ कहा, 'ओह! यह दुख की बात है कि, तुम सीधे नर्क को जाओगे!' बूढ़े बौद्ध ने अपने मुंह को आश्चर्य में खुला हुआ महसूस किया। सीधे नर्क में जाओगे?' उसने आश्चर्य करते हुए कहा ; 'क्यों'?

'क्योंकि तुम एक बौद्ध हो, केवल कैथोलिक ही स्वर्ग को जाते हैं। दूसरे ईसाई, शोधन स्थान (Purgatory) को जाते हैं; बौद्ध और दूसरे काफिर, सीधे नर्क को जाते हैं। ओह! तुम्हारे जैसा इतना सुंदर बूढ़ा आदमी, सीधा नर्क को जाता हुआ, ये बहुत दुख की बात है!' एक आश्चर्यचकित बूढ़े बौद्ध को पहेली में उलझा कर, पीछे छोड़ते हुए, वह तेजी से कमरे के बाहर चली गई।

मृत्यु का देवदूत चलता गया, कमरे में चलता गया और बूढ़े बौद्ध पर नीचे देखता हुआ खड़ा हुआ। बूढ़े आदमी ने वापस घूरा। 'अंततः मुक्ति, एह?'' उसने पूछा। 'समय के बारे में भी। मैं सोचता था तुम कभी नहीं आओगे।'

मृत्यु के देवदूत ने, धीमे से अपने दायें हाथ उठाया और वह उसे बूढ़े आदमी के सिर पर रखने ही वाला था। अचानक ही, कमरे की हवा चटकी और अर्धरात्रि की छायाओं में, नीले उजाले में, एक सुनहरी आकृति प्रकट हुई। आगंतुक के एक संकेत पर, देवदूत ने अपने हाथ को रोका। 'नहीं, नहीं, नहीं, अभी समय नहीं आया है!' एक भले–प्रिय स्वर ने विस्मय किया। 'इससे पहले कि तुम घर आओ, बहुत कुछ किया जाना है।'

बूढ़े आदमी ने आह भरी। लामा मिंग्यार डोन्डुप की नजर भी, घृणा के माध्यम से पाली हुई, और विकृत प्रेस के द्वारा प्रोत्साहित पृथ्वी, जिसने उसके साथ इतनी बुरी तरह से व्यवहार किया था, उसके पृथ्वी पर ठहरने को और आगे लंबा करने के लिये उसे सांत्वना न दे सकी। लामा मिंग्यार डोन्डुप, बूढ़े आदमी की तरफ मुड़े और उन्होंने समझाया, 'अभी एक और पुस्तक लिखी जानी है, औरअधिक ज्ञान दिया जाना है। प्रभामंडलों और फोटोग्राफी से सम्बंधित, एक छोटा सा काम और। बस थोड़ा सा ही और अधिक (समय)।'

बूढ़े आदमी ने जोर से कराह भरी। करने के लिये, हमेशा इतना कुछ, इसे करने के लिये इतना कम, धन की इतनी भयंकर तंगी, और कोई, बिना पैसों के, उपकरण कैसे खरीद सकता था?

लामा मिंग्यार डोन्डुप अस्पताल के पलंग के बगल से खड़े थे। उन्होंने और मृत्यु के देवदूत ने एक दूसरे की ओर देखा और काफी दुरानूभूतिपूर्ण सूचनायें प्रदान की गईं। देवदूत ने अपना सिर हिलाया और धीमे से अपने को खींच लिया और कृपा के कार्य को जारी रखने, पीड़ाओं का अंत करने के लिये, मांस के शरीर की मिट्टी में बंदी बनायी गयीं स्वतंत्र अमर आत्माओं को मुक्त करने के लिये, कहीं दूसरी जगह चला गया। एक क्षण के लिये अस्पताल के उस छोटे कमरे में कोई आवाज नहीं थी। उसके बाद, बाहर वहॉ, जहॉ रात्रि के सामान्य शोर थे, शिकार की तलाश में, कूड़ेदानों के आसपास घूमता हुआ एक आवारा कुत्ता, अस्पताल के आपातकालीन प्रवेश द्वार

1अनुवादक की टिप्पिणी : कुमारी मैंरी (Vergin Mary) के सामने गाये जाने वाले स्तोत्र की एक पंक्ति

2 अनुवादक की टिप्पिणी : कोर्टने (Courtenay), वकोवर द्वीप के पूर्वी तट पर, ब्रिटिश कोलम्बिया का एक शहर है।

पर अंदर लाई जाती हुई एक रोगी वाहिका।

लोबसांग,'' लामा मिंग्यार डोन्डुप ने अस्पताल के बिस्तर पर कष्ट में लेटे हुए बूढ़े आदमी की ओर नीचे देखा। ''लोबसांग,'' उन्होंने दोबारा कहा, ''अपनी अगली पुस्तक में हम तुमसे, इसे एकदम स्पष्ट कराना चाहते हैं, कि जब तुम इस पृथ्वी को छोड़ोगे, तुम पिछली गली के माध्यमों के साथ संप्रेषण नहीं करोगे, न हीं उनका, जो धर्म संप्रदाय की पत्रिकाओं में विज्ञापन देते हैं, मार्ग निर्देशन करोगे।

'आपका आशय जो भी हो, आदरणीय गुरु?' बूढ़े आदमी ने कहा, 'मैं किसी भी माध्यम या धर्मसंप्रदाय की पत्रिकाओं को सहयोग करने वाला नहीं हूॅ। मैं खुद ऐसी चीजों को कभी नहीं पढ़ता।'

'नहीं, लोबसांग, हम जानते हैं कि तुम नहीं करते, यही कारण है कि मैं तुम्हें ये बता रहा हूॅ। यदि तुम उन पत्रिकाओं को पढ़ते रहे होते, तो हमें, तुम्हें ये बात बतानी नहीं पड़ती, परंतु यहॉ कुछ निश्चित विवेकहीन लोग हैं, जो परामर्शदात्री सेवाओं इत्यादि का विज्ञापन देते हैं, और नाटक करते हैं कि वे उन लोगों के साथ संपर्क में हैं, जो यहॉ से गुजर चुके हैं। वे बहाना करते हैं कि वे सलाह और इलाज और वही सबकुछ, इस पृथ्वी के परे से पा रहे हैं, जो, वास्तव में, पूर्णतः हास्यास्पद है। हम इसे एकदम स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि तुम किसी भी प्रकार से, उस चालबाजी या नीम हकीमी को प्रोत्साहन देने वाले नहीं हो।'

बूढ़ा आदमी, कुछ विचारणीय झुंझलाहट के साथ कराहा और उसने जबाव दिया, 'मैं ऐसी पत्रिकाओं में से किसी को कभी नहीं पढ़ता, न तो अंग्रेजी और न ही अमेरिकी। मेरा विचार है कि वे लाभ की बजाय हानि अधिक पहुॅचाती हैं। वे गलत दिशा दिखाने वाले विज्ञापनों को स्वीकार करती हैं, और इनमें से अधिकांश, खतरनाक होते हैं, और वे किसी के बारे में, जो उनके खुद के छोटे से गुट में न हो, ऐसे व्यक्तिगत पूर्वाग्रह और ऐसी व्यक्तिगत नापसंदगी रखती हैं, कि वे, वास्तव में, उसे नुकसान पहुॅचाती हैं, जिसे मदद करने का वे बहाना करती हैं। इसलिये जैसा आप कहते हैं, मैं वैसा करूंगा, मैं स्पष्ट कर दूंगा कि जब मैं इस पृथ्वी को छोडूंगा, मैं वापस नहीं लौटूंगा।'

पाठक, ओह अत्यधिक कुशाग्र बुद्धि वाले व्यक्तियों में से आप, क्या मैं एक क्षण के लिये आपका ध्यान आकर्षित कर सकता हूॅ? अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने के क्रम में, मैं यह कहना चाहता हूॅ: मैं, मंगलवार लोबसांग रंपा, इसके द्वारा पवित्र और अटल रूप से कहता हूॅ कि मैं इस पृथ्वी पर नहीं लौटूंगा और ऐसे किसी के लिये भी, जो दावा करता है कि मैं ऐसा कर रहा हूॅ, परामर्शदाता के रूप में कार्य नहीं करूंगा और न हीं मैं, किसी भी मीडियम सम्बंधित समूह में कभी प्रकट होऊॅगा। मेरे पास करने के लिये दूसरा काम है, मुझे उन चीजों के साथ, जिन्हें मैं व्यक्तिगत रूप से नापसंद करता हूॅ, खेलने का समय नहीं होगा। इसलिये, पाठक, यदि आप किसी भी समय, कोई विज्ञापन देखें, जो ये समझाने का प्रयोजन रखता है, कि अमुक अमुक व्यक्ति, लोबसांग रंपा के आध्यात्मिक संपर्क में है, तो पुलिस को बुलाऐं, डाकघर के अधिकारियों को बुलाऐं और व्यक्ति को धोखेबाजी के लिये, डाकों इत्यादि का उपयोग करने प्रयास करने के लिये, गिरफ्तार करायें। मैं, जब मैं इस पृथ्वी पर अपने जीवन को समाप्त कर लूंगा, दूर, बहुत दूर, जा रहा होऊंगा। इसलिये ऐसा है, कि मैंने उस विशेष संदेश को वितरित कर दिया है।

हरे रंग वाले अस्पताल के कमरे में, एक खिड़की से कैथेड्रल में, और उसकी कोर्टेने खाड़ी के पानियों की झलकी के साथ वापस बाहर देखते हुए, लामा मिग्यार डोंडुप, वह कह रहे थे, जो आवश्यक था।

'इस, तुम्हारी ग्यारहवीं पुस्तक,' लामा ने कहा, 'को अनेक प्रश्नों, जो तुमने प्राप्त किये हैं, प्रश्न, जो उचित और तर्कयुक्त हैं, का उत्तर देना चाहिए। तुमने ज्ञान की ज्वाला को जलाया है, और अब तुम्हें इस पुस्तक में, ज्वाला का पोषण करने की आवश्यकता है, ताकि ये लोगों के मनों पर पकड़ बना सके और उसे फैला सके।' उन्होंने ने गंभीरता और थोड़े से दुख के साथ देखा, जैसे ही उन्होंने कहना जारी रखा, 'मैं जानता हूॅ, तुम बहुत झेलते हो। मैं जानता हूॅ कि तुम्हें इस अस्पताल से इलाज न कर सकने योग्य, ऑपरेशन न कर सकने योग्य, और जीने के लिये थोड़ा समय शेष, के रूप में छुट्टी मिल जायेगी, परंतु फिर भी, तुम्हारे पास एक या दो कार्य, जो दूसरों के द्वारा उपेक्षित रहे हैं, करने के लिये समय होगा।'

बूढ़े आदमी ने, ये विचार करते हुए कि ये कितना गलत था कि कुछ लोगों के पास पूरा स्वास्थ्य और पूरा धन होना चाहिये, वे कोई भी चीज कर सकें और अपनी सरलतम संभव अवस्थाओं में, अपने काम के साथ चलते जायें, जबकि उसके पास प्रेस के लोगों से, लगातार पीड़ा, अत्याचार और घृणा और धन का अभाव था, सावधानीपूर्वक सुना। उसने सोचा कि यह कितना दुखमय था कि प्रांत में कोई चिकित्सा सुविधा नहीं थी, और

चिकित्सा सम्बंधी बिल कितने व्ययसाध्य थे।

कुछ समय के लिये, बूढ़े आदमी और लामा मिंग्यार डोन्डुप, दोनों ने भूतकाल की बातें की, जैसे कि पुराने मित्र करते हैं, वे अनेक घटनाओं पर, जो उस समय, जब वे घटीं थीं, मसखरी नहीं थीं, परंतु उनको भूत परिप्रेक्ष्य में देखना आनंददायक था, हंसे।

तब अंत में, जैसे कि रात का अर्दली, अपनी कर्त्तव्यों की ओर चला हो, कदमों की चलने की आवाज आई। लामा मिंग्यार डोन्डुप ने जल्दी से विदाई ली और स्वर्णिम प्रकाश मंदा हो गया, और अस्पताल का खाली कमरा, एक बार फिर से भोर की उदासी में था।

दरवाजा धक्का देकर खोला गया और सफेद कपड़ों में लपेटा हुआ एक अर्दली, अपनी फ्लेश लाइट से, अपने पैरों के आसपास प्रकाश का तालाब बनाते हुए, मात्र अंदर चला। उसने सांस लेने की आवाजें सुनी और तब शांति से अपने को वापस खींचा और अपने दौरों (rounds) पर चला गया। जैसे ही बूढ़े आदमी ने अपनी पत्नी को निरंतर पुकारा, गलियारे के आरपार से शोरगुल और चीखें आईं। गलियारे में, और दूर, नीचे की ओर से, बूढ़े आदमी को, लगभग कुछ विचारहीन भिक्षुओं, जो 'ओम मणि पद्मे हुम,' आवाज को, निरंतर बिना किसी विचार के, कि वास्तव में, इसका अर्थ क्या है, दोहराते थे, का ध्यान दिलाते हुए, एव मारिया (Ave Maria)[3] के प्रवाह की तरह असीम रूप से दोहराई जाती हुई, एक ही प्रकार से दोहराई जाती हुई, एक दूसरी आवाज फूट पड़ी।

कहीं दूर से, घड़ी ने घंटे बजाये, एक, दो, तीन। बूढ़ा आदमी बेचैनी से करवटें बदलता रहा था, दर्द तीखा था और तनाव, जिसमें होकर वह अभी–अभी गुजरा था, के द्वारा और भी अधिक तीखा हो गया था। परसों के दिन उसे पूर्ण निपात (total collapse) हुआ था, और अस्पताल में भी, पूर्ण निपात, थोड़ा चिंता का विषय होता है। तीन बजे। रात लंबी थी। फंडी की खाड़ी (Bay of Fundi) में, एक रस्से वाली नाव ने, जैसे ही वह, और कुछ दूसरी अनेक, एक तेल परिशोधन कारखाने के द्वारा लंगर डालने के लिये प्रतीक्षारत, एक तेलवाही जहाज को अन्दर लाने के लिये, बाहर की ओर चली, कहीं बाहर से, जोर की आवाज दी।

अपने पीछे एक चमकती हुई पूंछ छोड़ता हुआ एक निशानेबाज सितारा, तेजी से स्वर्गों के पार चला। कैथेड्रल की मीनार से एक उल्लू ने आवाज लगाई, और तब, मानो कि शोर, जो वह मचा रहा था, पर अचानक ही शर्मिंदा होते हुए, उसने भय की एक चीख निकाली और शहर के पार उड़ गया।

चार बजे थे और रात अंधेरी थी। अब कोई चंद्रमा नहीं था, परंतु अचानक ही, एक खोजबत्ती (search light) की किरण खाड़ी के आरपार लहराई, और एक छोटी मछुआरी नाव, जो शायद केकड़ों का शिकार कर रही थी, के ऊपर जाकर थम गई। प्रकाश बुझ गया और एक बहुत बड़े तेलवाही जहाज को खींचता हुआ एक रस्सा नजर में आया। धीमे से, उन्होंने कोर्टेने खाड़ी के अतिसुंदर पानी को जोता, धीमे से तेलवाही जहाज की, बंदरगाह की तरफ वाली चटकीली लाल रोशनी नजर में आई और समीप ही स्थित वृद्धाश्रम के पीछे छिपी रहने के लिये दृष्टिक्षेत्र के आरपार चली गयी।

बाहर गलियारे में, सहसा स्तब्ध हलचल, फुसफुसाती हुई आवाजें, नियंत्रित जल्दी की आवाजें थीं। तब एक नई आवाज, प्रशिक्षु डॉक्टर जल्दी से अपने बिस्तर से उठा। हॉ, एक आपातकालीन और तात्कालिक शल्यक्रिया की आवश्यकता। शीघ्र ही, कर्त्तव्यस्थ अर्दली और एक नर्स ने मरीज को पहियेदार रोगीशायिका के ऊपर लिया, उसे तेजी से दरवाजों से नीचे और विद्युतचालक सीढ़ियों पर दो तल नीचे, शल्यक्रिया क्षेत्रों की ओर बाहर निकाला गया। कुछ मिनटों के लिये, वहॉ फुसफुसाहट और कलफ लगे कपड़ों की सरसराहट हुई। तब फिर से, सभी शोर रुक गये।

पॉच बजे। बूढ़े आदमी ने शुरुआत की। कोई, एक सफेद पोशाक में लपेटा हुआ अर्दली, उसके बगल से खड़ा हुआ था। उसने प्रखरता से कहा, 'मैंने अभी सोचा था कि तुम्हें बताऊॅगा कि तुम्हारे लिये आज सुबह कोई नाश्ता नहीं। पीने को भी कुछ नहीं।' स्वयं पर मुस्कराते हुए वह मुड़ा, और कमरे के बाहर चला गया। बूढ़ा आदमी, घनी शैतानी मूर्खता, जिसने एक मरीज, जो अभी अभी नींद में गया था, को जगाना आवश्यक बना दिया था, पर आश्चर्य करते हुए वहॉ लेटा रहा। उसे जगायें ताकि उसे बताया जा सके कि उसके लिये कोई नाश्ता नहीं था!

---

3 अनुवादक की टिप्पिणी : एव मारिया (Ave Maria), कुमारी कन्या मेरी के नमनस्वरूप गाये जाने वाली स्तुतियॉ हैं, जो उनकी प्रार्थना में गाई जातीं हैं।

सर्वाधिक परेशान करने वाली चीजों में से एक है, अस्पताल के बिस्तर पर भूखे, प्यासे, पड़े रहना, और किसी के खुले दरवाजे के ठीक बाहर, हर मरीज, जो उस विशेष तल पर नाश्ता कर सकता हो, के लिये प्रस्तुत भोजन –तैयार किये हुए नाश्ते से पूरी तरह भरी हुई एक बड़ी मशीन। परंतु बूढ़े आदमी ने अपने अधिकार पर नजर मारी, और वह ये था, 'कोई नाश्ता नहीं,' जितना सादा हो सकता था। उसने पानी पीने को अपने हाथ फैलाये, परंतु नहीं, पानी भी नहीं। खाने को कुछ नहीं, पीने को भी कुछ नहीं। दूसरे अपना नाश्ता ले रहे थे; बर्तनों की खनखनाहट और गिरती हुई और आसपास फेंकी जाती हुई तश्तरियों की आवाज हो रही थी। अंततः हड़बड़ी समाप्त हुई और अस्पताल, सुबह के अपने सामान्य कार्यों, लोगों को थियेटर जाने के लिये, जहॉ वे कोई भी अच्छा प्रदर्शन नहीं देखेंगे, एक्सरे के लिये जाते हुए लोग, पैथोलोजी की ओर जाते हुए लोग, और घर को जाने वाले सौभाग्यशाली लोगों के लिये व्यवस्थित हो रहा था। शायद, उनमें से सबसे अधिक सौभाग्यशाली वे थे, जो अपने 'सच्चे घर' की ओर गुजर चुके थे।

बूढ़ा आदमी अपने बिस्तर में फिर से लेटा और उसने मरने के आनंद के ऊपर सोचा। मुश्किल केवल ये है कि जब कोई मर रहा होता है, सामान्यतः ये किसी अंग की भौतिक टूटन होती है– उदाहरण के लिये, किसी की शरीर रचना का कोई भाग, किसी भयानक बीमारी के द्वारा अतिक्रमित किया जाता है, या कुछ चीज जहरीली हो जाती है। स्वाभावतः ये दर्द पैदा करती है। परंतु मरना, अपने आप में कष्टरहित होता है, मरने में डरने लायक कुछ भी नहीं है। जैसे ही कोई मरने के करीब होता है, आंतरिक शांति आ जाती है, किसी को, ये जानते हुए संतुष्टि का संज्ञान होता है, कि अंततः एक लंबा दिन समाप्त हुआ, काम समाप्त हुआ, किसी का काम या तो पूरा कर लिया गया है या कुछ समय के लिये, इसको निलंबित किया गया है। किसी को ये ज्ञान होता है कि वह 'घर को जा रहा है।' घर को जाना, जहॉ किसी की सामर्थ्य का अनुमान लगाया जायेगा और जहॉ किसी के आध्यात्मिक स्वास्थ्य को सुधारा जायेगा।

वास्तव में ये एक सुखद संज्ञान है। कोई बीमार है, कोई अंतिम चरणों में है, कष्ट बढ़ना सहसा समाप्त हो जाता है और स्वस्थ होने की भावना, प्रसन्नता की भावना के बाद, काफी तेजी से सुन्नता आ जाती है। तब कोई सजग हो जाता है कि भौतिक विश्व धुंधला पड़ रहा है और सूक्ष्मलोक चमक रहा है। ये किसी टेलीविजन के पर्दे को अंधेरे में देखने के समान है; चित्र अंधेरा होता जाता है, यदि हर चीज भी अंधेरे में है, तो टेलीविजन के परदे पर, चित्र से विचलित करने को कुछ भी नहीं है। टेलीविजन का वह परदा, पृथ्वी पर जीवन को निरूपित करता है, परंतु भोर को आने दो, सूर्य की चमकती हुई किरणों को खिड़की में से टेलीविजन के परदे पर से टकराने को आने दो, और धूप की चमक, टेलीविजन के चित्र को, हमारी नजर से गायब कर देगी। सूर्य का प्रकाश सूक्ष्मलोक के दिन को निरूपित करता है।

इसलिये भौतिक विश्व, जिसे हम 'पृथ्वी' कहते हैं, धुंधला पड़ता जाता है। लोग धुंधले दिखते हैं, उनके प्रतिबिंब धुंधले दिखते हैं, वे छाया जैसे दिखते हैं और पृथ्वी के रंग गायब हो जाते हैं और पृथ्वी भूरे रंग की काल्पनिक आकृतियों से आबाद दिखती है। आकाश, सबसे अधिक चटकीले दिन भी, जामुनी में बदल जाता है, और जैसे ही पृथ्वी पर किसी की नजर धुंधलाती है, वैसे ही सूक्ष्मलोक में उसकी नजर चटकीली हो जाती है। मृत्यु की शैया के समीप हम सहायकों, दयावान लोगों को देखते हैं, वे जो हमें, सूक्ष्मलोक में पुनर्जन्म धारण करने के लिये मदद करने आ रहे हैं। जब हम इस विश्व में, जिसे हम पृथ्वी कहते हैं, पैदा हुए थे, हम शायद, एक डॉक्टर, शायद, एक दाई, शायद, एक टैक्सी ड्राइवर की भी खास देखरेख में रहे थे। कोई बात नहीं, वहॉ मदद करने के लिये कौन था। परंतु हमारी प्रतीक्षा करते हुए, हमें दूसरी तरफ को प्रसव कराने वाले अधिक अनुभवी, उच्चरूप से प्रशिक्षित लोग हैं, लोग जो पूरी तरह से समझदार, पूरी तरह से सहानुभूतिपूर्ण हैं।

पृथ्वी पर हमारे पास कठिन समय, सदमा पहुंचाने वाला एक समय था। आप जानते हैं, पृथ्वी नर्क है। हमें सभी प्रकार की चीजों के लिये नर्क में जाना पड़ेगा। बहुत सारे बच्चे सोचते हैं कि स्कूल भी नर्क है। पृथ्वी जिद्दी मानवों का स्कूल है। इसलिये, हम कांपती हुई अवस्था में हैं और अधिकांश लोग मृत्यु से डरते हैं, वे कष्ट से डरते हैं, वे रहस्य से डरते हैं, वे डरते हैं क्योंकि वे नहीं जानते कि क्या होने वाला है। वे डरते हैं कि उन्हें ईश्वर की किसी नाराजगी का सामना करना पड़ेगा, जो उन पर, उनकी शरीर रचना के किसी भाग में चिमटा जमायेगा और सीधा ही नीचे, पुराने शैतान की तरफ की ओर उछाल देगा, जिसके पास दागने के लिये, पहले से ही तैयार, लोहे की मुद्रायें होंगी।

परंतु ये सब बकवास है। नाराज ईश्वर जैसी कोई चीज नहीं है। यदि हम ईश्वर को प्यार करते हैं, तब

हमें एक दयालु ईश्वर को प्यार करना होगा और ईश्वर को समझना होगा। ईश्वर से डरने की बात बकवास है, ये आपराधिक है। हमको, उससे जो हमको प्यार करता है, क्यों डरना चाहिए ? क्या आप, वास्तव में, दयालु और समझदार पिता से डरते हैं? क्या आप, वास्तव में, एक दयालु माता से डरते हैं? नहीं, यदि आप समझदार हैं, तब ईश्वर से क्यों डरें? ईश्वर है, पूरी निश्चिंतता के साथ ईश्वर है, एक दयावान ईश्वर। परंतु फिर से, अपनी मृत्यु शैया की ओर वापस।

शरीर बिस्तर पर है, नजर अभी–अभी समाप्त हुई है। शायद, सांस अभी भी, छाती में संघर्ष कर रही है। अंत में वह भी मंदी पड़ जाती है, रुक जाती है और आगे नहीं चलती। एक ऐंठन जैसी होती है, पत्रकार जिसे शायद, आक्षेपी कंपन का कष्ट कहेंगे। वैसा कुछ नहीं है। ये कष्टरहित है, या, और अधिक सही होने के लिये, ये एक आनंददायी संज्ञान है। ये ठंड में, और कपड़ों के एक मोटे सूट में, कंधे हिलाने के समान है, किसी के शरीर में, फिर से गर्म हवा और धूप को पाने में सक्षम होने के समान है। एक आक्षेपी झटका होता है, और तब सूक्ष्मशरीर ऊपर की ओर चलता है। एहसास, वर्णनातीत होता है, कोई कल्पना कर सकता है कि ये उसके समान है, जैसे कि किसी शरीर के साथ जुड़े हुए सभी छोटे–छोटे बुलबुलों के शैंपेन (champagne) में तैरने के समान? सबसे अधिक आनंददायक छुट्टी, जो आपको मिली, कौन सी थी ? क्या आप, मात्र अलसायी हुई धूप को आपके ऊपर उड़ेले जाते हुए, और तरंगों की ध्वनियॉ अपने कानों में उड़ेले जाते हुए, और कोमल सुगंधित हवा आपके बालों को लहराते हुए, कभी कहीं, बालू के ऊपर रहे हैं। ठीक है, ये मोटा अंदाज है, जो यथार्थ की तुलना में कुछ भी नहीं है। इस शरीर को छोड़ने, और 'घर जाने' के शुद्ध आनंद को वर्णन करने वाला कुछ भी नहीं है, जो वर्णन कर सके।

बूढ़े आदमी ने इन चीजों को सोचा, वापस अपनी स्मृतियों में रहा, और जो होना था और जो होना चाहिए था, को जानते हुए दिन गुजर गया– दिन झेला गया था, शायद एक अच्छा कथन होता– और शीघ्र ही, फिर से राहत आई। इस अस्पताल में कोई आगंतुक नहीं थे, कुल मिलाकर कोई आगंतुक नहीं। महामारी ने पूरे क्षेत्र के सभी अस्पतालों को, आगंतुकों के लिये बंद करा दिया है, इसलिये रोगी अपने खुद के हाल पर थे। वे जो सार्वजनिक वार्ड में थे, एक दूसरे से बात कर सकते थे। वे जो कमरों में अकेले थे, अकेले बने रहे– और वह ध्यान लगाने के लिये भी, प्रसन्नतापूर्वक अच्छा था!

अंत में, एक या दो दिन बाद– ये एक शाश्वतता दिखाई दी– बूढ़े आदमी को घर भेज दिया गया। कुछ नहीं किया जा सका, कोई इलाज नहीं, कोई आपरेशन नहीं, कोई आशा नहीं। इसलिये, उसने, जैसा कि जीवन के दूसरी ओर के उन सम्माननीय लोगों के द्वारा ग्यारहवीं पुस्तक को लिखने की प्रार्थना की गई थी, और लोगों के प्रश्नों का उत्तर देने का निश्चय किया।

पिछले कुछ महीनों से, बूढ़ा आदमी चालीस या ऐसे ही कुछ पत्रों को, जो हर दिन पहुंचते हैं, सावधानीपूर्वक छांटता रहा था और उनको चुनता रहा था, जिनमें प्रश्न थे, जो सर्वाधिक सामान्य अभिरुचि के प्रतीत हुए। उसने काफी संख्या में विभिन्न देशों में लोगों को सुझाव देते हुए लिखा था कि उन्हें अपने प्रश्नों, जिनका वे उत्तर पाना चाहते हैं, की एक सूची बनानी चाहिए और कुछ बहुत अच्छे मित्र बनाये गये। हमें अपनी पुरानी मित्र श्रीमती बेलेरिया सोरोक को नहीं भूलना चाहिए, परंतु बूढ़ा आदमी, इन विशिष्ट लोगों को प्रश्न, जिनका उत्तर इस पुस्तक में दिया जायेगा, उपलब्ध कराने के लिये, धन्यवाद देना चाहता है।

श्रीमती और कुमारी न्यूमेन (Mrs. and Miss Newman).
श्रीमान् और श्रीमती 'यति' थॉम्पसन (Mr. and Mrs. 'Yeti' Thompson).
श्रीमान् डे म्यूनिक (Mr. de Munnik).
श्रीमती रोडेहावर (Mrs. Rodehaver).
श्रीमती रूबी सिमंस (Mrs. Ruby Simmons).
कुमारी बैटी जैसी (Miss Betty Jessee).
श्रीमान् ग्रे बेरजिन (Mr. Gray Bergin).
श्रीमान् और श्रीमती हान्स सेरमार्क (Mr. and Mrs. Hanns Czermak).
श्रीमान् जेम्स डोड (Mr. James Dodd).
श्रीमती पाइएन (Mrs. Pien).
श्रीमती फानआश (Mrs. Van Ash).

श्रीमान् जॉन हेंडरसन (Mr. John Henderson).
श्रीमती लिलियास कथबर्ट (Mrs. Lilias Cuthbert).
श्रीमान् डेविड ओकोनोर (Mr. David O'Connor).
वर्स्टमान महिलायें (The Worstmann Ladies).

इसलिये बूढ़े आदमी को घर भेज दिया गया। 'घर भेज दिया गया'। सादा छोटे शब्द, शायद, ये किसी औसत आदमी के लिये कोई अर्थ नहीं रखते, परंतु किसी के लिये, जिसके पास, अभी हाल तक, जीवन के अंतिम समय तक, कभी घर नहीं था, इसका अर्थ एक बड़ी बात होती है। 'घर भेज दिया गया'– ठीक है, इसका अर्थ है, परिचित परिवेश में, जहॉ दुख उतने महान नहीं होते, अपने प्रिय लोगों के साथ होना। बांटे गये दुख, आधे या चौथाई हो जाते हैं। इसलिये, बूढ़े आदमी को घर भेज दिया गया। कुमारी क्लियोपेट्रा और कुमारी टेडालिंका, ये देखने के लिये कि अस्पताल से किस प्रकार का अनजान प्राणी वापस आया है, अपनी सर्वाधिक गंभीर शिष्टताओं के साथ वहॉ थीं। वहॉ काफी नाकें सिकोड़ी गईं, काफी कठोरता से सूंघा गया। अस्पताल की गंधें, अजीब गंधें होती हैं, और ये कैसे हुआ कि बूढ़ा आदमी, उसके टुकड़े काटे जाने के बजाय, अभी भी एक नग था? उसके अभी भी दो बाहें और टांगें थीं, वास्तव में, उसकी कोई पूंछ नहीं थी, परंतु ये पहले भी नहीं थी। इसलिये कुमारी क्लियोपेट्रा और कुमारी टाडालिंका ने अत्यधिक गंभीरता के साथ उसका निरीक्षण किया और तब एक निर्णय पर आईं। 'मुझे मालूम है,' कुमारी क्लियोपेट्रा ने कहा, ''मैं, जो हुआ, उसे ठीक–ठीक जानती हूॅ। वह, इससे पहले कि उन्हें, स्थानीय शवदाह गृह में, ज्वाला का पोषण करने से हटा दिया जाये, 'ज्वाला का पोषण' पुस्तक को समाप्त करने के लिये वापस घर आये हैं। ये उतना ही सुनिश्चित होने वाला है, जैसे कि अंडे, अंडे ही होते हैं।''

कुमारी टाडालिंका, वास्तव में अत्यंत गंभीर दिखाई दी, 'हॉ', उसने कहा, 'परंतु यदि उनका वजन और अधिक घटता है, ऐसा तब कुछ भी नहीं होगा, जिसके साथ ज्वालाओं का पोषण किया जाये। मेरा ख्याल है कि उन्होंने उसे भूखा मार दिया होगा। मुझे आश्चर्य है, कि हमें अपने खाने में से उसे कुछ देना चाहिये।'

कुमारी क्लियोपेट्रा बूढ़े आदमी की छाती पर कूदी और उसने आसपास सूंघा, उसकी दाढ़ी को सूंघा, उसके कानों को सूंघा और उसके मुंह को अच्छी तरह से सूंघा, 'मुझे लगता है कि उन्हें कम खिलाया गया है, टेड,' उसने कहा। ''मेरा ख्याल है, हमें, उनके सभी खाली स्थानों को भरने के लिये, थोड़े से खाने के लिये, मां से बात करनी पड़ेगी।

परंतु कोई बात नहीं, कुमारी क्लियोपेट्रा ने क्या कहा, कोई बात नहीं कुमारी टाडालिंका ने क्या कहा और कोई बात नहीं कि मां के इरादे कितने भी अच्छे हों, बूढ़ा आदमी, अपने शेष जीवन के लिये, लंघन पर था। शरीर और आत्मा को साथ बनाये रखने के लिये काफी अधिक आसान –एक विकट दीनतापूर्ण खुराक।

कुमारी टाडालिंका, दौड़कर, कुमारी क्लियोपेट्रा के पास, बिस्तर के अंदर गई। 'बोलो क्लियो,' उसने जम्हाई ली, 'क्या तुम कुछ बात जानती हो? मैंने उन्हें अभी बातचीत करते सुना है कि, वह प्रतिदिन एक पाउंड वजन खो रहा है, इसलिये इसका अर्थ ये हुआ कि दो सौ सत्तर दिनों में उसका भार बिल्कुल नहीं होगा।

दोनों बिल्लियां इस पर विचार करती हुई बैठीं और तब कुमारी क्लियोपेट्रा ने अत्यधिक चतुराई, पूरी बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता, जो चार साल की उम्र में, एक छोटी बच्ची में होती है, के साथ अपना सिर हिलाया। 'आह हॉ,' उसने विस्मय किया, 'परंतु तुम एक चीज भूल गयी हो, टेडी। कोई जितना अधिक भूखा, जितना अधिक बीमार होता है, वह उतना ही अधिक अतीन्द्रिय ज्ञानी होता जाता है। शीघ्र ही, वह चीजों को उनके घटित होने से पहले ही देखने लगेगा।'

'उसके लिये छी!' कुमारी टाडालिंका ने कहा, 'वह पहले से ही देखता है।' दुरानुभूति के उन संदेशों को देखो, जो उसने अस्पताल से हमें भेजे थे। फिर भी, ये इस पुस्तक के प्रारंभ के लिये, अच्छी तैयारी है। मेरा ख्याल है, अच्छा हो कि हम जो भी कर सकते हैं, उसकी मदद करें।'

रेडियटर काफी गर्म था और दोनों नन्हीं बिल्लियां, रेडियटरों के ऊपर दासे की ऊंचाई तक कूदीं। वहॉ उन्होंने सिर से पूंछ तक, अपनी पूरी लंबाई में अंगड़ाई ली, और दिन भर के पूरे विचारों को स्थानीय बिल्लियों को प्रेषित करने से पहले, अपनी अंतर्दृष्टि की सामान्य स्थिति में गईं। बूढ़ा आदमी? ठीक है, बूढ़ा आदमी, बिस्तर में आने से खुश था। वह कुछ समय के लिये वापस लेटा और उसने सोचा, 'ये कष्टदायक किताब, मान लो मुझे इसे लिखना है। मुझे जीवित रहना है और यद्यपि, मैं आजकल ज्यादा नहीं खाता, फिर भी, जो मैं खाता हूॅ, मुझे उसका

भुगतान करना पड़ता है। अब उसने तय किया,' हम, इस आशा के साथ कि ये पूरी होगी, इस पुस्तक को कल प्रारंभ कर दें, और यहॉ ऐसा है। ये प्रारंभ हो चुकी है, आप इसका पहला अध्याय पढ़ रहे हैं, हैं न।

अब काफी लोगों ने चीजें पूछते हुए, सभी प्रकार के प्रश्नों को पूछते हुए लिखा है। ठीक है, ये एक अच्छा विचार होगा, यदि ये पुस्तक, जो सामान्य प्रश्न दिखाई देते हैं, उनका उत्तर देने के लिये समर्पित कर दी जाये। जानना, लोगों का अधिकार है, अन्यथा वे उन जैसे खराब विचार पाते हैं, जो सोचते हैं कि मृत्यु एक भयानक चीज है। उन जैसे, जो सोचते हैं कि मृत्यु के बाद जीवन, कुछ नहीं है। ठीक है, ये हमेशा मुझे आनंदित करता है, जब लोग केवल इसलिये कहते हैं कि जीवन के बाद कुछ नहीं है, क्योंकि वे इसके बारे में नहीं जानते। वैसे ही, किसी दूरस्थ देहाती क्षेत्र में रहने वाला कोई व्यक्ति कह सकता है कि कोई लंदन (London) नहीं है, कोई न्यू यार्क (New York) नहीं है, कोई ब्यूनसआइरिश (Bueos Aires) नहीं है, क्योंकि उन्होंने वास्तव में उसे देखा नहीं है। कुल मिलाकर, चित्र नकली हो सकते हैं, मैंने दूसरी तरफ जीवन के सम्बंध में, तमाम नकली चित्रों को देखा है, और वह काफी तरस खाने योग्य है। एक बहुत बहुत अच्छी 'दूसरी तरफ' है, और ये बुतकेपन की गहराई है, जबकि धूर्त और विकृत 'दृष्टा' काफी नकली चीजें उत्पन्न करते हैं। वास्तविक यथार्थता को पैदा करना उतना ही आसान है, वास्तव में, अपेक्षाकृत आसान है।

मैंने प्रभामंडल के शोधकार्य को जारी रखने की आशा की थी। दुर्भाग्यवश, धन की तंगी के कारण मुझे इसे छोड़ना पड़ा और अब ठीक है–यहॉ कोई स्वास्थ्य बीमा योजना नहीं है, इंग्लैंड की भांति नहीं, और हर चीज विकट खर्चीली है, इसलिये प्रभामंडल का कार्य दूसरों के लिये छोड़ देना पड़ेगा।

एक दूसरी कार्य योजना है, जिसका मैं विकास करना चाहता था, और वह ये हैः एक युक्ति बनाना, जो किसी का भी सूक्ष्मलोक में 'टेलीफोन' करना सक्षम बनायेगी, पूरी तरह से संभव है। वास्तव में, ये किया जा चुका है, परंतु व्यक्ति, जिसने इसे किया था, उसके पास प्रेस की तरफ से, संदेहों, शंकाओं और अभियोगों का एक बांध था, कि वह इससे थक गया, उसका दिल टूट गया, और उन्मत प्रेस के द्वारा चलाये जाते हुए उसने अपने उपकरण को चूर चूर कर दिया और आत्महत्या कर ली।

एक टेलीफोन बनाना, जिसके साथ सूक्ष्मलोक में टेलीफोन किया जाये, पूरी तरह संभव है। अब बोली के ऊपर विचार करें; जब हम बोलते हैं, तब हम एक कंपन उत्पन्न करते हैं, जो अपनी ऊर्जा, हवा के एक स्तम्भ को दे देता है, जो बदले में किसी ग्राही उपकरण, उदाहरण के लिये, किसी के कान को, ऊर्जा दे देता है, इसलिये वे उन ध्वनियों को, जो हमने पैदा की थीं, सुनते हैं। इसे वार्ता के रूप में अनुवादित किया जाता है। अभी तक, कोई भी, रेडियो की पतवार के शिखर के ऊपर खड़े होने, और चिल्लाकर संसार को कहने, और पूरे विश्व भर में सुने जाने में सफल नहीं हुआ। उसके लिये कंपनों को ऊर्जा के एक दूसरे रूप में बदला जाता है और उचित उपकरण के साथ, संदेशों को, विश्वभर में, इस ऊर्जा में कहा जाता और बदला जाता है। मैं इंग्लैंड, जापान, ऑस्ट्रेलिया, जर्मनी–किसी को भी, हर जगह सुनता हूॅ। दक्षिणी एंटाकार्टिक (South Antarctic) में, मैंने थोड़ा सा अमेरिका भी सुना है।

सूक्ष्मलोक को टेलीफोन करने की युक्ति वैसी ही है, जैसी कि यह। वह वर्तमान दिन की रेडियो तरंगों को ठीक वैसे ही, जैसे कि रेडियो तरंगें, किसी अतुलनीय उच्चतर में बदल देती हैं, बदले में, भाषण की तुलना में, ये आवृति में बहुत ऊॅची होती हैं।

आने वाले दिनों में, लोग, बहुत कुछ हद तक उसी ढंग से, जैसे कि कोई व्यक्ति अस्पताल को फोन कर सकता है और यदि वह सौभाग्यशाली हुआ और नर्स अच्छे स्वभाव की लग रही है, तो वह मरीज, जो किसी शल्यक्रिया से उबर रहा है, से बात कर सकता है, उनसे, जो अभी नये ही गुजरे हैं, टेलीफोन करने के लिये समर्थ होंगे। इसलिये ऐसा होगा कि जो अभी नये ही गुजरे हैं और ठीक हो रहे हैं, और ठीक वैसे ही, जैसे कि मॉ और बच्चा, जन्म के तनाव से उबरते हैं, गुजरने के तनाव से उबर रहे हैं, इतने बीच में, जबकि ये उबरने की प्रक्रिया चल रही है, रिश्तेदार स्वागत क्षेत्र (reception area) में टेलीफोन कर सकते हैं और जान सकते हैं कि 'मरीज के क्या हालचाल हैं' स्वाभाविकरूप से, जब 'मरीज' काफी ठीक हो चुका है और दूसरी विमाओं की ओर जा चुका है, वह अत्यधिक व्यस्त होगा, और इस पृथ्वी के क्षुद्र मामलों से और भी परेशान होगा।

ये पृथ्वी, उसमें जो यथार्थ समय है, ऑख झपकने की अवधि में अस्तित्व में रहने वाली धूल का एक धब्बा मात्र है।

उन के लिये, जो रुचि रखते हैं, मैंने, वास्तव में, एक ऐसा टेलीफोन देखा है, और वास्तव में, उसे उपयोग

किये जाते हुए देखा है। तरस की बात ये है कि मूर्ख प्रेस, सेंसर के अधीन नहीं है, क्योंकि उनको केवल सनसनी पैदा करने के लिये, मूर्खतापूर्ण कदम उठाने की आज्ञा नहीं दी जानी चाहिए थी। इसलिये जो वास्तविक विकास हैं, वे इस प्रकार अटकते हैं।

इसलिये पहले अध्याय के प्रारंभ और अंत में, अब हम इस पर विचार करें। हम साथसाथ चलते रहेंगे और देखेंगे कि हम दूसरे अध्याय में, कुछ प्रश्नों का उत्तर देने के लिये क्या कर सकते हैं।

अध्याय – दो

आलोचना का कभी जबाव न दें; ऐसा करना आपके अपने मामले को कमजोर बनाता है।

बूढ़ा आदमी घर पर अकेला था। मां, बटरकप, कुमारी क्लियोपेट्रा और कुमारी टाडालिंका, सामान्य कार्य, बाहर जाकर खरीदारी करना, क्योंकि सबसे अधिक व्यवस्थित समाजों में भी, अपरिहार्य खरीदारी हमेशा होती है, सभी गृहकार्यो को घेरता हुआ दिखाई देता है, के सिलसिले में बाहर थीं। आलू, साबुन की टिकिया, दूसरी अनेक चीजें शामिल करते हुए– ठीक है, हम इस पर गुपचुप चर्चा करें– अनुल्लेखनीय आवश्यकतायें, जिनके बिना आधुनिक दिनों में हम सरलता से व्यवस्थित नहीं कर सकते। इसलिये बूढ़ा आदमी, रेडियो सुनता हुआ अपने बिस्तर में लेटा हुआ था।

(रेडियो का) अभिग्रहण (reception) अच्छा था। कार्यक्रम, बी.बी.सी. की अफ्रीकी सेवा के साथ अत्यंत स्पष्टरूप से और अच्छी आवाज में आ रहा था। कोई अपनी चुनिंदा (hit) नई संगीत रचनाओं को बजा रहा था। बूढ़ा आदमी, 'सूक्ष्मलोक की यात्रा' के असम्भव, अनपेक्षित शीर्षक वाली एक रचना के ऊपर मुस्कराया। उसे अपना कार्यक्रम रोकना पड़ा, क्योंकि टेलीफोन, उसके बिस्तर के बगल से, टेलीफोन की घंटी बज रही थी।

उसका निपटारा करने के साथ ही, समय रहते, उसने अद्यतन चुनिंदा गानों को सुनने के लिये परिवर्तन किया। बी.बी.सी. के एक उद्घोषक या डिस्क जॉकी (disc jockey) या जो कुछ भी वह था, ने निश्चयात्मक रूप से एक लंदन वासी (Cockney) के स्वर में घोषणा की कि वह 'Without the Night There Would be no Sunshine' का नवीनतम रिकार्ड रखने जा रहा था।

रात के बिना धूप नहीं होगी। क्या वह मित्र जानता था कि उसने एक महान सत्य का उद्घाटन कर दिया? किसी को कोई चीज प्राप्त करने के क्रम में पराकाष्ठा तक जाना होता है। कई बार यू.एस.ए. से, विशेषरूप से रविवार को, लघुतरंगों के माध्यम से, धार्मिक पुनरुत्थानवादी मिशनरियों के किसी गिरोह के द्वारा भेजा हुआ, एक भयानक कार्यक्रम आता है। हंगामा, निंदा करना, किसी को भी ईसाइयत के विरोध में परिवर्तित करने के लिये पर्याप्त है। और तब भूमध्य रेखा के ठीक पास, दक्षिणी अमेरिका के एक स्टेशन से, एक दूसरा प्रतिद्वन्द्वी धार्मिक गिरोह है, वे ईसाई न होने पर आतंक के बारे में अच्छे ढंग से हंगामा करते हैं। इस स्टेशन के अनुसार, हर एक जो ईसाई नहीं है, दानव है और वह नर्क को जायेगा। निश्चितरूप से, ऐसे पागल धर्म को चालू रखने का कोई तरीका नहीं है।

बिना रात के कोई धूप नहीं हो सकती; बिना बुराई के कोई भलाई नहीं हो सकती; बिना शैतान के कोई भगवान नहीं हो सकता; बिना ठंड के गर्मी नहीं हो सकती। बिना पराकाष्ठाओं के, दूसरी कोई चीज कैसे हो सकती है? यदि पराकाष्ठायें न होतीं तो केवल एक ही स्थाई स्थिति होती। तब की सोचें, जब आप सांस लेते हैं, आप बलपूर्वक अपनी सांस को बाहर निकालते हैं, वह एक पराकाष्ठा है क्योंकि, सभी व्यावहारिक उद्देश्यों के लिये, आपके अपने अंदर कोई सांस नहीं होती और आप दम घुटने के खतरे में होते हैं। तब आप सांस लेते हैं और आप अपने अंदर बहुत सारी हवा पाते हैं, और यदि आप अत्यधिक तेजी के साथ, अत्यधिक सांस ले लें तो आप अतिवातायनता (hypervantilation) के माध्यम से खतरे में होंगे। परंतु फिर, यदि आप सांस बाहर न निकालें और सांस अंदर न लें, तब आपके पास कुछ नहीं है, और आप जिंदा नहीं रह सकते।

नोवा स्कॉटिया (Nova Scotia) के किसी उल्लेखनीयरूप से मूर्ख व्यक्ति ने, मुझे पापियों और शैतान के सम्बंध में, एक मूर्खतापूर्ण, खराब तरह से प्रतिलिपि किया हुआ, थोड़ा बैंगनी, असंयत वाक्य भेजा। प्रकटरूप से, विचार ये था कि मैं उन्हें कुछ धन, जो उन्हें शैतान को मिटाने में मदद दे, भेज दूं। शैतान को मिटाना? शायद, वे नवीनतम प्रक्षालकों (detergents) में से किसी को पाने वाले थे और उसे फर्श के नये बिछावन, या वैसे ही कुछ पर फैलाने वाले थे और रगड़कर उस बूढ़े शैतान को बाहर निकालने वाले थे। कैसे भी, वह सब कूड़ा करकट वहॉ गया, जहॉ उसे जाना चाहिए था–कूड़ेदान में।

ऋणात्मक होना ही चाहिए अन्यथा धनात्मक नहीं हो सकता। विरोधी होना ही चाहिए अन्यथा कोई हलचल नहीं होती। हर चीज में, जो अस्तित्व में है, गति होती है। रात, दिन के लिये रास्ता देती है, दिन, रात के लिये रास्ता देता है; गर्मी, सर्दी के लिये रास्ता देती है, सर्दी, गर्मी के लिये रास्ता देती है, और इसी प्रकार और भी। गति को होना ही है, पराकाष्ठायें तो होनी ही है। पराकाष्ठाओं को प्राप्त करना कोई बुरा नहीं है, इसका मतलब ये

है कि दो बिन्दु, जितना दूर कि वे हो सकते हैं, एक दूसरे से अलग हैं। इसलिये भला बूढ़ा शैतान, उसे थोड़े समय के लिये चलते रहने दो क्योंकि, शैतान के बिना भगवान नहीं हो सकता, भगवान के बिना कोई शैतान नहीं होगा, क्योंकि, तब कोई मनुष्य भी नहीं होगा। निकृष्टतम 'शैतान' एक अद्‌भुत झक्की है जो किसी एक धर्म को, दूसरे धर्म के व्यक्ति के गले के नीचे तक कसकर दबाने का प्रयास करता है। मैं एक बौद्ध हूँ, और निश्चितरूप से, मैं रेंगने वाले को उन सभी मूर्खों को पसंद नहीं करता, जो मुझे बाइबिल (Bible), न्यू टेस्टामेंट (New Testament), ओल्ड टेस्टामेंट (Old Testament), वास्तव में, सूली पर चढ़ाये जाने इत्यादि के सुंदर चित्र, शुद्धरूप से काल्पनिक, (या ये अशुद्ध होने चाहिए), भेजते हैं?'' मैं स्वेच्छा से, घृणास्पद होने की सीमा तक, बौद्ध हूँ। ठीक है, मैं ईसाइयत के दूसरे सिरे पर हूँ, परंतु ईसाई, बौद्ध के रूप में, मुझसे दूसरे सिरे पर हैं। मैं किसी को भी बौद्ध धर्म की ओर परिवर्तित करने का प्रयास नहीं करता, वास्तव में, काफी बड़ी संख्या में लोग मुझे लिखते हैं और मुझे पूछते हैं कि क्या वे बौद्ध बन सकते हैं, और मेरा अपरिवर्तनीय उत्तर होता है कि, जबतक कि कोई बहुत बड़ी अधिप्रभावी स्थिति या परिस्थिति न हो, वे अपने धर्म, जिसमें वे पैदा हुए हैं, के साथ ही जुड़े रहें।

मैं उन लोगों को पसंद नहीं करता जो केवल इसलिये अपना धर्म बदलते है कि ये 'भुगती हुई चीज' है, या सबसे नई चीज हैं, या क्योंकि वे रोमांच चाहते हैं और चाहते हैं कि लोग उनकी ओर ये कहते हुए इशारा करें, 'देखो वह एक बौद्ध है।'

परंतु बिना अंधकार के कोई धूप नहीं हो सकती। हॉ, लंदनवासी के स्वर वाले श्रीमान् उद्‌घोषक, निश्चितरूप से, आपने एक महान सत्य कहा। हमें बूढ़े शैतान को इतना अधिक परेशान मत करने दो कि उसे जिंदा रहना पड़े अन्यथा तुलना के लिये कोई मानक नहीं होगा, नहीं होगा, न? यदि शैतान की कोई बात नहीं होती, तो आप भलाई का निर्णय कैसे कर सकते थे? यदि बुरा नहीं होता, तो अच्छा नहीं हो सकता था। प्रगटरूप से नहीं, क्योंकि तब तुलना का कोई मानक नहीं होता, क्योंकि किसी को एक्स (X) और वाई (Y) के बीच तुलना करने में सक्षम होना चाहिए, तब हमारे पास भले और बुरे हैं, ठीक वैसे ही, जैसे कि यू.एस.ए. और कनाडा में हैं, ऐसा लगता है, 'भले आदमियों' को और 'बुरे आदमियों' को होना ही चाहिए। भले लोग, हमेशा लाल खून वाले दमदार लोग होते हैं, आईवी लीग (Ivy League) सूट और पेप्सोडेंट (Pepsodent) की मुस्कान वाले सभी अमेरिकी, जबकि बुरा आदमी स्वतः ही बेचारा भारतीय, जो कि लम्बे चौड़े वायदों के साथ, अपने खुद के देश में ठगा या लूटा गया था। परंतु टेलीविजन के कार्यक्रम के सम्बंध में सोचें : क्या यह नीरस नहीं हो जायेगा, यदि उसमें कोई अच्छे लोग नहीं हों, जो बुरे लोगों के खिलाफ लड़ सकते हों या कोई बुरे लोग नहीं होते, जो दिखाते हों कि अच्छे लोग, वास्तव में, कितने अच्छे हैं? इसलिये, आप सभी लोगों के लिये, जो मुझे लिखते हैं और कहते हैं कि क्या मैं नहीं सोचता कि शैतान को ठोकर मारकर या रगड़कर या हुक्का–पानी बंद करके, या या कुछ वैसा ही कुछ करके, रूस को भेज दें, अब मुझे कहने दें–नहीं, मेरा सोचना है कि शैतान, इस मामले में कि वह भलाई के लिये पतन उपलब्ध कराता है, एक भला आदमी है, इस मामले में कि वह पतन को अच्छे के लिये उपलब्ध कराता है, वह एक मानक प्रदान करता है, जिसके विरूद्ध हम भलाई को नाप सकते हैं। इसलिये हम शैतान की शुभकामनाओं के लिये (एक प्याला) पियें परंतु केवल भाग्यवश हमें एक गिलास में कुछ गंधक का तेजाब और गंधक पाने दें और उसे उल्टा करने दें; उस तरह से ये सुरक्षित होगा।

बूढ़े आदमी ने, जैसे ही उसने पत्र को खोला, जोर से आह भरी, 'मैंने इंग्लैंड को एक टचस्टोन के लिये लिखा था,' उसने पढ़ा, 'चार हफ्ते हो गये, और मैंने उन्हें पैसा भेज दिया, परंतु मुझे उत्तर नहीं मिला, मुझे लगता है कि मैं छला जा रहा हूँ।'

बूढ़े आदमी ने जोर से आह भरी। तब उसने लिफाफे की ओर देखा, और फिर से आह भरी। सबसे पहले तो, बूढ़ा आदमी, किसी भी तरीके से इससे सम्बंधित नहीं है, या किसी भी व्यापारिक प्रतिष्ठान में, या जोखिम उठाने में रुचि नहीं रखता है। कई बार कोई प्रतिष्ठान शाखाओं में बंट जाता है और दावा करता है कि ये लोबसांग रंपा से जुड़ा हुआ है, आदि, आदि। केवल एक मामला है, और वह इंग्लैंड के एक प्रतिष्ठान के साथ है। उनके पास 'रंपा टचस्टोन कंपनी (Rampa Touchstone Company)' नाम का उपयोग करने की अनुमति है। परंतु फिर, बूढ़ा आदमी, इसे बहुत बहुत स्पष्ट कर देना चाहता है कि वह न तो किसी भी व्यापारिक उद्योग से सम्बंधित है, और न ही उसमें कोई अभिरुचि रखता है। एक प्रतिष्ठान है, जिसके साथ बूढ़ा आदमी असाधारण रूप से नाराज है, क्योंकि वे बूढ़े आदमी की पहली पुस्तक के नाम का उपयोग करते हुए, पूरी तरह से उसकी आज्ञा के बिना, निश्चितरूप से उसके अनुमोदन के बिना, एक डाक आदेश कंपनी (mail order company) का विज्ञापन देते

हैं।

इसलिये यहॉ वह है, जो आपके लिये व्यापार है।

परंतु बूढ़े आदमी ने, जैसे ही उसने लिफाफे की ओर देखा, आह भरी और उसने आह भरी क्योंकि, न तो लिफाफे पर, और न ही पत्र में कोई पता था। यू.एस.ए. और कनाडा में लोग कई बार अपना नाम और पता लिफाफे पर लिखते हैं, परंतु पत्र पर, जहॉ इसे होना चाहिए, विरले ही लिखते है। इंग्लैंड और यूरोप में पत्र का कागज (sheet), स्वयं ही भेजने वाले का नाम पता धारण करता है, और इसलिये कोई इंग्लैंड से और यूरोप के पत्रों का, सदैव ही उत्तर देता है, फिर भी, इतनी कड़वाहट के साथ कराहते हुए और इतने अपमानजनक तरीके से ठगने वाले इस विशेष व्यक्ति का कोई अता–पता नहीं था, जिस पर उत्तर भेजा जा सके। तब कोई क्या करे? हस्ताक्षर केवल 'माबेल (Mabel)' के थे, इसके अलावा कुछ नहीं, कोई कुलनाम नहीं, कोई पता नहीं, और डाक की कोई मोहर नहीं– ठीक है, वह एक आवर्धक कॉच के साथ भी पढ़ी नहीं जा सकती थी। इसलिये आप लोग, जो शिकायत करते हैं कि आपको उत्तर नहीं मिला, जो शिकायत करते हैं कि आप ठगे जा रहे हैं, अपने आपको पूछें –क्या आपने, वास्तव में, पत्र या लिफाफे के ऊपर अपना पता लिखा था?

थोड़े समय पहले, हमें एक पत्र मिला, और हम उसमें से एक अक्षर मात्र भी नहीं पढ़ सके। शायद ये अंग्रेजी में था, परंतु हम इसके किसी भी भाग को नहीं पढ़ सके, इसलिये वह अनुत्तरित ही रह गया। एक पत्र का उद्देश्य किसी चीज को ज्ञात बनाना होता है, और यदि लेखन को पढ़ा नहीं जा सके तो पत्र अपने उद्देश्य में असफल हो जाता है, और यदि इसके ऊपर पता नहीं है, ठीक है, ये समय का अपव्यय मात्र है।

बूढ़े आदमी ने, अपने कार्यक्रम, बी.बी.सी. के समुद्रपारीय कार्यक्रम, को सुनते हुए, ध्वनियों पर चिंतन किया। कुछ वर्षों पहले, संगीत एक बहुत आनंददायी चीज, एक शमनकारी चीज या उत्तेजक चीज, हुआ करता था, परंतु अब–दुनियॉ को क्या हो गया है? माल–मसाला, जो इंग्लैंड से आ रहा है, वह पूछें आपस में बंधे हुए बिल्लों के गिरोह जैसा है। ये संगीत नहीं है, मैं नहीं जानता कि ये क्या है। परंतु ध्वनियॉ, ठीक है, विभिन्न ध्वनियॉ, विभिन्न सभ्यताओं के लिये विशिष्ट होती हैं। लोगों के पास विशिष्ट आवाजें होती हैं, जो उनके लिये भला करती हुई आरोपित होती हैं, जैसे कि सही ढंग से उच्चारित की गई 'ओम' की आवाज। फिर भी, कुछ दूसरी ध्वनियॉ हैं, जो सामाजिकरूप से स्वीकार्य नहीं है। उदाहरण के लिये, चार अक्षरों वाले कुछ निश्चित शब्दों की आवाजें, सामाजिकरूप से स्वीकार्य नहीं है और फिर भी, शायद वही ध्वनियॉ, किसी दूसरी संस्कृति की भाषा में परम रूप से अनुमत हैं। चार अक्षरों वाली एक निश्चित ध्वनि है जो अंग्रेजी में, वास्तव में, शरारती, शरारती, अत्यधिक शरारती है, और फिर भी, रूसी भाषा में वह आवाज पूरी तरह से सही है, पूरी तरह से शिष्ट, और एक दिन में अनेक बार उपयोग में लाई जाती है।

ध्वनियों पर अत्यधिक भरोसा न रखें। अधिकांशतः, अनेक लोग, यदि वे ओम को ठीक से उच्चारित कर रहे हों, दीवाना आश्चर्य पाते हैं। स्वयं ओम कुछ नहीं है, इसका– अपने आप में, कोई अर्थ नहीं है, तब भी नहीं, यदि आप इसे, जैसे संस्कृत में उच्चारित किया जाता है, वैसे ही उच्चारित करें। 'शक्ति के अधिभौतिकी शब्द (metaphysical word of power)' का उच्चारण करना, तब तक व्यर्थ है, जब तक कि आप सही ढंग से सोच भी न सकें।

इस पर विचार करें; अपने रेडियो कार्यक्रम पर विचार करें। आपके पास कुछ निश्चित ध्वनियॉ हैं, जो अपने आप में, प्रसारित नहीं की जा सकतीं। वे ध्वनियॉ केवल तभी प्रसारित की जा सकती हैं, यदि सबसे पहले आपके पास कोई वाहक तरंग हो। वाहक तरंग, प्रकाश के समान है, जिसे आपको, इससे पहले कि आप सिनेमा या टेलीविजन के चित्र को प्रसारित कर सकें, या अपनी स्लाइड (slide) को पर्दे पर दिखा सकें, दिखाना होता है। प्रकाश के बिना स्लाइडें कुछ नहीं हैं। आपको वाहक के रूप में प्रकाश की एक किरण पानी होगी, और ठीक ठीक उसी तरीके से, आपको, इससे पहले कि आप अपने रेडियो कार्यक्रम को प्रसारित कर सकें, एक वाहक तरंग पानी होगी।

फिर, एकदम ठीक उसी तरीके से, '**ओम**' इत्यादि की ध्वनि, या कोई दूसरा 'शक्ति का शब्द' सही विचारों के लिये, मात्र किसी वाहक तरंग के रूप में कार्य करता है।

क्या आप इसे और अधिक स्पष्ट कराया जाना चाहते हैं? ठीक है। मान लें हमने एक फोनोग्राफ रिकार्ड बनाया, जिसमें **ओम** को सही उच्चारित करने के सिवाय अन्य कुछ नहीं था, **ओम, ओम, ओम, ओम, ओम,** आप उस रिकोर्ड को, हमेशा के लिये और पूरे दिन के लिये चला सकते हैं, बशर्ते सबसे पहले, ये घिस न जाये और

आप कुछ भी भला नहीं कर रहे होंगे, क्योंकि, फोनोग्राफ प्लेयर, (या ग्रामोफोन, यदि आप इंग्लैंड में रहते हों), एक न सोचने वाली मशीन है। **ओम** केवल तभी लाभदायक है, जब कोई सही ढंग से सोच रहा हो, और सही ढंग से उच्चारित भी कर रहा हो। सुधार का सबसे अच्छा तरीका है, किसी का अपने विचारों को ठीक करना, और ध्वनि को उसकी अपनी चिंता खुद करने देना।

ध्वनियॉ! कोई ध्वनि कितनी शक्तिशाली चीज हो सकती है। यह किसी के विचारों को प्रोत्साहन दे सकती है। संगीत, अच्छा संगीत किसी को हिला सकता है और किसी को आध्यात्मिकरूप से उठा सकता है। ये किसी को अपने साथी की ईमानदारी में महान विश्वास की ओर ले जा सकता है। निश्चितरूप से ये अपने आप में सर्वाधिक वांछनीय उपलब्धि होती है। परंतु विशेषरूप से बनाया गया संगीत, किसी युद्ध प्रिय सेना में भीड़ पैदा कर सकता है। मार्चिंग के समय के गाने, किसी को ठीक से, और कम प्रयास के साथ, मार्च करने में मदद कर सकते हैं। परंतु अब–दुनियॉ को क्या हो गया है? जाज (jazz) से भी खराब, रॉक एंड रॉल (rock 'n' roll) से भी खराब, ये सब क्या है। क्या हो गया है कि नौजवान लोग, असंगत कर्णकटुता, जो उनमें सभी बदतरों को लाने के लिये बनायी हुई दिखती है, जो उन्हें नशे के व्यसन की ओर धकेलती है, उन्हें विसंगतियों, और इसी प्रकार की शेष सभी चीजों की ओर धकेलती है, के द्वारा, अपने आप को अधिक सनकीपन की तरफ ढकेलने का प्रयास रहे हैं। आप जानते हैं, ये वह है, जो होता है।

गलत ध्वनियों के अधीन व्यक्तियों में, मादक पदार्थों की चाह हो सकती है, शराबी गाने, लोगों में अधिक पीने की इच्छा जगा सकते हैं; पुराने जर्मन बाइयरगार्टेन (biergarten) गानों में से कुछ, बहुत कुछ हद तक वैसे ही थे, जैसे कि प्रकटरूप से, कुछ शराबखानों द्वारा प्यास बढ़ाने, और किसी को और अधिक पीने के लिये सक्षम बनाने के लिये उपलब्ध कराये गये नमकीन काजू, शराब के ठेकेदारों की आमदनी को महान भव्यता प्रदान करते थे।

अब विश्व भर में युद्ध, क्रांतियॉ, और घृणायें तथा विक्षोभ हैं। मनुष्य, मनुष्य के विरुद्ध लड़ता है और इससे पहले कि वे बहतर हो सकें, चीजें बद से बदतर होती जायेंगी। ध्वनियॉ, गलत ध्वनियॉ, इसे पैदा करती हैं। चीखने, शेखी बघारने वाला, भीड़ में निकृष्टतम विचारों को भड़काने वाला आन्दोलनकारी, जैसे कि हिटलर, एक सर्वाधिक ईश्वरीय देन, परंतु विकृत वक्ता, सामान्यतः संवेदनशील कहे जाने वाले जर्मनों को उन्माद, विनाश के तांडव और क्रूरता की ओर उभाड़ने में सक्षम था। यदि हम केवल सम्पूर्ण असंगत संगीत, सभी असंगत शब्दों, जो घृणा, घृणा, घृणा सिखाते हैं, के उन्मूलन द्वारा विश्व को बदल सकें। यदि लोग केवल प्रेम और दयालुता और दूसरों के प्रति सहानुभूतिपूर्वक सोचें। चीजों को वैसे ही बने रहने देने की, जैसी कि वे हैं, कोई आवश्यकता नहीं है। इसके लिये, केवल शुद्ध विचारों वाले, कुछ दृढ़ निश्चयी लोगों को, संगीत और भाषण में, उन आवश्यक ध्वनियों को पैदा करने की आवश्यकता होगी, जो पूरी गुंडागर्दी और तरुणाई का अपराध, जो हम पर प्रतिदिन हमला करता है, के बजाय कष्ट से अत्यधिक पीड़ित, हमारी बेचारी दुनियॉ को, फिर से, विवेक की एकरूपता लाने के लिये सक्षम बनायेगी। तब भी, वहॉ प्रेस के ऊपर, कुछ प्रतिबंधात्मक होना चाहिए, क्योंकि, प्रेस हमेशा ही, लगभग बिना किसी अपवाद के, चीजों को, उसकी तुलना में जैसा कि वास्तविक मामला है, अधिक सनसनीखेज, अधिक खून का प्यासा, अधिक भयानक दिखाने का प्रयास करते हुए, बखेड़ा पैदा करता है।

हम सभी, अच्छे विचारों को सोचते हुए और अच्छे विचारों को सोचते तथा कहते हुए, ध्यान का एक पीरियड क्यों नहीं लेते, ये इतना आसान है, क्योंकि ध्वनियों की शक्ति, अनेक लोगों के विचारों को नियंत्रित करती है। ध्वनि, बशर्ते इसके पीछे कोई विचार हो।

बूढ़ा आदमी अपने बिस्तर में वापस लेटा, बेचारे गरीब के पास कोई चुनाव नहीं था। कुमारी क्लियोपेट्रा, अपने सिर को उसकी दाढ़ी में उलझाये हुए, उसकी छाती पर लेटी थी, नीली से भी नीली, ऑखों से संतोष के साथ दुलारते हुए, उसने घूर कर देखा। कुमारी क्लियोपट्रा रंपा, लोगों में सर्वाधिक प्रखर, सर्वाधिक प्रेम करने वाली और निस्वार्थ व्यक्ति, अधिकांश लोगों के लिये मात्र क्षुद्र सा, यद्यपि अपवाद रूप से सुंदर एक प्राणी। बूढ़े आदमी के लिये, ये एक निश्चित प्रखर व्यक्ति थी, एक व्यक्ति, जो इस पृथ्वी पर एक विशेष कार्य करने के लिये आयी थी, और वह इसे भव्यता और संपूर्ण सफलता के साथ कर रही थी। एक व्यक्ति, जिसके साथ बूढ़े आदमी का लंबा दुरानुभूतिपूर्ण वार्तालाप हुआ था, और जिसने उससे बहुत कुछ सीखा था।

कुमारी टेडालिंका रंपा, बिजली की पहियेदार कुर्सी में, खर्राटे भरती हुई सिकुड़ी हुई थी। अक्सर, उसकी मूंछें फड़कती थीं और बंद पलकों के नीचे उसकी ऑखें लुढ़कती थीं। टेडी एक सर्वाधिक स्नेहमयी व्यक्ति थी और

टेडी आराम पसंद करती थी; आराम और खाना, टेडी के प्रमुख पूर्वाग्रह थे और फिर टेडी अपना खाना और आराम अर्जित कर लेती थी। बिल्लियों में सर्वाधिक दुरानुभूतिपूर्ण टेडी ने, विश्व के विभिन्न भागों के संपर्क में रहने का अपने हिस्से का काम किया।

तब दरवाजे पर, एक हल्की सी दस्तक हुई और मित्रवत् पड़ौसी अंदर आया और उसने एक ठोस को, एक पीठ पर, जो उतने बड़े आकार को धारण करने के लिये अपर्याप्त दिखाई देती थी, गुंजित करते हुए 'प्रहार' के साथ, पीछे पटका। 'अपनी बिल्लियों को प्यार करो, क्या तुम नहीं करते गुव?'' मित्रवत् पड़ौसी ने मुस्कान के साथ कहा।

'उन्हें प्यार करें? भली भव्य, हॉ! मैं उन्हें अपने बच्चों की तरह समझता हूँ, और उल्लेखनीय प्रखर बच्चों की तरह। ये बिल्लियॉ मेरे लिये आदमियों से ज्यादा करती हैं।'

अब तक, घुर्राने के लिये तैयार बैठी हुई टेडालिंका सजग थी, यदि आवश्यक हो तो हमला करने के लिये भी तैयार, क्योंकि दोनों नन्ही बिल्लियॉ, वास्तव में, बचाव, जिसको वे अपनी जिम्मेदारियों के रूप में समझती हैं, में बहुत बहुत खतरनाक हो सकती हैं। एक व्यक्ति ने रात को एक अपार्टमेंट में घुसने का प्रयास किया था। दोनों बिल्लियॉ तेजी से दरवाजे की तरफ दौड़ीं और रोष की दस वर्षो की बढ़त को उस बेचारे गरीब पर उड़ेल दिया, क्योंकि, क्रोध में, एक सियामी बिल्ली की नजर, बहुत भयानक होती है। वे अपनी खाल के हर बाल को फुला लेती हैं, अपने शरीर के लंबवत् सीधा खड़ा कर लेती हैं, और वे आग में से निकलने वाली कुछ चीज दिखाई देती हैं। वास्तव में, उन्हें बिल्ली नहीं कहा जाना चाहिए, क्योंकि वे बिल्लियों जैसी नहीं हैं। वे दहाड़ती हैं, घुर्राती हैं, और धुंआ निकालती हैं और किसी व्यक्ति या संपत्ति की रक्षा करती हुई किसी बिल्ली के लिये, कुछ भी चीज अधिक खतरनाक नहीं होती है। सियामी बिल्लियों के द्वारा बचाये जाने के सम्बंध में, अनेक जनश्रुतियॉ हैं, पूर्व में पैदा होती हुई अनेक जनश्रुतियॉ, इस सम्बंध में कि इस या उस बिल्ली ने, महत्वपूर्ण या बीमार व्यक्ति को कैसे बचाया। परंतु – काफी है। किसी भी दूसरे ने, बिना हमारी जानकारी के, हमारे अपार्टमेंट में घुसने का प्रयास नहीं किया। 'खतरनाक रंपा बिल्लियों' की कहानी आसपास चलती गई, और ऐसा प्रतीत होता है कि लोग, उन जंगली सियामी बिल्लियों से अधिक, जितना कि वे पागल कुत्तों से डरते हैं, उसकी तुलना में अधिक, घबराये हुए थे।

इसलिये ऐसा था या ऐसा होना चाहिए, अब ऐसा है, कि अब इतने अपंग बूढ़े आदमी के साथ, दो नन्हीं बिल्लियॉ, उसके बचाव में दौड़ने के लिये सदैव ही सजग रहती हैं।

ओह हॉ, हमारे प्रश्नों के बीच किसी महिला का एक प्रश्न है, जो पशुओं के सम्बंध में पूछती है। वह अभी कहॉ है ? आह, यहॉ! 'क्या आप हमें बता सकते हैं कि हमारे पालतू पशुओं के साथ, जब वे इस संसार को छोड़ते हैं, क्या होता है? क्या वे पूरी तरह से नष्ट हो जाते हैं, या अंततः वे मानवों के रूप में पुर्नजन्म लेते हैं। बाइबल हमें बताती है कि केवल मनुष्य ही स्वर्ग को जाते हैं। इस सम्बंध में आपका क्या कहना है?'

श्रीमती जी, मुझे इस सम्बंध में बहुत कुछ कहना है। बाइबल, सम्बंधित घटनाओं के घट जाने के बहुत समय बाद लिखी गई थी और बाइबल मूल लेखन भी नहीं है। ये किसी दूसरे अनुवाद के अनुवाद के अनुवाद का अनुवाद है, जो किसी राजा, या किसी राजनीतिक शक्ति, या किसी और के लिये उपयुक्त बनाये जाते हुए, फिर से अनुवादित किये गये थे। किंग जेम्स संस्करण (King James Edition)[4] पर विचार करें या इस संस्करण पर, उस संस्करण पर। बाइबल में लिखी गई काफी चीजें बेकार है। निस्संदेह मूल पवित्र ग्रंथों में काफी कुछ सत्य था, परंतु अब की बाइबल में तमाम चीजें, प्रेस के सत्य की तुलना में, अधिक सत्य नहीं हैं कोई भी जानता है कि इसमें कितनी गंदगी है।

बाइबल लोगों को सिखाती हुई प्रतीत होती कि वे सृष्टि के मालिक हैं, कि पूरा संसार आदमी के लिये रचा गया था। ठीक है, आदमी ने संसार का अद्भुत घपला किया है, किया है, न? वह जगह कहॉ है जहॉ

4 अनुवादक की टिप्पिणी : बाइबल के अनेक संस्करण हुए हैं जिसमें से किंग जेम्स संस्करण जिसे किंग जेम्स की बाइबल या अधिकृत संस्करण भी कहा जाता है, बाइबल का अंग्रेजी अनुवाद है, जो 1604 – 1611 के काल में इंग्लैंड के चर्च के लिए किया गया था। सबसे पहले इसे शाही मुद्रक, रॉबर्ट बार्कर (Robert Barker) द्वारा प्रकाशित किया गया था। यद्यपि लगभग 400 वर्ष पुरानी होने के कारण ये अभी पब्लिक डोमेन में है, परंतु फिर भी इंग्लैंड के राज्य का इस पर प्रकाशन अधिकार है, और इसको इंग्लैंड के शाही परिवार की ओर से केम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस (Cambridge University Press) और ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस (Oxford University Press) के द्वारा प्रकाशित किया जाता है। इसका एक संस्करण स्कॉटलैंड के शाही परिवार के अंतर्गत है, जिसका प्रकाशन रानी के प्रेस के द्वारा किया जाता है।

युद्ध या युद्ध की अफवाहें नहीं हुईं, वह जगह कहॉ है, जहॉ परपीड़न नहीं, कोई आतंक नहीं, कोई उत्पीड़न नहीं हुआ? यदि आप इसका उत्तर चाहते हैं तो आपको इस संसार से जाना पड़ेगा। परंतु अभी हम पशुओं, और उनके साथ जो होता है, उसकी बात कर रहे हैं।

पहले मामले में, प्राणियों में विभिन्न प्रजातियॉ होती हैं। मानव पशु हैं, भले ही आप इसे पसंद करें या न करें, मानव, भयानक, कुत्सित, अमित्रवत्, किसी भी दूसरे प्रकार के जानवरों की तुलना में अधिक दुष्ट प्रकृति के पशु हैं।

चूँकि मानवों के पास एक अंगूठा और उंगलियॉ होती हैं, वे अपने आपको कुछ निश्चित दिशाओं में विकसित करने में सफल हुए हैं, क्योंकि वे अपने हाथों का उपयोग, चीजों को बनाने में कर सकते हैं, और जो पशु नहीं कर सकते। मनुष्य एक अत्यंत सांसरिक विश्व में रहता है, और केवल उसपर विश्वास करता है, जिसे वह अपनी उंगलियों और अपने अंगूठे के बीच पकड़ सकता है। पशुओं को, अंगूठे न रहते हुए, और दो हाथों में किसी चीज को न पकड़ पाते हुए, आध्यात्मिकरूप से विकसित होना पड़ा, और अधिकांश पशु आध्यात्मिक हैं, वे तबतक हत्या नहीं करते, जबतक कि उनको खाने की परम आवश्यकता न हो, और यदि कोई बिल्ली किसी चूहे को 'आतंकित और प्रताड़ित करती है' – ठीक है, ये मनुष्यों का एक भ्रम है; चूहा इसके प्रति एकदम बेखबर होता है, क्योंकि वह सम्मोहित होता है, और कोई दर्द अनुभव नहीं करता। क्या आप उसे पसंद करते हैं?

तनाव के अंतर्गत, किसी आदमी के संज्ञान बेसुध हो जाते हैं, ताकि युद्ध के समयों में, उदाहरण के लिये, किसी आदमी के हाथ में गोली लगी हो सकती है, और बहुत हल्की सी सुन्नता को छोड़कर, वह कुछ भी अनुभव नहीं करेगा, वह इसे तबतक अनुभव नहीं करेगा जबतक कि रक्त की हानि उसे कमजोर न बना दे, या हवाई जहाज को उड़ाते हुए किसी व्यक्ति को, उदाहरण के लिये, कंधे पर गोली मारी जा सकती है, परंतु वह अपने हवाई जहाज को उड़ाता ही रहेगा और उसे सुरक्षापूर्वक नीचे उतार कर लायेगा, और वह केवल तभी, जबकि उत्तेजना समाप्त होती है, दर्द का अनुभव करेगा। हमारे चूहे के मामले में, उस समय तक चूहा कुछ और, तथा और अधिक अनुभव नहीं करता।

घोड़े, डैफोडिलों (daffodils) (एक प्रकार के पीले फूलों) के रूप में पुनर्जन्म नहीं ग्रहण करते। मार्मोसैट (Marmosets) (एक प्रकार के अफ्रीकी बंदर) किन्हीं भुनगों (maggots) के रूप पुनर्जन्म नहीं लेते, या इसका उल्टा भी। प्रकृति की जनता के, हर एक भिन्न पृथककृत खोल, जो दूसरों के आध्यात्मिक या सूक्ष्म शरीरी अस्तित्वों के साथ नहीं टकराते, में विभिन्न समूह हैं। इसका वास्तविक अर्थ ये है कि कोई बंदर, कभी भी, आदमी के रूप में पुर्नजन्म नहीं लेता है, आदमी कभी चूहे के रूप में पुर्नजन्म नहीं लेता, यद्यपि, स्वीकारतासहित, अनेक मनुष्य, अपनी आंतों की दृढ़ता की कमी के साथ, चूहे जैसे होते हैं, जो व्याख्या करने का एक अत्यंत नम्र तरीका है–ठीक है, आप जानते हैं, क्या।

तथ्य का, ये एक निश्चित कथन है कि, कोई पशु, मानव के रूप में पुनर्जन्म नहीं लेता। मैं जानता हूँ कि मानव भी पशु हैं, परंतु मैं स्वीकार्य, सामान्य रूप से स्वीकार्य, शब्द का उपयोग कर रहा हूँ। कोई मानवों का संदर्भ देता है, और कोई पशुओं का संदर्भ देता है, क्योंकि मनुष्य थोड़ा सा मक्खन लगाया जाना पसंद करते हैं, और इसलिये कोई बहाना करता है कि वे पशु नहीं, बल्कि प्राणियों की एक विशिष्ट आकृति हैं, ईश्वर के चुने हुओं में से एक–मानव। इसलिये–मानव पशु, दांत वाले पशु या बिल्ली की तरह चालाक पशु या घोड़े की तरह पशु के रूप में, पुनर्जन्म, कभी नहीं, कभी नहीं, लेता। और, हमारे पुराने मित्रो, फिर उल्टे क्रम में।

मानव पशु के पास, एक प्रकार का उन्नयन होता है, जिसे उसे समझ लेना चाहिए, वह, जो हम कहेंगे, समझने के लिये, एक भिन्न और आवश्यकरूप से समांतर नहीं, उन्नयन का एक प्रकार। इसलिये वे परस्पर परिवर्तनीय अस्तित्व नहीं हैं।

अनेक बौद्ध धर्मग्रंथ, मानवों के मकड़ी या शेर या कुछ वैसे रूप में भी वापस आने का संदर्भ देते हैं, परंतु वास्तव में, शिक्षित बौद्धों द्वारा इस पर विश्वास नहीं किया जाता है। ये अनेक शताब्दियों पहले, गलतफहमी के रूप में, अधिकांशतः उसी तरह प्रारंभ हुआ था, जैसे कि फादर क्रिसमस के सम्बंध में, या चीनी और मसालों और सभी बढ़िया चीजों से बनी हुई नन्हीं लड़कियों के सम्बंध में एक गलतफहमी है। आप और मैं, जानते हैं कि सभी नन्हीं लड़कियॉ अच्छी नहीं होतीं; उनमें से कुछ बहुत अच्छी होती हैं, उनमें से कुछ एकदम दुर्गन्ध फैलाने वाली होती हैं,

परंतु, वास्तव में, आप और मैं, केवल अच्छी वालियों को जानते हैं, जानते हैं न?

जब एक मानव मरता है, मानव, सूक्ष्मलोक, जिसके सम्बंध में हम बाद में कुछ अधिक कहेंगे, को जाता है, और जब एक पशु मरता है, वह भी सूक्ष्मलोक, वहॉ जहॉ पूर्ण समझ है, वहॉ जहॉ उनके बीच पूर्ण सद्भाव है, को जाता है, जहॉ वह अपने ही प्रकार के दूसरों के द्वारा मिलाया जाता है। मानवों के मामलों के समान, पशुओं को, उनके द्वारा, जिनके साथ वे अनुशीलनीय नहीं हैं, परेशान नहीं किया जा सकता, और अब इसका ध्यान से अध्ययन करें; जब एक व्यक्ति, जो किसी पशु को प्यार करता है, मरता है, और वह सूक्ष्मलोक में जाता है, तो वह व्यक्ति (अपने) प्रिय पशु के साथ संपर्क में हो सकता है, यदि उनके बीच पूर्ण प्रेम हो, तो वे साथ भी हो सकते हैं। इससे आगे, यदि मानव अधिक दुरानुभूति वाले होते, यदि वे अधिक विश्वास करने वाले होते, यदि वे अपने मनों को खोलते और प्राप्त करते, तब प्रिय पशु, जो गुजर चुके थे, मानवों के गुजरने के पहले भी, मानवों के साथ संपर्क रख सकते थे।

मुझे आपको कुछ चीज बताने दें; मेरे पास अनेक नन्हें लोग हैं, जो गुजर चुके हैं, और मैं अभी भी, पूरे निश्चय के साथ, उनके साथ संपर्क में हूँ। एक छोटी सियामी बिल्ली है, सिंडी (Cindy), जिसके साथ में दैनिक संपर्क में हूँ, और सिंडी ने मुझे प्रचुर मात्रा में मदद की है। वास्तव में, पृथ्वी पर उसका समय बहुत खराब था। अब वह मददगार है, मददगार है, हमेशा मददगार रही है। वह पूरी तरह से उतना कर रही है, जितना कि दूसरी तरफ का कोई भी, किसी इस तरफ वाले लिये कर सकता है।

वे, जो अपने तथाकथित पालतू जानवरों को, यथार्थ में प्रेम करते हैं, सुनिश्चित हो सकते हैं कि जब ये जीवन, दोनों के लिये समाप्त हो जायेगा, तो वह फिर से एक साथ आयेंगे, परंतु यह वैसा ही नहीं है।

जब मानव पृथ्वी पर हैं, वे एक अविश्वासी बेड़ा, सनकी, कठोर, विरक्त और बाकी सबकुछ हैं। जब वे दूसरी तरफ जाते हैं, वे एक या दो झटके खाते हैं, जो उनको ये अनुभव करने के लिये सक्षम बनाता है कि, वे सृष्टि के स्वामी नहीं हैं, जैसा कि उन्होंने सोचा था कि वे थे, परंतु वे केवल ईश्वरीय योजना का एक अंश मात्र हैं। दूसरी तरफ, वे अनुभव करते हैं कि दूसरों के भी अधिकार हैं, जब वे दूसरी तरफ जाते हैं, वे पाते हैं कि वे पशुओं, जो भी दूसरी तरफ हैं, के साथ पूरी तरह स्पष्टता के साथ बात कर सकते हैं, और पशु, किसी भी भाषा में जिसका वे उपयोग कर सकते हैं, उन्हें उत्तर देते हैं। मानवों पर ये सीमा रेखा है कि, पृथ्वी पर रहते हुए, उनमें से अधिकांश, दुरानुभूतिपूर्ण नहीं होते, उनमें से अधिकांश, पृथ्वी पर रहते हुए, तथाकथित पशुओं के लक्षणों, क्षमताओं और शक्तियों के प्रति जागरुक नहीं होते। परंतु जब वे गुजरते हैं, उन्हें ये पूरी तरह स्पष्ट हो जाता है, और तब मानव एक ऐसे जन्मान्ध व्यक्ति की तरह होते हैं, जो सहसा ही देख सकता है।

हॉ, पशु स्वर्ग को जाते हैं, वास्तव में, ईसाई स्वर्ग को नहीं, परंतु ये कोई क्षति नहीं है। पशुओं का एक यथार्थ स्वर्ग होता है, चिड़ियों के पर के पंखों वाला कोई देवदूत नहीं, ये एक यथार्थ स्वर्ग है, और उनके पास एक मनु या ईश्वर होता है, जो उनकी देखभाल करता है। मनुष्य, दूसरी तरफ जो कुछ भी उपलब्ध कर सकता है या पा सकता है, वही एक पशु भी, कर या पा सकता है– शांति, शिक्षा, प्रगति– कुछ भी और हर चीज।

पृथ्वी पर, मनुष्य वर्चस्व वाली प्रजाति का होने की स्थिति में है, भयानक हथियारों, जो उसके पास हैं, के कारण वर्चस्वशील। हथियारहीन मनुष्य का, दृढ़संकल्पित कुत्ते के साथ कोई मुकाबला नहीं; किसी कृत्रिम विधि के द्वारा हथियारों, जैसे कि बंदूक से सुसज्जित आदमी, कुत्तों के पूरे झुंड के ऊपर वर्चस्व बना सकता है, और ये केवल आदमी की क्रूरता के माध्यम से ही है कि पशुओं के साथ दूरानुभूति संप्रेषण की शक्ति नष्ट हो गई; आप जानते हैं कि यही बाबेल की मीनार[5] की वास्तविक कहानी है। सामान्य उपयोग के लिये, मानव जाति दूरानुभूतियुक्त थी, और मानव जाति, जब वे नहीं चाहते थे कि पूरा का पूरा समुदाय जान सके कि क्या कहा जा रहा है, केवल तभी अपने परिवार के सदस्यों के साथ संप्रेषण के लिये, स्थानीय भाषाओं में बोली का प्रयोग करती थी। परंतु, तब आदमी ने, पशुओं को मिथ्या दूरानुभूति के द्वारा, झूठे वायदों के द्वारा लुभाते हुए फंदे में फसाया। परिणामतः दंड स्वरूप, मानव जाति ने दूरानुभूति की क्षमता खो दी, और अब इस पृथ्वी पर केवल कुछ ही, और हम में से वे, जो अंधों के देश में एक दृष्टिवान व्यक्ति की तरह से हैं, लोग दूरानुभूतिमय हैं।

ठीक है, श्रीमती जी, आपके पत्र के प्रश्न का, संक्षेप में देने के लिये उत्तर है– नहीं, मानव पशुओं के रूप

---

5 अनुवादक की टिप्पिणी : जेनेसिस (Genesis 11: 1-11), में कहा गया है कि नूह (Noah) के वंशजों, जो स्वर्ग को जाना चाहते थे, ने सम्भवतः बेबीलोन में एक मीनार बनाई; ईश्वर ने उनकी भाषा के अन्दर भ्रम पैदा करके उन्हें एक दूसरे की बात समझने में अक्षम बना दिया, फलतः वे स्वर्ग नहीं जा सके।

में पुनर्जन्म नहीं लेते, पशु मानवों के रूप पुनर्जन्म नहीं लेते। हॉ, पशु स्वर्ग को जाते हैं, और यदि आप, अपने पालतू पशु को यथार्थ में प्यार करते हैं, यदि आपका प्यार वास्तव में प्यार है, और मात्र स्वार्थ, वर्चस्व बनाने या कब्जा करने की अनजान इच्छा नहीं है, तो गुजर जाने के बाद, आप साथ हो सकते हैं। और, अंततः इस विषय में, पशु कोई निम्न श्रेणी की प्रजातियॉ नहीं हैं। मानव काफी संख्या में ऐसी चीजों को कर सकते हैं, जो पशु नहीं कर सकते। पशु काफी संख्या में ऐसी चीजों को कर सकते हैं, जिन्हें मानव नहीं कर सकते। वे भिन्न हैं, इसके लिये यही सब कुछ है,– वे भिन्न हैं, परंतु निम्न कोटि के नहीं।

अब, इतने सुख के साथ आराम करती हुई कुमारी क्लियो ने उन पारदर्शी नीली आंखों के साथ ऊपर को देखा और एक दुरानुभूति संदेश भेजा : 'काम की ओर, हमें काम करना है, अन्यथा हम नहीं खाते।' ऐसा कहते हुए वह भव्यता के साथ उठी और अत्यंत नजाकत के साथ टहलने के लिये चली गई। बूढ़ा आदमी, एक कराह के साथ, दूसरे पत्र की ओर मुड़ा और एक दूसरा प्रश्न।

'क्या मरते हुए पशुओं को उच्चतर साम्राज्यों में भेजने के लिये कुछ मंत्र हैं, और यदि ऐसा है, तो वे मंत्र क्या हैं?'

मानवों से पशुओं तक, किसी मनुष्य को, मंत्रों की आवश्यकता नहीं है; ठीक वैसे ही, जैसे कि मानवों के पास, जीवन के दूसरी ओर, मरते हुए व्यक्ति को, सूक्ष्मलोक में, फिर से, वापस जन्म लेने में सहायता करने के लिये प्रतीक्षारत, अपने खुद के सहायक होते हैं, वैसे ही पशुओं के भी, अपने खुद के सहायक होते हैं। इसलिये मरते हुए पशुओं की सहायता करने के लिये, उनका सूक्ष्मलोक में प्रवेश कराने के लिये आवश्यक, कोई मंत्र नहीं हैं। कैसे भी, ऐसी चीजों के बारे में, अंतःप्रेरणा या पूर्वज्ञान से, मनुष्यों की तुलना में पशु बहुत अधिक जानते हैं।

कोई उसे मदद करने को तैयार हो, उससे पहले, जबतक कि पशु मर नहीं रहा हो, किसी को प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए। किसी पशु को मदद करने का सबसे अच्छा तरीका है, जबकि वह इस पृथ्वी पर जीवित और ठीक है, क्योंकि पशु सुंदर प्राणी होते हैं, और कोई भी पशु खराब या पतित नहीं होते, जबतक कि उन्हें मानवों के सचेतन या किसी और तरीके के खराब व्यवहार द्वारा, बुरा या पतित नहीं बना दिया जाये। मैं अनेक बिल्लियों को जानता हूॅ, और मैंने कभी भी, ऐसी किसी बिल्ली को नहीं जाना, जो स्वभावतः पतित या बुरे स्वभाव की हो। यदि कोई बिल्ली मानवों या अधिक संभव है, मानवों के बच्चों के द्वारा के द्वारा सतायी गई है, तब वास्तव में, वह बचाव का कोई तीखापन ग्रहण करती है, परंतु शीघ्र ही, थोड़ी सी दया के साथ, वह पूरा का पूरा चला जाता है, और तब किसी के पास, फिर से, नम्र, समर्पित पशु होता है।

आप जानते हैं, कि सियामी बिल्लियों के सम्बंध में, काफी लोग, ये कहते हुए कि वे कितनी तीखी, कितनी विध्वंसकारी होती हैं, हर चीज कितनी खराब है, विकट रूप से दहशत में होते हैं। ये सत्य नहीं है, और इसमें सत्य का एक भी शब्द नहीं है। कुमारी क्लियोपेट्रा और कुमारी टाडालिंका, हमें परेशान करने के लिये, कभी भी, कभी भी, कुछ नहीं करतीं। यदि कोई चीज हमें परेशान करती है, तब हम मात्र ये कहते हैं, 'ओह! क्लियो! इसे मत करो!' और वह उसे फिर दोबारा नहीं करती। हमारी बिल्लियॉ फर्नीचर या पर्दों को नहीं फाड़तीं क्योंकि हमारी उनके साथ एक संधि है; हम उन्हें आसानी से बनाया हुआ, एक नोंचने वाला खंबा प्रदान करते हैं, वास्तव में हमारे पास दो हैं। वे एक चौकोर पायदान पर मजबूती से खड़े किये गये मजबूत खंबे हैं, दोनों भारी गलीचों के द्वारा ढंके गये हैं, पुराने गंदे गलीचे नहीं, जिन पर किसी ने कूड़े करकट का डोल उड़ेल दिया हो, परंतु, वास्तव में, काटे गये नये गलीचे, ठीक है, ये गलीचे बिछाने का काम, खंबों पर सुनिश्चितता के साथ किया गया है, और खंबों के शिखरों पर, एक बिल्ली के बैठने के लिये कुछ जगह है।

क्लियोपेट्रा और टाडालिंका, दिन में कई बार, अपने खरोचनें वाले खंबों तक जाती हैं और वे ऐसी लंबी खरोंच बनाती हैं कि वह किसी को, केवल दिखकर अच्छा अनुभव कराता है। कई बार वे शिखर पर कूदने के बजाय, खंबे पर ऊपर चढ़ जायेगीं, और ये उनकी मांसपेशियों के लिये बहुत अच्छा है, और उनके पंजों के लिये बहुत अच्छा है। इसलिये हम उन्हें खरोचनें वाले खंबें उपलब्ध कराते हैं, और वे हमें शांति उपलब्ध कराती हैं, क्योंकि हमें किसी भी फर्नीचर या पर्दों के लिये डरना नहीं पड़ता।

एक बार मैंने बिल्लियों से सम्बंधित उक्तियों और बिल्लियों की सत्य कहानियों के सम्बंध में एक पुस्तक लिखने की सोची। मैंने प्रेम किया, परंतु लगातार बढ़ता हुआ बुढ़ापा, इसे असम्भाव्य बना देता है कि शायद मैं कभी लिखूंगा। मैं ये बताना चाहूंगा, उदाहरण के लिये, कैसे, दूसरे विश्व में, सौर प्रणाली से काफी दूर हटे हुए दूसरे तंत्र में, बिल्लियों की एक ऊंची सभ्यता थी। उन दिनों में, वे अपने अंगूठों का उपयोग, जैसे कि मानव कर सकते

थे, कर सकती थीं परंतु, जैसे कि मनुष्य आजकल कर रहे हैं, वे भव्यता से गिर गईं और उनके पास, एक प्रजाति जो अभी पैदा होनी थी, को मदद करने के लिये, फिर से नया चक्र प्रारंभ करने या किसी दूसरे तंत्र में जाने में से एक ही चुनाव था।

बिल्लियॉ, दयालु और समझदार प्राणी होती हैं, और इसलिये बिल्लियों की पूरी प्रजाति तथा बिल्लियों के मनु ने, उस ग्रह, जिसे हम पृथ्वी कहते हैं, पर आने का तय किया। वे मानवों की निगरानी करने, और दूसरी तरफ के क्षेत्रों को, कुछ कुछ टेलीविजन के कैमरे के समान, हर समय निगरानी करते हुए, मानवों के व्यवहार के सम्बंध में सूचना देने के लिये आईं थीं, परंतु वे मानवों को नुकसान पहुॅचाने के लिये नहीं, बल्कि उन्हें मदद करने के लिये, निगरानी करती हैं, और सूचित करती हैं। बहतर क्षेत्रों में, लोग, चीजों की सूचना, हानि पहुॅचाने के लिये नहीं देते, वरन् केवल इसलिये देते हैं, ताकि कमियॉ पूरी की जा सकें।

स्वाभाविकरूप से, बिल्लियॉ स्वतंत्र हो गईं, ताकि उन्हें दुलार के द्वारा डिगाया न जा सके। वे छोटे प्राणियों के रूप में आईं, ताकि मानव उनको, मानवों की प्रकृति के अनुसार, दयालुता या कठोरता का व्यवहार दे सकें।

बिल्लियॉ हितकारी होती हैं, पृथ्वी पर एक अच्छा प्रभाव। बिल्लियॉ, इस विश्व के महान अधिस्वयं का प्रत्य क्ष विस्तार हैं, सूचनाओं का स्रोत, जहॉ विश्व की परिस्थितियों के द्वारा अधिकांश सूचनायें विकृत हो जाती हैं।

बिल्लियों के साथ मित्रवत् बनें, उनके साथ दयालुता का व्यवहार करें, उनमें, ये जानते हुए कि किसी भी बिल्ली ने, कभी भी, किसी व्यक्ति को जानबूझकर नुकसान नहीं पहुॅचाया है, विश्वास रखें, वल्कि अनेक अनेक बिल्लियॉ, मानवों की मदद करते हुए मर गई हैं।

ठीक है, कुमारी टाडालिंका, एक दूरानुभूति संदेश के साथ, अभी तेजी से दौड़ती हुई अंदर आई, ''हे, गुव, अनुमान लगाओ कि क्या है? आज तुम्हारे लिये अठहत्तर पत्र हैं!'' अठहत्तर पत्र! अभी समय है कि मैं कुछ को, जो प्रतीक्षा में है, उत्तर देने के लिये, नीचे जाता हूॅ।

अध्याय – तीन

सही मार्ग पास में ही है, फिर भी मानवता उसे दूर तलाशती है।

'आज के दिन ल्हासा में जीवन कैसा है? क्या नवदीक्षित अपनी 'तीसरी ऑख' खोले हुए हैं? उन सब लोगों के साथ, जिनका आपने पहली पुस्तक में वर्णन किया था, क्या हुआ?'

लाल चीन के आतंकवादी शासन के अंतर्गत 1970 का ल्हासा, चीनी अतिक्रमण से पहले के समय के ल्हासा से बहुत–बहुत अलग है। लोग लुके–छिपे हैं। लोग, अपने सबसे करीबी पहचान वाले से भी बात करने का प्रयास करने से पहले, अपने दाये–बाये देखते (look over their shoulders) हैं। गलियों में अब भिखारी नहीं हैं; या तो उनके कानों में कीलें ठोक दी गईं है और काफी लंबे समय से मरे हुए हैं, या उन्हें बलात् मजदूरी करने के लिये भेज दिया गया है। औरतें प्रसन्नचित्, बेफिक्र लोग नहीं हैं, जो वे हुआ करती थीं। अब चीनी वर्चस्व वाले तिब्बत में, औरतों का चीनी आदमियों के साथ, जिनको चीन से निष्कासित किया जा रहा है, और प्रथम कॉलोनी नागरिक होने के लिये तिब्बत को भेजा जा रहा है, बलपूर्वक सहवास कराया जाता है।

चीनी लोग जाति–संहार (genocide) के दोषी हैं, वे तिब्बती राष्ट्र की हत्या करने का प्रयास कर रहे हैं। चीनी आदमी, चीन में, अपने परिवारों से अलग कर दिये गये, और कठोर मिट्टी को जोतने, और कैसे भी जीवन की व्यवस्था बनाने के लिये, तिब्बत को भेज दिये गये, अनिच्छुक औरतों के साथ सहवास करने के लिये और अर्द्धसंकरों, आधे चीनी और आधे तिब्बती प्रजाति का पिता होने के लिये तिब्बत को भेज दिये गये। जैसे ही कोई बच्चा पैदा होता है, उसे माता–पिता से ले लिया जाता है और उसे सामुदायिक गृह में रखा जाता है जहॉ जैसे जैसे वह बड़ा होता है, उसे सभी तिब्बती चीजों से घृणा करना और सभी चीनी चीजों की पूजा करना सिखाया जाता है।

तिब्बती आदमियों के साथ ऐसा व्यवहार किया जा रहा है, ताकि वे और अधिक समय तक आदमी न बचें, ताकि वे आगे कभी पिता न बन सकें। अनेक आदमी और अनेक औरतें भी, शायद, भारत या शायद, ऊॅची पहाड़ी कंदराओं में, जहॉ चीनी सेनायें नहीं चढ़ सकतीं, की ओर पलायन कर चुके हैं। तिब्बती प्रजाति मरेगी नहीं, तिब्बती प्रजाति जारी रहेगी। ये दुखपूर्ण बात है कि अब भारत में, उच्चश्रेणी के तिब्बती, तिब्बती लोगों को बचाने की अभिरुचि में आन्दोलित नहीं होते।

एक समय में मुझे एक शौकपूर्ण आशा थी कि उच्च पदस्थ इन लोगों में से कुछ अपने छोटी ईर्ष्याओं और छोटी घृणाओं को एक तरफ रख देंगे और वे शायद मेरे साथ सहयोग करेंगे। मेरे पास लंबे समय से, संयुक्त राष्ट्र संघ के सामने, तिब्बती के प्रतिनिधि के रूप में बोलने की महान इच्छा थी। मैं गूंगा नहीं हूॅ, मैं अनपढ़ नहीं हूॅ, मैं पूर्व के पक्ष को जानता हूॅ और मैं पश्चिम के पक्ष को भी जानता हूॅ और अभी बंदी बनाये गये लोगों की ओर से, विश्व के स्वतंत्र लोगों के साथ अपील करते हुए, संपूर्ण प्रजाति को समाप्त करने वाले सभी निश्चित प्रयासों का सामना करते हुए, तिब्बत की सेवा करना, ये मेरी लंबे से चल रही सर्वाधिक उत्कट इच्छा है। परंतु दुर्भाग्यवश मुझसे अनेक चीजें बुलाई गईं और भारत में सुखपूर्वक रहते हुए उच्च पदस्थ आकाओं ने, मुझे तिब्बत को बचाने के सम्बंध में कुछ करने लायक नहीं समझा। तथापि, ये अलग मामला है, और 'एक मनुष्य की महत्वाकांक्षा' है, एक महत्वाकांक्षा, यद्यपि, जो पूरी तरह से निस्वार्थ है, क्योंकि, मैंने स्वयं के लिये कुछ नहीं चाहा।

मेरी पुस्तकें सत्य हैं, उनमें से प्रत्येक, वे पूरी तरह से सत्य हैं, परंतु दुर्भाग्यवश, प्रेस ने मुझ पर हमला करना ठीक समझा, और कुल मिलाकर, प्रेस के लिये ये इतना अधिक आसान है, सत्य को स्वीकार करने की अपेक्षा इतना अधिक सनसनीखेज, किसी आदमी को खींचने का प्रयास करना, और किसी भी चीज में से, जो अस्तित्व में नहीं है, कोई अवाधित और हिंसक कहानी बनाने का प्रयास करना। वर्षों में पीछे झांकते हुए, मुझे ऐसा लगता है कि वे उच्च श्रेणी वाले भारत के तिब्बती, अब वहॉ विचारणीय सुख के साथ रहते हुए, इस गलतफहमी के विचार के साथ कि यदि उन्होंने ऐसा किया तो वे प्रेस का समर्थन खो बैठेंगे, मेरा समर्थन करने में डरते हैं। प्रेस की चिंता कौन करता है, कैसे भी? मैं नहीं करता!

लोग, जिनको मैं तिब्बत में जानता था? उनमें से अधिकांश उच्च पदस्थ मारे जा चुके हैं, मृत्यु तक प्रताड़ित किये गये हैं। उदाहरण के लिये, तिब्बत के प्रधानमंत्री को, ल्हासा की गलियों में होकर, एक तेज कार के पीछे घसीटा गया था, उसके एक टखने के चारों ओर एक रस्सा बांधा गया, रस्से का दूसरा सिरा कार के पीछे

बांधा गया। कार में हंसी उड़ाने वाले चीनी सवार थे, और एक प्रमुख व्यक्ति को गलियों में होकर खींचना, घसीटना प्रारंभ किया गया, और जबतक खून के साथ कच्चा लाल नहीं निकल आया, उसे चट्टानी सड़कों पर पलटते और मरोड़ते हुए, उसकी नाक को तोड़ते हुए, उसके कानों को काटते हुए, दूसरी चीजों को फाड़ते हुए, कूड़े के ढेर पर कुत्तों के भक्षण करने के लिये, केवल उछाल कर एक ओर फेंक दिया गया।

औरतें, जिनको मैं जानता था? ठीक है, उनकी पुत्रियों के साथ, उनके परिवारों के सामने भी, सार्वजनिक रूप से बलात्कार किया। अनेक प्रबुद्ध औरतें, चीनी सेनाओं के लिये, वेश्यागृहों में जाने के लिये बाध्य की गईं। इन घटनाओं के बारे में सूची काफी लंबी खिंच सकती है, परंतु इसकी कोई तुक नहीं है।

ऊंची रियासतों के कुछ कायर आदमी, चीनी मांगों के समक्ष झुक गये और उनकी प्रत्येक सनक को मानते हुए, उनकी नकल करते हुए, उनके सामने गिड़गिड़ाते हुए, और विश्वास की स्थितियों में बने रहते हुए जब तक के उनके स्वामी उनसे थक नहीं गये, और उन्हें मिटा नहीं दिया, चीनियों के पिछलग्गू बन गये।

फिर भी, दूसरे लोग, चीनियों के विरुद्ध लड़ाई जारी रखने के लिये पहाड़ों में पलायन कर गये। वास्तव में अनेक, भारत चले गये। ठीक है, ये उनकी पसंद है, परंतु फिर विचार आता है– भारत में सुरक्षित बड़े लोगों ने, उन लोगों, जो सुरक्षित नहीं थे, की मदद करने के लिये, कुछ क्यों नहीं किया ?

बड़े मंदिरों में, और स्वयं पोटाला में, सोने की छत को बनाने वाली सभी चादरें उखाड़ दी गईं और चीन को ले जायी गई, जहॉ संभवतः सोने को गला दिया गया या उसे धन या किसी चीज में बदल दिया गया। पवित्र आकृतियों को, उनके सोने और चांदी के लिये गला दिया है, अमूल्य रत्न हटा दिये गये हैं, और चीन ले जाये गये हैं, और दूसरी चीजें, पुस्तकें और हस्तलिपियां, चित्रण और नक्काशियां, बड़ी होली के ऊपर उछालकर जला दी गई हैं, और इसके साथ ही, हानिरहित, भोले–भाले देश का, केवल मानवजाति की भलाई के लिये समर्पित इतिहास, पूरा का पूरा जल चुका है।

बौद्धमठ, अब वेश्यागृह या बैरक हैं। भिक्षुणियों के मठ– ठीक है, चीनी लोग उन्हें तैयारशुदा वेश्यागृह समझते हैं। सशस्त्र सैनिकों का रास्ता आसान बनाने के लिये प्राचीन स्मारक तोड़ दिये गये हैं।

ल्हासा शहर, अब आतंक की राजधानी है, जहॉ लोग प्रताड़ित किये जाते हैं, उनकी हत्या की जाती है, बिना कारण जानते हुए कि क्यों? जो कुछ भी सुंदर था, उसे नष्ट कर दिया गया है। जब तक जागरूक आदमी समय रहते इनको बचा नहीं पाये, और कष्ट सहित उन्हें पहाड़ी शरणस्थलियों, जहॉ वे आगामी पीढ़ियों के लिये भंडारित की जा सकें, की ओर नहीं ले जा सके, सब कुछ जो सुंदर था, नष्ट किया जा चुका है। तिब्बत फिर उठेगा, अंतिम युद्ध न होने तक, कोई युद्ध अंतिम नहीं होता, और केवल अंतिम युद्ध ही निर्णायक होता है। तिब्बत फिर से उठेगा। शायद वहॉ कोई शक्तिशाली आदमी उभरेगा, जो एक महान शासक होगा। शायद ये उनको, जिन्होने अभी केवल पलायन में सुरक्षा और सुख चाहा, फिर से पुनर्जीवित करेगा।

तिब्बत को अब बड़ी सड़कों, मजदूरों, जो ऊंची बंजर भूमि में, किसी प्रकार की व्यवस्था बनाने का प्रयास कर रहे हैं, को निवास देती हुईं, बड़े बैरकों जैसी इमारतों से घेर दिया गया है। ये कोई प्रसन्नता वाला कार्य नहीं है, क्योंकि, चीनी आदमी, जिनको अपनी खुद की इच्छाओं के विरुद्ध, प्रवासी या उपनिवेशवासी होने के लिये, जबरदस्ती ढेला गया है, देश से घृणा करते हैं, लोगों से घृणा करते हैं। वे सभी अपने खुद के घरों में, अपने खुद के परिवारों में लौट जाने की इच्छा रखते हैं। परंतु तिब्बतियों के साथ, निम्न–मानवों जैसा व्यवहार किया जाता है, चीनी उपनिवेशवासियों से कैदियों की भांति व्यवहार किया जाता है, और उन्हें उनकी इच्छा के विरुद्ध तिब्बत में रखा जाता है, कोई, जो भागने का प्रयास करते हैं, उन्हें यातनाऐं दी जाती हैं, और सार्वजनिकरूप से फॉसी दी जाती है।

इस बीच, विश्व के राष्ट्र, अपने खुद के दैनिक व्यापार –कोरिया, वियतनाम, इजराइल, अरब देशों, अफ्रीका, चीनी / रूसी सीमाओं पर, और थोड़े से दूसरे स्थानों पर भी यहॉ और वहॉ होते हुए कुछ युद्धों के बारे में चलाते रहते हैं। परंतु यदि शायद, वहॉ, विश्व के अधिक कुटिल राष्ट्रों में कुछ की कोई उपयुक्त आवाज होती, तो वह, तिब्बत के एक अधिकृत प्रतिनिधि, जो लिखे हुए शब्द के द्वारा, कहे हुए शब्द को बढ़ा सकता था, जो संयुक्त राष्ट्र संघ के सामने खड़ा हो सकता था, जो टेलीविजन पर दिख सकता था, और जो लिख सकता था और लिख सकता था, आहत लोगों की मदद के लिये, इससे पहले कि बहुत विलंब हो जाये, के तर्क को सुनती।

गलियारे से, दूने अधिक समय (double overtime) के बाद वाले, एक शहरी साड़ के दहाड़ने जैसी आवाज आई। दरवाजे पर एक कुचलन (हुई) और बड़े डीलडौल वाला एक पड़ौसी, धम्म से आकर अंदर बैठ गया। चेहरा,

डूबते हुए सूरज की तरह दमकता हुआ, वह एक कुर्सी पर एक धमक, जो इमारत को हिलाती हुई लगी, के साथ आकर बैठ गया। 'जानते हो क्या?' वह गुस्से में चिल्लाया; वे –जो हेलीफेक्स (Halifax) में हैं, मेरे किराये को बढ़ाना चाहते हैं!

बूढ़ा आदमी, बिस्तर में संभल कर बैठा, 'हेलीफेक्स' के सम्बंध में कहने के लिये, कुछ अच्छे शब्द सोचने का प्रयास किया परंतु उसे मानना पड़ा कि **हर चीज**, दूध, किराया, डाक खर्चे, भाड़ा, कार्य, ऊपर जा रही है,!

जीने के नीचे, मुख्य लॉबी में, अधीक्षक, एंगस रॉबीचॉड (Angus Robichaud), ने गलीचे को साफ करने में कठिन परिश्रम किया। अत्यधिक से भी ज्यादा करने के लिये, और सर्वाधिक उत्तरदायित्वों से भी काफी परे, करने को इतना अधिक था। एंगस रॉबीचॉड एक भला आदमी है, एक वफादार आदमी, और एक वह, जो उसके नियोजक मांग करते हैं, और उतना अधिक, जितना कि वह अपने किरायेदारों के लिये कर सकता है, करने के बीच, संकीर्ण पथ को सफलतापूर्वक बनाता है। एक उस प्रकार का एक विरला आदमी, जिसे पाना अब लगातार मुश्किल होता जा रहा है।

अधीक्षक के अपार्टमेंट में, उसकी पत्नी श्रीमती रॉबीचॉड, परस्पर विरोधी टेलीफोन वार्ताओं के बीच, शांति और विवेक बनाये रखने के लिये लड़ रही थी। 1027 वाली श्रीमती स्नाइलत्सेलहीमर (Mrs.Schnitzelheimer) टेलीफोन पर बद्मिजाजी से कह रही थी : 'मैं ये कहना चाहती हूँ कि हां, आप बंद कर दें। मेरा पति, वह कहता है कि उसे उसकी खाल पर जला दिया है, और ये बहुत अधिक है। जैसे ही वह एक बद्मिजाज जोश के साथ जुड़ी, वैसे ही फोन फिर से बजा। 'श्रीमती जी, आप अपने पति को, उस गर्मी को एकदम जल्दी तेजी से लौटाने के लिये कहें, या मैं अपने बॉस को फोन करती हूँ, और शिकायत करती हूँ। आप क्या सोचती हैं, मैं यहॉ किराया देती हूँ, एह? क्या ठंड में जमाने जाने के लिये?'

हर चीज ऊंची जा रही है? बूढ़े आदमी ने अनुमान लगाया कि श्रीमान् रॉबीचॉड का वेतन नहीं (ऊंचा जा रहा था)। कितना तरस, उसने सोचा कि इन अपार्टमेंट के स्वामियों में से कुछ, ऐसे अंधे थे कि उन्होंने एक आदमी को इमारत, जिनको बनाने में लाखों लगते है– का प्रभारी बना दिया था, और शायद, उसे मुश्किल से ही शरीर और आत्मा को एक साथ रखने के लिये पर्याप्त देते हैं। हॉ, उन लोगों के लिये, जिनके पास पहले से ही काफी था, धन कमाने के लिये कीमतें ऊॅची जा रही थीं!

वेतन? वेतन? हर चीज की कीमत ऊपर जा रही है? हॉ, ये एक अच्छा प्रश्न है। मुझे पूछा जाता है कि गूढ़ विज्ञानी को, सलाह देने के लिये, सूचना के लिये, भुगतान की आशा क्यों करनी चाहिए। गूढ़ विज्ञान के लिये पैसा लेना गलत है।

ठीक है, श्रीमती अमुक अमुक, आप अपने वकील के पास जायें या अपने डॉक्टर के पास या अपने खाद्य भंडार में या आप जहॉ चाहें, कहीं भी जायें और यदि आप किसी चीज की अपेक्षा करती हैं, आपको उसके लिये भुगतान करना पड़ेगा। आपके वकील को अपने प्रशिक्षण के लिये काफी धन का भुगतान करना पड़ा है, विद्यार्थी और एक स्नातक वकील के रूप में, उसने काफी कठोर दिन पाये हैं। उसने ज्ञान में, विशिष्ट ज्ञान में, धन और समय का निवेश किया और वह आशा करता है, और अपने निवेश के ऊपर उचित लाभ पाने की, ठीक ही आशा करता है।

आपके डॉक्टर को भी, चिकित्सा विद्यार्थी के रूप में, कठिनाई के अनेकों वर्ष पाने पड़े हैं। उसे अध्ययन करना पड़ा है, उसे वार्डो में चक्कर लगाने पड़े हैं और तब उसे चिकित्सा की कठोर परीक्षा, कि वह कितना जानता है और कितना कम जानता है, पास करनी पड़ी है, और यदि वह डॉक्टर के रूप में कुछ अच्छा है, वह अभी भी पढ़ रहा है, अभी भी, चालू विकासों के साथ बनाकर रख रहा है, अभी भी, शोध के परिणामों के सम्बंध में पढ़ रहा है। उसने अपने अध्ययन में काफी धन व्यय किया है, भविष्य में निवेश किया है, और वकील की भांति, एक शेयर के दलाल की भांति, किसी भी दूसरे की भांति, वह अपने निवेशों के ऊपर समुचित लाभ पाने की अपेक्षा करता है।

स्थानीय भंडार को जाने, और किराना मुफ्त पाने का प्रयास करें। दुकानदार को ये बतायें कि इतना सारा खाना अपनी अलमारियों में रखना, जबकि आपके पास कुछ भी नहीं है, उसे बतायें कि – उसके पास इतना खाना और आपके पास बिलकुल नहीं होते हुए– आपसे पैसा वसूलना, अपराध है। इसे करें, और शायद आप अपने आपको, एक असंतुलित मानसिकता वाला होने के कारण, स्थानीय मानसिक चिकित्सालय में धकेले जाते हुए पायेंगे।

असली गूढ़ विज्ञानी या अधिभौतिकी विज्ञानी– जो मैं हूँ– ने सीखने और पीड़ा झेलने में, लंबा समय खर्च किया है। उसी रूप में, जबकि हम प्रसन्नतापूर्वक, जो कुछ भी करते हैं, हम लोगों की मदद करते हैं, हमारे पास अभी भी, जीने, खाने, कपड़े पहनने का अधिकार है, वैसे ही हम पैसा लेते हैं। अपने डॉक्टर, अपने किराने वाले, या अपने वकील को पूछें, क्या ये सही नहीं है।

उसी पत्र में एक दूसरा प्रश्न है; शायद हमें इसी समय उसके साथ व्यवहार करना चाहिए; जो उपर्युक्त टिप्पणियों के लिये उपयुक्त है।

प्रश्न है – मैं बैंकुवर में रहा हूँ और मैं ब्रिटिश कोलंबिया में रहता हूँ और वहाँ एक आदमी है जो प्रश्नों का उत्तर देने के लिये, बड़ी मात्रा में धन वसूलता है। वह कहता है कि वह आपका विद्यार्थी है, और वह आपके काफी नजदीक काम करता है, और जब कभी वह परेशानी में होता है, आप उसे सलाह देते हैं। इस आदमी ने मुझसे काफी धन लिया है, और उसने मुझे जो जानकारी दी है, वह पूरी तरह से झूठी है। इस सम्बंध में आपका क्या कहना है?'

प्रथम प्रकरण में, मैं किसी के साथ काम नहीं कर रहा हूँ। मेरा कोई विद्यार्थी नहीं है। ये कहना एकदम गलत है कि मैं किसी भाग्य बताने वाले के साथ समीप में कार्य कर रहा हूँ; मैं भविष्यवक्ताओं में विश्वास नहीं करता। अधिकतर बहुधा, यदि कोई 'भविष्यवक्ता भविष्यकथन' करता है, तो वह किसी व्यक्ति को, उसे करने को प्रेरित करता है, जिसे वह सामान्यतः नहीं करता, परंतु हम इस विषय में हम एक क्षण में चर्चा करेंगे।

यदि आपके पास ये विश्वास करने का कारण है कि वह व्यक्ति मेरे विद्यार्थी के रूप में दिखावा कर रहा है, और वह व्यक्ति, मेरा विद्यार्थी होने का बहाना करते हुए, आपसे गलत तरीके से धन प्राप्त कर रहा है, तो वह जो आपको करना है, वह है स्थानीय पुलिस थाने में जाना, और स्थानीय जालसाजी निरोधी दस्ते (Fraud Squad) में किसी से मिलना। उसे बातें समझायें, और यदि आप चाहें, तो आप उसे ये पुस्तक दिखायें, और उसे ये पेज दिखायें जहाँ मैं सर्वाधिक निश्चितता के साथ, मैं ये बयान देता हूँ कि मेरा किसी प्रकार का कोई विद्यार्थी नहीं है, और कि मैं भविष्यवक्ताओं और उसी किस्म के किसी दूसरे के साथ, बिलकुल कोई काम नहीं करता।

उसे ये भी बतायें कि मेरे कोई चेले नहीं हैं, मैं शिष्यों को नहीं चाहता, वास्तव में वे विकट उत्पाती होते हैं! परंतु, वास्तव में, ये मेरे और आपके बीच की बात है। शिष्य मुंह ही मुंह में बड़बड़ाते हैं, 'हॉ स्वामी ये, हॉ स्वामी वो,' वे चरणों में गिरते हैं, वे काठ के सामान से दीमक की भांति रेंगते हैं। इसलिये मैंने अनेक, अनेक वर्षों पहले तय कर लिया था कि मैं विद्यार्थियों को कभी नहीं लूंगा और मैं कभी शिष्य नहीं बनाऊंगा, और ये सब आपके वैंकुवर, ब्रिटिश कोलंबिया के भविष्यवक्ता को थोड़ा मूर्ख दिखाता है, क्या ऐसा नहीं लगता? नहीं श्रीमती जी, गलत जानकारी के लिये, मुझ पर दोष न लगायें। मैं किसी को नहीं देता, मैं किसी को बेचता भी नहीं। मैं अपनी पुस्तकें लिखता हूँ और यहाँ फिर, मेरा रचनात्मक और निश्चित बयान कि मेरी सभी पुस्तकें सत्य हैं, आपके पास है। मैं बाइबलों के ढेर के ऊपर भी कसम नहीं खाता, क्योंकि मैं ईसाई नहीं हूँ, और जो मेरे लिये पुराने अखबारों के ढेर के ऊपर कसम नहीं खाने से अधिक कोई अर्थ नहीं रखेगा, परंतु, मैं दोहराता हूँ कि मेरी सभी पुस्तकें सत्य हैं।

आप जानती है, भविष्यवक्ताओं के साथ परेशान होना, मूर्खतापूर्ण है। कुल मिलाकर, हम में से हर एक, और प्रत्येक, इस पृथ्वी पर, एक विद्यार्थी के रूप में, स्कूल में आता है। अब यह मानते हुए कि आप महाविद्यालय में गये, और एक लंबे अवकाश की अवधि में, या आधी छुट्टी में आप, किसी बूढ़ी मुर्गी, जो शायद कान में बड़ी बाली पहनती है और अपने सिर पर स्कार्फ बांधती है, के साथ घूमे फिरे और प्रभाव में आपने कहा, 'हाय, बिडी, मैं अगली बार, अगले सत्र में, क्या करने जा रही हूँ? मैं आपको कोई चीज नहीं बताऊंगी, आप ही मुझे सब चीज बतायें। ठीक है, बूढ़ी मुर्गी आपको अधिक नहीं बता सकती, क्या वह आपको बता सकती है। वह नहीं जानती कि आप कौन सा पाठ्यक्रम लेने वाले हैं, वह नहीं जानती कि आपकी छिपी हुई अभिलाषायें क्या थीं, आपकी कमजोरियां क्या थीं। नहीं! और औसत भविष्यवक्ता बहुत कुछ हद तक ऐसे ही होते हैं।

अब, इसे सावधानी से पढ़ें, इसे अपनी स्मृति में गढ़ लें; कोई भी मानव, 'दिव्य आज्ञा' के बिना, किसी दूसरे मानव के आकाशीय अभिलेख से परामर्श नहीं कर सकता'। और आप इसे समझ सकती हैं कि दिव्य आज्ञा, एक अंडे पर बाल के भांति, विरली होती है, इसलिये यदि लोग कहते हैं कि वे अभी ही, एक क्षण के लिये घंटी बजाने जा रहे हैं, क्षण भर के लिये आकाशिक अभिलेख की झलक पाने जा रहे हैं, और आपके पिछले जीवन और आपके भविष्य के जीवन की एक रूपरेखा (blue print) के साथ वापस आयेंगे, आप उन्हें केवल ये बतायें कि आप क्या

सोचते हैं, और यदि आप बुद्धिमान हैं, और यदि उसमें कोई धन संलिप्त है, तो केवल जालसााजी निरोधी दस्ते को बुलायें।

हम में से हर एक, यहॉ कुछ करने के लिये है, और यदि हम भविष्यवक्ताओं, जो वास्तव में नहीं जानते कि वे क्या कह रहे हैं, को सुनें तो हमको एक तरफ हटाया जा सकता है और हमारे जीवन की सफलता बनाने के बजाय, हार्दिक रूप से हम मोह निवारण, निरुत्साहित, या मोहभंग किये हुए (disillusioned, discouraged or disenchanted) हो सकते हैं। सबसे अच्छी चीज है, ठीक से ध्यान लगाना, और यदि आप वैसा करेंगे, तो आप आश्चर्यजनक सीमा तक, अपने सम्बंध में जान सकते हैं– और सामान्यतः ये काफी आनंददायक है। आप उन चीजों को देखते हैं, जहॉ आप दूसरों के सुनने के माध्यम से गलत हुए थे। वास्तव में, आप दूसरों को सुन सकते हैं, परंतु आपको स्वयं एक पसंद बनानी है और अपने प्रति पूरे उत्तरदायित्व के साथ, अपने खुद के रास्ते से चलना है।

सर्वाधिक मूर्खतापूर्ण कथनों, जो कभी कहे गये हैं, में से एक, इस प्रभाव का है कि कोई भी आदमी, दूसरों से स्वतंत्र होकर जीने में सक्षम नहीं होता (no man is an island in itself)। मूर्खतापूर्ण, क्या ऐसा नहीं है? वास्तव में, हर एक को अपने आप में सक्षम होना पड़ता है।

यदि आप पंथ (cult) और समूहों (groups) के साथ जुड़ें, तो आप एक अकेले व्यक्ति नहीं हो रहे हैं, आप मात्र समाज में रहने वाले कुछ हो रहे हैं। यदि आप किसी संप्रदाय या समूह के सदस्य बन जाते हैं, तो आप एक मानव के रूप में, अपने उत्तरदायित्व को स्वीकार नहीं कर रहे हैं। निस्संदेह, ये उन सब लोगों के बीच, जो अधिभौतिकी के पत्राचार पाठ्यक्रमों को विज्ञापित करते हैं, जहॉ आप जीवन भर के लिये ऊंची रकमें देते हैं और थोड़ा सा ही वापस पाते हैं, एक विचारणीय कोहराम उत्पन्न करेगा। परंतु संपूर्ण सत्य ये है : कोई बात नहीं कि आपकी मां ने आपको क्या करने को कहा था, कोई बात नहीं कि आपके समूह के नेता, या पत्राचार महाविद्यालय की सांकेतिक कुंजियों के उच्च रहस्यधारी ने आपको क्या करने को कहा था, जब आप इस जीवन से गुजरते हैं, और आपको उसके लिये, जो आपने किया, या उसके लिये जो आपने नहीं किया, अकेले ही अपने अधिस्वयं को जबाव देना होता है। आपके लिये ये सोचना कि आप कह सकते हैं, 'ओह, उसके लिये आप मुझ पर, दोष नहीं लगा सकते, मैंने केवल वही किया, जो मेरी मां ने मुझे करने के लिये कहा था। यदि वह यहॉ होती, तो वह आपको स्वयं बताती।' पूरी तरह से निरर्थक, वल्कि बेतुका है। आपको, और अकेले केवल आपको, उत्तरदायित्व लेना ही होगा। इसलिये यदि आपको उत्तरदायित्व लेना पड़ता है और सर्वाधिक निश्चितता के साथ आपके पास (उत्तरदायित्व) है, तब आप स्वयं को, घेराधारी करने वाले लोगों के किसी गिरोह के द्वारा, कुछ करने के लिये सहमत क्यों होने दें? जो समूह के नेतृत्व के माध्यम से, आपसे थोड़ी शक्ति पाने, या आपका धन लेने के लिये बाहर हैं। जब आपका अधिस्वयं आपके जीवन का निर्णय कर रहा है, इसप्रकार का व्यक्ति आपके करीब भी खड़ा होने वाला नहीं है। मुझे फिर से दोहराने दें, आप को और केवल आप को, अपने अधिस्वयं को जबाव देना है, इसलिये आप, और अकेले आपको, अपना जीवन जीना चाहिए और अपने निर्णय लेने चाहिए, और उत्तरदायित्वों को, जैसा कि आप और केवल आप उचित समझें, स्वीकार या अस्वीकार करना चाहिए।

हॉग टूथ मेटाफिजीकल सोसाइटी (Hog Tooth Metaphysical Society) के अध्यक्ष, श्रीमान् डॉगवालोपर (Mr. Dogwalloper) को सुनना व्यर्थ है, जो आपको यह बतायेंगे और वह बतायेंगे और कुछ दूसरी चीज भी बतायेंगे, और वे आपको बतायेंगे कि यदि आप, उनका संप्रदाय जैसा सुझाव देता है, वैसा करें, तो आप, निःशुल्क वीणा वादन के पाठों को आपको प्रस्तुत करते हुए, स्वर्ग में एक आरक्षित स्थान पा जायेंगे। आप नहीं जानते। यदि श्रीमान् हॉगवालोपर काफी जानते होते, तो वह ऐसी खराब, गंदी बातें नहीं करते, वह अपने खुद के जीवन को साफ करने और अपने स्वयं के निर्णय को तैयार करने के प्रयास में इतने व्यस्त होते, कि वह आपकी जिम्मेदारियों के लिये हाथ भी नहीं लगाते।

उसी प्रकार से, हिलना डुलना या दोनों लिंगों (both sexes) की उन बूढ़ी औरतों, जो चिल्लाती हैं और आर्तनांद करती हैं कि आपको उनके धार्मिक समूह में शामिल हो जाना चाहिए, के द्वारा प्रभावित हो जाना, मूर्खता है। आपको ये बताते हुए कि यदि आप नहीं करते तो आप कितने पिशाच होंगे और ये बताते हुए कि यदि आप उनमें शामिल हो जाते हैं, आप कितने आश्चर्यचकित होंगे। ठीक है, फिर से ध्यान रखें कि ये लोग बाद में आपके प्रति उत्तरदायी नहीं होंगे।

अत्यधिक संख्या में लोग, 'आपको ईश्वर के आशीर्वाद प्राप्त हों' के विषय में शिकायत करते हैं। वे ये

बहाना करते हुए आते हैं कि उनके पास, पहले से की गई बातों के लिये, ईश्वर की तरफ से किसी को आशीर्वाद और किसी को क्षमादान देने का प्रत्यक्ष अधिकार है। ठीक है, ईश्वर विकट रूप से व्यस्त हो सकता है! ये लोग, ठीक आप, और आप, और आप जैसे ही हैं, किसी से अधिक अच्छे नहीं हैं, और शायद, किसी से खराब भी नहीं हैं। वे ठगे जा सकते हैं, वे सोच सकते हैं कि चूंकि वे अपनी कमीज उल्टी पहनते हैं (they wear their collar the wrong way around), या क्योंकि उन्होंने एक पुस्तक पढ़ी है, कि वे स्वतः ही साधु हो गये हैं।

आप जानते हैं कि अधिभौतिकी का ज्ञान रखना, किसी को आवश्यकरूप से, आध्यात्मिक नहीं बना देता। जनश्रुतियों के अनुसार बूढ़ा शैतान, स्वयं अधिभौतिकी की पंक्तियों की तमाम चालबाजियों में से एक या दो को जानता है, परंतु आप उसे आध्यात्मिक नहीं बताने जा रहे हैं, अर्थात् क्या आप, ठीक रास्ते पर नहीं हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह व्यक्ति कितना खराब है, मूल तथ्यों तक आने के लिये (to come down to brass tacks), कोई भी, अधिभौतिकी की चीजों को पढ़ सकता है, वह ऐसी चीजों को सीख सकता/सकती है, वह, आध्यात्मिकता में, पहले से किसी निश्चित श्रेणी का होना आवश्यक नहीं है। परंतु, एक महान और दयालु ईश्वर, लगभग हमेशा, हमेशा नहीं परंतु लगभग हमेशा, चीजों की इस तरह व्यवस्था करता है कि यदि हम, अधिभौतिकी पढ़ता हुआ, दो बार रंगा हुआ खलनायक पा सकें, तो वह पहले एक रंग में रंगे हुए खलनायक में बदल जाता है और उसका थोड़ा सा रंग धुल जाता है, नीचे वह एक शालीन व्यक्ति भी हो सकता है। परंतु 'संत अमुक और अमुक, जो अब स्वामी है'' के बारे में सभी विज्ञापनों पर विश्वास न करें। स्वामी, श्रीमान् होता है, क्या आप इसे जानते हैं? ये कोई रहस्यात्मक उपाधि नहीं है, ये छोटा सा शब्द स्वामी, वास्तव में, अनेक लोगों के साथ भार ढोता है, परंतु आप इससे मूर्ख न बनें।

अब, मैं देखता हूँ कि यहाँ एक दूसरा प्रश्न है, जिसको वास्तव में, हमने अभी उत्तरित किया है। प्रश्न है, 'मुझे बतायें कि लोगों को अधिभौतिकी की चीजें, समूहों में क्यों नहीं करनी चाहिए, बल्कि अकेले ही क्यों करनी चाहिए।'

मैंने इसका उत्तर पहले ही दे दिया है, परंतु शायद मैं इसमें कुछ और जोड़ सकता हूँ। कुछ समय पहले एक समूह, जो चाहता था कि मैं उनमें सम्मिलित हो जाऊँ से, मुझे कुछ 'साहित्य' भेजा गया था। उन्होंने अपने विस्तृत कक्षाओं, जो सभी एक साथ ध्यान कर रहीं थीं, के सम्बंध में शेखी बघारी। क्या आपने कभी, इससे अधिक मूर्खतापूर्ण चीज पढ़ी है– 'एक साथ ध्यान करने वाले सभी लोग कौन थे?' ठीक है, यदि उनके पास अधिभौतिकी का किंचितमात्र भी ज्ञान है, वे जानते होंगे कि आप साथ–साथ ध्यान नहीं कर सकते। क्या आप जानते हैं, क्यों?

हर व्यक्ति ऊर्जा उत्सर्जित करता है, तरंगें उत्सर्जित करता है, विचार की तरंगें, प्राण की तरंगें, और हर व्यक्ति, कुछ हद तक दूरानुभूतिपूर्ण होता है, इसलिये यदि लोगों का एक पूरा समूह आपके पास है, सभी अपने अपने निजी मामलों में ध्यान करते हुए– ठीक है, निश्चिय ही वे कामों से चिपक जाते हैं, और किसी के लिये भी जबकि वह समूह में हो, लाभप्रद ध्यान करना असंभव है।

आपको इसी प्रकार की चीज, बड़ी भीड़ों में भी मिलेगी। उदाहरण के लिये, फुटबाल की भीड़ को लें; यहाँ आपको कुछ हजार सामान्य लोग मिलेंगे, उनमें से कुछ पूरी तरह से भलीभांति संतुलित, उनमें से कुछ, काली बत्तख की तरह सनकी, और वे सभी एक साथ भीड़ बनाते हैं। वे खेल के सम्बंध में सोच रहे हैं, और तभी कोई चीज होती है, कोई किसी निश्चित चीज को सोचता है और कुछ निश्चित बात कहता है, और यहाँ इस भीड़ में आप तत्काल ही एक समूह व्यक्तित्व पा जाते हैं, आप भीड़ का सम्मोहन पाते हैं। लोग पैरों तले कुचल दिये जाते हैं, फुटबाल के मैदान की इमारतों को काफी नुकसान पहुँचाया जाता है, सीटें टूट जाती हैं, दरवाजों में होकर चीखते चिल्लाते हुए लोग, तूफान की तरह, और अपने रास्ते में किसी के भी साथ खराब व्यवहार करते हुए आते हैं, और बाद में जब भीड़ छंट जाती है, उत्तरदायी लोग, काफी भयानक अनुभव करते हैं और शर्मनाक चेहरे के साथ, वे उस पर, जो कुछ भी उनके साथ हुआ, आश्चर्य करते हैं।

समूह–ध्यान में वही चीज होती है। किसी निश्चित चीज के ऊपर सोचता हुआ हर एक, उत्क्रमित प्रयास के नियम (The Law of Reversed Effort)[6] को लागू करने का कारण बन सकता है। मैंने कहा, 'समान चीज के

6 अनुवादक की टिप्पिणी : उत्क्रमित प्रयास का नियम (The Law of Reversed Effort) है ; 'चेतन प्रयास (conscious effort), जितना अधिक होता है, अवचेतन प्रतिसाद (subconscious response), उतना ही अधिक होता है' या इसे दूसरे तरीके से समझें, जबकभी इच्छा शक्ति (conscious mind) और कल्पना (subconscious) में मतभेद होता है, कल्पना हमेशा विजयी होती है।'

सम्बंध में सोचता हुआ।' ध्यान का, ध्यान करने का तथ्य मात्र, पर्याप्त है, क्योंकि, यदि कोई ध्यान कर रहा है, तब ये एक निश्चित कार्य है, और ध्यान करता हुआ हर व्यक्ति, अपने स्वयं के कणों को, नयी बनी हुई विचार आकृति, या समूह व्यक्तित्व के साथ, जोड़ता/जोड़ती है, और जब तक वहॉ कुछ उच्च प्रशिक्षित–वे विरले ही हैं–लोग न हों, जो चीजों को नियंत्रित कर सकें, परिणामस्वरूप, आपको सभा से, सब प्रकार की स्नायविक बीमारियॉ, प्राप्त हो सकती हैं। इसलिये, मैं फिर कहता हूॅ, यदि आप इस चक्र में, इसे अपना अंतिम जीवन बनाना चाहते हैं, तो आप समूहों या संप्रदायों में कभी सम्मिलित न हों, अपने स्वयं के जीवन को जियें, अपने स्वयं के उत्तरदायित्व को स्वीकार करें, अपने स्वयं के निर्णय लें। ओह हॉ, सभी प्रकार से, दूसरों की सलाह पर विचार करें, सलाह पर विचार करें, विभिन्न सलाहों, जो आपको मिलती हैं, को तौलें और तब अपने आप निर्णय लें। तब, जब आप इस पृथ्वी को छोड़ चुके हैं, और जब आप, भय के साथ अपने घुटनों को टिकाये हुए, स्मृतियों के हॉल में हैं, और आप, भूल–चूक के पापों पर, अपने बारे में, अपने अधिस्वयं का निर्णय पाते हैं, आप अपने लिये, कुछ प्रशंसात्मक शब्द पा सकते हैं, और आप ये सोचते हुए बाहर आ सकते हैं, 'हॉ, हॉ, मैं प्रसन्न हूॅ कि मैंने लोबसांग रंपा की सलाह का अनुगमन किया। कुल मिलाकर, वह सही था।'

दिन की समाप्ति के साथ, 'परिवार,' बूढ़े आदमी के बिस्तर के आसपास इकट्ठा हुआ। कुमारी क्लियोपेट्रा, गोदी में, जलयानों के ऊपर बाहर देख रही थी, कुमारी टाडालिंका बूढ़े आदमी की गोदी में बैठी थी। मां ने टाइप की हुई–लिपि के पहले पन्ने रखे, जिन्हें वह पढ़ती रही थी, और लगभग उसी समय में बटरकप ने प्रतिलिपि, जिसे वह पढ़ती रही थी, नीचे रखी।

'ठीक है?' बूढ़े आदमी ने प्रश्न किया, 'आप इस बारे में क्या सोचती हैं?'

मां ने अपने कान रगड़े और कहा, 'ये सब ठीक है, इसने मुझे हॅसा दिया, ताकि ये पर्याप्त परीक्षा होनी चाहिये।'

'और तुम्हारे बारे में क्या, बटरकप, इस सम्बंध में तुम्हारा क्या विचार है? बूढ़े आदमी ने कहा।

बटरकप–ठीक है, उसने टाइप किये कागजों की ओर फिर से नीचे देखा, और तब बूढ़े आदमी की ओर ऊपर देखा, 'आप खुद दोहरायें, आप जानते हैं।' अधिभौतिकीविदों के सम्बंध में वह हास्य, भुगतान पा रहा था, ठीक है, आपने कुछ वैसी ही चीज, 'दसवीं के परे (Beyond the Tenth)' में कही थी।

'परंतु निश्चय ही मैंने खुद को दोहराया'। बूढ़े आदमी ने कुछ खीज में कहा। 'मैं कैसे जानता हूॅ, यदि कोई व्यक्ति, जो इस पुस्तक को पढ़ रहा है, उसने 'दसवीं के परे' पुस्तक को भी पढ़ा होगा? और मेरे ख्याल से, ये चीजें इतनी महत्वपूर्ण हैं कि निश्चय ही दोहराव तर्कयुक्त है। कुल मिलाकर, यदि आप स्कूल जायें, शिक्षक किसी चीज को केवल एक बार नहीं कहता, और आपसे उसे हमेशा के लिये, तीन दिनों के लिये, अपने पास रखने की आशा नहीं करता और क्या वह करता है? वह इसे दोहराता है।'

मां–लगभग मानो कि लड़ाई को रोकने के लिये बीच में कूद पड़ी! – 'आप शिष्यों के नहीं होने के बारे में, किसी चीज में रुचि न रखने के बारे में कहते हैं, जॉन के सम्बंध में क्या?'

बूढ़े आदमी को अपने रक्तचाप की याद आई, अपनी विविध शिकायतों की याद आई और निडरता के साथ अपने सुरक्षा वाल्व पर बैठ गया– क्या शरीरों में सुरक्षा वाल्व होते हैं– परंतु कैसे भी, उसने दबाया, उसे अक्सर इतने विलंब से, विविध टिप्पणियों को, जो बिना बुलाये ही आ गई थीं, दबाना पड़ा।

'ठीक है, हम जॉन के बारे में एक अपवाद बनायेंगे। ठीक है, हम एक दो चीजों को स्पष्ट करेंगे, जो आप कहती हैं कि अभी तक पर्याप्तरूप से विचारित नहीं की गईं। इसलिये– चलते हैं।

हर समय, अक्सर, कोई वह, जिसमें आध्यात्मिक आवेगों को मानने और प्रकति को सुधारने और ये प्रदर्शित करने की, कि कर्म पर काबू पाया जा सकता है, एक गहरी इच्छा होती है, एक आदमी या औरत के सामने आता है। जॉन हैंडरसन (John Henderson) ऐसा ही एक व्यक्ति है। हम जॉन हैंडरसन के बहुत शौकीन हैं–एर, मुझे सुधारने दें; अभिनय उसका शौक है, और इसको छोड़कर कि जब वह एक आयरिश पादरी की भूमिका निभाने का प्रयास करता है, वह बहुत अच्छा अभिनेता है। उसका आयरिश लहजा, ब्रोंक्स (Bronx), न्यूयार्क के अधिक समान है, जो यद्यपि, विषयांतर है। जॉन हैंडरसन एक अच्छा आदमी है, जो प्रयास कर रहा है और सफल हो रहा है। मैंने उसे सर्वाधिक शक्ति के साथ सुझाव दिया है, कि बाद में, जब थोड़ा सा बूढ़ा हो जाये, उसे एक आध्यात्मिक आश्रम प्रारंभ करना चाहिए, ताकि, वह उन लोगों की मदद कर सके, जिन्हें सहायता की आवश्यकता है। वह भविष्यकथन नहीं कर रहा होगा, वह किसी को बहकाने का प्रयास नहीं कर रहा होगा। इसके बजाय, एक

वास्तविक आध्यात्मिक व्यक्ति के रूप में, वह मदद करने का प्रयास कर रहा होगा। इसलिये शायद तीन या चार वर्षो में, आप जॉन हैंडरसन के बारे में, वास्तव में, सबसे अच्छे ढंग से पढ़ रहे होंगे, ये समझा हुआ है।

बटरकप ने कहा, 'परंतु अधिभौतिकी, लोगों को अधिक आध्यात्मिक होने में किस प्रकार से मदद करती है? आप कहते हैं कि अधिभौतिकी को कोई भी पढ़ सकता है और सामान्यतः बुरे लोग भी, अच्छे में बदल जाते हैं। कैसे?'

ठीक है, तिब्बत को साम्यवादियों के द्वारा हथियाये जाने से पहले, वहॉ लामामठों के प्रवेश द्वारों पर, चौखटों पर, खोदे गये, खुदाई वाले विविध लेख थे, जैसे कि 'हजार भिक्षु, हजार धर्म (A thousand monks a thousand religions),' या जैसे कि ''केसरिया वाना, किसी को भिक्षु नहीं बनाता (The saffron rob does not make a monk)'। दुर्भाग्यवश, गूढ़विज्ञान में अनेक कुख्यात धोखेबाज और धूर्त हैं, इतने कि उनको अनुमोदित नहीं करना कठिन है, और वे उसे, जिसे लोग जानना चाहते हैं, अत्यधिक प्रभावित करते हैं। कुछ कमीने, जो अधिभौतिकी को पढ़ते हैं, या अधिभौतिकी को पढ़ने का बहाना करते हैं, थोड़ा सा ज्ञान इकट्ठा करते हैं और अभिनय करते हैं, मानो कि वे भगवान हैं, जो हर चीज को, उससे भी और अधिक जानते हैं। वास्तव में, इन लोगों में से अधिकांश यथार्थतः वे वही होते हैं, अज्ञानी और कमीने और इससे अधिक कुछ नहीं। वास्तव में, वे प्रगति करने के इरादे से नहीं पढ़ रहे होते हैं, यथार्थतः वे दूसरों लोगों को मदद करने के इरादे से नहीं पढ़ रहे होते हैं। वे गूढ़विज्ञान की तेजी से बात करने वाली, सतही जानकारी पाने का प्रयास करते हैं, ताकि वे जल्दी से पैसा बना सकें। वे मात्र एक संप्रदाय के पीछे पड रहे होते हैं, या नया संप्रदाय भी प्रारंभ करने का प्रयास करते रहते हैं। वे तथाकथित शिष्यों के गिरोह के साथ यात्रा करते हैं और वे सभी प्रकार के आध्यात्मिक अपराध करते हैं, वे लोगों को बर्बादी की ओर ले जाते हैं और वे लोगों को, उससे जो उनका सही काम होना चाहिए, हटा देते हैं।

वर्तमान समय में, पिछले कुछ वर्षों में, लोगों का एक बहुत बड़ा समूह परिदृश्य में आया, लोग जिन्हें कोई न्यायपूर्वक, 'बिना धुले हुए महान' कह सकता था। उनमें से अधिकांश बिना धुले नहीं हैं, वे भौतिक और आध्यात्मिक रूप से दुर्गंध देते हैं। वे कपड़ों के फटे हुए चिथड़ों को पहन कर गर्व महसूस करते हुए प्रतीत होते हैं और वे अशिष्ट और असंस्कृत होने में, और भी अधिक गर्व महसूस करते हैं, अशिष्ट का अर्थ अभद्र होना है, क्या ऐसा नहीं है? परंतु कैसे भी, वे अशिष्ट हैं और इसके साथ साथ वे रूखे भी हैं। मुझे उन्हें बताने दें, जैसा कि मैं उन्हें अक्सर पत्रों में बताता हूॅ कि गंदा होना कोई गुण (virtue) नहीं है, वास्तव में, उनमें से काफी अधिक के साथ, मैं किसी सुअर को नहलाने वाले के साथ, या धूल की पहली कुछ परतें, जो वास्तव में नीचे थीं, हटाने के लिये व्यस्त होना चाहूंगा।

अब बटरकप के उस प्रश्न के लिये कि लोगों को अधिभौतिकी क्यों पढ़नी चाहिए; अधिभौतिकी पढ़ने में वे उसे, जो उनका जन्मसिद्ध अधिकार होना चाहिए, वापस प्राप्त करते हैं। अधिभौतिकी एक गाली है परंतु, ऐसा इसलिये हैं क्योंकि, गंदे लोगों ने उस नाम को बदनाम कर दिया है। वास्तव में, गुजरे हुए वर्षों में, हर एक में आधिभौतिक क्षमतायें थीं, अर्थात् हर एक परोक्ष ज्ञानी (clairvoyant) और अतीन्द्रिय (telepathic) था, परंतु उन शक्तियों का दुरुपयोग करते हुए, उन्होंने उन शक्तियों को खो दिया, क्षमता क्षीण हो गयी। आपको उसी प्रकार की चीज, एक व्यक्ति, जिसे लंबे समय तक बिस्तर में रहना पड़ता है, के साथ मिलती है। यदि कोई व्यक्ति बिस्तर तक ही सीमित है, और उसे टांगों का उपयोग करने की आज्ञा नहीं है, तब वह व्यक्ति चलने फिरने की क्षमता को खो देता है, भूल जाता है कि इसे कैसे किया जाये, और जब बीमारी, जिसने उस बेचारे को बिस्तर में बने रहने को बाध्य किया था, का इलाज हो जाता है, तो उसे फिर, से नये सिरे से चलना सिखाना पड़ता है।

एक व्यक्ति जो जन्मांध रहा है, और जिसको, विज्ञान की प्रगति के माध्यम से, अचानक ही दृष्टि दी गई है, को देखने की कला में प्रशिक्षण दिया जाना होता है, क्योंकि, जब आप पहली बार देखते हैं तो आप नहीं समझ सकते कि वह, जिसे आप देख रहे हैं, क्या है। किसी को, लोगों को तीन विमा में देखना सिखाना पड़ता है, किसी को, दूरियों के बारे में निर्णय लेने में सक्षम होना सिखाना पड़ता है। इस पर मेरा काफी व्यक्तिगत अनुभव है, क्योंकि, मैं अंधा रहा हूॅ और दृष्टि को अचानक ही प्राप्त करना, एक काफी गहरा सदमा होता है।

इसलिये लोग अधिभौतिकी का अध्ययन करते हैं, ताकि वे उन शक्तियों को, जो उनके पुरखों के पास थीं,

जो गुम हो गईं थीं, फिर से प्राप्त कर सकें। और अधिभौतिकी, खराब लोगों की भी, कम खराब होने में और अधिक आध्यात्मिक हो जाने में कैसे मदद करती है? सरल है! जब कोई अधिभौतिकी का अध्ययन करता है, तो वह वास्तव में, व्यक्ति के कंपनों को बढ़ाता है, और किसी व्यक्ति के कंपन जितने अधिक ऊंचे होते हैं, वह उतना ही अधिक आध्यात्मिक हो जाता है। इसलिये किसी वास्तविक ठग में, अचानक ही हृदय परिवर्तन होता है, और वह अधिभौतिकी का अध्ययन प्रारंभ कर देता है, गूढ़ज्ञान का अध्ययन करने की क्रिया मात्र, ठग के रूप में उसके मूल्य को घटाते हुए, उसे एक अच्छा आदमी बना देती है।

अध्याय – चार

सफलता, कड़ी मेहनत और पूरी तैयारी का चरमोत्कर्ष है।

'परंतु भीड़ें नियंत्रण के बाहर क्यों हो जाती हैं ?' बटरकप ने प्रश्न को छोड़ने नहीं दिया। 'आप कहते हैं कि फुटबाल की भीड़ नियंत्रण के बाहर हो जाती है, हम जानते हैं कि ऐसा होता है, परंतु **क्यों, कैसे,** कौन सी यांत्रिकी (mechanism) काम में लायी जाती है?'

बूढ़े आदमी ने एक कराह निकाली, क्योंकि, वह एकदम ही भिन्न चीज पर चर्चा करना चाहता था, परंतु प्रश्न तो प्रश्न है, और काफी लोग हो सकते हैं, जो उसमें रुचि रखते हों, **क्यों, कैसे** इत्यादि।

हर व्यक्ति अपने आसपास एक चुंबकीय क्षेत्र रखता है– ओह हॉ, स्वाभाविकरूप से हम 'उसे भी (महिला को)' उसमें शामिल कर लेते हैं, और उसे अत्यधिक बहुधा (too often) जोड़ने के लिये दुखी हैं, प्रजातियों की मादाओं के आसपास का चुंबकीय क्षेत्र, नरों की तुलना में प्रबल होता है। संभवतः यही कारण है कि सभी प्रजातियों की मादा, खतरनाक! समझी जाती हैं, हर एक, अपने शरीर के आसपास, तब, एक चुंबकीय क्षेत्र रखता है। ये चुंबकीय क्षेत्र, प्रभामंडल नहीं है, ये इथरिक है, और यदि आप इसको देखना मुश्किल पायें तो सोचें कि लोगों के समूहों के बदले में, आपके पास दंड चुंबकों का एक जमावड़ा है। पर्याप्त स्वभावतः, वे अपने सिरों पर वैसे ही खड़े होंगे, जैसे कि लोग खड़े होते हैं, इसलिये हमें कहने दें, उत्तरी ध्रुव ऊपर की तरफ और दक्षिणी ध्रुव नीचे की तरफ इशारा करते हुए। ठीक है, तत्काल ही, आपके पास, अपने चुंबकीय क्षेत्रों की, किसी दूसरे के चुंबकीय क्षेत्रों के साथ क्रिया करते हुए काफी चुंबक हैं। कुछ प्रबलतर हैं, और कुछ क्षीणतर, कुछ शायद, थोड़े से, विकृत हैं, और वे मिलकर, एक अत्यंत दुर्जेय बल बनाते हैं और समीपवर्ती संरचनाओं पर उनका प्रबल प्रभाव पड़ता है।

वैसे ही समान तरीके से, मानव, अपने अंदर बने–बनाये (built-in) चुंबकों से, एक दूसरे के साथ, अंतर्क्रिया करता है। चुंबकीय क्षेत्रों में से कुछ, विक्षुब्ध करने वाले, बल्कि दूसरों की तुलना में अधिक विरोधी, क्षेत्र हैं, और वे असंतोष की तरंग सृजित करेंगे, जो बढ़ सकती है, और उन लोगों को प्रभावित कर सकती है, जो सामान्यतः एक दम संवेदनशील और स्थाई हैं। फुटबाल की किसी भीड़ में, हरेक, कमोवेश एक ही चीज के बारे में, अर्थात् खेल के बारे में सोच रहा है। हॉ, हम जानते हैं कि शायद, भीड़ का आधा भाग, एक पक्ष को जिताना चाहता है, और दूसरा आधा भाग, दूसरे पक्ष की जीत चाहता है, परंतु हम उसे छोड़ सकते हैं, क्योंकि, मोटे तौर से वे दोनों एक ही चीज, 'जीत' को सोच रहे हैं। इसलिये खेल, हर समय प्रगति पर होता है, 'जीत' के धनात्मक विचारों के द्वारा चुंबकीय क्षेत्र बढ़ जाता है, और अधिक बढ़ जाता है। कोई खिलाड़ी, जब कुछ गलत करता है, तो एक पक्ष में अधिक खुशी हो जाती है, और उसमें शक्ति की तरंग दौड़ जाती है, जबकि दूसरे पक्ष में निराश छा जाती है, और शक्ति का उत्क्रमण होता है, जो फिर से, उसमें, जिसे कोई मानवों की मूल आवृति का नाम दे सकता है, एक बेमेल सुर उत्पन्न करता है।

निश्चित परिस्थितियों में, समूह–उन्माद (mass hysteria) उत्पन्न होता है। लोग, जो सामान्यतः पूरी तरह से शालीन और श्रेष्ठ व्यवहार वाले होते हैं, अपने ऊपर से नियंत्रण खो बैठते हैं, और ऐसी चीजें करते हैं कि वे बाद में, हृदय से शर्मिंदा होते हैं।

आप जानते हैं कि हर के पास, एक अंदर बना–बनाया संसूचक (built-in censor) होता है, जिससे 'अंदर की वह क्षीण आवाज, जो हमें सीधे और संकीर्ण रास्ते पर बनाये रखती है,' और जब समूह–उन्माद घटित होता है, लोगों की कुंडलिनी प्रभावित होती है, और स्नायु स्तंभ (spinal column) में होकर, कुंडलिनी के अच्छे आवेगों को दबाते हुए और मानव के अंदर बने हुए सेंसर को अस्थायी रूप से लकवाग्रस्त करते हुए, उल्टी धारा (ध्यान से समझें कि ये एक उल्टी धारा है) उभरती है।

सेंसर के ऊपर काबू पा लेने के साथ ही, विनाश, गुंडागीरी और एकदम अशिष्टता, जिसके लिये मानव समर्थ है, की कोई सीमा नहीं होती। हर ताजी क्रिया, शक्ति देती हुई दिखाई देती है। लोग घावों के प्रति, जिन्हें वे स्वयं प्राप्त करते हैं, बेसुध हो जाते हैं, उन्हें खरोंचें, कटाव और मिलेजुले गहरे घाव आते हैं और हाथापाई होती है, और वे उन पर ध्यान नहीं देते।

कमजोर लोग जमीन पर गिर जाते हैं और रौंद दिये जाते हैं। भगदड़ शुरू हो जाती है, और लोगों का पूरा का पूरा समूह दरवाजों या अवरोधों की ओर उमड़ पड़ेगा, और केवल संख्या भार के कारण, अपने पीछे अनेक

घायल छोड़ते हुए, कुचल देगा।

जब भीड़ तितर बितर होती है, चुंबकीय घिराव असफल हो जाता है और बिखर जाता है, और इसलिये लोग, फिर अपने होश में आ जाते हैं। वे, जो अपने खुद के घरों को जा सकते हैं, उन्हें घर में, अपने ऊपर दिल से शर्म महसूस करने का समय मिलता है, जबकि वे, जो किसी ब्लेक मारिया (Black Maria) या पैडी वैगन (Paddy wagon) में ढोकर ले जाये जाते हैं, या बाहर तालाव, जिसे पुलिस के लोग अशिष्ट भाषा में शीतक (cooler) कहते हैं, में ठंडे हो जाते हैं। कूलर वास्तव में, एक कोठरी है, जहॉ गर्म मिजाज जल्दी ही ठंडे हो जाते हैं।

ओह हॉ, वास्तव में, समूहों और संप्रदायों की बैठकों में ऐसी चीजें हो सकती हैं। जब लोगों का एक पूरा झुंड इकट्टा होता है, आप काफी कुछ, इसी प्रकार की चीज पा सकते हैं और कल्पना करें कि वे ध्यान कर रहे है, परंतु नहीं, वे काफी कुछ विपरीत विद्युत धारा बना रहे हैं, जो भले की बजाय बुरा अधिक करती है।

महिलाओ और सज्जनो, वे, जो अच्छे इरादे के हैं, जो दूसरों की भलाई करना चाहते हैं, कृपया किसी चीज पर ध्यान दें, जो पीड़ितों के लिये अत्यधिक महत्व की है।

क्या आपने कभी, तथाकथित 'अनुपस्थिति में आरोग्यण (absent healing)' का प्रयास किया है? क्या आपने कभी, उन लोगों के लिये जो संतप्त हैं, प्रार्थनाओं के गुच्छ के ऊपर फुर्ती दिखाई है? क्या आप सोचते हैं कि आप इलाज में सहायता और सबकुछ करके, काफी कुछ भलाई कर रहे हैं? ऐसे अत्यधिक अच्छे इरादे वाले प्रयासों के पीड़ित के रूप में, मैं पीड़ितों की ओर से, विरोध की एक चीख निकालना चाहता हूॅ।

ये मानते हुए कि किसी के पास तीन, चार, पांच या छः लोग हैं, जो किसी गरीब पीड़ित के ऊपर, अनुपस्थिति में आरोग्यण करना चाहते हैं। ये तीन, चार, पांच या छः लोग, परम शुद्ध इरादों वाले हो सकते हैं, परंतु वे पीड़ित को व्यथित करने वाली, बीमारी की एकदम ठीक प्रकृति को नहीं जानते, वे एक कंबल वाला इलाज देने का प्रयास करते हैं, और मेरे ऊपर विश्वास करें, वास्तव में, मैं ऐसे तथाकथित कंबल डालने वाले इलाजों से घायल किया गया हूॅ।

किसी व्यक्ति को, यह विश्वास कराते हुए, कि उसे कोई बीमारी नहीं है, जबकि वास्तव में, वह किसी शिकायत से लगभग मर रहा है, सम्मोहित करना, बहुत बहुत खतरनाक है। जबतक कि आप एक योग्यता प्राप्त डॉक्टर नहीं हैं, और आप बीमारी की प्रकृति को नहीं जानते कि इसके क्या पार्श्व प्रभाव (side effects) हो सकते हैं, अनुपस्थिति में इलाज किया जाना, समान रूप से खतरनाक है। फिर से, हमारे पास अपना पुराना मित्र, या अधिक संभावना के साथ पुराना शत्रु, 'उत्क्रमित प्रयास का नियम,' है, जिसके साथ संघर्ष करना है।

निश्चित अवस्थाओं के अन्तर्गत, यदि कोई अत्यधिक प्रबल रूप से किसी चीज की इच्छा करता है और कोई किसी निश्चित चीज के अप्रशिक्षित विचारों पर ,एकाग्र होता है, तब वह एक धनात्मक चीज, एक धनात्मक परिणाम पाने के बजाय, कोई ऋणात्मक परिणाम प्राप्त करता है। जब पांच या छः लोगों को, सभी को एक ही चीज करते हुए, पीड़ित को पीड़ायें झेलते हुए, पाते हैं – ठीक है, मुझे कुछ मिली थीं!

सर्वाधिक दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित, मेरी प्रबल अनुशंसा है कि आप में से कोई भी, शिकायत की ठीकठीक प्रकृति जाने बिना, शिकायत की गंभीरता जाने बिना, किस प्रकार के पार्श्व प्रभाव अपेक्षित हो सकते हैं, इसे जाने बिना, अनुपस्थिति आरोग्यण का प्रयास न करें।

क्या आप कभी वास्तविक आबादी वाले क्षेत्र में रहे हैं और किसी रेडियो कार्यक्रम को पाने का प्रयास किया है, और वहॉ प्रत्येक, दूसरों के साथ हस्तक्षेप करते हुए स्टेशन, सभी ओर से आते हुए लगते थे, अव्यवस्थित कर्णकटुता, पूरे गुच्छे में कुछ भी स्पष्ट नहीं, के सिवाय, परिणाम कुछ नहीं होता था। अनुपस्थिति आरोग्यण से आप ऐसा ही पाते हैं। मैं लघुतरंगों (short waves) को काफी सुनता हूॅ, अब मेरा एकमात्र मनोरंजन लगभग यही है, और कई बार, कोई स्टेशन रूस या चीन के द्वारा जाम कर दिया जायेगा, और घरघराहट और घुर्राहट और मौजी समर्थन, किसी को जल्दी ही रेडियो को बंद करना पड़ता है। दुर्भाग्यवश, जब बुरे इरादों वाले और एक दूसरे के साथ मतभेद रखने वाले लोगों का एक समूह, अनुपस्थिति आरोग्यण करने के लिये प्रयास कर रहा हो, बटन बंद करना, उतना आसान नहीं है। ध्यान रखें, सम्बंधित व्यक्ति के पास सर्वोच्च प्रयोजन हो सकते हैं, परंतु जबतक कि वे पादरियों या चिकित्सा अभ्यासार्थियों के रूप में प्रशिक्षित नहीं किये गये हैं, ये ऐसी चीज है, जिसकी अनुशंसा नहीं की जा सकती।

दूसरे किसी दिन, एक टैक्सी ड्राइवर ने बटरकप से एक प्रश्न पूछा। उसने कहा, 'क्या आप इससे सहमत

नहीं है, कि आज के नौजवान, अपने पिताओं की तुलना में, अत्यधिक सजग और अत्यधिक प्रबुद्ध हैं?' इस सम्बंध में, बटरकप के पास अपनी खुद की टिप्पणियॉ थीं, और शायद वे वैसी ही थीं, जैसी टिप्पणियॉ मैं करता हूँ:

क्या मैं सोचता हूँ कि आज के नौजवान, समान आयु पर, अपने पितरों (parents) की तुलना में, अधिक सजग हैं ?

नहीं, गलती से, मैं नहीं सोचता, मैं सोचता हूँ कि वे काफी मंद हैं। मैं सोचता हूँ, आजकल उनमें से कुछ अपने लंबे बालों, और मैले कुचेले फटे हुए चिथड़ों के साथ मात्र दिखावा करने वालों के गिरोह हैं, और दुर्गंध जो उनमें से आती है, किसी को अपनी टोपी उतार लेने के लिये पर्याप्त है। न केवल इतना ही, परंतु उनमें से अनेक, एकदम मूर्ख दिखाई देते हैं।

थोड़े से वर्षों पहले, जब पितृ, या नहीं, हमें फिर से पिता की ओर वापस चलें–जब बाबा–दादी किशोर थे, उन्हें काम करना पड़ता था, उन्हें अध्ययन करना पड़ता था, वे हर समय टी.वी. देखते या हाईफाई को भौंकाते हुए नहीं रह सकते थे। उन्हें चीजों को करना पड़ता था, उन्हें अपने खुद के मनोरंजन बनाने पड़ते थे। इसने उन्हें चिंतन सिखाया। आजकल, नौजवान लोग, उसमें जो उनकी अपनी खुद की भाषा होनी चाहिये, अपने आप समझने में सक्षम नहीं दिखते, वे अनपढ़ हैं, वास्तव में, उससे भी नीचे, टूटे–फूटे, भुरभुरे। पाठशाला जाने वाली आयु के समीप, कुछ बच्चे हैं, जिनकी अंग्रेजी में पकड़ बिलकुल भी नहीं है, ये पूरी तरह से अव्यवस्था है। वे हॉटेनटौट्स, (Hottentots) जो ये भी नहीं जानता था कि स्कूल क्या होता है, की तरह से अनपढ़ दिखाई देते हैं।

व्यक्तिगत रूप से, मैं सोचता हूँ बच्चे और किशोर ऐसे होते जा रहे हैं, क्योंकि, दोनों पितृ (parents) काम के लिये बाहर जाते हैं और आवश्यक जरूरत, कि बढ़ती हुई पीढ़ी को उस पीढ़ी के द्वारा सिखाया जाना चाहिए, जिसको वे विस्थापित कर रहे हैं, को पूरी तरह से अनदेखा कर देते हैं।

मैं ये भी सोचता हूँ, कि एक औसत किशोर में, निरक्षरता और सामान्य मानसिक मंदबुद्धि के लिये, काफी हद तक, टेलीविजन और सिनेमा को दोष दिया जाना चाहिए।

फिल्में, टेलीविजन के शो, ठीक है, वे पूरी तरह से कृत्रिम विश्व, पूरी तरह से एकदम कृत्रिम परिस्थितियों के सैट को दिखाते हैं। वे अद्‌भुत घर, अद्‌भुत रियासतें और कल्पनातीत व्ययसाध्य सजावटें दिखाते हैं और फिल्मी सितारों के पास केडिलेकों (Cadillacs) के बड़े–बड़े बेड़े, और पुरुष मित्रों और कन्या मित्रों के समूह होते हुए दिखते हैं। अनैतिकता, मात्र क्षमा ही नहीं की जाती, वास्तव में, इसको बढ़ावा दिया जाता है। नायिका दीनाह डॉग्सबॉडी (Dinah Dogsbody), उदाहरण के लिये, शेखी बघारती है कि उसने कितने आदमियों को छका दिया और उन्हें कांपते हुए, ढुलमुल छोड़ दिया, जबकि नायक हैक्टर हॉगवाश (Hector Hogwash), शायद, एक बाद एक को तलाक दी हुईं, चौदह पत्नियों की शेखी बघारता है, परंतु कैसे भी, वैश्यावृति और इन नायक और नायिकाओं, जो अपने भागीदारों को, लगभग गिरते ही–ठीक है, टोप के गिरते ही बदल देते हैं, के बीच क्या अंतर है; मैं कुछ दूसरी चीज कहने जा रहा था, परंतु शायद कुछ महिलायें इसको पढ़ रही हैं।

मेरा उत्तर, तब, ये है कि मैं सोचता हूँ कि शिक्षा का सामान्य स्तर तेजी से गिर रहा है। मैं सोचता हूँ कि यू.एस.ए. और कनाडा की तुलना में, यूरोप में शिक्षा काफी ऊँची है, परन्तु तब यूरोप में, अभी भी, माता–पिता के अनुशासन की कुछ झलक है।

आजकल केवल बच्चे ही टहलुआ (menial) प्रकार के कार्य कर सकते हैं, कुछ घंटों के लिये काम, और वे आवारा घूमने के लिये, सभी प्रकार के खर्चीले रेडियो को खरीदने के लिये, कार और लगभग हर चीज, जो अपने मन में बिठा लेते हैं, खरीदने के लिये, काफी धन पा जाते हैं। यदि उनके पास नगद नहीं होता, तब शीघ्र ही, उन्हें एक उधार खाता मिल जाता है, और वे जीवन भर के लिये, ठीक निश्चितता के साथ, मानो कि वे नशीली दवाओं पर रहे हों, बंध जाते हैं।

लोगों को शिक्षा देने की क्या तुक है, जबकि उस शिक्षा का बड़ा भाग, उन्हें ये सिखाता हुआ दिखता है कि उन्हें वे चीजें पानी चाहिए, जिन्हें पाने का उनके पास संभवतः कोई मौका नहीं है? मेरा ख्याल है कि अब धार्मिक अनुशासन की ओर वापसी होनी चाहिए, आवश्यकरूप से ईसाइयत नहीं, न आवश्यकरूप से बौद्ध धर्म और न आवश्यकरूप से यहूदी धर्म, परंतु किसी धर्म की ओर वापिसी, क्योंकि जबतक विश्व के पास कुछ आध्यात्मिक अनुशासन नहीं होगा, तबतक विश्व, मानवता के बद और बदतर नमूनों को, बाहर लाना जारी रखेगा।

काफी संख्या में नौजवान लोग मुझे लिखते हैं, और मुझे पुराने ढंग का बताते हैं क्योंकि मैं मादक द्रव्यों का अनुमोदन नहीं करता। अब, सोलह, सत्तरह या अठारह वर्ष की उम्र के ये नौजवान लोग, समझते हैं कि वे सब

कुछ जानते हैं, ये महसूस करने की बजाय कि उन्होंने मुश्किल से ही जीना प्रारंभ किया है, इसका महसूस करने के बजाय कि वे अभी अंडे में से मुश्किल से बाहर ही निकले हैं, वे सोचते हैं कि ज्ञान का पूरा खजाना, उनके लिये खुला हुआ है।

निश्चितरूप से, पूरी तरह से, और अटल रूप से, जबतक कि उनको कठोर चिकित्सीय निरीक्षण के अंतर्गत न दिया जाये, मैं किसी भी प्रकार के नशे के विरोध में हूँ।

यदि कोई व्यक्ति जाता है, और तेजाब का एक बड़ा भाग किसी दूसरे व्यक्ति के चेहरे के ऊपर लापरवाही से फेंक देता है, तब परिणाम स्पष्ट है, मांस उधड़ जाता है, आंखें जल जाती हैं, ठोड़ी में गहरी लकीरें बनाते हुए, तेजाब नीचे गहराई में घुसता जाता है, और छाती तक नीचे बहता है, और सामान्यतः परिणाम भयानक होता है। परंतु ये उसकी तुलना में, जब लोग नशे के आदी हो जाते हैं, एक दयालुतापूर्ण कार्य है। गलत तरीके से उपयोग में लाये गये मादक पदार्थ, और चिकित्सीय पर्यवेक्षण के बिना उपयोग में लाये गये सभी मादक पदार्थ, गलत उपयोग किये हुए होते हैं, सूक्ष्मशरीर को, ठीक वैसे ही जैसे कि, तेजाब भौतिक शरीर को झुलसा देता है, कुम्हला देते हैं।

मादक पदार्थो के किसी व्यसनी, जो मरता है और सूक्ष्मलोक को जाता है, का समय, वास्तव में, भयानक समय होता है। उसे, उस में, जो प्रभावीरूप से, एक सूक्ष्मशरीरी मानसिक चिकित्सालय होता है, जाना पड़ता है, क्योंकि उसका सूक्ष्मशरीर खराब और विकृत हो जाता है, और इससे पहले कि सर्वाधिक कुशल देखरेख, जो वह पा सकता है, उस सूक्ष्मशरीर को, किसी दूसरी चीज की तरह से, फिर से कार्य करने योग्य अवस्थाओं में, पहले जैसा बना सके, ये एक काफी लंबा समय ले सकता है।

लोग, इस पूरी तरह से बुराई वाले नशे, एल.एस.डी. के सम्बंध में पगलाये हुए हैं। आत्महत्याओं, जो हुई हैं, वे जिनकी सूचना प्राप्त हुई हैं, की संख्या पर विचार करें और उन का भी विचार करें जो सूचित नहीं की गई है, उस हानि पर विचार करें, जो पागलपन और हिंसा के रूप में पैदा हुई है। एल.एस.डी., मेरीजुआना, हेरोइन, ये सारी चीजें, ये सब पराकाष्ठा की हद तक अधिक बुराई हैं। दुर्भाग्यवश, जवान लोग, बूढ़े लोगों की, जिनके पास अनुभव है, सलाह को स्वीकार करने में सक्षम दिखाई नहीं देते।

उदाहरण के लिये, ये सत्य है कि एल.एस.डी. सूक्ष्मशरीर को भौतिक शरीर से पृथक कर देती है, परंतु अक्सर हर बार, दुर्भाग्यवश, सूक्ष्मशरीर नीचे, निम्नतर नरकों में, खराब सूक्ष्मतलों में से एक में जाता है, और जब वह वापस आता है, तो अवचेतन स्वयं ही, उन डरों से, जिनमें होकर वह गुजरा है, म्लान हो जाता है। इसलिये, वे नौजवान लोग, जो इसे पढ़ रहे होंगे, मादक द्रव्यों से दूर रहें, कभी ध्यान न दें, यदि आप सोचते हों कि मादक द्रव्य (X) या मादक द्रव्य (Y), यदि उन्हें बिना चिकित्सीय पर्यवेक्षण के लिया जाता है, हानि रहित हैं। आप! के पास, कुछ अतिसंवेदनशीलता हो सकती है, जो आपको इन मादक द्रव्यों के लिये, विशेषरूप से, ग्रहणशील बना देगी और आप वापसी की आशा के परे, अत्यधिक शीघ्रतापूर्वक इससे जुड़ जायेंगे।

याद रखें, ये सभी मादक द्रव्य हानिकारक हैं, और यद्यपि किसी दूरस्थ संयोग से, ये आपको अपने भौतिक शरीर पर कुछ समय के लिये प्रभाव न दिखा सकें, फिर भी, अत्यंत निश्चितता के साथ, ये आपके सूक्ष्मशरीर और प्रभामंडल के ऊपर प्रभाव प्रदर्शित करेंगे।

संयोगवश, यदि लोग मादक द्रव्य लेते हैं और वे अपने सूक्ष्मशरीरों को हानि पहुँचाते हैं, तब वे उसी वर्ग, जैसे कि आत्महत्या, के अंतर्गत आ जाते हैं, और यदि कोई व्यक्ति आत्महत्या करता है, तो उसे, अपनी सजा को पूरा करने के लिये, जो इसको देखने का सही तरीका है, या अपने पाठों को पूरा करने के लिये, जो इसको देखने का दूसरा तरीका है, इसी पृथ्वी पर वापस आना होता है। आप इस पर किसी भी तरीके से देखें, किसी भी प्रकार से, स्वर्गिक क्षेत्रों से निकलना संभव नहीं है, पृथ्वी से भी निकलना संभव नहीं है। यदि आप इस बार कामों का चिपका देते हैं और उन चीजों को नहीं सीखते हैं, जिनको सीखने के लिये आप यहां आये थे, तो आप यहाँ वापस आते हैं और तबतक वापस आते हैं, जबतक कि आप अपने पाठों को सीख न लें। इसलिये मादक दवाओं का ये धंधा, वास्तव में एक गंभीर चीज है और शासन की गयी कोई भी कार्यवाही, किसी भी तरह से, मादक द्रव्यों की समस्या से निपटने में अत्यधिक गंभीर हो सकती है। हम में से हर एक, और प्रत्येक के लिये, इससे निपटने का सब से अच्छा तरीका ये तय करना है कि हम मादक द्रव्य नहीं लेंगे। उस तरह से, हम आध्यात्मिक आत्महत्या नहीं कर रहे होंगे और हमें लगातार खराब होती हुई अवस्थाओं में, इस पृथ्वी पर वापस नहीं आना पड़ेगा।

पिछले पैराग्राफ में, मैंने अपनी दूसरी पुस्तकों में– आत्महत्याओं के सम्बंध में इस टिप्पणी को दोहराते हुए,

आध्यात्मिक आत्महत्याओं का संदर्भ दिया था। मैं बड़ी संख्या में लोगों से पत्र प्राप्त करता हूँ, जो मुझे बताते हैं कि वे आत्महत्या करने वाले हैं। शायद कोई उनके प्रेम में आड़े आया है, शायद प्रेम में उनको काटा नहीं गया, और वे इस पर खेद व्यक्त करने के लिये, खेल बनाने के लिये जीवित रहे, परंतु ये जो कुछ भी हो, अनेक लोगों पर लिखते हुए, मुझे धमकाया गया, जो ये कहते हैं कि वे आत्महत्या करने जा रहे हैं। मुझे एकबार फिर कहने दें, जैसा मैंने लगातार कहा है, आत्महत्या कभी भी, कभी भी, न्यायसंगत नहीं है। यदि कोई आत्महत्या करता है तो वह एक बार फिर से 'कक्षा में प्रवेश पाने के लिये' वापस इस पृथ्वी पर फेंक दिया जाता है। इसलिये, ये बिलकुल भी न सोचें कि आप, अपने गले को काटते हुए, या अपनी कलाइयों को काटते हुए, या उसी तरह की कोई दूसरी चीज को करते हुए, अपनी जिम्मेदारियों से भाग सकते हैं; आप नहीं कर सकते।

कुछ वर्षों पहले एक लड़के ने, जो कुछ हद तक अस्थिर था, प्रकटरूप से आत्महत्या की और ये कहते हुए एक नोट छोड़ा कि वह कुछ समय के अंतराल में ही फिर वापस आने वाला है। ठीक है, दुर्भाग्यवश, मेरी पुस्तकों में से एक प्रति (तुम सदा के लिये) उसके समीप पाई गयी, और प्रेस को वास्तव में, एक रोमन छुट्टी[7] मिल गई, वे आनंद से वावले हो गये, उन्होंने हर चीज को, जिसको वे सोच सकते थे, उभारा और तब उन्होंने दूसरे लोगों को, ये देखने के लिये बुलाया कि वे कोई दूसरी चीज देख सकें। और आप जानते है, इस सब की सबसे अधिक आनंददायक चीज ये है कि प्रेस में ये अधिसूचित किया गया कि आत्महत्याओं को मैंने प्रेरित किया, वास्तव में, मैंने कभी आत्महत्या को बढ़ावा नहीं दिया। मैं अक्सर सोचता हूँ कि मैं प्रेस के लोगों की हत्या करना चाहूंगा, परंतु तब उनका भाग्य, उनके लिये बहुत अच्छा होगा। तो उन्हें, अपनी गलतियां करते हुए, जाने दें और बाद में, उन्हें इसके लिये भुगतने दें। मैं व्यक्तिगतरूप से विश्वास करता हूँ कि, प्रेस के लोगों में से अधिकांश, निचले दर्जे के मानव हैं। व्यक्तिगतरूप से, मैं विश्वास करता हूँ कि आज प्रेस, इस पृथ्वी पर, सर्वाधिक बुरा बल है, क्योंकि प्रेस चीजों को विकृत करता है और उत्तेजना या उन्माद को उत्तेजित करने का प्रयास करता है, लोगों का युद्ध की ओर चलाने का प्रयास करता है। यदि सरकारी नेता साथ बैठ सकें, और झूठ के पुलंदे के ऊपर प्रेस के भोंपू बजाये बिना, मित्रवत् सम्बंधों को चलाते हुए, मामलों पर चर्चा करें, तब हम अधिक शांति पायेंगे। हॉ, जोरदारी के साथ, अपने खुद के अनुभवों पर आधारित करते हुए, मैं पूरी तरह पक्का विश्वास रखता हूँ कि आज के दिन, प्रेस इस विश्व में सबसे खराब बल है।

मैं इस सबका उल्लेख करता हूँ क्योंकि, प्रेस ने भी सूचित किया था कि लड़के ने सोचा था कि वह वापस आयेगा और फिर से प्रारंभ करेगा। ठीक है, वह ठीक था, लड़के को फिर से वापस आना पड़ेगा। परंतु इसे मुझे फिर दोबारा दोहराने दें। मैं आत्महत्या को कभी नहीं, कभी नहीं, प्रोत्साहित करता। जैसा कि मैंने अपने पूरे जीवन भर, अपरिवर्तनीय रूप से कहा है आत्महत्या कभी भी न्यायसंगत नहीं है, और जब कुछ बौद्ध लोग, प्रकटरूप से इस आस्था में, इसे करते हैं कि ये बौद्धों के हितों को या शांति के हितों को मदद करने जा रहा हैं। मैं अभी भी, निश्चयपूर्वक कहता हूँ कि आत्महत्या कभी भी न्यायसंगत नहीं है। इसलिये मेरी प्रबल अनुशंसा है कि कभी भी आत्महत्या के बारे में नहीं सोचें, ये मदद नहीं करता, आपको और खराब हालातों में वापस आना पड़ेगा। और यदि आप इससे चिपके रहे तो ये लगभग उतना हमेशा बुरा नहीं है, जितना कि कोई डरता है। किसी भी चीज की सबसे खराब चीज, कभी नहीं होती, आप जानते हैं कि हम केवल सोचते हैं कि होती होगी।

आत्महत्या, लाशें, इत्यादि इत्यादि। अब यहॉ एक प्रश्न है, जो कल ही आया है। एक महिला पूछती है, 'बादल जो किसी लाश के ऊपर तीन दिनों तक टिके रहते हैं– क्या ये आत्मा होती है या सूक्ष्मशरीर? क्या आत्मा शीघ्र ही दूसरी तरफ नहीं चली जाती?'

ठीक है, हॉ, वास्तव में। रजततंतु को काटने के साथ ही, ठीक वैसे ही जैसे कि, एक बच्चा, अपनी मां के शरीर से गर्भनाल अलग किये जाते ही, पूरी तरह से अलग किया जाता है, आत्मा शरीर को छोड़ देती है। जबतक गर्भनाल नहीं काटी जाती, तब तक बच्चा, उसी तरह से, अपनी मां के साथ सहअस्तित्व में रहता है, जैसे कि, जबतक कि रजततंतु नहीं काटी जाती, सूक्ष्मशरीर, भौतिक शरीर के साथ सहअस्तित्व में रहता है।

बादल, जो तीन या वैसे ही कुछ दिनों तक, लाश के ऊपर तैरता है, केवल इकट्टी की हुई ऊर्जा को बिखेर देने का समय है। इस पर दूसरी तरह से देखें; मान लो आपके पास एक चाय का प्याला है, और उसमें चाय उड़ेल दी गई है और इससे पहले कि आप इसे पी सकें, आपको बाहर बुला लिया गया है। गर्म चाय तैयार

7 अनुवादक की टिप्पिणी : एक अवसर, जिसमें दूसरों के दुख या पीड़ाओं से आनन्द या लाभ उठाया जाता है, रोमन छुट्टी कहलाता है।

है, परंतु ये ठंडी, और ठंडी होती जाती है; इसलिये, उसी तरीके से, जबतक कि लाश, पूरे जीवन में इकट्ठी की हुई पूरी ऊर्जा को समाप्त नहीं कर लेती, तबतक तीन दिनों में धीमे धीमे समाप्त होता हुआ एक बादल, हमेशा लाश के ऊपर तैरता है। दूसरा उदाहरण; मान लो आपके पास, अपने गर्म छोटे हाथ में एक सिक्का है, और आप इसे अचानक ही नीचे रख देते हैं, आपके नन्हें छोटे हाथ के द्वारा ऊष्मा के रूप में इसको दी गई ऊर्जा, तत्काल ही नहीं बिखर जाती, आपके हाथ के द्वारा दी गयी सिक्के में निहित ऊर्जा, (विकिरण द्वारा) जाने और सिक्के को आसपास के सामान्य तापक्रम तक वापस लौटने में, समय की एक निश्चित मात्रा लेती है। उसी तरीके से, कोई सूक्ष्मशरीर भौतिक शरीर से पूरी तरह अलग हो सकता है, परंतु चुंबकीय आकर्षण के सिद्धान्त के द्वारा, ये भौतिक शरीर के आसपास वाले आवेश का, अभी भी, संज्ञान ले सकता है। इसलिये जबतक कि सभी आवेश न चले जायें, ऐसा कहा जाता है कि भौतिक शरीर और सूक्ष्मशरीर जुड़े हुए हैं।

विश्व के इस भाग में, यहॉ उत्तरी अमेरिका में, मरने के आतंकों में से एक है, लोगों के ऊपर मरहम लगाने का बर्बरतापूर्ण अभ्यास। ये मुझे, बहुत कुछ हद तक, वैसा ही दिखाई देता है, जैसे कि मुर्गी के बच्चों में मसाला या कुछ चीज भरना। इसलिये मेरे खुद के मामले में, मैं जलाया जाने वाला हूॅ, क्योंकि ये मरहम लगाने वाले उसके साथियों के द्वारा व्यवहार करने और घपला करने से काफी अच्छा है और, जैसे कि एक निश्चित मादा बिल्ली ने कहा था कि 'बूढ़ा आदमी, इसके पहले कि वह ज्वाला को पोषित करे, *'ज्वाला का पोषण'* को पूरी करने का प्रयास कर रहा है।' क्या मैं अपनी तरफ से कह सकता हूॅ कि मैं आशा करता हूॅ कि वे आज रात को, जलाते हुए, श्मशान के दरवाजे खुले नहीं रखेंगे (जब मैं अंदर होऊॅ)।

एक महिला– मैं सुनिश्चित हूॅ कि वह महिला है, क्योंकि वह इतने शालीन तरीके से लिखती है– मुझ पर थोड़ी डांट लगाती है, 'आप गूढ़विज्ञानी हमेशा ये क्यों कहते है, ये ऐसा है, और ये वैसा है, परंतु कोई प्रमाण नहीं देते? लोगों के पास प्रमाण होने चाहिए? आप प्रमाण क्यों नहीं देते? हम हर चीज पर विश्वास क्यों करें? ईश्वर ने कभी भी, मुझसे एक शब्द भी नहीं कहा है, और अंतरिक्ष यात्रियों ने अंतरिक्ष में स्वर्ग के कोई चिन्ह नहीं देखे हैं।'

प्रमाण! ये सबसे बड़ी चीजों में से एक है, परंतु मुझे ये बतायें; यदि अंधों के लोक में कोई एक दृष्टिवान व्यक्ति हो, तो वह कैसे प्रमाण दे सकता है कि दृष्टि होती है? इसके अलावा, आप प्रमाण कैसे देते हैं, जबकि अनेक लोग उस चीज पर विश्वास नहीं करेंगे, जब ये उनकी नाक के सामने चिपकाया गया हो।

अनेक प्रसिद्ध वैज्ञानिक हुए है? (मैं इस क्षण केवल श्रीमान् ऑलीवर लॉज (Mr. Oliver Lodge) के बारे में सोच सकता हूॅ), काफी संख्या में, विज्ञान में प्रसिद्ध नाम, गूढ़विश्व के साथ सहयोग करते हुए, प्रमाण में अभिरुचि रखते रहे हैं। उदाहरण के लिये, सर ऑलीवर लॉज, एक सर्वाधिक आध्यात्मिक व्यक्ति, ने 1913 में इंग्लैंड में, एक अत्यंत महत्वपूर्ण समिति में भाषण दिया। सर ऑलीवर ने कहा, ''या तो हम अमर प्राणी हैं, या हम (अमर प्राणी) नहीं हैं। हम अपने भाग्य को नहीं जान सकते, परंतु हमारे पास किसी प्रकार का भाग्य होना चाहिए। विज्ञान मानवीय भाग्य को बताने में सफल नहीं हो सकता है, परंतु इसे निश्चितरूप से, इसको अस्पष्ट नहीं करना चाहिए।' वे ये कहते हुए चलते गये कि उनके ख्याल में, विज्ञान की आज की विधियां, प्रमाण प्राप्त करने में काम नहीं करेंगी। उन्होंने ये भी कहा कि ये उसका विश्वास था कि यदि आदरणीय वैज्ञानिकों को, बिना सभी शंकालुओं के और ठगों के, स्वतंत्र रूप से काम करने दिया जाये, तब वे गूढ़ घटनाओं को, भौतिक नियमों पर घटा सकते हैं, और स्पष्टरूप से यह बहुत कुछ ऐसा ही है। लोग, जो प्रमाण की मांग करते हैं, ईंटों पर लगायी गई ईंटों के रूप में प्रमाण चाहते हैं, वे प्रमाण चाहते हैं, जबकि पूरे समय, वे उस प्रमाण को रोकने का प्रयास करते हैं। लोग, जो केवल संसारी प्रमाण को प्राप्त करने का प्रयास करते हुए गूढ़विज्ञान के अध्ययनों में जाते हैं, उन लोगों की भांति हैं, जो एक अंधकक्ष में जाते हैं, और ये देखने के लिये कि, क्या अभीतक अविकसित रखी गई फिल्मों के ऊपर कोई छवि है, बिजलियों को जलाते हैं। उनकी क्रियायें, निश्चितरूप से, प्रमाण के किसी प्रगटन को अटकाती हैं।

गूढ़ विश्व में, हम अमूर्त (intengible) पदार्थो से व्यवहार कर रहे होते हैं, हम, उन किन्हीं अत्यधिक ऊॅचे कंपनों के मामलों से व्यवहार कर रहे होते हैं। और आजकल लोग जिस तरीके से चलते हैं, वह कुछ हद तक वैसा ही है, जैसे कि खोदने के लिये वायु चालित बरमे (pneumatic road drill) का उपयोग करना, ताकि छीलन को किसी के दांत में डाला जा सके। इसे पहले कि सांसारिक अर्थ में प्रमाण दिये जा सकें, वैज्ञानिकों को, जो हो सकता है, और जो नहीं हो सकता, में प्रशिक्षण देना पड़ेगा, उनको सांड़ की तरह से, किसी दरवाजे पर खुला छोड़ देना, उनके लिये अनुपयोगी होगा। वे ईटें नहीं तोड़ रहे हैं, वे किसी ऐसी चीज का पता लगाने का प्रयास कर रहे है, जो उतनी ही मौलिक है, जितनी कि मानवता स्वयं। यदि लोग स्वयं के प्रति ईमानदार होंगे, यदि वे

टेलीविजन के पर्दों और सिनेमाओं और उसी तरह की दूसरी चीजों से दूर टिकेंगे, और यदि वे ठीक से ध्यान लगायेंगे, तब उनमें एक आंतरिक जागरूकता उत्पन्न होगी कि ऐसी कोई चीज होती है। वे अपनी स्वयं की आध्यात्मिक प्रकृति के सम्बंध में, हमेशा ये मानते हुए कि उनकी आध्यात्मिक प्रकृति, उतनी निराधार नहीं है कि किसी दूसरे प्रगटन को बाधित कर दे, सजग हो जायेंगे।

जैसा कि मैं पहले कह चुका हूँ, वर्षों तक, प्रभामंडल, जो मैं हर व्यक्ति के आसपास देखता हूँ, के फोटोग्राफ पा लेने की चाह के अलावा, मैंने एक टेलीफोन विकसित करना चाहा था, जो परोक्षज्ञान से रहित, किसी भी साधारण व्यक्ति को, दूसरी ओर उपलब्ध व्यक्ति से टेलीफोन पर वार्ता के लिये सक्षम बनायेगा। विचार करें कि एक स्वर्गिक टेलीफोन निर्देशिका में देखना, और सूचना के लिये पूछना– क्या वह ऊंचा गया या नीचा?, ये कितना मजेदार होगा। मेरा ख्याल है कि निम्नस्थ क्षेत्र, एक टेलीफोन एक्सचेंज, जिसे गंधकाश्म (brimstone) या कुछ वैसी ही समान चीज, कहा जायेगा, बनायेंगे। कैसे भी, आने वाले वर्षों में, जब वैज्ञानिक कम पदार्थवादी होंगे, तब ऐसा होगा कि ऐसा टेलीफोन होगा। वास्तव में, ऐसा रहा है, परंतु वह एक दूसरी कहानी है।

शायद मुझे अगली चीज, 'प्रेस के समाचारों को रोकें' की ओर चलना चाहिए, क्योंकि कुछ तीन हजार मील दूर, जॉन हेंडरसन (John Henderson) से, एक टेलीफोन आया था। अब उसके पास, इस जीवन के दूसरी ओर, लोगों के जीवन के कुछ प्रमाण हैं। उसके पास एक संदेश आया था, और उसे ऐसा महसूस हुआ कि उसका सिर पीटा जा रहा है, ये वह है, जो मैं उसे पहले, एकबार, बता चुका था, कि मैं उसे करना चाहूंगा! परंतु कैसे भी, उसने मात्र ये कहने के लिये कि, अंततः उसे **संदेश प्राप्त हो गया है**, फोन किया था। संदेश दूसरी ओर से भेजा गया था, और मेरे द्वारा ठेला हुआ बिलकुल भी नहीं था। किसी दिन, शायद, जॉन हेंडरसन एक पुस्तक लिख सकता है, उसे लिखनी चाहिए, और यदि वह इस घटना के सम्बंध में बताता है, अनेक लोग शायद कहेंगे, 'ठीक है, मैं ऐसी चीजों को अपने ऊपर कभी नहीं! कभी भी घटित नहीं होने देना चाहूंगा!'

'हाय, गुव,' कुछ समय तक, गहरी और शोर भरी नींद में रहने के बाद, झटके के साथ पूरी तरह जगने पर, कुमारी टेडी ने कहा। 'मेरे पास एक प्रश्न है, अनेक मानव जिसका उत्तर पाना चाहेंगे।'

'ठीक है, टेडी बच्ची, वह क्या है?'

इसलिये कुमारी टेडी बच्ची बैठी और अपनी बाहों को मोड़ा और उसने कहा, 'ठीक है, ये इसप्रकार है; हम बिल्लियॉ जानती हैं कि दूसरी तरफ क्या व्यवस्थायें की जाती हैं, परंतु आप मनुष्यों को क्यों नहीं बताते कि वे पृथ्वी पर अपने जीवन को कैसे सुनियोजित कर सकते हैं?

'व्यक्तिगत रूप से मैंने सोचा, कि मैं उसे घृणास्पद स्थिति तक संबोधित कर चुका था, और मैं बटरकप को, ये बताने के लिये कि मैं अपने आपको दुहरा रहा हूँ, उछलते हुए अपने पास नहीं आने देना चाहता था, और आत्महत्या के बारे में इतना कुछ लिखने के बाद, यदि मैं मृत्यु के बाद जीवन के सम्बंध में, फिर से लिखना प्रारंभ करूं, तो ये कुछ–कुछ, आत्महत्या के बारे में, के सदृश्य हो सकता है, इसलिये शायद मैं उत्तर को 'जन्म से पहले का जीवन पुकारते हुए,' इस पर आ सकता हूँ।

इस जीवन के दूसरी ओर वाले किसी अस्तित्व ने तय किया है कि उसे एक विशेष पाठ्यक्रम को लेने के लिये, फिर से स्कूल जाना चाहिए। शायद, पहले कुछ पाठ सीखे गये थे, और घर वापसी ने, उन पाठों को पचाने और कमजोरियों को समझने योग्य बना दिया था। इसलिये तब, अस्तित्व, जो (नर या मादा) वह है, बैठता है और चीजों पर सोचता है।

पृथ्वी पर, अनेक विद्यार्थी, एक परामर्शदाता के साथ अपने भविष्य की चर्चा करते हैं, वे चर्चा करते हैं कि कौन से पाठ्यक्रम आवश्यक हैं ताकि वे एक निश्चित अर्हता प्राप्त कर लें। उदाहरण के लिये, इंग्लैंड की एक नर्स शल्य चिकित्सक होना चाहती है; प्रगटतः, उसके पास शरीर विज्ञान का कुछ ज्ञान है, इसलिये उसे एक चिकित्सीय स्कूल में प्रवेश पाने के लिये क्या आवश्यक है ? वह चर्चा करती है कि उसे क्या करना है, और तब वह उसे करती है। उसी तरीके से, जीवन के दूसरी तरफ, विचारणीय सहायता के साथ, हमारा वह (नर या मादा), निर्णय लेता है कि पृथ्वी पर कौन से पाठ पढ़ने हैं, कौन से कामों को शिखर तक चढ़ाना है, और कौन कौन सी मुश्किलें झेलनी पड़ेंगी और तब अत्यंत सावधानी के साथ पूरी चीज की योजना बनायी जाती है।

क्या आप शतरंज खेलते हैं? ठीक है, यदि आप खेलते हैं तो आप, शतरंज की उन समस्याओं के सम्बंध में जो कुछ निश्चित पत्रिकाओं में दिखती हैं, जानेंगे। शतरंज का बोर्ड, पैदलों वजीरों और हाथियों और वैसे ही औरों से, कुछ निश्चित पूर्वनिश्चित स्थितियों में पूरी तरह सजा हुआ है। आप, बेचारी आत्मा को सोचना पड़ेगा, और

तबतक सोचना पड़ेगा जबतक कि आपका मस्तिष्क लगभग फट न जाये, और खेल को जीतने के लिये एक रास्ते को न निकाल ले। ये कुछ–कुछ, आगामी जीवन की योजना बनाने जैसा ही है। सभी बाधायें सजी हुई हैं, सभी परिस्थितियॉ निर्धारित हो चुकी हैं; तुम्हें क्या सीखना है, क्या तुम्हें गरीबी, और उससे कैसे पार पाया जाये, सीखना है? तब किसी धनी परिवार में जाना भला नहीं होगा, तब, क्या ये ठीक है? क्या तुम्हें सीखना है कि दूसरों के प्रति उदार कैसे बना जाये, धन के साथ क्या किया जाये? तब गरीब परिवार में जाना कोई भला नहीं है, क्या है? आपको तय करना है कि आप क्या सीखना चाहते हैं, आपको तय करना है कि किस तरह का परिवार, आपकी आवश्यकताओं की सबसे अच्छी तरह पूर्ति करेगा। क्या आप किसी व्यापारी परिवार में या एक व्यावसायिक परिवार में जा रहे हैं ? या क्या आप एक भद्र परिवार में आने वाले हैं? आप जानते हैं, ये निर्भर करता है। ये अभिनेताओं की मंच पर उपस्थिति की भांति है, एक अभिनेता किसी नाटक में राजा हो सकता है, और दूसरे में भिखारी, और जीवन के साथ भी ठीक वैसा ही है, ये निर्भर करता है कि आपको क्या सीखना है। आप, उन परिस्थितियों, कठिनाईयों, समस्याओं और अवरोधों की ओर, एक पड़ाव पर आते हैं, जिसका आपने स्वयं ही निर्णय लिया है। आपने अपनी समस्याओं को, बहुत कुछ उस तरीके से, जैसे कि शतरंज की समस्या व्यवस्थित की जाती है, और हल करने के लिये, किसी दूसरे के लिये छोड़ दी जाती है, आने के पहले ही व्यवस्थित किया है।

इसलिये आपकी समस्यायें आपके सामने ही सजाई गयी हैं, और केवल बैठे रहने के बजाय, और अपने सिर और कहीं भी दूसरी जगह खुजाने के बजाय, जो आपको उस क्षण और उसको हल करने का प्रयास करते समय कष्ट देती है, आप इस सम्बंध में कुछ करते हैं, आप इस सम्बंध में कुछ देखते हैं, और परिवार, देश, अवस्थिति, जो आपने ही निश्चित की है, जो समस्या के साथ जीने के लिये, आपके लिये सर्वाधिक सक्षम होगी, का पता करते हैं, और उसे केवल अपने जीने की क्रिया, और परेशानियों और परीक्षाओं को झेलने के द्वारा हल करेंगे।

कुल मिलाकर, शायद परास्नातक पाठ्यक्रम में जाने वाला एक विद्यार्थी जानता है कि उस पर कुछ मुसीबतें आने वाली हैं, वह जानता है कि उसे अंकों की कुछ निश्चित प्रतिशतता लानी होगी, अन्यथा वह पास नहीं होगा, अन्यथा उसे फिर से वापस आना होगा। वह जानता है कि उसे निश्चित समय तक कक्षाओं में उपस्थित रहना होगा, परंतु वह इन सब चीजों को जानता है, और इन सब में होकर गुजरना चाहता है, क्योंकि उसे योग्यता और ज्ञान, जो बाद में आता है, चाहिए। इसलिये आपने हर चीज को सुनियोजित किया, परंतु, आपकी कोई योजना, कभी भी, आत्महत्या को शामिल नहीं करती थी। यदि आप आत्महत्या करते हैं, तो इसका अर्थ है कि आप स्कूल से भगोड़े (drop outs) हैं, इसका अर्थ है आप फेल हो गये हैं, और यदि एक व्यक्ति भगोड़ा है, तो इसका अर्थ यह है कि वह, योग्यताओं की कमी और आंतरिक दृढ़ता के कारण आगे नहीं बढ़ सकता। हमेशा, निरपवाद रूप से, जो जीवन से भगोड़े होते हैं, आत्महत्या के माध्यम से वापस आते हैं और फिर से नई ताजा समस्याओं, जो उनके भाग्य के साथ लगी बंधी हैं, के साथ, शुरुआत करते हैं।

अगली बार, आप किसी समाचार पत्र या किसी पत्रिका में देखें, और आप, छापे के काले और सफेद खानों में, इतनी अच्छी तरह, पूरी तरह सजाई हुई शतरंज की किसी समस्या को देखें, ठीक है, तब केवल याद रखें कि इस पृथ्वी पर आने से पहले, **आप ही** अपनी समस्याओं को उस तरह चुनते हैं।

आप उन्हें कैसे हल कर रहे हैं? क्या उन्हें एकदम ठीक कर रहे हैं? दिल से दुखी न हों, आप जानते हैं! कि आपने ही शुरू किया है।

अध्याय – पांच

सौ आदमी एक शिविर बना सकते हैं : घर को बनाने के लिये एक औरत चाहिए।

'ठक, ठक' बूढ़े आदमी ने, कुमारी क्लियो, जो पर्दों के खिसकाये जाने के कारण, खाली स्थान से आती हुई धूप की प्रशंसा करती हुई, बैठ कर मजा ले रही थी, से कहा। उसने अपने सिर को चतुराई से घुमाया और उन सुंदर नीली ऑखों में होकर घूर कर देखा। 'ठक, ठक,' मानो कि ध्वनि का आनंद लेते हुए, उसने फिर से दोहराया। 'काश! मैं एक धनी लेखक होता,' उसने कहा, 'और मेरे पास एक बड़ा संदर्भ पुस्तकालय होता। क्या तुम जानती हो, क्लियो, कि मेरे पास कितनी किताबें हैं ?'' बूढ़े आदमी ने अपना सिर घुमाया, और मात्र उन किताबों की ओर देखा, जो उसके पास थीं, एक शब्दकोष, मधुमेह रोगियों की नियम–पुस्तिका (maual), जहाजों के कप्तानों के लिये एक चिकित्सीय हस्तपुस्तिका, राष्ट्रों के झंडों के बारे में एक पुस्तक, मांन्ट्रियल रेडियो के कार्यक्रमों के बारे में एक सूचीपत्र, टोरोंटो से कनाडियाई टायरों का एक सूचीपत्र, और वास्तव में, एक बड़ी भारी एटलस, इतनी बड़ी कि इस चीज को उठाने के लिये, केवल दो आदमी और एक कुत्ता चाहिए, निश्चितरूप से, बिस्तर पर पड़े हुए एक दीन बेचारे के लिये, बहुत बड़ी, और बहुत भारी। 'और इस लेखक का यही पुस्तकालय है, क्लियो,' टेढ़ी हंसी हंसते हुए, बूढ़े आदमी ने कहा। बल्कि एक बेचारगी, यद्यपि, चीजों की संख्या, जो लोग पूछते हैं, ठीक है, यदि मैं गंजा नहीं होता, ये मेरे रोंगटे खड़े करने के लिये पर्याप्त होता। फिर भी, ये समय का नष्ट करना है; हमें अपनी पुस्तक के साथ चलना चाहिए, कुमारी क्लियो, और जबकि मैं आज के खाने की जुगाड़ के लिये काम करूं, तुम और टेडी जा सकती हो, और धूप का मजा ले सकती हो।'

श्रीमती सोरोक (Mrs. Sorock) – हमारी पुरानी मित्र, वेलेरिया सोरोक (Valeria Sorock)– नींद के सम्बंध में पूछती हैं। हे भली भव्य!, श्रीमती सोरोक, क्या आप नहीं जानतीं कि नींद क्या है? कैसे भी, एक बड़ी संख्या में लोगों ने मुझे इसी चीज को पूछा है, इसलिये हम देखें कि हम इस सम्बंध में क्या कर सकते हैं।

भौतिक तल पर कोई शरीर कार्य करता है, और तमाम सारे आविष (toxins) बनाता है, मांसपेशियों में तमाम सारे विष इकठ्ठे हो जाते हैं। जब हम, किसी निश्चित कार्य के ऊपर, उन्हीं मांसपेशियों का उपयोग करते हुए, अत्यधिक कठोर परिश्रम करते हैं, तो मांसपेशियों के तंतुओं में रवे बन जाते हैं, और तीक्ष्णरूप से नुकीले होने के कारण, जब हम चलना जारी रखते हैं, वे अंदर घुस जाते हैं और हमें 'कड़ा' अनुभव कराते हैं, इसलिये हम शीघ्र ही चलना बंद कर देते हैं।

शरीर के सभी अंग आविषों से भर जाते हैं और इसलिये कुछ समय बाद आदमी के लिये, लेटना और सोना आवश्यक हो जाता है, जिससे शरीर की यांत्रिकी मंद पड़ जाती है, लगभग स्थिर हो जाती है, नींद की उस अवधि में, टॉक्सिन, जिन्होंने थकान और मांसपेशियों में कड़ापन पैदा किया था, बिखर जाता है या समाप्त हो जाता है, ताकि जब हम जगते हैं, हम वैसे ही अच्छे होते हैं, जैसे कि नये। पूरा कड़ापन जा चुका होता है, सभी दर्द और कष्ट गायब हो चुके होते हैं, और लोग बहुत तरोताजा अनुभव करते हैं, कम से कम वे करते हैं, यदि वे काफी जल्दी सोने के लिये चले जायें और पर्याप्त आराम पायें, अन्यथा यदि वे पीने के लिये बाहर चले गये, तो वे अपने शरीर की प्रक्रिया को बुरी तरह से अधिभारित (overload) करते हैं और वे खुमारी से पीड़ित होते हैं। परंतु हम पियक्कड़ों और वैसे ही औरों की बात नहीं कर रहे हैं, हम नींद के सम्बंध में आपके रवैये की चर्चा कर रहे हैं, आप, जो एक संवेदनशील व्यक्ति हैं।

इसलिये सामान्य भौतिक तल पर, जब हम सोते हैं, यह इन टॉक्सिनों और रवों को बिखेरने के उद्देश्य के साथ होता है, जो किसी को सुस्त, थका हुआ और दर्दों और कष्टों से भरपूर बना देता है।

परंतु नींद में, इसकी तुलना में, बहुत कुछ है। ठीक वैसे ही, जैसे कि स्कूल के बच्चे, स्कूल का दिन समाप्त होने के बाद घर जाते हैं, वैसे ही मानवीय मानसिकता को जल्दी जल्दी अंतरालों में घर जाना होता है।

यदि किसी मानव को पूरी तरह से हर समय जगा रहना पड़े तो उसे जीवन असहनीय प्रतीत होगा, सभी प्रकार की विविध अभिव्यक्तियॉ प्रकट होंगीं। इसलिये वह नींद की अवधि में स्वास्थ्य लाभ के लिये सूक्ष्मलोक की ओर चला जाता है। स्कूल के बच्चों की सोचें, जिन्हें प्रतिदिन चौबीसों घंटों के लिये कक्षा में रहना पड़ा हो; ठीक है, वास्तव में, वे इसे नहीं कर सकते थे, परंतु मानते हुए कि उन्हें करना पड़ा था, शीघ्र ही, वे कुछ भी सीखने में अक्षम होंगे, शीघ्र ही, वे थकान के साथ, पूरी तरह से पागल होंगे। वैसा ही वयस्कों के साथ भी है।

नींद की अवधि में, भौतिक शरीर एक बिस्तर के ऊपर प्रवृत (prone) पड़ा रहता है, अधिकांश समय में, ये बिस्तर पर होता है, कैसे भी, बहुत बार, वास्तव में, हमारे कहने के लिये, 'बिस्तर पर प्रवृत पड़ा हुआ'। और ऐसे समयों में भौतिक शरीर, अगले दिन के अस्तित्व के प्रयास में केवल सोते हुए वहॉ पड़ा रहता है। शरीर का चालक, मन, दूर है, इसलिये अवचेतन कही जाने वाली शरीर की यांत्रिकी, अधिग्रहण कर लेती है (takes over), और शरीर में सभी प्रकार की स्वैच्छिक क्रियायें घटित होती रहती हैं। अक्सर ऑखें, ढकी हुई पलकों के पीछे लुढ़क जाती हैं, अक्सर शरीर हांफने और कराहने लगता है, या खर्राटे भरता है, और वहॉ काफी कुछ लौट–पलट होती है क्योंकि नींद के दौरान, शरीर निश्चित मात्रा में व्यायाम करता है, ताकि रवे (crystals) और आविष (toxins) गायब किये जा सकें और अत्यधिक तेजी के साथ विखराये जा सकें। यही कारण है कि लोग, जब वे नींद में होते हैं, काफी कुछ हलचल करते हैं और नींद के दौरान, कोई भी, कभी भी, पूरी तरह से अचल नहीं रहता। यदि उन्होंने ऐसा किया, तो उन पर, शरीर और बिस्तर के साथ संपर्क बिंदु पर, ताजे आविषों का एक नया भार आ जायेगा, क्योंकि, पूरे समय वही मांसपेशियॉ दब रही होंगीं।

नींद की इस अवधि में, अवचेतन को पूरी तरह से, मन के नियंत्रण से स्वतंत्र कर दिया जाता है, और इसलिये वह, प्रभावीरूप से, स्मृति–नस्तियों (memory files) के बीच, कुछ–कुछ वैसे ही घूमता फिरता है, जैसे कि एक शरारती बच्चा, जो यहॉ किसी एक फाइल कार्ड को, और वहॉ शायद दो या तीन फाइल कार्डों को झपट सकता है।

यदि केवल एक कार्ड उठाया जाता है– और ध्यान रखें कि हमें 'कार्ड' को, ये प्रदर्शित करने के लिये कि ये वास्तव में कार्ड नहीं है, परंतु हम मात्र प्रतीकों का उपयोग कर रहे हैं, उद्धरण चिन्हों में रख देना चाहिए। यदि आप चाहें, हम इसे और अधिक स्पष्ट बनाने के लिये कह सकते थे कि स्मृति के एक गुच्छ को थपथपाया गया है–यदि वह स्मृति गुच्छ खटखटाया जाता है, तब, हम एक स्वप्न को पाते हैं, जो किसी विशिष्ट घटना के सम्बंध में, एकदम स्पष्ट हो सकता है। परंतु यदि दो या तीन स्मृति गुच्छ (हमें इन्हें कार्ड कहें, और इसके साथ कह चुके हैं!) उठा लिये जाते हैं, तब वह स्वप्न एक दिवास्वप्न (fantasy) बन जाता है, क्योंकि शुद्ध रूप से एक उदाहरण के रूप में, हम एक सपना, या एक साहसिक अभियान, जिसमें कोई मछली, घोड़े की पीठ पर, सड़क पर चल रही है, पा सकते हैं, क्योंकि, स्मृति ने एक बड़ी मछली को उठा लिया है और तब उसने इसके ऊपर, उसे, जो घोड़े पर सवार किसी व्यक्ति की स्मृति थी, जड़ दिया है। यदि ये दो स्मृति कार्ड, एक दूसरे के साथ अध्यारोपित कर दिये जायें, तब हम घोड़े की पीठ पर मछली के सवार होने का एकदम विकृत प्रभाव पाते हैं।

यदि आप, 35 एम.एम. पारदर्शियों (transparencies) के साथ स्लाइड प्रक्षेपण के लिये जायें, तो आप जान जायेंगे कि आप केवल एक स्लाइड को अपने प्रक्षेपक पर रखते हुए, एक अच्छा स्पष्ट चित्र पा सकते हैं परंतु यदि आप दो स्लाइड एक साथ रख दें, तब आपको वह चीज मिलेगी, जो कभी नहीं हुई। आप एक चीज को दूसरे पर मढ़ा हुआ पायेंगे और यदि आप तीन स्लाइडें एक साथ रखें, ठीक है, तब आप भ्रम पायेंगे। आपके स्वप्नों के साथ भी ऐसा ही है, स्वप्न एक साधारण चीज है, मात्र एक साधारण सरल स्मृति। परंतु जब ये रंग दी जाती है या किसी दूसरे भिन्न स्मृति कार्ड के द्वारा इस पर काबू किया जाता है, तब आपको दिवास्वप्न या एक दुस्वप्न (nightmare) भी प्राप्त हो सकता है। आप उन चीजों का सपना देखते हैं, जो पूरी तरह से असंभव हैं, चीजें जो कभी नहीं हो सकती, और यदि आपने अपनी स्मृति पर कोई नियंत्रण बनाये रखा, तब, जब आपका मन शरीर में लौटता है, आप कहेंगे कि आपको एक दुस्वप्न हुआ था।

नींद की अवधि में जब मन दूर होता है, शरीर में बना हुआ सेंसर भी सो रहा होता है, इसलिये कुछ स्मृतियॉ या दिवास्वप्न, उत्तेजक अथवा परपीड़क (sadistic) हो सकते हैं, इसलिये हम वैसे भयानक स्वप्न पाते हैं, जिनको लोग कई बार, लिखते हैं और कहते हैं, 'जी! जो कुछ मेरे साथ हुआ?'

सूक्ष्मशरीरी यात्रा को, स्वप्नों या दुस्वप्नों के साथ उलझा देना असंभव है, क्योंकि, सपनों में लगभग हमेशा कुछ वही असंगति, कुछ वही असंभावना, हमेशा ही कुछ तत्व होता है, जो उसके साथ, जिसे आप आप तथ्य के रूप में जानते हैं, अन्तर होता है। रंग गलत हो सकते हैं, और उदाहरण के लिये, आप चीते के सिर के साथ, एक व्यक्ति को देख सकते हैं। थोड़े से ही अभ्यास के साथ, ये निश्चित किया जा सकता है, कि कौन सा स्वप्न है, और कौन सी सूक्ष्मशरीरी यात्रा।

जब कोई जगा हुआ होता है, स्वप्नों की स्मृतियॉ और सूक्ष्मलोकों की स्मृतियॉ, किसी की जागरूकता

में एक ही पथ का अनुमान करती हैं; जब मन वापस आता है और शरीर जगता है, वह कह सकता है, 'ओह, गुजरी रात को, मैंने एक भयानक स्वप्न देखा,' यदि व्यक्ति ने प्रशिक्षण लिया है और वह जानता है कि चेतना सहित सूक्ष्मलोकीय यात्रा कैसे की जाये और तब वह उस पूरे ज्ञान के साथ लौटता है, जो उसने प्राप्त किया था। शरीर अभी भी आराम में है, आविष भी बिखरे हुए हैं, परंतु मन ने उस जानकारी को बचा रखा है, जो सूक्ष्मलोक में घटित हुई थी।

कुछ स्कूली बच्चों को एक छुट्टी मिली है, और वे स्कूल में वापस आने के लिये इतने अधिक उत्तेजित हैं कि हर चीज, जो छुट्टी में घटित हुई, उनके दिमागों या उनकी स्मृतियों से पूरी तरह गायब हो जाती है, और ठीक उसी तरीके से, सूक्ष्मशरीरी यात्रा से वापस आते हुए, दूसरे दिन के प्रारंभ की उत्तेजना में, लोग, वह सब कुछ, जो हुआ था, पूरी तरह भूल जाते हैं।

ये अक्सर अधिक नहीं दोहराया जा सकता कि यदि कोई सूक्ष्मशरीरी यात्रा को याद रखना चाहता है, तब किसी को, नींद में जाने से पहले, केवल तीन बार, सरलता से कहना चाहिए कि 'मैं आराम के साथ, गहरी नींद में सोऊंगा, और सुबह मैं उस पूरी चीज को याद रखूंगा, जो मैंने सूक्ष्मशरीरी यात्रा में की है।' सोने जाने से पहले, इसे तीन बार दोहरायें, और यदि आप वास्तव में वही सोचते हैं, जो आप कह रहे हैं, यदि आप वास्तव में वही तात्पर्य रखते हैं, जो आप कह रहे हैं, तब आप जगने पर भी याद रखेंगे। इस सम्बंध में कुछ भी जादू भरा नहीं है, ये मात्र बेवकूफ अवचेतन में जाने और अवचेतन को कहने जैसा है, और वास्तव में कहते हुए, 'हे मूर्ख, तुमको आज रात को तैयार रहना चाहिए, आसपास खेलना नहीं और मेरी स्मृतियों के साथ कोई काम नहीं करना, जब मैं लौटूं, तुम स्मृतियों के नये भार के साथ, अलग ढंग से तैयार रहो।'

वास्तव में, व्यक्ति जो सूक्ष्मशरीरी यात्रा में प्रशिक्षित किया गया है, (तब भी) सूक्ष्मलोकीय यात्रा कर सकता है, जब वह पूरी तरह जगा हुआ हो। प्रशिक्षित व्यक्ति के लिये, कुर्सी पर बैठना, अपने हाथों को जोड़ना, और अपने पैरों को मिलाकर रखना, और तब अपनी ऑखों को केवल बंद करना, एकदम सामान्य है। वह अपने शरीर को छोड़ने की इच्छा कर सकता है और तब कहीं भी जा सकता है, और सूक्ष्मशरीरी यात्रा की पूरी अवधि में, पूरी तरह सजग रहता है ताकि, जब सूक्ष्मशरीर भौतिक शरीर के साथ मिलता है, उसमें उत्सव जो घटित हुआ था, की पूरी तरह से संभालकर रखी हुई स्मृतियां होती हैं।

वास्तव में, इसमें अभ्यास, और थोड़े से आत्मानुशासन की आवश्यकता होती है। अपने आप को, जो कुछ घटित हुआ उसको याद रखने के लिये प्रशिक्षित करना, जबकि शरीर नींद में है, मुश्किल नहीं है। आपको केवल अपने अवचेतन को, ठीक वैसे ही, जैसे कि आप एक बिगड़ैल बच्चे को बंद रखने (shut up) के लिये कहते हैं, बंद रखने के लिये कहना हैं। पहली बार कहना, कमोवेश समय को नष्ट करना है, दूसरी बार कहने पर अवचेतन, सजगता की ओर कूदता है, और तीसरी बार कहने पर, ये आशा की जाती है कि निर्देश अवचेतन में डूब जाते हैं, और वह उसका पालन करता है। परंतु यदि आप इसे कुछ रातों के लिये करेंगे, तो आप पायेंगे कि अवचेतन इसका पूरी तरह पालन करता है।

अनेक लोग, अपने बिस्तर के पास नोटबुक और पेंसिल रखना पसन्द करते हैं ताकि, सुबह जगने के तत्काल बाद ही, रातभर में जो कुछ हुआ, उसकी जानकारी लिखी जा सके, अन्यथा आधुनिक जीवन के दवाब और रस्साकशी के साथ, जो हुआ उसे भूल जाने की प्रवृति अत्यधिक महान होती है। उदाहरण के लिये, कोई गरीब बेचारा जगेगा और सोचेगा कि वह काम पर जाने के लिये विलंबित हो रहा है, और तब अगली बार वह आश्चर्य करेगा कि क्या उसकी पत्नी अच्छे मिजाज में है, और अपना नाश्ता लेगा या उसे बिना नाश्ते के ही जाना होगा। इसलिये अपने दिमाग में वैसी चीजों के साथ, वह उसे, जो कुछ रात में हुआ था, याद रखने की अधिक मनस्थिति में नहीं होगा। इसलिये एक निश्चित अभ्यास बनायें, एक कॉपी, पेंसिल अपने बिस्तर के पास रखें और सबसे पहली चीज, जो आप जगने पर करें, **तत्काल ही,** आप वह हर चीज, जो रात के सम्बंध में आपको याद है, लिख डालें। अभ्यास के साथ, आप पायेंगे कि ये आसान है, और थोड़े से अभ्यास के साथ, आपको कॉपी और पेंसिल भी साथ रखने की आवश्यकता नहीं होगी और यह जानते हुए कि ये एक कठिन पाठशाला है और इससे अधिक कुछ नहीं, अधिक संतुष्टि के साथ पृथ्वी पर अपने पूरे दिन गुजार लेंगे, जानते हुए कि पाठशाला के सत्र की समाप्ति के साथ आप वापस घर लौटने में सक्षम होंगे।

ऐसा लगता है, बाद में, सब प्रकार के प्रतिष्ठानों, जिनका उद्देश्य किसी का सोते–सोते सीखना (sleep learning) होगा, के विज्ञापनों की एक दौड़ शुरू होगी। वे एक कीमती मशीन, समय के स्विच, हेडफोनों, तकिये के

नीचे लगाये गए स्पीकरों के साथ, और अधिक व्ययसाध्य टेपवाले पूरे पाठ्यक्रम, बेचना चाहते हैं, और आपके पास क्या है।

अब, किसी के लिए भी, नींद में कोई लाभप्रद चीज सीखना, पूरी तरह असंभव है। शुरूआत से ही शरीर का चालक बाहर है, और जो कुछ बचा हुआ है वह 'अवचेतन' नाम का, एक प्रकार का या घटिया देखभाल करने वाला है, और विश्व के अग्रणी देशों के अत्यधिक खर्चीले शोधकार्य, सिद्ध कर चुके हैं कि संदेह के परे, नींद में सीखना संभव नहीं है, ये काम नहीं करता।

यदि आप जगे बने रहें अर्थात, यदि आप नींद में जाने में धीमे हैं, तब आप टेपों (tapes) में से किसी बातचीत के थोड़े से अंश ले सकते हैं। परंतु सीखने का कोई आसान तरीका नहीं है, आप एक बटन दबाकर, किसी मशीन को यह नहीं कह सकते, 'हे प्रेस्टो,' क्योंकि वह रात भर में आपको प्रकाण्ड विद्वान नहीं बना देगी। इसके बदले में, वह आपकी नींद की लय (rhythm) को खराब करेगी, और जैसा आप जानते हैं, आपको अनुल्लेखनीय बदमिजाज बना देगी।

मान लीजिए, जब आप, सोने के लिए जाने से पहले, अपने टोस्ट पर बटर लगी हुई फलियॉ (beans) या कुछ भी हो, जो आपके पास हैं, खाने के लिए घर जाते हैं, आप अपनी कार को गैरिज में छोड़ देते हैं। ठीक है, आप विचारों में थोड़े आशावादी होंगे कि जब आप इससे दूर थे, आपकी कार टेपों (tapes) के माध्यम से कुछ सीखने वाली थी। कार निर्माता, स्वीकारता पूर्वक, अपने यंत्रमय टिन के बक्सों के लिए (नहीं मेरे पास कोई कार नहीं है), अनेक घोर और असंभव दावे किए थे, परंतु कार के विज्ञापनदाताओं में से सर्वाधिक आशावादी भी यह कहते हुए झिझकेगा कि उनकी कारें, मालिक के नींद के दौरान सीख लेंगी।

आपका शरीर, मात्र एक वाहन है, एक वाहन, जिसके द्वारा आपका अधिस्वयं, पृथ्वी पर, और कुछ थोड़े से दूसरे मिलेजुले ग्रहों पर, कुछ अनुभव प्राप्त कर सकता है, इसलिए अपने आपको, इस सम्बंध में कि आप कितने चतुर हैं, आप कितने महत्वपूर्ण और वह सब हैं, बहुत अधिक हवा न दें, क्योंकि जब मूल मुद्दों पर विचार की बात होती है (when it comes down to brass tacks), या मूल्यों के जो कुछ भी मानक आप उपयोग करना चाहते हैं, **'आप'** प्रोटोप्लाज्म के एक डेले मात्र हैं, जिसे दिनभर एक स्वामी, जो आपका अधिस्वयं हुआ करता है, के द्वारा चलाया जाता है। आप आयरिश नागरिक और उसके गधे को पसंद कर सकते हैं; गधा रात को अस्तबल में रुकता है परंतु टेप की कोई भी मात्रा, उस गधे से अंग्रेजी या अमरीकन तक भी बुलवाने में सफल नहीं होगी, फिर भी, दिन के दौरान, मालिक को –अमरीकन भी सिखाई जा सकती है। किसी दिन, यह देखने के लिए कि, क्या ऐसा किया जा सकता है, एक आयरिश नागरिक को वैल्श (Welsh) सिखाने का प्रयास करना, उचित हो सकता है।

मैं सोचता हूॅ कि वास्तव में, मैं उन चीजों में से कुछ की ओर, जो आपके परिश्रम द्वारा कमाए हुए पैसे को, आपसे लेने के लिए तैयार की गई हैं, आपको संकेत करने के लिए, एक मैडिल पाने की पात्रता रखता हूॅ। हमेशा सोचें, कि विज्ञापन के पीछे क्या है? ठीक है, स्पष्टतः, विज्ञापनदाता आपका धन लेना चाहता है। ये मुझे उन लोगों का, जो विज्ञापन देते हैं कि, मान लें, तीन आसान पाठों में, लाखों कैसे कमाए जाऐं, या आयरलैण्ड की लॉटरी की भविष्यवाणी कैसे की जाये और पहला इनाम (कैसे) प्राप्त किया जाए, का ध्यान दिलाता है। यदि ये लोग अपने लिए ऐसा कर सकते होते, तब वे विज्ञापन देने के लिए परेशान नहीं होते, होते क्या? और यदि वे ऐसा नहीं कर सकते, ठीक है, उन्हें, ये नाटक करते हुए कि वे एक महीने में लाखों बना सकते हैं, किसी दूसरे तरीके से पैसा कमाना है। वे कमा सकते हैं, यदि काफी लोग उनके विज्ञापन का जवाब दें, परंतु क्या आप उनमें से एक नहीं होंगे, अपनी जेब को कस लें, अपने बटुए को बंद रखें, अपने मुंह को भी बंद रखें, और अपने कानों को एकदम खुला रखें।

ओह! जय और शेष सबकुछ हो, अब यहॉ एक प्रश्न है– अच्छा हो, आप इसे सावधानीपूर्वक पढ़ने के लिए तैयार रहें। 'आप कहते हैं कि अवचेतन मूर्ख है, फिर भी, 'जीवन के अध्याय' में इसका अत्यंत अत्यंत प्रतिभावान होना बताया गया है, ये हमारे अंश की तुलना में, अधिक प्रबुद्ध दिखाई देता है। आप कहते हैं कि 1/10 भाग ही चेतन है। अब, हमें सीधे–सीधे बतायें, क्या ये मूर्ख है, या ये अधि–प्रखर (super-intelligent) है?

यदि हम फिर से इस जैसे मूल आधारों में नीचे जा रहे हैं, तब हमें कहना है कि न तो अवचेतन प्रबुद्ध है और न बिना बुद्धि वाला, क्योंकि इसके पास कोई प्रतिभा नहीं है, ये पूरी तरह से एक अलग चीज है। अवचेतन, ज्ञान, भले ज्ञान, बुरे ज्ञान, का भण्डारण मात्र है। ये केवल नस्तीकरण प्रणाली है, ये उस सबको, जो आपने कभी सुना, जो आपने कभी देखा, जो आपने कभी अनुभव किया, भरकर रखता है। ये आपको स्वचालित प्रतिसादों, कि

सांस अंदर कब ली जाए, और श्वांस बाहर कब छोड़ी जाए, का ध्यान दिलाता है। ये आपके एक अंश को, कुलबुलाना और चीखना, इत्यादि याद दिलाता है, यदि आपको हल्के से छू भी दिया जाए। ये मात्र स्वचालित याद दिलाने वाला है।

क्या आप कहेंगे कि कोई ग्रन्थपाल (librarian) प्रबुद्ध होता है? ठीक है, वास्तव में, ये राय का मामला है। मैं जानता हूँ, मैंने, लंदन के एक प्रसिद्ध पुस्तकालय में, उन बेवकूफ ग्रन्थपालों, वे जो विस्तृत जानकारियॉ दर्ज करते हैं, से व्यवहार करने का प्रयास किया और मैंने इन लोगों को यह बताने का प्रयास किया कि मेरे बारे में, विस्तृत जानकारियॉ, जो वे रख रहे थे, पूरी तरह से और निर्विवादरूप से गलत थीं, परंतु उनमें से कुछ को सहमत कराना, ये ऐसा (कठिन) काम है, और मुझे इस अमिट विचार के साथ छोड़ दिया गया कि उस प्रसिद्ध पुस्तकालय के, अभिलेख–पुस्तकालय (Record-Library) के ग्रन्थपाल प्रबुद्ध नहीं हैं। कैसे भी, ये विचार का मामला है, परंतु इस प्रश्न का उत्तर देने के हिसाब से, हमें फिर से जानकारी करने दें;

क्या आप विचार करेंगे कि पुस्तकपाल एक प्रतिभावान व्यक्ति था ? क्या आप विचार करेंगे कि कोई पुस्तकपाल, किसी भी चीज के सम्बंध में, किसी भी प्रश्न का जवाब दे सकता है और वह कहेंगे जिसे कोई व्यक्ति पहले कह चुका है ? ठीक है, वास्तव में, आप नहीं कर सकते, यदि आप स्वयं ही पुस्तकपाल होते, तब भी, आप ऐसा दावा कर नहीं सकते थे। बदले में आप एकदम सही कहते, कि नहीं, एक चेतन मनुष्य में इसप्रकार की कोई जानकारी नहीं होती, परंतु एक पुस्तकपाल जानता है कि किसी निश्चित सूचना को कहॉ से पाया जाए। सबसे अच्छे पुस्तकपाल वे होते हैं, जो जानकारी को तीव्रतम गति से निकाल सकते हैं।

आप और मैं, एक पुस्तकालय को जा सकते हैं, और अपने दिलचस्प विषय पर सामग्री रखने वाली, एक निश्चित शीर्षक की किताब की तलाश में, कुछ निश्चित फाइल–अलमारियों से होते हुए, अपना रास्ता ढूंढ़ सकते हैं। तब हमें पता चलेगा कि हमको किसी दूसरी चीज को भी संदर्भित करना पड़ेगा, तब हमें पता चलेगा कि किताब की छपाई बंद हो चुकी है, या किताब चलन के बाहर है, या पुस्तकालय के बाहर है। हम आधा दिन या अधिक, बेकार करेंगे, जबकि, पुस्तपाल को पूछने के द्वारा, एक सेकंड में, जिसमें उसके पास, पूरी तरह से रिक्त अभिव्यक्ति होगी और तब एक टका, झंकार के साथ, गिरता हुआ सा दिखाई देगा, और वह हरकत में आयेगा और वांछित जानकारी वाली पुस्तक को आपके सामने प्रस्तुत करेगा।

यदि वह अपने काम में अच्छा / अच्छी है, तो वे आपको और भी दूसरी पुस्तकें अनुशंसित कर सकते हैं।

अवचेतन वैसा ही है। जैसे ही विचार, 'हम' कुछ जानना चाहते हैं, (उठता है) तभी अवचेतन उत्तर के साथ आने का प्रयास करता है। ये कोई प्रतिभा नहीं है, ये पूरी तरह से स्वचाालित है, और चूंकि ये स्वचालित है इसे प्रशिक्षित किया जा सकता है।

किसके लिए प्रशिक्षित किया जाए ? ठीक है, उत्तर आसान है। आपका अवचेतन आपकी स्मृति है। यदि आपकी स्मृति कमजोर है, तो इसका तात्पर्य है कि आपका चेतन 1/10, आपके अवचेतन 9/10 से कुछ नहीं पा रहा है। यदि आपकी स्मृति कमजोर है तो इसका अर्थ है कि अवचेतन, आपको सूचना, जो आप मांगते हैं, प्रदान करने के कार्य में नीचे गिर रहा है।

ये मानते हुए कि आप जानना चाहते हैं कि ग्लेडस्टोन (Gladstone) ने, पिछले 1800 में या कुछ इस या उस वर्ष में, वास्तव में, क्या कहा था। ठीक है, शायद आपने इसको सुना होगा, शायद आपने इसको पढ़ा होगा, इसलिए ये आपकी स्मृति में हैं और यदि आपका अवचेतन इसे बाहर नहीं निकाल सकता, तो इसका अर्थ है कि रिले (relay) में कहीं कोई दोष है।

कुछ लोग, फुटबाल या बेसबाल की टीमों के सम्बंध में, धड़ाधड़ विकट सामग्री खोल सकते हैं, और पिछले वर्षों के सभी विजेताओं या जो कुछ भी वे कहे जाते हों, को बता सकते हैं, परंतु ऐसा इसलिए है क्योंकि, वे विषय में अभिरुचि रखते हैं और लोग, उन चीजों को, जिनमें उनकी रुचि नहीं है, याद नहीं रख सकते। एक फुटबाल मैच या एक बेसबाल मैच को देखने के बाद, और कभी देखने की इच्छा भी नहीं होते हुए, इसके बारे में, मुझे कभी भी, धुंधला सा भी ख्याल नहीं आया। उदाहरण के लिए, मैंने सोचा था कि बेसबाल हीरा (baseball diamond), पुरुष्कार विजेताओं को दिया जाने वाला इनाम, कोई चीज थी; निस्संदेह, कोई मुझे अलग तरीके से बताते हुए लिखेगा।

यदि आप एक अच्छी स्मृति पैदा करना चाहते हैं, तो आपको अपने अवचेतन को संवारना पड़ेगा। आपको किसी विषय में दिलचस्पी लेनी होगी, जबतक कि आप दिलचस्पी नहीं लेते हैं, अवचेतन उसके साथ नहीं 'बांधा'

जा सकता। हमारी महिला पाठकों में से अनेक, किसी नर फिल्मस्टार के बारे में सबकुछ जान जायेंगी, कि उसने कितनी बार शादी की है, और कितनी बार उसे तलाक दिया गया है, और उसी क्षण कितनी बार, उसने अपनी प्रेमिका का विश्व भर में, पीछा किया है। यह आसान है, वे उसे कर सकती हैं, परंतु उन्हें केवल जाने के लिए, और किसी स्थानीय दुकान से, एक मानक महीन धागा, शायद एक 3/16 मानक का महीन धागा लाने के लिए कहो, और वे सामान्य की तुलना में अधिक खाली दिखती हुईं वापिस आ जायेंगीं।

अपनी स्मृति को प्रशिक्षण देने के लिए, अर्थात् अपने अवचेतन को प्रशिक्षित करने के लिए, आपको चीजों के बारे में स्पष्टरूप से सोचना चाहिए, और उन चीजों में दिलचस्पी लेनी चाहिए। यदि आदमियों को औरतों की चीजों की खरीददारी करने भेजा जाए, ठीक है, वे अपने दिमागों में, एक भी विचार के बिना, वापिस आ जाते हैं, परंतु यदि वे इन चीजों में दिलचस्पी लें, तब उनकी स्मृति सुधर जायेगी। कोई, अपने आप से पूछने के द्वारा कि कोई औरत इसे, या उसे, या किसी दूसरी चीज को, क्यों चाहती है, दिलचस्पी ले सकता है और कोई औरत अपने आपसे पूछ सकती है कि कोई आदमी, उदाहरण के लिए, 3/16 (साइज का) महीन चूड़ी का बोल्ट क्यों चाहेगा। यदि वह एक निश्चित अभिरुचि पा सकता/सकती है, तब वह उसे याद रख सकता / सकती है।

यदि आप किसी विशेष चीज, जैसे कि टेलीफोन नंबर, को याद रखने का प्रयास कर रहे हैं, तब उस व्यक्ति की कल्पना करने का प्रयास करें, जिसका वह टेलीफोन नंबर है, और यदि आप उस व्यक्ति को नहीं जानते या उसकी कल्पना नहीं कर सकते, तब टेलीफोन नंबर को देखें–क्या ये वृतों (circles) की श्रृंखला है या इसमें काफी सारे आघात (strokes) हैं? उदाहरण के लिए 6, 9, 0 ये वृत बनाते हैं, वैसे ही 3 और 2 भी वृत बनाते हैं। परंतु 1, 7, इत्यादि– और वास्तव में, 4, ये आघात होंगे। इसलिए यदि आप किसी संख्या को वृत या आघातों के रूप में, ध्यान से देख सकते हैं, तो आप उसे याद रख सकते हैं। सबसे अच्छा तरीका है, तिकड़ी के हमारे पुराने तरीके का उपयोग।

गम्भीर धारणा रखते हुए कि आप इस नंबर को हमेशा याद रखेंगे, टेलीफोन नंबर को 3 बार दोहरायें। आप कर सकते हैं, आप जानते हैं, कि ये एकदम आसान है, इसमें कुछ भी कठिन नहीं है।

दूसरी चीज, जो नींद की अवधि में की जा सकती है, दूसरे व्यक्ति, जिसको कोई प्रभावित करना चाहता है, तक पहुंचना है। अब, नींद में सीखना (sleep learning) बेकार है, ये पूरी तरह से समय की बरबादी है क्योंकि आप शरीर को किसी चीज की शिक्षा देने का प्रयास कर रहे हैं, जबकि वह अस्तित्व, जो शरीर को नियंत्रित करता है, शरीर के बाहर है। परंतु हमको किसी दूसरी चीज– दूसरों को प्रभावित करना, के साथ भी व्यवहार करने दें।

ये मानते हुए कि, श्रीमान् जोह्न ब्राउन (Mr. John Brown), XYZ Manufacturing Company प्रतिष्ठान के साथ, मिलने का कोई समय (appointment) लेने की अत्यधिक इच्छा रखते हैं। श्रीमान् ब्राउन ने सुन रखा है कि ये कम्पनी अत्यंत ही अच्छी कम्पनी है, और उस जैसी कंपनी में नौकरी पाना, निश्चितरूप से वांछित हैं।

श्रीमान् ब्राउन कुछ हद तक, उसके कार्मिक प्रबन्धक, या इसके लिये उस कंपनी के किसी दूसरे अधिकारी के साथ, मानें कि, अगले दिन की नियुक्ति पाने में सौभाग्यशाली हैं। अब, यदि श्रीमान् ब्राउन अपने आपको नौकरी के लिए प्रस्तुत करना चाहते हैं, तो ये वो है, जो वह करेंगे :–

वह, प्रष्ठिान के सम्बंध में, और विशेषरूप से उस व्यक्ति के सम्बंध में, जिसके साथ उनका साक्षात्कार होना है, कोई भी सूचना, जो वह प्राप्त कर सकते हैं, करेंगे। इसका अर्थ है कि श्रीमान् ब्राउन को एक निश्चित जानकारी कर लेनी चाहिए कि साक्षात्कार का काम कौन करेगा। तब यदि थोड़ा भी सम्भव हो, तो वह साक्षात्कार लेने वाले उस व्यक्ति का फोटो प्राप्त करेंगे, और बिस्तर पर जाने से पहले, उस रात को, श्रीमान् ब्राउन एकदम अकेले बैंठेंगे, और वह अपना साक्षात्कार लिये जाते हुए होने की कल्पना करेंगे। श्रीमान् ब्राउन, (अपने शयनकक्ष की निजता में), उन कारणों को, जिनके कारण वह वांछित कर्मचारी हो सकते हैं, कारण कि क्यों वह उस विशेष नौकरी को पाना चाहते हैं, कारण कि वह क्यों मानते हैं कि वह सामान्यतः प्रतिष्ठान जितना देता है, उससे अधिक के हकदार हैं, सहमत कराते हुए कहेंगे। ये सब वह फोटोग्राफ को कहेंगे। तब वह अपने पैर उठायेंगे और बिस्तर पर दबाव डालेंगे, और वह फोटोग्राफ को रखेंगे, ताकि वह, जिस करवट अमूमन वह लेटते हैं, उनके सामने रहे।

श्रीमान् ब्राउन, पक्के, एकदम निश्चित, एकदम सुस्पष्ट आशय के साथ, अपने शरीर में से निकलने, और साक्षात्कार लेने वाले श्रीमान् के घर की तरफ यात्रा करने के विचार के साथ, सोने के लिए जाते हैं। वहॉ पर वह साक्षात्कार लेने वाले से, शरीर के बाहर मिलेंगे, और श्रीमान् ब्राउन का सूक्ष्मशरीर, श्रीमान् साक्षात्कार लेने वाले के सूक्ष्मशरीर को, वह सबकुछ बतायेगा, जो श्रीमान् ब्राउन ने, अपने शयनकक्ष की निजता में अभी कहा था।

कल्पनातीत? ड्राफ्ट? क्या आप इस पर विश्वास नहीं करते! ये वास्तव में कार्य करता है। यदि साक्षात्कार देने वाला (मैं आशा करता हूँ कि ये सही है : इसका आशय है, कोई वह, जिसका साक्षात्कार लिया जाना है) ठीक तरीके से अपने पत्तों को खोलता है, तब साक्षात्कार लेने वाला उसे नौकरी देगा। ये पक्का है, ये सुनिश्चित है कि यह वास्तव में, काम करता है।

यदि आप एक अच्छी नौकरी या अधिक धन चाहते हैं, फिर से, उन शब्दों के साथ जायें और उन्हें अभ्यास में डाल दें। आप, लोगों को इस तरीके से प्रभावित कर सकते हैं, परंतु बुरे के लिए नहीं। आप एक व्यक्ति को उसके लिए प्रभावित नहीं कर सकते, जिसे वह सामान्यतः करना नहीं चाहेगा अर्थात्, आप किसी व्यक्ति को कोई बुराई या गलत काम करने के लिए प्रभावित नहीं कर सकते। इसका अर्थ है कि आपमें से कुछ, जो मुझे ये पूछते हुए कि लड़कियों के ऊपर कैसे हावी हुआ जाए, लिखते हैं, ठीक है, आप नहीं हो सकते दोस्त, आप नहीं हो सकते, और इसके लिए प्रयास भी न करें।

हॉ, भोलेभाले पाठक, उच्चवर्ग की और सर्वाधिक शुद्धता वाली महिलाओ, मैं कई बार सज्जनों से, जो मुझे, उन्हें लड़कियों को सम्मोहित करना, या लड़कियों पर जादू–टोना करना, या किसी प्रकार का कोई फार्मूला लागू करना, जो लड़कियों को असहाय बना सके, सिखाने के लिए पूछते हैं, ताकि सज्जन पुरुष–ठीक है, वे ऐसी परिस्थितियों में क्या करेंगे ? कैसे भी, मैं उन्हें सत्य, जो ये है कि जबतक वे जहर खाने के लिए न जायें, वे किसी भी दूसरे व्यक्ति को, वह करने के लिए, जिसकी कि दूसरे व्यक्ति की अंतरात्मा सामान्यतः इजाजत नहीं देती, प्रभावित नहीं कर सकते, बताता हूँ। इसलिए आप वहॉ हैं। यदि आपकी इच्छायें पवित्र या 'साफ' हैं, तभी आप दूसरों को प्रभावित कर सकते हैं, आप अच्छा करने के लिए, दूसरों को प्रभावित कर सकते हैं, परंतु बुरा करने के लिए नहीं। कैसे भी, अधिकांश लोगों को, दूसरों को बुरा करने के लिए प्रभावित करने की आवश्यकता नहीं होती; ये स्वाभाविक रूप से आता हुआ दिखाई देता है।

यहॉ, पिछले अध्यायों में की गईं कुछ टिप्पणियॉ ध्यान में रखते हुए, एक प्रश्न का परिचय कराना ठीक होगा। प्रश्न है :–

'आप कहते हैं कि, जबतक कि व्यक्ति विशेष, अपने विशिष्ट काम को नहीं कर लेता, लोग समय–समय पर, इस पृथ्वी पर आते हैं। आप यह भी कहते हैं कि कई बार, लोगों के समूह, उसी उद्देश्य के लिए आते हैं। क्या आप इस मुद्दे पर, कोई निश्चित उदाहरण दे सकते हैं?'

वास्तविक तथ्य के रूप में, हॉ, एकदम निश्चियपूर्वक, हॉ। अब कुछ समय पहले, मेरे पास स्पेनिश भाषा की एक कटिंग थी, और स्पेनिश भाषा की ये कोई चीज, *एक्सकेलिवर (excalibur)* नाम की पत्रिका, जो कुछ वर्षों पहले, स्पष्टरूप से डर्बन, दक्षिणी अफ्रीका से प्रकाशित हुई थी, के सम्बंध में कुछ विस्तार से बता रही थी। इस पूरे मामले में, मेरे पास केवल एक अत्यंत संक्षिप्त टिप्पणी थी, परंतु ऐसा लगता है कि पत्रिका ने, यू.एस.ए. के राष्ट्रपति लिंकन, और यू.एस.ए. के (दूसरे) राष्ट्रपति कैनेडी के जीवन और मृत्यु के बीच समानांतर सिद्ध होता हुआ, कुछ उल्लेखनीय प्रकाशित किया था। ये अनेक पूछताछकर्ताओं को पर्याप्त रूप से उत्तर होगा, जिसे मैं यहॉ पर पूरा विस्तार दे दूंगा। हम उन्हें आंकिकरूप से करें, चूंकि तब ये इतना अधिक आसान होगा, यदि आप उनको संदर्भित करना चाहें या उन पर अपने मित्रों से चर्चा करना चाहें। इसलिए यहॉ पर पहला है :–

1. राष्ट्रपति लिंकन (Lincoln) उस पद पर 1860 में चुने गए थे। वास्तव में, ये इतिहास की किताबों से सुनिश्चित किया जा सकता है। इसलिए लिंकन 1860 में राष्ट्रपति बने, और यहॉ पहला संयोग है; 100 साल बाद, कैनेडी (Kennedy) भी, 1960 में राष्ट्रपति बने।

2. आपको यह जानना हिला सकता है कि राष्ट्रपति लिंकन की हत्या, एक शुक्रवार को हुई, राष्ट्रपति कैनेडी की हत्या भी शुक्रवार को हुई।

3. आपने पढ़ा होगा कि राष्ट्रपति लिंकन, अपनी पत्नी के साथ, एक मंच प्रदर्शन का आनंद लेते हुए, एक नाटकघर में थे, और तब उनकी अपनी पत्नी के सामने ही हत्या की गई। राष्ट्रपति कैनेडी डलास, टेक्सास की यात्रा कर रहे थे, और वह भी अपनी पत्नी के साथ एक कार में थे। वह भी प्रदर्शन, अर्थात्, जनता की जयजयकार के प्रदर्शन का आनंद ले रहे थे।

4. थियेटर के एक बॉक्स में बैठे हुए राष्ट्रपति लिंकन को, पीठ में गोली मारी गई। एक कार में बैठे हुए राष्ट्रपति कैनेडी को भी, पीठ में गोली मारी गई।

5. राष्ट्रपति लिंकन के बाद, जॉनसन (Johnson) नाम का एक आदमी आया। जॉनसन, लिंकन के बाद

राष्ट्रपति बने, परंतु टेक्सास में राष्ट्रपति कैनेडी की हत्या हुई और उपराष्ट्रपति जॉनसन को यू.एस.ए. के राष्ट्रपति के रूप में शपथ दिलाई गई। स्वर्गीय राष्ट्रपति के शरीर को लाने वाले हवाईजहाज के अंदर, जीवित नया राष्ट्रपति वापस राजधानी को गया।

6. परंतु संयोगों की इस पूरी सूची पर, हम अभी समाप्त नहीं हुए हैं, फिर भी, लंबे रास्ते से नहीं। जॉनसन, जो राष्ट्रपति लिंकन के उत्तराधिकारी बने, दक्षिणी यू.एस.ए. से एक डेमोक्रेट थे, और लिंडन जॉनसन (Lyndon Johnson), जो राष्ट्रपति कैनेडी के उत्तराधिकारी बने, भी दक्षिण से–टेक्सास से, एक डेमोक्रेट थे। इसप्रकार ये 'संयोगों' की एक काफी अच्छी सूची है, है, ना? यद्यपि ये दिखाने के लिए, ये प्रदर्शित करने के लिए कि इसमें अस्तित्व की कुछ और दैवीय योजना होनी चाहिए, जो शायद, कैनेडी के रूप में वापस आया हुआ राष्ट्रपति लिंकन था, ताकि कोई काम पूरा किया जा सके।

ठीक है, हम फिर वापस चलें –

7. दोनों जॉनसन, राष्ट्रपति बनने से पहले सीनेट के मेम्बर रहे थे।

8. लिंकन के उत्तराधिकारी, एन्ड्रयू जॉनसन (Andrew Johnson) थे। अब वास्तव में, इसको पढ़ें . . . . .एन्ड्रयू जॉनसन 1808 में पैदा हुए थे, परंतु वह जॉनसन, जो राष्ट्रपति कैनेडी के उत्तराधिकारी बने, भी 1908 में पैदा हुए थे।

9. लिंकन की हत्या, एक अजीब प्रकार के व्यक्ति के द्वारा की गई थी, एक पूरी तरह से असंतुष्ट प्रकार का व्यक्ति, यदि हम खबरों पर विश्वास करें, जो अब इतिहास बन गया है, और लिंकन का हत्यारा, जॉन विल्किस बूथ (John Wilkes Booth) था, और वह 1839 में पैदा हुआ था। ली हार्वे ओसवाल्ड (Lee Harvey Oswald) जिसने, ऐसा कहा गया था, राष्ट्रपति कैनेडी की हत्या की, भी एक अत्यधिक असंतुष्ट प्रकार का व्यक्ति दिखता है, जो बार–बार परेशानियों में रहा था। वह 1939 में पैदा हुआ था।

10. 'संयोगों' की अपनी सूची को जारी रखने के लिये, इससे पहले कि बूथ को मुकदमे के लिए लाया जा सके, उसकी हत्या की गई थी, परंतु ओसवाल्ड के साथ भी ऐसा ही हुआ; जब वह पुलिस के द्वारा ले जाया जा रहा था, और इससे पहले कि उसे मुकदमे के लिए ले जाया जाए, ओसवाल्ड को गोली मारी गई।

11. ये संयोग, जैसा कि आप देख चुके हैं, न केवल राष्ट्रपतियों और उनके हत्यारों तक, वल्कि राष्ट्रपतियों की पत्नियों के लिए भी विस्तारित होते हैं, क्योंकि श्रीमती लिंकन, राष्ट्रपति लिंकन की पत्नी ने, व्हाइट हाउस (White House) में रहते हुए, एक बच्चा खोया, और श्रीमती कैनेडी, राष्ट्रपति कैनेडी की पत्नी ने भी, व्हाइट हाउस में रहते हुए एक बच्चा खोया।

12. लिंकन के पास एक सेक्रेटरी था और उस सेक्रेटरी का नाम कैनेडी था। सेक्रेटरी कैनेडी ने, राष्ट्रपति लिंकन को अत्यधिक जोरदारी से थियेटर, जहॉ उनकी हत्या की गई, में न जाने की सलाह दी थी। राष्ट्रपति कैनेडी के पास लिंकन नाम का एक सेक्रेटरी था, और सेक्रेटरी लिंकन ने, राष्ट्रपति कैनेडी को, जोरदारी से, डलास न जाने की सलाह दी थी!

13. जॉन बिल्किस बूथ ने, राष्ट्रपति लिंकन को, जब राष्ट्रपति नाटक को देख रहे थे, पीठ में गोली से मारा और तब हत्यारा बूथ, एक स्टोर में छिपने के लिए दौड़ा। परंतु ली हार्वे ओसवाल्ड ने, एक स्टोर में से कैनेडी को गोली मारी और एक नाटकघर में छिपने के लिए दौड़ा। आप केवल सावधानीपूर्वक दुबारा पढ़ें और देखें कि कितना अजीब है। एक हत्यारे ने नाटक घर में गोली मारी और वह स्टोर में छिपा, दूसरे ने स्टोर में से गोली मारी, और वह एक नाटकघर में छिपा।

14. L-I-N-C-O-L-N लिंकन में सात अक्षर हैं, और यदि गिनें तो आप पायेंगे कि K-E-N-N-E-D-Y में भी सात अक्षर हैं।

15. यदि आप जॉन विलकिस बूथ को गिनें तो आप पायेंगे कि इसमें 15 अक्षर हैं, और यदि आप ली हार्वे ओसवाल्ड को गिनें तो आप पायेंगे कि इसमें भी 15 अक्षर हैं।

16. ऐसा विश्वास किया जाता है कि ओसवाल्ड ने केनेडी की हत्या की, और ओसवाल्ड के सहअपराधी थे। इसमें से कुछ भी, वास्तव में, निश्चयपूर्वक, अकाट्यरूप से सिद्ध नहीं हुआ है। ये केवल एक परिस्थितिजन्य साक्ष्य का मामला है, कोई भी सिद्ध नहीं कर सकता कि बूथ ने लिंकन की हत्या की थी। उसी तरीके से, ओसवाल्ड, ऐसा कहा गया था कि, उसके भी सहअपराधी थे, परंतु अंतिम रूप से ये सिद्ध नहीं हुआ कि ओसवाल्ड ने केनेडी की हत्या की थी, और ये भी सिद्ध नहीं हुआ कि ओसवाल्ड के सहअपराधी थे। आइये, इसका एकदम

भोथरेपन से सामना करें–स्पष्टरूप से, परिस्थितिजन्य साक्ष्य, बूथ और ओसवाल्ड की ओर इशारा करते हैं, परंतु फिर से, कितना, जो हम पढ़ सकते हैं, यथार्थ सत्य था और किसी व्यक्ति के बारे में, कितना प्रेस का पूर्वनिर्णय (pre-judging) और पूर्णनिंदा (pre-condemning) थी ? हम नहीं जानते और मैं इस ओर संकेत करता हूँ क्योंकि, दोनों व्यक्तियों के मामले में, ये एक दूसरा संयोग है।

17. आपको याद होगा कि रूबी (Ruby) नाम के व्यक्ति ने, जो थोड़ा सा धर्मांन्ध था, ओसवाल्ड को मारा। उसने ओसवाल्ड को टेलीविजन कैमरों के सामने गोली मारी, उसने पुलिस को धकेल कर अपना रास्ता बनाया, एक बंदूक से निशाना साधा, और घोड़ा दबा दिया। परंतु बोस्टन कॉरबेट (Boston Corbett) भी थोड़ा सा धर्मान्ध था। जब उसने जॉन विल्किस बूथ की हत्या की, उसका भी विश्वास था कि वह ठीक कर रहा था। दोनों मामलों में, इन दोनों आदमियों ने, आरोपी को, जो राष्ट्रपति की हत्या के मामले में संदेही था, मार दिया और ये कहा गया कि दूसरे हत्यारों, अर्थात् कॉरबेट और रूबी ने, उस समय के राष्ट्रपतियों के प्रति अत्यधिक वफादारी के कारण ऐसा किया। परंतु किसी भी मामले का वास्तविक उद्देश्य स्थापित नहीं किया गया।

किसी दूसरी पुस्तक में, मैंने कठपुतलियों के समूह को व्यवस्थित करते हुए अधिस्वयं के बारे में लिखा था। ठीक है, आप इस सूचना के प्रकाश में, उसके बारे में सोचें, जहॉ दो राष्ट्रपति, एक दूसरे से सौ वर्ष बाद चुने गये और उन दोनों की शुक्रवार को हत्या हुई, और फिर से सूची को देखें और सभी विभिन्न संयोगों को देखें। अब, क्या आप गंभीरतापूर्वक विश्वास करते हैं कि ये केवल संयोग मात्र हो सकते थे? वास्तव में, ऐसा संभव नहीं है, आप जानते हैं, मेरा स्वयं का विश्वास है कि लिंकन ने अपना काम पूरा नहीं किया था, इसलिये मोटे तौर से, उसी काम के लिये, उसे समाप्त करने के लिये, जो उसने पहले नहीं किया था, उसे वापस आना पड़ा।

किसी उस के रूप में वापस आना, कोई वह, जो अमेरिका का राष्ट्रपति होगा, वापस आने का केवल यही तरीका था, जो उसने किया। आप इसे समझ यों सकते हैं कि कईबार कोई अधिस्वयं, गणवेश में कठपुतलियों के साथ, पूर्वाभ्यास करता है, इसलिये लिंकन के मामले में, नाटकघर में, उचित पर्याप्त ढंग से मंच तैयार था, और एक राष्ट्रपति की हत्या हुई। आरोपी हत्यारे के विरुद्ध कुछ भी सिद्ध नहीं हुआ और आरोपी हत्यारा, दूसरे व्यक्ति के द्वारा मारा गया। ये सब कुछ सर्वाधिक असंतोषजनक था, उद्देश्य अज्ञात थे और किसी के विरुद्ध, कुछ भी, कभी सिद्ध नहीं हुआ। शायद इसलिये, ऐसे समय और प्रयासों की बर्बादी पर, थोड़ा सा ऊब गया, और सौ वर्षों बाद के लिये दूसरी व्यवस्था बनाई गई, क्योंकि आप जानते है कि सूक्ष्मलोक का समय, यहॉ के समय से अलग है। हो सकता है, मृत्यु की दूसरी ओर सूक्ष्मशरीर बैठा हो, और उसने अपने अलंकारिक सिर को, ये कहने के लिये और आश्चर्य करने के लिये कि आगे क्या किया जाये, खरोंचा हो। ठीक है, उस समय तक, जबतक वह आसपास कुलबुला रहा था और उसने थोड़ा सा और अधिक खरोंचा, पृथ्वी के समय के सौ वर्ष फिसल गये।

कोई ये भी आश्चर्य करता है कि अब क्या होता है, क्या वह अधिस्वयं, दूसरे प्रयास से, संतुष्ट था, या क्या तीसरा और भी होगा? व्यक्तिगतरूप से मैं विश्वास करता हूँ कि हम अभी संयुक्त राज्य अमेरिका का एक और राष्ट्रपति देखेंगे, जो वास्तव में, पागल होने के कारण, एकांत में रखा जाता है। अब, मैं किसी भी प्रकार से पागल होते हुए अमेरिका के राष्ट्रपतियों के बारे में, सभी पुराने व्यंग्य जानता हूँ। उन्हें निरुत्साहित करना, ये मुझसे काफी दूर होगा। परंतु इसबार ये गंभीर मामला है, और मेरा विश्वास है कि काफी लंबा समय गुजरने से पहले, हम अमेरिका के एक राष्ट्रपति को देखेंगे, जिसे अपने कर्त्तव्यों से मुक्त किया जाता है, क्योंकि वह, जारी रखने में, अत्यधिक पागल है। मेरा ये भी विश्वास है कि हम कोई दूसरी अत्यंत कठिन चीज देखेंगे; मैं विश्वास करता हूँ कि हम, अमेरिकी सरकार के अनेक सर्वाधिक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली सदस्यों को, दुश्मन को सहायता और आराम देने के लिये और अपने खुद के देश को बेचने के लिये, साम्यवादी गतिविधियों में निर्देशित किये जाते हुए देखेंगे। आप में से कुछ, जो अत्यंत युवा है उस सब को देखेंगे क्योंकि ये घटने वाला है। अमेरिका में, कुछ वास्तविक रूप से विकट, चीजें होने वाली हैं। इसलिये अगले कुछ सालों के लिये, अपने रेडियो चालू रखें!

अध्याय – छैः

समय अत्यंत बहुमूल्य चीज है, जो कोई व्यक्ति व्यय कर सकता है।

बूढ़ा आदमी अपने नये बिस्तर में, अस्पताल के मोटर वाले, जिसने उसके तकिये को ऊॅचा और नीचा उठा दिया, और जिसने, एक बटन को दबाने के द्वारा, पलंग की ऊंचाई को समायोजित किया, एक नये बिस्तर में था। वह, कुछ हद तक, एक बच्चे की भांति, नये खिलौने के साथ, उस चीज के साथ खेलते हुए, ऊपर नीचे गया, शायद, परंतु जब कोई इस सम्बंध में कुछ भी नहीं समझ सकता, जब किसी को बिस्तर में पड़े रहना होता है, एक बिस्तर, जो इतना नीचा है कि कोई, खिड़की के बाहर देखने से भी वंचित कर दिया जाता है, ये उतना आसान नहीं है। अब बूढ़े आदमी के पास एक बिस्तर था, जिसकी ऊॅचाई एक बिजली के मोटर के द्वारा समायोजित की जा सकती थी। उसने, पृथ्वी की सतह पर तैरती हुई एक पनडुब्बी के रूप में, विश्व पर एक नजर डालने के लिये, अपने विषय में सोचा।

'हे!' कुमारी क्लियोपेट्रा ने जम्हाई ली, 'हम बिस्तर पर कूदने जा रही हैं, आप इसे कितना गौर तलब समझते हैं कि यदि आप ऊॅचाई को इसी तरह से बदलते रहे, आप कैसे सोचते हैं कि हम दूरी का अनुमान कर सकते हैं।

बूढ़ा आदमी एक बड़े झटके के साथ वर्तमान में वापस आ गया, और उसने जल्दी से अपने बिस्तर को सबसे नीचे की स्थिति में जाने के लिये व्यवस्थित किया। कुमारी क्लियोपेट्रा ऊपर की ओर उछली और पूरी नाराजगी के साथ, बूढ़े आदमी की छाती पर खड़ी हो गयी। आप मुझसे छुटकारा पाने का प्रयास कर रहे हैं? उसने पूछा। 'क्या आप इसे मुश्किल बनाना चाहते हैं, ताकि मैं आ न सकूं और आपकी छाती पर खड़ी न हो सकूं।

'नहीं, नहीं, वास्तव में नहीं, क्लियो,' बूढ़े आदमी ने जवाब दिया, 'परंतु सोचो भी, यदि तुम ऐसे मेरी छाती पर खड़ी रहोगी, तो तुम, हमारी खिड़की के बाहर, उस बालकनी को देख सकती हो, और तुम बंदरगाह में जलपोतों को देख सकती हो।'

वे वहॉ बाहर की ओर, बंदरगाह में देखते हुए साथसाथ लेटे। सबसे समीप, एक जहाज निकल के अयस्क (nickle ore) को उतार रहा था, उसके परे एक रूसी जलपोत था, जहाज का पिछला भाग (astern), बहुत गहरे पानी में, परंतु उसके धनुष (bows), ये प्रदर्शित करते हुए कि उसके सामने का पूरा भाग (all the forepart), अभी भी भारित किया जाना है, काफी बाहर थे। थोड़ा सा और आगे, दो शायिका (berths) और आगे, वास्तव में, एक दक्षिण कोरियाई जहाज, कोरिया के लिये लकड़ी की लुग्दी लाद रहा था। 'नहीं जानता कि वे लोग, लकड़ी की लुग्दी के लिये, यहॉ क्यों आते हैं।' बूढ़े आदमी ने कहा, दक्षिण कोरिया में काफी पेड़ हैं।

'ओह ठीक है,' बटरकप ने कहा, 'शायद वे अदलाबदली (barter), या वैसी ही कुछ चीज, करना चाहते हैं, वे किसी दूसरी चीज के बदले में, कनाडा से लकड़ी की लुग्दी खरीदना चाहते हैं।'

जब जहाजों और जहाजरानी की बात चली, निश्चय ही, बटरकप विशेषज्ञ थी, जब बात जहाजों के झंडों की होती थी, बटरकप एक विशेषज्ञ थी। असामान्य दक्षिण कोरियाई झंडे ने उसे मात्र कुछ क्षणों में हरा दिया, परंतु कोई भी दूसरी चीज, पनामा (Panama), मोनरोबिया (Monrovia), और पुराना लाल एनसाइन (Red Ensign) भी, वह मीलों दूर से पहचान सकती थी!

कुमारी टेडी ने ऊपर देखा, 'ओह आप क्या कर रहे हैं?' उसने मानो कि पहेली के ढंग से पूछा। 'क्या आप इतने बीमार है कि आप अपने आप से बात कर रहे हैं?'

'नहीं, वास्तव में, मैं अपने आप से बात नहीं कर रहा हूॅ, मैं केवल एक किताब के लिये कुछ नोट्स बना रहा हूॅ। क्या में कुछ नोट्स नहीं बना सकता, क्या मैं तुम्हारे हस्तक्षेप के बिना बोल नहीं सकता, टेडी के बच्चों?'

टेडी के बच्चों ने समस्याग्रस्त आश्चर्य के साथ अपना सिर हिलाया और तब एक अच्छी सुगठित गेंद को दुलार किया और फिर से सोने के लिये गिर पड़ी। अचानक ही कुमारी क्लियो के कान फड़के, और टेडी ने पूरी चेतना के लिये झटका खाया। बाहर एक कठोर आवाज आई, 'ठीक है, मैंने आज के अखबारों में देखा और मैंने देखा मेरा राशिफल, उतना अच्छा नहीं था, इसलिये मैंने सोचा, ठीक है, मैंने अपने आप में सोचा, यदि तुम्हारे पास करने के लिये कोई काम नहीं है, बूढ़ी लड़की, अच्छा हो तुम बिस्तर में ही रुकी बनी रहो, परंतु तुम नहीं कर

सकती हो कि जब तुम जीविका कमा रही हो, जब तुम्हारे पास रखने के लिये एक आदमी है,, क्या तुम कर सकती हो?'' स्वर, शायद, अपनी खुद की परेशानियों के सम्बंध में, कुछ बकवास करती हुई किसी दूसरी औरत के साथसाथ चलता गया।

'ओह, हॉ,' बूढ़े आदमी ने कहा, 'ये मुझे ध्यान दिलाता है; ये प्रश्न है, जो मेरे पास यहॉ था। देखें, ये कहॉ है?' उसने उसने पत्रों के ढेर में से कुछ उलटपुलट की और विजयी भाव से, एक वांछित पत्र के साथ आया।

डाक की मोहर, ठीक है, कहीं दूर के द्वीपों में से कोई; विषय, ये क्या है? 'प्रिय महोदय, मैं एक डॉलर और अपनी जन्मतिथि नत्थी कर रहा हूँ। कृपया मुझे पूरी जन्मपत्री और जीवन का कथन तत्काल भेजें, और वापिसी में, उसे हवाई डाक से मुझे भेज दें। यदि कोई रेजगारी (बचती) है, तो उसे किसी और के लिये, जिसने डाक प्रभार नहीं भेजा हो, रख लें।'

अब, उसके बारे में आप क्या सोचते हैं? कोई सोचता है कि जन्मपत्रियॉ पेड़ों पर उगतीं हैं। वे उतनी आसान नहीं हैं, इसमें समय लगता है। परंतु यहॉ एक और प्रश्न हैः

'आप जन्मपत्री के बारे में, वास्तव में, क्या सोचते हैं? क्या ये सभी लोग, जो उसका विज्ञापन देते हैं, किसी जाल के लिये ऐसा करते हैं? मेरे लिये, जन्मपत्री कभी ठीक नहीं रही है। इस सब का सत्य क्या है?'

ज्योतिष का सत्य ये है; सही परिस्थितियॉ दिये जाने पर, ज्योतिष पूरी तरह से सही, और सही परिस्थितियॉ बताये जाने पर, सफल.....हो सकता है।

सबसे पहले मैं आपको, कुछ डॉलरों के लिये और कुछ सिंलिग में आपकी जन्मपत्री बनाने वाले प्रस्तावों की इस सब हुल्लड़बाजी से भरी विज्ञापनवाजी के विरुद्ध चेतावनी दे दूं। आप जो पाते हैं, वह है छपे हुए कागजों के कुछ पन्ने, जो जन्मपत्री का उद्देश्य प्रदर्शित करते हैं परंतु, वह सामिग्री मुश्किल से ही कूड़ेदान के बाहर रखने योग्य है, और मेरी सुनिश्चित राय में, इस सब कबाड़े के लिये, जो कम्प्यूटरों से आता हुआ बताया जाता है, यही सब कुछ कहा जा सकता है, ये धन के लायक भी नहीं है। ज्योतिष, एक यांत्रिक प्रक्रिया मात्र नहीं है। ज्योतिष एक विज्ञान और एक कला है, कोई उसे मात्र विज्ञान से नहीं कर सकता, कला आवश्यक है, और उसे कोई केवल कला से ही नहीं कर सकता, क्योंकि, विज्ञान आवश्यक है।

किसी जन्मपत्री को ठीक तरह से–अर्थात् यथार्थतः ठीक तरह से बनाने के लिये, समय का एकदम सही ज्ञान और जन्मस्थान की एकदम सही अवस्थिति (location) आवश्यक है। तब, विभिन्न पहलुओं इत्यादि की गणना करते हुए, कई दिनों की मेहनत खर्च करना आवश्यक है। ये पांच या दस डॉलर के लिये सफलतापूर्वक नहीं किया जा सकता, उस प्रकार की चीज से आप जो पाते हैं, वह मात्र एक मोटा अनुमान है, अत्यंत मोटा अनुमान, एक मोटा पथप्रदर्शन, जो हजारों भिन्न भिन्न लोगों पर लागू हो सकता है। मैं किसी भी कीमत पर, किसी भी व्यक्ति के लिये, जन्मपत्री नहीं बनाऊँगा, क्योंकि मैं, अपनी बनवाई हुई जन्मपत्री रखने वाले लोगों में विश्वास नहीं रखता। यदि लोगों के पास बनवाई हुई जन्मपत्री है, वे अनुभव करते हैं कि उन्हें वह हर चीज करनी है, जो जन्मपत्री कहती है, और कोई जन्मपत्री, अवस्थाओं में पूरी तरह से ढला हुआ लोहा नहीं है। जन्मपत्री संभावनाओं का एक सेट है। किसी व्यक्ति के ज्योतिषीय बनाव को जानने के द्वारा, कोई वर्णन कर सकता है कि व्यक्ति की दिखावट (मुखौटा) किस तरह का होना चाहिए, कोई वर्णन कर सकता है कि व्यक्ति का चरित्र किस जैसा होना चाहिए, और जन्मपत्री सीमायें बना देती है कि व्यक्ति क्या हो सकता है। उदाहरण के लिये, किसी व्यक्ति की कुछ निश्चित जन्मपत्री हो सकती है, जो बताती है कि वह उस स्थान से, जहॉ वह पैदा हुआ था, ऊपर नहीं उठ सकता परंतु कि वह अत्यधिक प्रयासों के साथ, कुछ चीजों को कर सकता है।

दूसरे व्यक्ति के पास जन्मपत्री हो सकती है, जो कहती है कि वह अपनी स्थिति से ऊपर उठेगा और वह कुल मिलाकर, मुश्किल ही किसी प्रयास के साथ (अर्थात बिना प्रयास के ही), तेजी से उन्नति करेगा। यदि आप वास्तव में जानना चाहते हैं कि जन्मपत्री कैसी होती है, इस पर इस प्रकाश में विचार करें; ये विशिष्टवर्णन है, किसी व्यक्ति की क्या क्षमताऐं हैं, उसका एक विचारित अनुमान है।

इसको अधिक स्पष्ट करने के लिये, हम दो कारें लें। रॉल्स–रॉयस (Rolls-Royce) कार की 'जन्मपत्री' कह सकती है कि कार बहुत शांत, बहुत तेज, बहुत आरामदायक होगी, कि यह एक निश्चित अधिकतम चाल वाली होगी, और वह, हर एक मील के लिये, इतना पेट्रोल उपयोग करेगी। दूसरी कार की जन्मपत्री, शायद, क्या मॉरिस माइनर्स (Morris Minor's) अभी भी, इंग्लैंड में हैं? कहेगी कि ये एक निम्न–शक्ति वाली कार है, स्थानीय सैर सपाटे के लिये अत्यंत उचित, और उसकी अधिकतम गति इतने इतने अंकों की है, ये पेट्रोल का अधिक

उपयोग नहीं करती है और भीड़भाड़ में जाने के लिये, ये अत्यंत सुंदर छोटी है। ठीक है, लोग उसी के समान होते हैं, उनके अपने विशिष्टवर्णन होते हैं, जिन्हें हम जन्मपत्री कहते हैं।

कोई कुंडली, किसी उत्सुक युवा महिला को, किसी उसको, जो जल्दी में पति पाने के लिये आशंकित है, ये नहीं बतायेगी, आप जानते हैं, कि वह बाहर जायेगी और जैसे ही वह बायीं ओर या दायीं ओर मुड़ेगी, बिजली के तीसरे खंबे के नीचे, वह श्रीमान् सही (Mr. Right) से मिलेगी, कि वह एक गहरे काले बालों वाले नौजवान, जो अपने जूते के फीते बांधने में व्यस्त होगा, से मिलेगी, और ये पहली नजर का प्यार होगा। ये वास्तविक ज्योतिष नहीं है, ये जाली भविष्यकथन है।

बहुत बहुत थोड़े असली वास्तविक समर्थ ज्योतिषी ही, विज्ञापन देने वाले होते हैं। उन्हें विज्ञापन नहीं देना पड़ता। उनकी प्रसिद्धि, उनकी सही गणनायें, मुँह के द्वारा आगे बढ़ती जाती हैं, और यदि आप सोचते हैं कि आप एक कूपन को भर सकते हैं और उसे 50 सेंट या 5 शिलिंग के साथ भेज सकते हैं, और जीवन भर का कथन पा सकते है– ठीक है, फिर से सोचें, क्योंकि आप, ये सोचने के लिये कि आप इतना सस्ता कुछ पा सकते हैं, उन भोलेभाले में से एक हैं, जो वास्तव में, चूसने वालों के फंदे में फंसने लायक हैं। आप वही पाते हैं, जिसके लिये आप भुगतान करते हैं।

मैं कितने भी पैसे के लिये कुंडली का काम नहीं करूंगा और अत्यंत विशिष्ट अवस्थाओं में, यदि मैंने किया तो निशुल्क करूंगा, परंतु मेरी सोची समझी राय में, कोई भी कुंडली, जो सौ डॉलर से कम कीमत वाली है, रखने लायक नहीं है क्योंकि, इसका अर्थ है व्यक्ति, जिसने कुंडली बनाई, उसने पर्याप्त समय व्यय नहीं किया और पर्याप्त कष्ट नहीं झेले, इसलिये वह जो आपके पास है, कागज के टुकड़े के ऊपर थोड़े से चिन्ह मात्र हैं।

मेरे खुद के मामले में, ज्योतिष के द्वारा मेरा भूतकाल, तमाम आश्चर्यजनक सही रूप में बताया गया था। हर चीज जो मेरे बारे में पहले से कही गई थी, घटित हो चुकी हैं, पर्याप्त दुख के साथ कुछ अतिरिक्त चीजें भी हुई हैं, कुछ चीजें, ज्योतिषी जिनके आसपास चर्चा करते हुए नहीं गये और 'सभी फालतू चीजें,' बुरी, खराब चीजें थीं!

तब, 'क्या ज्योतिष असली है?' प्रश्न का उत्तर देने के लिये मैं कहूँगा, हॉ, ज्योतिष बहुत असली हो सकता है, ये सुझाव दे सकता है कि किसी व्यक्ति का जीवन किस तरह का होगा, ये संभावनाओं को इंगित कर सकता है, परंतु वे केवल संभावनायें हैं। इसलिये, जबतक कि आप ज्योतिषियों में से किसी नगीने को न पा सकें, जो एकदम ठीक जानता है कि वह क्या कर रहा है, और, जो पूरी तरह से नैतिक है, अर्थात्, कोई वह, जो आपको सत्य बताता है, पूर्ण सत्य, और सत्य को छोड़कर कुछ नहीं, ज्योतिष को अत्यंत गंभीरता के साथ न लें। इसलिये अनेक लोग, अनेक ज्योतिषी, अपनी 'जानकारी' को रखते हैं, और काफी कम पैराग्राफ के स्टॉक के जमा रखते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि लोग क्या सुनना चाहते हैं।

अब यहॉ दूसरा है, 'मेरी पुत्री का पति बहुत ही अजीब प्रकार का इंसान है, वह, दूसरों की भांति, उन चीजों पर विश्वास नहीं रखता, जिनमें मैं विश्वास रखता हूँ, वह गूढ़ बातों में विश्वास नहीं रखता। मैं उसे समझाने के लिये क्या करूँ?'

मात्र उत्तर, जो कोई यहॉ दे सकता है, वह है, निश्चयपूर्वक ये कहना कि मदद करने के लिये, उस तरीके से कुछ भी नहीं किया जा सकता, जो उस महिला का आशय है। यदि कोई व्यक्ति गूढ़ विषयों को पढ़ने के लिये, अभी तक तैयार नहीं है, तब, उस पर बलपूर्वक गूढ़ चीजों को थोपने का प्रयास करना, निश्चय ही गलत है।

हर किसी को मुक्त पसंद (free choice) का अधिकार मिला हुआ है और जो कुछ भी पसंद वे करते हैं, ये पूरी तरह से उनका निजी मामला और उनका खुद का निजी उत्तरदायित्व है। यदि बिली बग्सबोटम (Billy Bugsbottom) निश्चय करता है कि ''गूढ़ सामग्री, पूरी की पूरी धोबन (बेमतलब की बात) है, तब कोई बिली बग्सबोटम को कोई भी अलग चीज समझाने का प्रयास क्यों करे, ये उसका विश्वास और उसकी पसंद है, और किसी दूसरे व्यक्ति को प्रभावित करना, निश्चय ही गलत है।

अनेक लोग हैं, जो ये पूछने के लिये लिखते हैं कि वे, किसी बेचारे को, ऐसा कुछ करने के लिये मजबूर करने के लिये, जिसे करने में, वे खुद घृणा करेंगे, मंत्र कैसे जप सकते हैं, और मैं *घृणा की हद तक (ad nauseam)* दोहराता हूँ कि दूसरे व्यक्ति को प्रभावित करना गलत है।

शायद, व्यक्ति के पास, ज्योतिष या गूढ़विज्ञान के अध्ययन, या सांप–सीढ़ी का खेल कैसे खेला जाये, की इच्छा न रखने के लिये, अपने खुद के निश्चित कारण हैं। उसी तरह से, किसी व्यक्ति से हर चीज में अपने साथ

सहमत होने की आशा रखना, जैसा कि हम करते हैं, पूरी तरह गलत है। आपको सुनना चाहिए कि बटरकप और मैं मतभेदों को स्वीकार करने में कैसे सहमत होते हैं। अनेक चीजें हैं, जिनका मैं, वास्तविक अनुभव से, तथ्य होना जानता हूँ, परंतु बटरकप अपनी खुद की राय से बंधी हुई है, और यदि मेरे विश्वास, हमेशा उसके विश्वासों अर्थात् उसकी पसंद जैसे नहीं हैं, और मैं उसे बिलकुल भी प्रभावित नहीं करता। घटिया प्रेस, अक्सर, ये कहते हुए लेख छापती है कि बटरकप मेरी शिष्या है; वे सत्य से अधिक दूर नहीं हो सके! वह मेरी शिष्या नहीं है, और न ही वह बौद्ध है। प्रारंभ से कहते हुए कि मेरे पास कोई चेले नहीं हैं, और न कभी थे, और दूसरी बात, मेरा विश्वास है कि लोगों के लिये पक्षों का बदलना, और किसी का बौद्ध बन जाना, जबकि वह, वास्तव में, ईसाई बना रहना चाहता है, कोई ईसाई, जो वास्तव में, बौद्ध होना चाहते है, गलत है। इस विषय का थोड़ा सा पक्षधर होने के कारण, मैं हमेशा कहता हूँ कि जब कोई व्यक्ति तैयार हैं, तो वे अपने आप ही बौद्ध बन जायेंगे क्योंकि, वास्तविक बौद्ध का मतलब है, केवल कर्म के नियम को मानना, केवल वही करो, जो दूसरों से अपने लिये अपेक्षा करते हो। वास्तव में, इंग्लैंड और अमेरिका की कुछ विशिष्ट संस्कृतियों से, जो अपने आपको अब बौद्ध 'मंदिर' कहती हैं, मेरा तात्पर्य नहीं है। बौद्ध धर्म के लिये मेरा ऐसा ख्याल बिलकुल भी नहीं है। सच्चे बौद्ध को, धर्म परिवर्तन कराने के लिये बाहर नहीं जाना पड़ता। मैं एक सच्चा बौद्ध हूँ।

चूंकि जब हम कमोवेश ज्योतिष के विषय पर ही हैं, तो दो अन्य प्रणालियों के ऊपर देखें। अब, लिपि विज्ञान (graphology), जो हस्तलिपि से, चरित्र को पढ़ने का विज्ञान है, यह वह चीज है, जिसका मैं पूर्णतः समर्थन करता हूँ, यदि इसे किसी विशेषज्ञ द्वारा किया जाये। लिपि विज्ञान, भविष्य कथन नहीं है, बदले में, ये किसी व्यक्ति के चरित्र की संभावनाओं और शेष सभी को पता करने का अत्यन्त सही तरीका है। वास्तव में, किसी को ऐसी चीजों में विशेषज्ञ होना पड़ता है। अत्यधिक संख्या में शुरूआती, या पूर्ण जालसाज, हस्तलिपि में अपने निष्कर्षों को, केवल एक या दो बिन्दुओं के ऊपर आधारित करते हैं परंतु, इससे पहले कि कोई बिल्कुल भी किसी विसंगति के भय के बिना, परम निश्चय के साथ, कह सके कि यह ऐसा है, या वह वैसा है, किसी को लगभग सात पुष्टियां लेनी होती हैं।

हस्तलिपि चरित्र और क्षमता और सब कुछ बताती है। हस्तलिपि से भविष्य–कथन किसी भी तरह से संभव नहीं है, और कोई भी सम्मानीय हस्तलिपि विशेषज्ञ, कभी भी, इस तरह का दावा नहीं करता। हस्तलिपि का आदर्श उपयोग, किसी निश्चित कार्य के लिये, किसी व्यक्ति की क्षमता के आंकलन में है।

कुछ वर्षों पहले, ''मां,'' जिसको हम 'रा'आब (Ra'ab)' कहकर संदर्भित करेंगे, ने कुछ निश्चित औद्योगिक प्रतिष्ठानों के लिये, हस्तलिपि विज्ञान (का कार्य) किया था और उसने इसे सफलतापूर्वक किया। प्रतिष्ठान उसे, लोगों, जो प्रतिष्ठान में नियोजन के लिये आवेदन करते थे, की प्रतिलिपियों के साथ भेजते थे और तब रा'आब, एकदम ठीक तरीके से सुझाव देती थीं कि कौन सा अभ्यर्थी सर्वाधिक उपयुक्त है और उसके चरित्र और क्षमताओं के सम्बंध में एक आंकलन प्रस्तुत करती थीं।

ओह, संयोगवश, शायद मुझे कहना चाहिए ''मां'' आकस्मात् ही 'रा'आब' बन गयी है; ठीक है, बिल्लियों ने सोचा कि पहला नाम (मां) लोगों को, दीनाह ड्रिपड्राइ (DInah äipdry) की मां, महरी का अत्यधिक ध्यान दिलायेगा और इसलिये बदले में, हमने एक नाम रा'आब, जो उसके पिछले जीवन में था, का उपयोग किया। बहरहाल बुरा न मानें, ये मेरे कुख्यात विषयांतर में से एक है, किसी पुस्तक के न होने की अपेक्षा, विषयांतर करना अच्छा है, या क्या आप ऐसा नहीं सोचते?

इस विशिष्ट पुस्तक में अनेक विषयांतर होने वाले हैं और इस में अनेक दोहराव होने वाले हैं। मैं प्रश्नों की पूरी श्रेणी में से देखता रहा हूँ, और मैं देखता हूँ कि दोहराव करना एकदम आवश्यक है, यद्यपि आपमें से एक या दो, इसे पसंद नहीं करते। इसलिये अब आपको चेतावनी दी जा रही है कि थोड़े से दोहराव होंगे। अब, मैं सुरक्षित रूप से, आपको चेतावनी दे सकता हूँ कि यहाँ तक आप पुस्तक में हैं और आशा करता हूँ कि बजाय इसे किसी पुस्तकालय से उधार लेने के, आपने यह पुस्तक खरीदी है। आप जानते हैं, बेचारा एक निरीह लेखक, किसी पुस्तकालय को आपूर्ति की गई पुस्तकों पर, कोई रॉयल्टी नहीं पाता, और पुस्तकालय के टांड़ से पढ़ी गई हर पुस्तक, आय की क्षति होती है, अर्थात् लेखक के लिये खाने की क्षति। लोग मुझे लिखते हैं और बताते हैं कि उन्होंने, सार्वजनिक पुस्तकालय में, मेरी पुस्तकों में से एक का कुछ अंश पढ़ा है, और अब मैं उन्हें कृपा करके, अनेक प्रश्नों में से उनके उत्तर बताऊँगा, या, क्या मैं उन्हें, हर एक हस्ताक्षर किये गये और अपने फोटोग्राफ के साथ, अपनी पुस्तकों का पूरा सेट भेज दूंगा, और वे पुस्तकों को पढ़ने के लिये समय निकालने का प्रयास करेंगे।

आशापूर्ण नन्हीं आत्मायें, क्या वे नहीं हैं? इसलिये–अब, कि आप यहॉ तक आ चुके हैं और ये मानते हुए कि आपने इस पुस्तक को खरीदा है, मुझे कहने दें कि हॉ, इसमें कुछ दोहराव होने वाले हैं परंतु, ये सब किसी भले कारण से हैं। मैं आशा करता हूॅ कि दोहराव, आपको इस सब को अपने अवचेतन में पाने में सक्षम बनायेगें। इससे पहले कि आप पहाड़े पढ़ते, आपको दोहराव का अभ्यास करना पड़ा, और मैं आपके लिये कुछ करने का, आपकी मदद करने का, इस ज्ञान को आपके अवचेतन में भरने का प्रयास कर रहा हूॅ।

अनेक प्रतिष्ठान हैं, जो अभ्यर्थियों का चुनाव हस्तलिपि के आधार पर करते हैं, इसलिये अपनी हस्तलिपि को सुधार लेना, आपके खुद के हित में है। उस तरीके से, आप एक अच्छी नौकरी या अधिक धन पा सकते हैं। आप किसी अच्छे हस्तलिपि विज्ञानी से चरित्र का आंकलन भी पा सकते हैं, क्योंकि वह आपको चरित्र की किसी कमजोरी से उबरने में और उनको, जो पहले से ही प्रबल हैं, शक्तिशाली बनाने में, मदद करेगा। परंतु ये विश्वास कभी नहीं, कभी नहीं, करें कि आप अपनी हस्तलिपि से, अपने भाग्य को जान सकते हैं। आप नहीं कर जान सकते।

किसी व्यक्ति के भूत, वर्तमान, और भविष्य को बताने वाली मूल प्रणालियों में से एक, उन सभी विचित्र चिन्हों को हथेली पर पढ़ना है, हस्तरेखा विज्ञान (palmistry)। फिर, यदि कोई वास्तव में जानता है कि, इसे कैसे किया जाये, ये लगभग अचूक ही है। संक्षेप में, और ये मानते हुए कि आप सीधे हाथ से काम करने वाले हैं, तब आपका बायां हाथ इंगित करेगा कि आपने जीवन में क्या करने की योजना बनाई थी, और उस उपकरण को इंगित करेगा, जिसके साथ आप आये थे, अर्थात् क्या आप कलाकार हैं, क्या आप परिश्रम करने वाले हैं, क्या आप गुस्से वाले हैं, या भावशून्य हैं? बायां हाथ बताता है कि किसी ने क्या योजना बनाई थी, और दायां हाथ बताता है कि वास्तव में, इस दिन तक, क्या प्राप्त किया जा चुका है। मध्यम अभ्यासकर्त्ता, हाथ की रेखाओं और उंगलियों से चरित्र का काफी अच्छा आंकलन बता सकता है, परंतु, जीवन के भूतकाल को और भविष्य की संभावनाओं को सत्यतापूर्वक बताने में समर्थ होने के लिये, उसको औसत से अधिक, अभ्यासकर्ता होने की आवश्यकता है। अब, फिर से, मुझे उस बिन्दु को जोर देकर कहने दें; 'संभावनायें।' इस पृथ्वी पर कोई भी ऐसा नहीं है, जो निश्चयपूर्वक और निर्विवाद तरीके से कह सके कि, किसी व्यक्ति को क्या होगा, कोई विज्ञान नहीं है, कोई कला नहीं, कोई कुशलता नहीं, कोई युक्ति नहीं है, जो कहेगी कि किसी व्यक्ति को, संदेह की किसी भी एक छाया के परे, क्या होने वाला है। सत्य अभ्यासार्थी स्वीकार करेंगे कि वे केवल संभावनाओं को बता सकते हैं।

उदाहरण के माध्यम से लें कि, कोई बेचारा दोस्त, जो बिना पैराशूट के, जहाज के बाहर गिर पड़ता है; ठीक है, कोई ये कहने में युक्तिसंगत होगा कि जैसे ही वह गिरना प्रारंभ करता है, वह आभासी रूप से मरा हुआ ही है, क्योंकि जैसे ही वह गिरने से रुकता है, वहॉ भयानक एकल उछाल होता है और वह अपना निशान भी जमीन पर छोड़ देता है, परंतु, एक क्षण के लिये रुकें– वह किसी कठोर चीज पर नहीं भी गिर सकता है। काफी कम संख्या में, लोगों के हवाई जहाज में से गिरने के और कहानी को बताने के लिये जिंदा रहने के, मामले हुए हैं – जिसे वे करते हैं! अपने खुद के मामले में, मैं एक जहाज में से, जब उसमें आग लगी थी, गिर पड़ा था, मैं लगभग एक हजार फुट गिरा, और मुझे रीढ़ की काफी गंभीर चोंटे लगीं, जिसने मेरी रीढ़ में थोड़ा झुकाव पैदा कर दिया। दूसरे लोग सुरक्षित गिर चुके हैं, एक बेचारा आदमी जो जहाज में से गिरा, और घास के अंबार पर टकराया था, और इससे पहले कि देखने वाले उसे बाहर निकाल सकें, उसे घास के ढेर से खोदकर बाहर निकाल सकें, उसके दम घुटने का डर, उसका मात्र वास्तविक खतरा था। उसे एक या दो झटके लगे, और बहुत बड़ा डर लगा, परंतु उसे कोई अधिक बुरा नहीं हुआ।

दूसरा सर्वज्ञात मामला स्विट्जरलैंड में हुआ। पायलट को अपना जहाज छोड़ना पड़ा और ऐसा लगता है, उसने उसे बिना पैराशूट के छोड़ा, और वह स्विट्जरलैंड में ठंडी हवा में होता हुआ, बर्फ की गहरी दरार में गिरा। उसका एक मात्र खतरा था, बर्फ में जम कर मर जाना, और लोगों को उसे बाहर निकालने के लिये, पागलपन के साथ खोदना पड़ा और उसका एकमात्र कष्ट था, थोड़ा जमा हुआ अनुभव करना। इसलिये, आप देखें कि किसी भी ज्योतिषी ने कहा होता कि वह आदमी, एक हवाई दुर्घटना में, अपनी मृत्यु से मिलेगा, क्योंकि ऐसी संभावना होती परंतु यथार्थ ऐसा नहीं था।

यदि कोई शमनकथनकार (soothsayer), अतीन्द्रियज्ञानी, ज्योतिषी, हस्तरेखा विशेषज्ञ, इत्यादि इत्यादि आपको बिना तैयारी के बताता है कि ऐसी कोई चीज निश्चितरूप से होगी, तब आप अपने पैसों को पकड़िये और जल्दी से दौड़िये। आपको संभावनाओं को बताया जा सकता है, परंतु हमेशा ध्यान में रखें कि वे केवल संभावनायें

हैं, इससे आगे कुछ नहीं और इससे आगे बिल्कुल भी कुछ नहीं। यदि आप अपने दिमाग को रख सकते हैं, और थोड़ी सी इच्छाशक्ति और कल्पना का उपयोग करें, सम्भावनाओं पर काबू किया जा सकता है।

उसका एक पुराना उदाहरण है। क्या आप उसे जानते हैं? ठीक है, ऐसा लगता है, जब वह एक अत्यन्त नौजवान आदमी था, सुकरात (Socrates), अत्यन्त विद्वान लोगों में से एक, ने अपनी जन्मपत्री बनबाई, और जन्मपत्री इंगित करती थी कि वह एक अत्यधिक उत्साही ठग, और अत्यन्त उत्साह के साथ, हत्यारा और नीचता के सभी प्रकारों में संलिप्त रहने वाला होगा। नौजवान सुकरात ने अपने आप को ग्रीक समतुल्य 'बड (Bud), जो चिडियों (birds) के लिये है, के साथ अत्यंत विस्मय किया; मैं तेजी से बदल रहा हूँ,' और इस सम्बंध में कुछ करने का निर्णय लिया। इसलिये उसने अपनी सभी ऊर्जाओं को ज्ञान में, दार्शनिक कार्यों में आयोजित किया, और अब महान संतों में से एक, के रूप में उसका सम्मान किया जाता है, उसने समय के पृष्ठों पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है, जबकि यदि अहितकारी जन्मपत्री के भार के प्रभाव में, वह केवल बैठ गया होता तो उसने अपराधों के क्रुक के केलेण्डर (Crooke's calendar) पर अपनी छाप छोड़ी होती। इसलिये ऐसा है, यद्यपि कोई ज्योतिषी या कोई हस्तरेखा विशेषज्ञ आपको कुछ बताता है, जो आपको बहुत बुरी तरह डरा देता है, याद रखें, आप इस पर काबू पा सकते हैं, आप हमेशा ही, बुरी चीजों को बगल से छोड़ सकते हैं।

पत्रों, जिन्हें मैं प्राप्त करता हूँ, के द्वारा, मैं एकत्रित करता हूँ कि आपमें से अधिकांश, ये प्रभाव रखते हैं कि लेखक, जैसे कि मैं, भव्य मखमल में आराम करता हूँ और मेरे पास, सांस थाम कर प्रतीक्षा करते हुए, किसी दूसरे की बोली को घटाने के लिये जल्दी करते हुए, सचिवों का एक पूरा गिरोह है। मैं एकत्रित करता हूँ कि, आपमें से अनेक सोचते हैं कि मेरे जैसा कोई लेखक, मुझे बाहर ले जाने के लिये एकदम तैयार, एक थपथपाती हुई रॉल्स रॉयस कार, दरवाजे पर रखता होगा। ऐसा नहीं है। ऐसा बिलकुल भी नहीं है। वास्तव में, मैं अस्पताल–प्रकार के बिस्तर में, किसी कष्ट में पड़ा हुआ, और इस क्षण, अक्षमताओं इत्यादि के माध्यम से, मैं टाइप करने में समर्थ नहीं हूँ, इसलिये वही दयालु बटरकप, जैसे उसने मेरी अधिकांश पुस्तकों को टाइप किया है, उन्हें अच्छा भी टाइप किया है, मेरे लिये टाइप कर रही है। बहरहाल, उसने उन्हें अच्छे से टाइप किया है। परंतु क्या आप जानते हैं कि मुझे किस प्रकार के प्रश्न मिलते हैं? स्वीकृतिपूर्वक, आप उनमें से कुछ के बारे में जानते हैं, परंतु क्या आप उन प्रश्नों के बारे में जानते हैं, जिनका, मैं सामान्यतः उत्तर नहीं देता। उदाहरण के लिये, आप इस प्रश्न का उत्तर कैसे देंगे? 'हमें ऐसी चीजों के बारे में बतायें, जैसे कि धूप में खड़े होने पर, छाया का पड़ना ?' प्रश्न– 'क्या वास्तव में, दूरी जैसी कोई चीज है, और क्या वास्तव में, विश्व गोल आकृति का है?'

प्रश्न। 'ठीक यही, या ठीक वही का क्या अर्थ है?' क्या इसका अर्थ है कि किसी को केवल अपने दायें हाथ से ही खाना चाहिये?'

आप जानते हैं, यह अंतिम प्रश्न अत्यधिक संवेदनशील है। आप सोच सकते हैं कि इसे किसी प्रकार के पागल या झक्की ने भेजा था, परंतु यदि आप इसके बारे में गंभीरता से सोचें, इसमें अत्यधिक ज्ञान है। ठीक यह और ठीक वह का क्या अर्थ है? ठीक है, हम चीजों को सही ढंग से करने, और और गलत से बचने के बारे में सबकुछ जानते हैं, हम जानते हैं कि गलत करने की बजाय, भलाई करना ठीक है, परंतु क्या आप जानते हैं कि हमारे हाथों में ध्रुवता होती है ? एक हाथ धनात्मक और दूसरा हाथ ऋणात्मक होता है। यदि आप पीछे के कुछ पैराग्राफ, जहॉ हमने हथेलियों की चर्चा की थी, पढ़ें, आप देखेंगे कि बायां हाथ अभौतिक (abstract), अर्थात् हमारे इस पृथ्वी पर आने से पहले की चीजें, हमने चीजों की योजना कैसे बनाई, के साथ व्यवहार करता है, जबकि सीधा हाथ व्यावहारिक हाथ है, हाथ, जो बताता है कि हमने अपने उद्दश्यों को कहॉ तक प्राप्त किया।

उसी तरह से, कुछ वर्षों पहले के कुछ अरब (या अरबी लोग) हाथों के सम्बंध में, अत्यधिक निश्चित निर्णय रखते थे। बायां हाथ, 'गंदा हाथ' समझा जाता था, वह हाथ केवल गंदे कामों के लिये, जैसे कि किसी के शौच के निश्चित पहलुओं के साथ व्यवहार करने के लिये प्रयोग किया जा सकता था, परंतु दायां हाथ, 'साफ हाथ' था, और कोई दायें हाथ को केवल खाने के साथ व्यवहार करने के लिये प्रयोग कर सकता था। खाने की सभी सामिग्रियॉ सीधे हाथ से छुई जातीं थीं, यद्यपि कोई, किसी कप या गिलास को बायें हाथ से उठा सकता था। इस मामले में और आगे तक खोजबीन करना, और देखना कि इसने, जब किसी ने, खाने को केवल दायें हाथ से छुआ, और तब, शायद एक माह बाद, खाने को केवल बायें हाथ से छुआ, किसी की पाचन क्रिया में कितना अंतर आया, अत्यधिक दिलचस्प होगा।

सीधा हाथ, किसी खंजर या तलवार को पकड़ने के लिये, या किसी आदमी से हाथ मिलाने के लिये, सही

हाथ है। पुराने दिनों में, लोग अपने सीधे हाथ का उपयोग, हमलावरों से बचने के साधन के रूप में, किसी चाकू या खंजर को ले जाने के लिये करते थे। इसलिये जब वे किसी दोस्त से मिलते हैं, ये दिखाने के लिये कि उनके पास कोई छिपा हुआ छुरा नहीं है, ये दिखाने के लिये कि वे मित्रता के लिये आये हैं, अपने दायें हाथ को विस्तारित करते हैं। इसलिये हमने हाथ मिलाने का, किसी व्यक्ति से हाथ मिलाने का रिवाज, प्रारंभ किया– और आप देख सकते हैं कि कोई अपने अंगूठे के पास, चाकू नहीं पकड़े है, और यदि उसके पास, उसकी आस्तीन में छिपाया हुआ कोई हथियार है– ठीक है, उसे हिलाकर बाहर कर दो।

उसी स्रोत से एक दूसरा प्रश्न है। ये हैः 'रजत तंतु, एक ही समय में, भौतिक और अधिस्वयं को तथा सूक्ष्मशरीर को कैसे जोड़ता है ?''

रजत तंतु, किसी भी दूसरी चीज की भांति, एक कंपन है, जिसका अर्थ है कि ये ऊर्जा का भी एक स्रोत है। तंतु को, आवश्यकरूप से, दूसरी वस्तु की ओर नहीं जाना होता अर्थात्, ये शरीर और आत्मा को एक साथ जोड़ने के तक ही सीमित नहीं है। इसमें से ठीक वैसे ही विस्तार लिये जा सकते हैं, जैसे कि आप टेलीफोन के विस्तार लेते हैं। यदि आपके रहने के कमरे में एक टेलीफोन है, तो आपके शयनकक्ष में उसका कोई विस्तार लेने में कोई बड़ी कठिनाई होगी।

ये अनुभव करना कि अधिस्वयं, प्रत्येक व्यक्ति की ऊर्जा का स्रोत, हर व्यक्ति के अस्तित्व का एक स्रोत है, एक सामान्य समझदारी है, और अधिस्वयं, आप कह सकते हैं, हर मानव एक पट्टे से बंधा हुआ है। इसलिये ठीक वैसे ही, जैसे कि आप एक कुत्ते को पट्टे (जंजीर) पर रख सकते हैं, या दस कुत्तों को भी जंजीरों में रख सकते हैं, इसलिये आप एक अधिस्वयं को एक सूक्ष्मशरीर या भौतिक शरीर से जुड़ा हुआ पा सकते हैं।

उस प्रश्न का उत्तर देने में, वास्तव में, ये कहने के सिवाय कुछ भी नहीं है, कि यदि आप के पास किसी जंजीर के एक सिरे पर, एक कुत्ता है, हम कहें कि एक बड़ा कुत्ता है, एक छोटे कुत्ते को, किसी बड़े कुत्ते की जंजीर के साथ में जोड़ना सरल है, और वह अधिस्वयं, सूक्ष्मशरीर, और भौतिक के संगत होगा।

पुस्तकें लिखने के माध्यम से, मैं कुछ पूर्णतः विकट लोगों के संपर्क में आया हूँ, कुछ वास्तविक 'पागल' जिन्हें मानसिक चिकित्सालय में से भागे हुए के रूप में अच्छी तरह से वर्गीकृत किया जा सकता है। वे अत्यधिक अल्पसंख्या में हैं, परंतु मैं कुछ उल्लेखनीय भले लोगों के संपर्क में भी आया हूँ। उदाहरण के लिये, ब्रिटिश कोलंबिया में, दो अत्यंत भली महिलायें हैं, कुमारी और श्रीमती न्यूमेन (Miss and Mrs. Newmaan); वे वास्तव में, जीवन को सफल बनाने का प्रयास कर रही हैं, और मेरा ख्याल है कि वे सफलता प्राप्त कर रही हैं। उन्होंने कुछ प्रश्न भेजे हैं, और यहॉ इस अध्याय में, मैं, एक विशिष्ट कारण से कि वह एकदम सही फिट होता है, उनमें से केवल एक ही प्रश्न का उत्तर देने जा रहा हूँ। इसलिये यहॉ कुमारी और श्रीमती न्यूमेन के इस प्रश्न का उत्तर है, ''क्या आप कृपा करके समलैंगिकता (homosexuality) की उसी ढंग से व्याख्या करेंगे, जैसे कि आपने, 'दसवीं के परे (Beyond the Tenth)' पुस्तक में, शराबियों की व्याख्या की थी ?'

हमारा अधिस्वयं, जैसी कि मैंने व्याख्या की है, इस पृथ्वी पर अनुभव प्राप्त कर रहा है। अधिस्वयं, स्वयं में बहुत बड़ा है, अत्यधिक शक्तिशाली, और पृथ्वी पर आने के लिये अत्यधिक उच्चकंपन करता हुआ, और इसलिये उसे, प्रोटोप्लाज्म के वे डेले नियोजित करने पड़ते हैं, जिनको हम अपने अज्ञान में, कहीं भी अस्तित्व की सबसे ऊंची आकृति सोचते हैं। हम मानव, केवल, हड्डियों के ढांचे के द्वारा समर्थित किये गये, और अधिस्वयं की कृपा से चारों ओर फेंके गये मांस के टुकड़े हैं, परन्तु बंधन अपरिहार्य रूप से घटित हो जाते हैं।

कई बार कोई कार का निर्माता, स्वयं से कहता है (प्रभावी रूप से, वास्तव में) 'ओह, भगवान, मैंने किसी अमुक कार में, ब्रेकों को वापस सामने की तरफ से जोड़ दिया है। उसे वापस बुला लें (call back)।' इसलिये कार के मालिकों को सूचना भेजी जाती है और कुछ निश्चत चीजों को ठीक ठाक करने के लिये, कारों को कारखाने में वापस बुलाया जाता है।

सूक्ष्मलोक से, उस विश्व में जिसे हम पृथ्वी कहते है, पर आने की हड़बड़ी में कुछ घालमेल हो जाता है। पैदा होना, एक अभिघातीय (traumatic) अनुभव है, ये सर्वाधिक हिंसक मामला है, और एक अत्यंत नाजुक यांत्रिकी आसानी से अव्यवस्थित हो सकती है। उदाहरण के लिये एक शिशु पैदा होने वाला है, और पूरे प्रसवकाल में, मानो कि मां, इस सम्बंध में कि जो वह खा रही थी और जो वह कर रही थी, लापरवाह रही है, इसलिये बच्चे को वह नहीं मिला, जिसे एक संतुलित रासायनिक भोजन कह सकते हैं। शिशु में रसायनों की कमी हो सकती है, और इसलिये कुछ निश्चित ग्रंथियों का विकास रुका हुआ हो सकता है। हम कहें कि शिशु एक लड़की के रूप में आने

वाला था, परंतु कुछ निश्चित रसायनों की कमी के कारण, शिशु वास्तव में, एक लड़के के रूप में पैदा हुआ, लड़कियों की प्रवृतियों वाला एक लड़का।

मां बाप महसूस कर सकते हैं कि उन्हें स्त्रेण (sissified) प्रभाव का एक छोटा बेचारा मिला है, और इसे अधिसंलिप्तता (overindulgence) या वैसी ही किसी चीज में पटक सकते हैं, वे किसी संज्ञान को उसमें भरने, और उसे एक या दूसरे सिरे से अधिक पुरुषत्वपूर्ण (manly) बनाने का प्रयास कर सकते हैं ; यदि ग्रंथियॉ गलत हैं, बुरा न मानें, लड़के के सामने, जो अभी भी, लड़के के शरीर में लड़की है, किस प्रकार के संलग्नक (attachments) आ सकते हैं।–137

यौवन की आयु पर बच्चा संतोषजनक ढंग से, या फिर, वह बाहरी दिखावट में विकसित नहीं हो सकता। स्कूल में वह भलीभांति एक कोमल कलाई वाली बिरादरी का दिख सकता है, परंतु बेचारा वह इस में मदद नहीं कर सकता।

जब वह आदमी की अवस्था में पहुॅचता है, वह पाता है कि वह 'उन चीजों को, जो स्वाभावतः आती हैं,' नहीं कर सकता, इसके बदले में, वह लड़कों–आदमियों की ओर दौड़ता है। वास्तव में, वह ऐसा करता है, क्योंकि उसकी सभी इच्छायें, औरतों की इच्छायें होती हैं। उसकी खुद की मनोदशा मादा की है, परंतु, दुर्भाग्यशाली परिस्थितियों के संयोग के कारण, मादा को नर उपकरणों के साथ भेजा गया है, इसका अधिक उपयोग नहीं हो सकता, परंतु फिर भी, वह वहॉ है!

तब, नर, वह हो जाता है, जिसे स्त्रैण (pansy) कहा जाता है और उसमें समलैंगिक प्रवृतियॉ होती हैं। उसमें स्त्री की मानसिकता जितनी अधिक होती हैं, समलैंगिक प्रवृतियॉ उतनी ही मजबूत होती हैं।

यदि किसी स्त्री में नर मनोवृति होती है, तो वह आदमियों में रुचि नहीं लेगी, वल्कि अपनी मनोप्रवृति, जो कि भौतिक शरीर की तुलना में, अधिस्वयं के अधिक नजदीक होती है, के कारण, औरतों में रुचि लेगी। वह अधिस्वयं की ओर भ्रमकारी संदेशों को प्रसारित कर रही होती है, और अधिस्वयं, एक प्रकार के निर्देश को वापस भेजता है : 'चलो व्यस्त हो जाओ, अपना काम करो।' बेचारी दीन नर मनोवृति, स्पष्टरूप से, एक आदमी के साथ, 'अपना काम करो' के विचार से प्रतिकर्षित होती है। इसलिये उसका पूरा रुझान, किसी मादा के ऊपर केन्द्रित रहता है, इसलिये एक मादा की निगाहें, मादा के साथ प्यार करने में रहती हैं, और यही वह है जिसे हम, ग्रीस के परे किसी निश्चित द्वीप[8], जो एक सम्पन्न द्वीप हुआ करता था, के कारण, लेस्बियन (lesbian) कहते हैं।

समलैंगिकों की निंदा करना पूरी तरह से निरर्थक है, वे खलनायक नहीं है, इसके बदले में, उन लोगों को, जिनमें ग्रंथि सम्बन्धी (glandular) परेशानियॉ हैं, बीमार लोगों के रूप में वर्गीकृत किया जाना चाहिए, और यदि चिकित्सा और डाक्टरों के पास दिमाग होता, तो वे उस ग्रंथीय खराबी के बारे में, कुछ करते।

मेरे खुद के, बाद के अनुभवों के बाद, मैं और भी अधिक सहमत हूॅ कि पश्चिमी डॉक्टर, घटिया किस्म के पागल हैं, वे केवल तेजी से धन कमाने के लिये बाहर हैं। मेरे खुद के अनुभव, अनुल्लेखनीय रूप से और विशेषणयुक्त खेदजनक रहे हैं, तथापि हम अभी, मेरे बारे में बात नहीं कर रहे है, हम अभी समलैंगिकों की बात कर रहे हैं।

यदि एक लेस्बियन (स्त्री) या कोई समलैंगिक (पुरुष), किसी सहानुभूतिपूर्ण डॉक्टर को पा सके, तब ग्रंथीय सारतत्व (glandular abstracts) दिये जा सकते हैं, जो निश्चितरूप से, हालात में एकदम काफी सुधार करेंगे और जीवन को ढोये जाने के लायक बनायेंगे। परंतु दुर्भाग्यवश, आजकल, डॉक्टरों की वर्तमान फसल, जो केवल पैसा बनाने के लिये बाहर जाती दिखती है, के साथ, ठीक है, एक अच्छा रास्ता पाने के लिये, आपको लंबा रास्ता ढूंढना पड़ेगा। परंतु किसी समलैंगिक की निंदा करना निरर्थक है, ये उसका दोष नहीं है। वे अत्यधिक, अत्यधिक, नाखुश लोग होते हैं, क्योंकि, वे भ्रमित होते हैं, क्योंकि वे नहीं जानते कि उनके साथ क्या हुआ। वे जानते है कि लोग उनके ऊपर हॅस रहे हैं और वे मदद नहीं कर सकते, जो कुल मिलाकर, एक आदमी या औरत को ज्ञात, प्रबलतम आवेग – पुर्नउत्पादन का आवेग है।

---

8 अनुवादक की टिप्पिणी : ग्रीस के लेस्बोस (Lesbos) द्वीप, जो ईसापूर्व छठवीं शताब्दी में सैप्फो (Sappho) कवियत्री का घर हुआ करता था, के नाम से लेस्बियन लव (Lesbian love) शब्द का नामकरण हुआ है। इतिहासकारों के द्वारा एकत्रित जानकारी के अनुसार, भोगी–भुगती स्त्रियों को सैप्फो के संरक्षण में, वहॉ निर्वासित कर दिया जाता था। सैप्फो की कविताओं में से कुछ ही उपलब्ध हैं, जिसमें उसने स्त्रियों की दैनिकचर्या, सम्बंधों और धार्मिक रीति रिवाजों पर लिखा है, उसका मुख्य केन्द्र स्त्रियों का सौन्दर्य और उसका स्त्रियों के प्रति प्रेम तथा मर्दों के यौन व्यवहार (sexual behaviour) के वर्णन पर रहा है।

मनोरोग चिकित्सक उर्फ मनोविज्ञानी, वास्तव में, अधिक सहयोगी नहीं होते, क्योंकि वे उसे करने में वर्षों लगाते हैं, जिसे औसत व्यक्ति कुछ दिनों में ही कर लेता है। यदि समलैंगिकों को इसकी स्पष्टरूप से व्याख्या कर दी जाये, कि उनमें ग्रंथीय असंतुलन है, तब सामान्यतः वे समायोजन कर सकते हैं। कैसे भी, ऐसे मामलों में उन्हें उसके लिये, जो वास्तव में, एक बीमारी है, ऐसी तीखी सजा और जेल में डालने देने के बजाय, उनकी आवश्यकताओं पर ध्यान देने के लिये, कानूनों में सुधार किये जा रहे हैं।

ऐसे लोगों की मदद करने के अनेक तरीके हैं। पहला है कि किसी अत्यन्त समझदार और काफी आयु के व्यक्ति को, जिसमें पीड़ित के प्रति गहरी संवेदना है, उन्हें ठीक ठीक तरीके से समझाना चाहिए कि क्या हुआ था। दूसरा, ये पहले की ही भांति है, परंतु इस जुड़ाव के साथ, उनको कुछ दवाइयॉं, जो उनकी यौनिक–भूख, कामवासना को दबाती हैं, दी जानी चाहिए। तीसरा– ठीक है, मामले को फिर से समझाया जाया जाना चाहिए और एक अर्हताप्राप्त डॉक्टर हार्मोन (harmone), या टेस्टोस्टेरोन (testosterone) के इंजेक्शन दे सकता है, जो निश्चितरूप से, यौन सम्बंधी समायोजन के मामले में, शरीर के मददगार हो सकते हैं।

प्रमुख चीज ये है कि किसी को, किसी समलैंगिक की भर्त्सना, कभी भी, नहीं करनी चाहिए, ये उसका दोष नहीं है, उसे उस चीज के लिये दंडित किया जा रहा है, जो उसने की ही नहीं, उसे प्रकृति के किसी दोष के लिये दंडित किया जा रहा है। शायद, उसकी मां ने गलत प्रकार के खाने लिये, शायद मां और बच्चा रासायनिक रूप से अनुशीलन योग्य नहीं थे। तथापि, आप इसे किसी भी तरीके से देखें, समलैंगिकों को केवल सही समझ और सहानुभूति के साथ, और शायद न्यायिक प्रक्रिया के अंतर्गत दी गई दवाओं के द्वारा मदद की जा सकती है।

मैं यहॉं एक प्रश्न देखता हूॅं, जिसका वास्तव में, हम पहले ही जबाव दे चुके हैं। शायद, मैं इसका दोबारा अच्छी तरह उत्तर दूं। प्रश्न है, 'ये गलत विचार किस तरह से घटित हुआ कि गूढ़विज्ञानी अपनी सेवाओं के लिये पैसा वसूल नहीं कर सकते?'

उत्तर पाना अधिक मुश्किल नहीं है। सुदूरपूर्व में अधिकांश लोग, निराशा की हद तक गरीब हैं, उनके पास टेलीविजन और कारें, और निजी वायुयान तथा विभिन्न तलों वाले घर नहीं हैं। कईबार, उनके पास केवल खाना और थोड़े से कपड़े होते हैं, कईबार, सुदूरपूर्व के लोग, अपने पूरे जीवनकाल में पैसा नहीं देखते। बदले में, वे अपनी खरीददारी अदलाबदली (barter) से करते हैं, वे फसल, अंडों और सभी चीजों को, या श्रम को भी, उन चीजों से, जिन्हें वे चाहते हैं, बदल लेते हैं। इसलिये यदि कोई किसान, किसी गूढ़विज्ञानी की सेवायें लेना चाहता है, तो वह किसान गूढ़विज्ञानी को धन देने की नहीं सोचेगा, क्योंकि, उसके पास कुछ भी नहीं है, इसलिये बदले में, वह गूढ़विज्ञानी को खाना, उदाहरण के लिये, अनाज फल, आदि देगा, और फिर, यदि उसके पास कोई अंडे या अनाज या फल फालतू नहीं है, तब वह गूढ़विज्ञानी के लिये मजदूरी करेगा। उदाहरण के लिये, उसके कपड़ों की मरम्मत करेगा, नया कटोरा गढ़ेगा। यदि उसके पास जगह हो, तब किसान उसकी जगह को साफ करेगा। ये किसी पहाड़ के बगल वाली गुफा हो सकती है, और उस मामले में व्यक्ति, जिसने गूढ़विज्ञानी की सेवाओं का उपयोग किया है, उसकी गुफा को अनेक बार साफ करेगा, सूखी घास और फर्श पर से ताजी घास के साथ, तिनकों को झाड़ू लगाकर हटायेगा। वह जलाऊ लकड़ी प्रदान करेगा और सभी आवश्यक कार्य करेगा।

ये भी भुगतान ही है, यद्यपि क्या ऐसा नहीं है? यदि वह खाना देता है, यदि वह श्रम देता है, यह भी भुगतान ही है। परंतु वास्तव में, भुगतान के विरुद्ध चेतावनी, पूरी तरह से एक अलग मामला था, क्योंकि, चेतावनी पूरी तरह से, विवेहीन पश्चिमी लोगों के विरुद्ध है, जो उन सेवाओं का विज्ञापन करते हैं, जिन्हे वे वास्तव में, पूरा नहीं कर सकते, और जो केवल तर्कहीन प्रभारों (unreasonable charges) को बनाने के लिये बाहर निकले हैं। कुछ विज्ञापन, जो मैंने देखे हैं, वास्तव में, इतने अधिक कल्पनातीत हैं, कि उन पर विश्वास नहीं किया जा सकता। अपने ब्रीफकेस को, शायद, पूरी रात पैक करते हुए, किसी आदमी के सम्बंध में सोचना, और वास्तव में, किसी और के प्रकरण में, हमेशा एक ऊंची फीस के लिये, किसी के आकाशिक अभिलेख को पढ़ने के लिये, सूक्ष्मलोक में दौड़ते हुए जाना, मुझे सबसे अधिक हास्याप्रदरूप से प्रभावित करता है। ऐसी चीजें असंभव हैं, वे पूरी तरह संभव हैं, क्योंकि, गूढ़विज्ञान का एक अत्यंत कठोर नियम इस प्रभाव का है कि, कोई भी व्यक्ति, किसी दूसरे व्यक्ति, जो जिंदा है, के आकाशिक अभिलेख को नहीं देख सकता। यदि आप ये जानना चाहते है कि पॉच सौ वर्ष पहले क्या हुआ था, तब वह एक अलग मामला है, वह इतिहास है, और उस मामले में, आप आकाशिक अभिलेख को देख सकते हैं। ठीक वैसे ही, जैसे कि आप फिल्म लाइब्रेरी को जाते हैं और कोई ऐतिहासिक फिल्म चुन लेते हैं, परंतु

ठीक वैसे ही, जैसे कि अनेक चीजें आजकल वर्गीकृत (classfied) की गई हैं, आप किसी निश्चित हवाई जहाज की चाल को नहीं बता सकते, और आप ये भी नहीं बता सकते कि कोई निश्चित गोला कितना तेज चलता है, ठीक है, उसी ढंग से, आप किसी जीवित व्यक्ति के आकाशीय अभिलेख को नहीं देख सकते या उस पर चर्चा नहीं कर सकते। कुल मिलाकर, आत्मलोक, आप जानते हैं, ऐसे कुछ विचित्र विज्ञापनदाताओं के लिये अस्तित्व में नहीं है; जब आप किन्हीं विज्ञापनों को देखते हैं, उसके बारे में सोचें और मेरे साथ हंसें, क्या आप हंसेंगे? पूरी तरह से

अध्याय – सात

दूसरों को घायल करो और स्वयं घायल हो जाओ

दिन बहुत सुखद रहा था, साफ नीला आकाश और जो पिछले कुछ सप्ताहों में रहा था, उसकी तुलना में गर्म ताप। संकेत थे, कि सर्दियॉ समाप्त हो चुकी हैं, और कि बसंत, वास्तव में, कलेण्डर के कोने में से आसपास झांकने के बारे में सोच रहा था, और उनमें, जो कनाडा की एकदम ठंडी सर्दियों के द्वारा पराजित और कुम्हलाये हुए थे, गर्मी और धूप और नया जीवन ला रहा था।

घाटी में बर्फ, अभी भी, मोटी थी और शायद कुछ और सप्ताहों तक ऐसी ही रहेगी, परंतु ऊॅचे मैदानों में सूर्य की गर्म करने वाली किरणों से अनावरित बर्फ, तेजी से पिघल रही थी और रिसती हुईं छोटी नदियॉ, और फैलने, तथा सेंट जॉन नदी को बढ़ाने के लिये दौड़ती हुईं, नीचे की तरफ आईं।

दिन ने, काफी चिड़ियों को आसपड़ौस में उड़ते हुए, संकेत कि बसंत आ रहा था, चिड़ियों को अपने पुराने अड्डों की ओर लौटते हुए देखा था; बतखों का एक पूरा झुंड गुजरा, (उसके) तुरंत बाद, झाड़ता हुआ और नीचे ताकता हुआ, काली पीठ वाला एक सीगल (black-back seagull), समुद्र से जमीन की ओर, एकदम कर्कश चीखों के साथ, छत पर आ चुका था।

शाम जमती ठंड में बदल गई थी। हवा में बर्फ का संकेत था। अचानक ही, तेजी से ढोल पीटते हुए, खिड़कियों, बालकनियों से उछलते हुए, और कुछ क्षणों के लिये, एक सफेद बर्फीली ज्योति के साथ, सड़कों पर बिछते हुए, ओलों की गड़गड़ाहट, अनपेक्षित रूप से आई।

बूढ़े आदमी ने सोचा, 'ओह, बेचारे मिस्टर रोबीचॉड (Robichaud), व्यस्त हो गये होंगे!' दिन के दौरान, श्रीमान् रॉबीचॉड पिघलती हुई बर्फ के मलबे को एक तरफ झाड़ते हुए, मोटर परिवहन को रास्ता प्रदान करने के प्रयास में, शहर के ट्रकों के द्वारा फेंकी गई बजरी कंकड़ को झाडू से बुहारते हुए, अत्यंत व्यस्त रहे थे। परंतु अब ओलों ने, पहले से ही काम से लदे हुए एक आदमी के काम को बढ़ाते हुए, ताजी बजरी को इमारत के सामने खदेड़ दिया था।

शाम ढलती गई, और शहर की बत्तियॉ एक–एक करके जलती गयीं। आकस्मिकताओं के लिये हमेशा तैयार, अस्पताल में, बत्तियॉ रात और दिन हमेशा जलती रहती हैं।

बूढ़े आदमी ने अपना सिर घुमाया और खिड़की से, बाहर बालकनी को देखा; नीचे बंदरगाह में, अभी भी, गतिविधियॉ थी। रूस के लिये अनाज लाद रहे रूसी जहाज पर, अभी भी, प्रकाश की झालर थी। मशीनों की धात्विक आवाज, और ऊॅचे दाब वाली भाप की हिस्स की आवाज थी।

जैसे ही कनेडियाई राष्ट्रीय नारकीय डीजल इंजन, रेल की पटरियों के साथ–साथ खटाखट की आवाज करते हुए, और चीखते हुए मानो कि दुनियॉ पागल हो गई हो, लेवल क्रासिंग के ऊपर से गुजरे, उस के समीप ही, एक भयानक गर्जना, और गर्जना, और फिर से गर्जना हुई। 'मैं आश्चर्य करता हूॅ कि किसी ने भी, इंजीनियर को नहीं बताया कि क्रासिंग पर सिग्नल की बत्तियॉ हैं,' बूढ़े आदमी ने सोचा, क्योंकि, ये पागलपन दिखता है कि कनाडा के इंजन, सायरनों को लगातार बजाते हुए, और अनवरत घंटियों को बजाते हुए, कैसे बढ़ते जाते हैं। ये कुछ वैसी ही, बहुत छोटे बच्चों के गिरोह के, सर्वाधिक संभव शोरगुल वाले तरीके से खेलने जैसी ही चीज है। शोर और धूमधड़ाके के देश के रूप में, कनाडा को अमेरिका से भी आगे समझा जाना चाहिए।

बूढ़े आदमी ने, फिर से, लेवल क्रासिंग, और सड़क को रोकते हुए, भाड़े वाली कारों के अंतहीन काफिले के परे अपनी नजर उठाई। बंदरगाह में, लाइबेरिया (Liberia) के एक जहाज, जिस पर अभी हाल ही में, निकल का सात हजार टन अयस्क लादा गया था, की ओर रस्से आते जा रहे थे। पहले, बकाया भुगतान न करने के कारण, जहाज को अमेरिका में गिरफ्तार किया गया था। प्रगटरूप से, इसने, बंदरगाह के भुगतान की थोड़ी सी औपचारिकता के बिना, प्रशांत महासागर के तटीय बंदरगाह से भाप निकालना बंद कर दिया था। परंतु एक जहाज की तुलना में, टेलीफोन अधिक तेज (fast) थे, और अमेरिका के प्रशांत महासागर के तटों से, कनाडा के पूर्वी समुद्री तट, तक, सभी तरफ टेलीफोन के संदेश दौड़ चुके थे। और दिन में, पहले, पुलिस के अधिकारियों ने जहाज के ऊपर मार्च किया था, और उसके कप्तान को गिरफ्तारी का वारंट तामील किया था।

उत्श्रंखल कार्य, एक बॉन्ड को चिपकाये जाने के रूप में परिमाणित हुआ और अब वह जलपोत जाने के

लिये स्वतंत्र था, इसलिये उसे उल्टी दिशा में चलाने के लिये, बाहर गहरे पानी के चैनल में पीछे की तरफ खींचने के लिये, रस्से आ रहे थे, और तब, वह सही दिशा में संकेत करते हुए, दूर शायद ऑस्ट्रेलिया के लिये चालू होगा।

पायलट पहले से ही जहाज पर था, पायलट नाव, जहाज, जो तब धीमा हो जायेगा, का इंतजार करने के लिये, पानी पर तैरते हुए चिन्हों (buoys) के परे, बाहर जा रही थी, और तब पायलट नाव गुपचुप तरीके से चली जायेगी और पायलट को उड़ान देगी, और तब जहाज, अपने खुद के ढंग से चलने के लिये मुक्त हो जायेगा।

जहाज शांति से बाहर गया, कोई शोरगुल नहीं, कोई झंकार नहीं, भाप के निकलने की हिस की आवाज नहीं, जहाज चुपके से सटक गया, मानो कि वह मानवता की बुरी वफादारी और विश्वासघात के माध्यम से गिरफ्तार होने, और उनके द्वारा उदाहरण प्रस्तुत करती हुई मानवता, जिन्हें उनकी सेवाओं के लिये उठाये हुए बिलों भुगतान कर कर देना चाहिये था, पर शर्मिंदा हो।

शहर भर के, ऊपर सोते हुए लोग, अपने भौतिक शरीरों को छोड़ रहे थे और ऊपर सूक्ष्मलोकों में जा रहे थे, उनकी रजत तंतुयें, स्वयं–प्रकाशित, चमकदार, फड़कते हुए और झटके देते हुए रेशमी तंतुओं की भांति, खिंची हुई थी।

बूढ़ा आदमी अपने में मुस्कराया, क्योंकि, एक कमरे में से बटरकप के कोमल खर्राटे आए। 'उसने कभी विश्वास नहीं किया था कि **वह** किस प्रकार का शोरगुल कर रही है!' बूढ़े आदमी ने सोचा। अचानक ही उसकी सूक्ष्म आकृति, एक दीवार में होकर प्रकट हुई और सीधी ऊपर की ओर, और तब दूर अमेरिका की दिशा में, दूर तक चली। उसके शरीर में से, उसके सूक्ष्मशरीर के निकलने के साथ ही उसके खर्राटें बढ़ गये।

दूसरे कमरे में से रा'आब भी थोड़े से खर्राटे भर रही थीं। वह पहले से ही बिल्लियों के सूक्ष्मलोक, जहॉ वह कुछ वास्तविक रूप से प्रिय नन्हीं व्यक्तियों, कुमारी कुई (Miss Ku'ei), श्रीमती फीफी ग्रेविस्कर्स (Mrs. Fifi Greywhiskers), कुमारी सिंडी (Miss Cindy), लंबा टॉम (Long Tom), और लार्ड फरहेड (Lord Furhead) और दूसरों से मिलेंगी, में जा चुकी थी। रा'आब को ये लाभ था कि वह इससे जागरूक थी कि वह बिल्लियों के सूक्ष्म लोक के देश में कब जा रही थी, परंतु शायद, रा'आब इसके प्रति सचेत नहीं थी कि उसके खर्राटे कैसे घरघराहट भरे होंगे।

नन्हीं बच्ची बिल्ली क्लियोपेट्रा, दूर, वैसे ही रा'आब के बगल से सो रही थी। वह भी बिल्लियों के सूक्ष्मलोक के लिये निकल चुकी थी, परंतु मोटी बिल्ली टेडीकिंस अपने कर्त्तव्य पर थी, वह सुबह चार बजे तक कर्त्तव्य पर रहेगी और मोटी बिल्ली टेडीकिंस, रेडियटर के ठीक ऊपर, सेल्फ में, जहॉ उसे पूरी गर्मी, पूरी सुंदरता से गर्म उठती हुई हवा मिल रही थी, आराम कर रही थी। एक भुजा ऊपर झूल रही थी और दूसरी उसकी ठोड़ी को सहारा दे रही थी। उसके कूल्हे एक रास्ते के सामने थे, ओर उसका सिर दूसरे रास्ते के सामने था, एक ऐसी स्थिति, जिसे केवल एक बिल्ली ही बना सकती है।

फंडी की खाड़ी (Bay of Fundy) में, काफी दूर, एक मछलीमार नौका ने अचानक ही खोज–बत्ती (search-light) को चमकाया। वह एक क्षण के लिये आसपास हिली और तब, उतनी ही आकस्मिकता के साथ बुझ गई, और वहॉ इसका कोई नामोनिशान नहीं था कि कोई छोटी मछलीमार नौका कहीं आसपास थी। फिर भी, मछली पाने के लिये अपने जालों को उछाले हुए, अनेक मछलीमार नौकायें अपनी पंक्तियों से बाहर, सब तरफ थीं, और वह, अमेरिका के किसी बड़े औद्योगिक प्लांट से, जिसने अपनी सीमाओं से सटकर गुजरती हुई धाराओं में बड़ा विषाक्त, दुर्गन्धयुक्त पानी छोड़ा था, यू.एस.ए. से बहते हुए पानी में पारे के द्वारा प्रदूषित नहीं था। फिर भी, वहॉ जहर का एक ताजा स्रोत था, क्योंकि, नोवा स्कोटिया (Nova Scotia) के समुद्रतट से दूर, एक तेलवाही जहाज टूट गया था और तंरगों के नीचे डूब गया था, और तेल तथा जहरीली चिड़ियायें और मछलियॉ, हर समय, तटों की ओर साफ की जा रहीं थीं। इसलिये न्यू ब्रूंसविक (New Brunswick) के मछुआरे, यह जानते हुए कि अपराधी तरीके के कारण, जिसमें आदमी ने प्रकृति के स्रोत को प्रदूषित कर दिया था, उनकी अजीविका दांव पर थी, बल्कि उदासभाव से, अपने व्यापार के सम्बंध में बाहर निकले हुए थे।

आकाश में थोड़े से तेजी से आरपार चलते हुए बादल थे, वहॉ काफी कुछ हवा आती हुई प्रतीत हुई, तीन झंडे, पागलपन के साथ, दूर पहाड़ी पर लहरा थे और पाल की रस्सियॉ, झंडों के लहराने के साथ साथ, मानो कि मस्तूलों के विरुद्ध, लयबद्ध होकर कोड़े मार रही थीं।

आकाश के एक साफ टुकड़े पर अचानक ही सीधा होकर, पूरे परिदृश्य के ऊपर एक धुंधली चमक छोड़ते हुए, सड़कों की बत्तियों को मंदा करते हुए, आश्चर्यजनक तेजी के साथ चलता हुआ पूर्ण चंद्रमा, मिस्पैक (Mispec)

के परे की पहाड़ी के ऊपर आया। चांदी के प्रकाश की किरण, समुद्र के साथसाथ तरंगें बनाती हुई, प्रखर उंगलियों से एक मछलीमार नौका को यहॉ छूते हुए, एक उछाल को वहॉ चमकाते हुए, जमीन की पट्टी पर चांदी चढ़ाते हुए, तरंगों में टूटते हुए, चंद्रमा जैसे ही सेंट जॉन नदी के ऊपर नये पुल के साथसाथ चढ़ा, और जैसे ही उसने तेजी से दौड़ते हुए रस्से का सामना किया, मिसपैक बिन्दु से हार्बर तक, तेजी से पूरे रास्ते भर चली।

बूढ़ा आदमी अचानक ही घूम गया, और एक तीखे, आंसू लाने वाले अत्यधिक दर्द ने, उसे अंदर से जकड़ लिया, दर्द, जिसने उसे सहसा दर्द के साथ हॉफते हुए, और लगभग उल्टी करते हुए छोड़ा। दर्द, पिछले लंबे समय से, उसका हमेशा का साथी, दर्द, जो और भी अधिक जल्दी–जल्दी, तथा और भी अधिक तेजी से होता जा रहा था, दर्द, जिसने, यह प्रदर्शित करते हुए कि, जीवन की यात्रा कैसे आगे बढ़ रही थी, यह दिखाते हुए कि कितनी जल्दी वह समाप्त हो जायेगी, कठोर उंगलियों के साथ केलेण्डर की ओर संकेत किया।

मोटी बिल्ली टेडीकिंस, रेडियेटर के ऊपर शेल्फ पर खड़ी हुई, बूढ़े आदमी को, जानबूझकर तीखी नजरों से ताका, अपने आप में बड़बड़ाई, और जल्दी जल्दी चलती हुई, वहॉ, जहॉ रा'आब अभी भी नींद में थी, चली गई। शीघ्र ही, रा'आब के भौतिक शरीर और सूक्ष्मशरीर कें बीच में जुड़ी हुई रजत तंतु हिली और उसने सिमटना प्रारंभ कर दिया, वह बढ़ती हुई तेजी के साथ, जबतक सूक्ष्मशरीर भी नहीं आ गया, सिमटती गई। कुछ सेकडों के बाद, रा'आब, ये देखने के लिये कि बूढ़े आदमी के लिये क्या किया जा सकता था, अंदर आई, परंतु क्या किया जा सकता था? बूढ़ा आदमी, कनाडा में 'चिकित्सीय इलाज' लेने के समय से ही स्थाई आश्चर्य में रहा था। अपनी अज्ञानता में उसने सोचा था कि किसी डॉक्टर का पहला कर्त्तव्य, अर्थात् जो उसे पढ़ाया गया था, पीड़ा से आराम दिलाना था। उसे पढ़ाया गया था कि सबसे पहले आप पीड़ा से आराम दिलायें, तब आप उसका इलाज करने का प्रयास करें, जिसने इसे पैदा किया था। परंतु अब–ठीक है, उसने कहानी के दूसरे पहलू को, डॉक्टर के रूप में नहीं, बल्कि एक मरीज के रूप में देखा।

बूढ़े आदमी को अत्यधिक कष्ट झेलने पड़े थे और उसने तथा रा'आब ने डॉक्टरों से, पीड़ा से मुक्ति दिलाने वाली कुछ टिकियों, या किसी भी चीज के लिये कहा था। पहले उन्हें बताया गया था, 'नहीं, हम इसे अभी नहीं देना चाहते, वह लक्षणों को छिपा सकता है।' परंतु इस दौरान, बूढ़े आदमी को अभी भी कष्ट था, अभी भी उसकी पीड़ा थी, इस बीच, एक निराशाजनक आकस्मिकता के रूप में, बूढ़े आदमी को अस्पताल लाया गया था और पहले अस्पताल की एक करुणामयी नर्स ने वह कर दिया था, जिसे करने में डॉक्टर सक्षम नहीं लगे थे।–149

तब दूसरी आकस्मिकता और दूसरा अस्पताल और ये बयान कि कुछ भी नहीं किया जा सकता था, आया। इसलिये ये जानते हुए कि इलाज के लिये कुछ भी नहीं किया जा सकता था, बूढ़ा आदमी, तथा रा'आब और बटरकप ये नहीं समझ सके कि ऐसा क्या था कि पीड़ा से आराम दिलाने के लिये कुछ भी नहीं किया सकता था। दर्द में आराम दिलाने के लिये, आराम दिलाने के लिये, फिर से पूछने के लिये, कि क्या कष्ट से आराम दिलाना, डॉक्टर का पहला काम नहीं है? और यदि वह कारण का निदान नहीं कर सकता, तब भी निश्चितरूप से, वह कुछ आराम दे सकता है, जबकि अभी भी जीवन है।

इसलिये, असहाय होकर, रा'आब ने आसपास देखा–वहॉ क्या था, जो वह कर सकती थी? वहॉ कुछ भी चीज नहीं थी, उसके पास कोई दवायें नहीं थीं, कुछ भी नहीं। इसलिये एकबार फिर, उसे केवल बैठना पड़ा और सिवाय सांत्वना और समझ के, कुछ न देते हुए देखभाल करनी पड़ी।

शीघ्र ही, क्लियोपेट्रा वहॉ आई, जिसने, कष्ट से ध्यान हटाने की आशा में, कुछ हल्का सा आराम देने की आशा में, बिल्ली के हाथों को उछालने की समतुल्यता जैसा कुछ किया, और क्लियोपेट्रा तथा टेडीकिंस, दोनों ने, ये दिखाने के लिये कि ये पीड़ा कितनी बुरी थी, दुलार किया। दो नन्हें लोग, जो सड़क के किसी औसत आदमी या औरत को, केवल दो अत्यंत छोटे सुंदर पशु दिखाई देंगे, परंतु उनके लिये, जो उन्हें जानते हैं, ये दो छोटे लोग, व्यक्ति से हटकर, प्रखर, उच्चरूप से सुसंस्कृत और पूरी तरह से सहानुभूतिपूर्ण तथा समझदार हैं।

और इसलिये, कष्ट में अपने बिस्तर में लेटा हुआ बूढ़ा आदमी, अभी भी, आश्चर्य कर रहा था कि स्थानीय चिकित्सीय बिरादरी, कष्ट निवारकों के बारे में जानती हुई प्रतीत नहीं होती, या यदि उन्होंने सुना है, तो वह उसका उपयोग क्यों नहीं करती, वे किसी को, जो वास्तव में, विचारणीय परेशानी में था, आराम देने वाले ऐसे उपायों का उपयोग क्यों नहीं करते?

अब आकाश गहरा हुआ, काले निचले बादलों से चंद्रमा बुझ गया। अचानक, दूर समुद्र में एक बाड़ (haze) आई और तेजी से जमीन की तरफ दौड़ गई, वर्षा की पहली बड़बड़ाती बूंदें खिड़कियों के पर्दो पर टकराईं और

हवा के विस्फोट ने इमारत को हिला दिया। शीघ्र ही, तूफान, अपने पूरे क्रोध के साथ, विस्फोटित हुआ, गरजती, चीखती हवा और बीच में छितराये हुए ओलों के साथ बरसात के झरने। बरसात के पर्दे में बंदरगाह को छिपाते हुए, एक सुखद दिन की सारी स्मृतियॉ इसके नीचे डूबती हुई आईं। चूंकि सोडियम लैंप, पानी की धुंध और पीटती हुई बरसात को भेदने के लिये फालतू ही झगड़ते हैं, सड़कों की बत्तियॉ, भूतिया हरे, नीले रंगों में जल उठीं।

बरसात की गड़गड़ाहट एक ही ढंग की थी, इमारत के कोनों के आसपास छितराई हुई खिड़कियों के विरुद्ध धकेलती हुई, दरवाजों को थपाक से बंद करती हुई हवा की चीख, इसने बूढ़े आदमी को याद दिलाया कि उसके अंदर होती हुई चीजें कैसी दिखती हैं।

रात अंतहीन प्रतीत हुई, ऐसा लगा कि हर मिनट एक घंटा था, और हर घंटा एक दिन था। बूढ़े आदमी की प्रार्थना पर, रा'आब अपने बिस्तर पर वापस चली गई। क्लियो, थोड़े समय के लिये वहॉ ठहरी, तब वह भी वापस बिस्तर पर चली गई। और टेडीकिंस ने, अंधेरी और उदास सुबह में सुबह चार बजे तक, सेल्फ पर अपने खम्बे को ग्रहण किया। चार बजे कुमारी क्लियोपेट्रा वापस कमरे में आई और टेडी के पास कूदी। संक्षिप्त रूप में, उन्होंने नाकों का छुआ और क्लियो को लगभग उसी स्थिति में, जिसमें टेडी ढल चुकी थी, व्यवस्थित होने के लिये छोड़ते हुए टेडी कूद पड़ी।

बाहर पहला ट्रेफिक चलना शुरू हो रहा था। पहले कामगार गोदियों में जा रहे थे। नीचे एक आदमी ने अपनी कार को चालू किया, शायद वह सूखी हुई गोदी को, ये देखने के लिये कि वहॉ क्या हो रहा था, जा रहा था। एक अकेला रस्सा जोर से चिल्लाया, मानो कि वह बरसात और अंधेरे में गुम हो गया हो। वहॉ प्रकाश स्तंम्भ का कोई चिन्ह नहीं था। बरसात ने पूरी तरह से उसकी किरणों को रोक लिया था, परंतु कुहासे के हॉर्न की दुख भरी रंभाहट को मंद–मंद सुना जा सकता था।

घंटे घिसटते गये। अंत में, मिसीपैक पहाड़ियों के ऊपर मंद भूरी रोशनी प्रकट हुई, एक मंद भूरी रोशनी, जिसने उदासी को दूर करने के लिये थोड़ा कुछ किया, क्योंकि उसने केवल एक पूरी तरह से असुखद दिन दिखाया, हर चीज पानी से संतृप्त। पानी, छतों पर से कुलबुलाते हुए, पानी सड़क पर से नीचे की ओर बहते हुए और पुल और गोदी की नजर को धुंधलाते हुए, अचानक ही किकियाता है।

और अधिक घंटे गुजरते गये, तथा और अधिक लोग हिलने–डुलने शुरू हो गए। रा'आब वापस आई, उसके शीघ्र बाद बटरकप आई। एक और दूसरा दिन शुरू हुआ।

बंदरगाह लगभग खाली दिखाई दिया। भाप से तैयार, एक नीले तारे वाला मालवाही जहाज (blue star freighter), बाहर जाने के लिये धारा में मुड़ ही रहा था। वह भी हमें छोड़ने के लिये उत्सुक था। रूसी जहाज निकास में से आती हुई भाप के एक धुंधली जुल्फ के साथ, और अभी भी वहीं था, और नीचे डी.ओ.टी. (D.O.T.) पर, गोदी के आदमी, लाल ढांचे वाले (red-hulled) जहाजों में से एक जहाज पर थे, जो प्रकाश स्तंम्भ की देखभाल करने वाले और प्रकाश और ध्वनि संभालने वाले लोगों को सेवा प्रदान करने के लिये, आपूर्तियॉ देने के लिये बाहर गया था। गोदी के मध्य में, एक अकेला रस्सा गतिहीन था, मछुआरों की पंक्ति में पीछे की ओर, एक आकृति हिलती डुलती दिखाई दी। शायद रस्से खींचने वाले आदमी, अपने नाश्ते को पकड़ने का प्रयास कर रहे थे।

अपरिहार्य डाक अनवरत आती गई। आज के दिन, बूढ़े आदमी के पास कुछ जैसा अनुभव करते हुए बिल्ली अंदर आई, अठहत्तर पत्र आये, लगभग सभी, उन लोगों से, जो लगभग सभी, वापिसी डाक टिकट के किसी मूल सौहार्द के बिना, कुछ चाहते थे।

एक औरत ने इतना धारा–प्रवाह लिखा था, 'अरे, डॉक्टर रंपा, मुझे बताया गया है कि आप मरने वाले हैं, और इससे पहले कि मेरे लिये बहुत विलंब हो जाये, मुझे आपकी मदद लेनी चाहिए। क्या आप मेरे लिये ये करेंगे– उससे पहले आप मर जायें, आपको मेरे लिये ये करना चाहिए।'

लोग लिखते गये, और लिखते गये, बूढ़े आदमी ने, उचित प्रश्नों का उत्तर देने में, अपना सर्वोत्तम किया। बटरकप ने कड़ी मेहनत की, और उन पत्रों का एकदम सही टंकण करते हुए, जिसको करने में बूढ़ा आदमी, अब और अधिक सक्षम नहीं था, परंतु लोगों से कोई छुटकारा नहीं था। उनमें से अनेक ने, जैसे ही उन्होंने उत्तर पाया, 'इससे पहले कि अत्यधिक विलंब हो जाये,' प्रश्नों का एक बड़ा समूह वापस भेज दिया।

एक महिला ने, एक ही डाक में, टोरंटो से सात पत्र भेजे। प्रगटरूप से उसने अनेकों पृष्ठों वाला एक पत्र लिखा था और जब वह पाती कि सब कुछ तैयार है, और उसे डाक से भेज पाती, उसने दूसरी चीजों को, जिन्हें

वह जानना चाहती थी, और ऐसे ही, और–और, जबतक कि सात पत्र नहीं आ पहुंचे, सोचा।

बूढ़े आदमी को, पत्रों के साथ अनेक अजीब अनुभव हुए। ओंटारियो (Ontario) की एक औरत ने, वास्तव में, भड़काऊ पत्र लिखे और बूढ़े आदमी के पते को पाने की व्यवस्था की। वह पुलिस के संपर्क में आई, और कहा कि डॉक्टर रंपा को संपर्क करना, अत्यावश्यक रूप से आवश्यक था, ये जीवन और मरण का प्रश्न था। और इसलिये हमारे अच्छे स्वभाव वाली, अच्छे आशय वाली स्थानीय पुलिस ने, जहॉ बूढ़ा आदमी रहता था, जहॉ बूढ़ा आदमी बीमार पड़ा था, एक पुलिस कार भेजी, और पुलिसमैन के पास कठोर आदेश था। 'आपको इस नम्बर पर तत्काल फोन करना चाहिए, ये जीवन और मरण का प्रश्न है।' उसी औरत ने, विशेष वितरण पत्र (special delivery letters), टेलीग्राम– हर चीज भेजी। और अंत में, बूढ़ा आदमी और लंबे समय तक नहीं टिक सका, 'अंत में' औरत के, यह कहते हुए एक पत्र के कारण के द्वारा उत्पन्न हुआ कि जबतक कि बूढ़ा आदमी उसका मित्र नहीं बन जायेगा, वह आत्महत्या कर लेगी और उसने, उसी चीज को दोहराते हुए तीन पेज नत्थी किये, 'मरो (नाम), मरो (नाम), मरो (नाम)। बूढ़ा आदमी और अधिक समय तक नहीं टिक सका, इसलिये वह, उस जिले की पुलिस, जिसमें वह रहती थी, के संपर्क में आया और पुलिस, इन 'श्रंगारिक' प्रकृति के पत्रों के सम्बंध में, उससे मिलने के लिये गई। अब कम से कम उस फेर से, शांति है, यद्यपि, ऐसा समझा गया कि वह बेचारा अभागा पुलिसमैन, जो उससे मिलने गया था, उस अनुभव से, विचारणीय सीमा तक हांफता हुआ थाने पर वापस लौटा।

जब बूढ़ा आदमी बसाहट (Habitat) में था, एक रात को काफी गंभीर रूप से बीमार, वह बिस्तर में था। मध्यरात्रि के करीब, दरवाजे पर बिजली जैसी एक थपथपाहट हुई, रा'आब जल्दी से अपने कमरे से निकली, और बूढ़े आदमी ने बिस्तर से बाहर, और पहिये वाली कुर्सी में आने, और यदि ये कोई अवांछित अतिक्रमणकारी हो, उस अवस्था में कुछ चीज पकड़ने की व्यवस्था की। परंतु दरवाजे पर दो फ्रेंच–कनेडियन पुलिसमैन थे, और निश्चितरूप से, कंपा देने वाली अंग्रेजी में, उन्होंने डॉक्टर रंपा से मिलने की मांग की। सिपाहियों में से एक, धोखाधड़ी दल (fraud squad) में से था, दूसरा पुलिस का ड्राइवर था। उन्होंने हर तरह की चीजों को जानना चाहा, और सभी प्रकार के प्रश्नों के, मध्यरात्रि को उत्तर देने पड़े। अंत में, बूढ़े आदमी ने जानना चाहा कि ये सब किस सम्बंध में था, वे इतने प्रश्न क्यों पूछ रहे थे, और दोनों पुलिसमैन एक दूसरे की तरफ देखने लगे, और एक टेलीफोन की तरफ चला, तब फ्रेंच–कनेडियन ने अपने अधीक्षक से बड़बड़ाहट में बात की। टेलीफोन को बदलने के बाद, उनका ढंग पूरी तरह से बदल गया। उसने बताया कि अमेरिका के मध्य–पश्चिम राज्यों के एक आदमी ने, मॉन्ट्रियल पुलिस मुख्यालय को, ये कहते हुए फोन किया था कि वहॉ एक विकट आकस्मिकता है, और क्या पुलिस डॉक्टर रंपा, पता अज्ञात, को संपर्क करेगी, और उससे मध्य–पश्चिम अमेरिका के राज्य को, एक निश्चित नंबर पर टेलीफोन करायेगी।

गश्त कर रही पुलिस को इस संदेश को आगे भेजने में सूचना कुछ हद तक अस्पष्ट थी, और चूंकि इस संदेश को धोखाधड़ी दल के एक आदमी ने लिया था, उसने सोचा कि वह बूढ़े आदमी से, किसी धोखाधड़ी के मामले में, मिलने जा रहा था, इसलिये उसने उसके अनुसार कार्य किया। तथापि, अंत में मामले सुलझ गये और पुलिस चली गई। अर्धरात्रि के बाद, एक अत्यंत बीमार आदमी को भड़काने और परेशान करने के बाद, क्षमायाचना, थोड़ी से देर से हुई।

वैसी ही चीज तब हुई, जब बूढ़ा आदमी, पहले सेंट जॉन में रहता था। पुलिस को किसी बूढ़ी मुर्गी ने मॉन्ट्रियल में फोन किया। उसने बताया था कि ये जीवन और मरण का प्रश्न था, इसलिये पुलिस, यह सोचते हुए कि वे एक जीवन को बचाने वाले हैं, उत्सुक ऊदविलाब (beaver) की तरह से आई। फोन किया गया और उस मूर्ख महिला ने केवल यह चाहा कि बूढ़ा आदमी, उसके पति को बताये कि उस (महिला) को अपने (पति) के साथ कोई यौन जीवन नहीं रखना चाहिए! संयोगवश, यद्यपि, विचारणीय खर्चे निहित थे, औरत और उसके पति ने, उस खर्चे का भुगतान करने का कोई प्रयास नहीं किया। यह वह है, जो सामान्यतः होता है, कोई व्यक्ति, मात्र ये सोचता है कि बूढ़ा आदमी, पैसे का बना है और कि वह, उनकी सहायता के लिये दौड़ने के लिये, और उस आनंद को देने के लिये, भुगतान करने के लिये, मरा जा रहा है।

अभी हाल ही में एक आदमी ने एशिया से लिखा। उसने ये कहने के लिये लिखा कि वह मानवता के लिये भलाई करना चाहता था, और उसने सोचा कि वह एक डॉक्टर बनेगा, इसलिये उसने बूढ़े आदमी को तुरंत धन भेजने के निर्देश दिये, क्योंकि, ये डॉक्टर का कनाडा आने का प्रथम श्रेणी का हवाई किराया होगा। उसने बूढ़े आदमी को बताया कि उसे (बूढ़े आदमी को) इस होने वाले डॉक्टर के रहने और ठहरने का और सभी भुगतान

करने का सम्मान दिया गया है। उसने ये लिखते हुए समाप्त किया, 'मैं कभी आपको वापस नहीं कर सकता, परंतु कम से कम आप जान जायेंगे कि मैं दूसरों की भलाई के लिये कर रहा हूँ।'

एक और दूसरा मामला बसाहट में हुआ, जब एक आदमी, पूरी तरह से, अपने साज सामान के साथ देर रात में आया। वह दरवाजे तक आ गया, और जबतक कि उसे उत्तर नहीं मिल गया, उसने दस्तक दी, और दस्तक दी। वह भारत से आया था, और उसने बताया, 'मैं आपके साथ आपके बेटे के रूप में रहने के लिये आया हूँ, मैं आपका खाना पकाऊंगा।' और उसने अपने पूरे साज सामान के साथ, अंदर घुसकर अपना रास्ता बनाने का प्रयास किया।

बूढ़ा आदमी इन चीजों के बारे में सोच रहा था, कुछ मानवों, जिन्होंने उसे लिखा, के बारे में सोच रहा था, उस औरत के बारे में सोच रहा था, जिसने उसे ये कहने के लिये लिखा था कि उसकी पुस्तक, पुस्तक; जिसको बूढ़े आदमी ने दुरानुभूति से इमला बोलकर लिखवाया था, पूरी तरह तैयार थी, और वह उसके द्वारा, ये कहते हुए लिखा हुआ एक पत्र चाहती थी कि किसी प्रकाशक को उसे लेना चाहिए और उसे रॉयल्टी देनी चाहिए।

कुछ उल्लेखनीय पत्रों, जो भेजे गये हैं, के बारे में एक सर्वाधिक मनोरंजक पुस्तक लिखी जा सकती थी, परंतु बूढ़ा आदमी, वास्तव में, थोड़े से बचे हुए समय में, उन प्रश्नों के उत्तर देने में, जिनसे ये आशा की जाती है कि वे लोगों की मदद करेंगे, अधिक अभिरुचि रखता है। इसलिये इस जैसे अनेक प्रश्न, काफी संवेदनशील हैं, प्रश्नः

'ऐसा क्यों है कि हम, जब हम इस पृथ्वी पर हैं, उन कामों को, जिनके किये जाने की आशा हम से की जाती है, कभी याद नहीं करते? हमें, बिना ये जाने हुए कि हम क्या कर रहे हैं, अंधेपन से आगे की तरफ क्यों बाध्य होना पड़ता है? क्या मुझे आप ये बता सकते हैं?'

ठीक है, हॉ, निश्चिय ही, इसके बारे में कुछ भी अधिक उल्लेखनीय नहीं है। यदि लोग पहले से ही जानते कि उन्हें क्या करना था, वे उस चीज पर, विशेषरूप से ध्यान केन्द्रित करते, और इसलिये एक बहुत ही एक–तरफा (one-sided) जानकारी या अनुभव पा लेते।

मुझे अक्सर बताया जाता है कि मैं पृथ्वी पर जीवन को एक स्कूल की भांति समझता हूँ। परंतु वास्तव में, मैं ऐसा ही करता हूँ, ये एक स्कूल है, मानवों का एक स्कूल। और इसलिये, स्कूल की अपनी व्याख्या पर, पीछे की ओर जाते हुए, इस पर विचार करें : आप स्कूल में पढ़ते हैं, परंतु तब आपको एक परीक्षा देनी होती है।

आपको एक परीक्षा देनी पड़ती है। हॉ, एक परीक्षा ये जानने के लिये कि आप कितना जानते हैं। आप बिना ये जाने हुए कि कौन से प्रश्न आने वाले हैं, परीक्षा कक्ष में जाते हैं। यदि आप, इससे पहले कि आप परीक्षा कक्ष में जायें, प्रश्नों को जानते, तो यह बिलकुल भी परीक्षा नहीं होती क्योंकि, तब आपने, किन्हीं अत्यंत थोड़े से विषयों पर, थोड़े से वाक्यों को रट लिया होता, और स्पष्टरूप से, आपने आसानी से परीक्षा पास कर ली होती– परंतु आप कोई चीज नहीं जानते।

स्कूल में किसी को, ज्ञान के एक बड़े विस्तृत क्षेत्र को सीखना पड़ता है, और तब, ये सुनिश्चित करने के लिये कि किसी ने ज्ञान के पर्याप्त विस्तृत क्षेत्र को सीख लिया है, भविष्य के कुछ दिनांकों में परीक्षा शुरू की जाती है। विद्यार्थी जानते हैं कि कोई परीक्षा होने वाली है, परंतु वे एकदम सही प्रश्नों को स्पष्टरूप से नहीं जानते। इसलिये ऐसा है कि उन्हें पूरे क्षेत्र को, जो परीक्षाओं में पूछा जायेगा, पढ़ना पड़ता है, और वह विशेष रूप से, केवल एक या दो चीजों तक, सीमित नहीं होगा।

मानते हुए कि एक शल्यचिकित्सक या कि, होने वाला शल्यचिकित्सक, अपनी परीक्षाऐं दे रहा था और ये मानते हुए कि किसी ने उसे प्रश्नों की असली प्रकृति को बता दिया था, वह पूरे समय अपने अध्ययनों में ढीला रहा था। यदि होने वाला शल्यचिकित्सक विवेकहीन और सिद्धान्तहीन था, तो वह केवल उन प्रश्नों के उन उत्तरों की ओर केन्द्रित करेगा, और वास्तव में, चरम आनन्द के साथ पास कर लेगा।

परंतु आप उसके, प्रथम रोगी हो सकते हैं। मानते हुए कि आप किडनी की शल्यचिकित्सा के लिये गये थे, और सबकुछ, जो वह कर सकता था, वह एक अपेंडिक्स को निकालना था –क्या आप प्रसन्न महसूस करेंगे?

क्या आप, किसी हवाई जहाज के पायलट के साथ व्यवहार करने में या उड़ने में प्रसन्न महसूस करेंगे, जिसने परीक्षा के प्रश्नों के ठीक उत्तरों को जानने और उससे थोड़ा सा और अधिक जानते हुए, नौकरी पाने की व्यवस्था की थी? वास्तव में, आप नहीं चाहेंगे।

आपको जानने से बचाकर रखा गया है कि आपके इस जीवन का कार्य क्या है, ताकि आप, अपने जीवन

के पूरे क्षेत्र में, अपना सर्वोत्तम कर सकें (और कम से कम ये आशा की जाती है कि आप ऐसा करेंगे।) आपके पास ये काम हो सकता है कि आपको बिल्लियों के प्रति दयालु होना है; ठीक है, यदि आप जानते कि आपको क्या करना था, तो आप बिल्लियों के प्रति, बीमारी की हद तक, अधिक दयालु हो सकते थे, इसलिये, वास्तव में, परंतु आप बिल्ली के विषय में, इतने अधिक लिप्त हो सकते थे कि आप शायद न चाहते हुए भी, और पूरी तरह से उनकी उपेक्षा करते हुए, कुत्तों और घोड़ों के प्रति पूरा रोष रखते। नहीं, श्रीमती प्रश्नकर्ता, ये दैवीय है कि मानव पृथ्वी पर अपने कार्य नहीं जानते। यदि वे ऐसा करते, तो ये उन्हें असंतुलित और एक तरफा बना देता।

परंतु ये विचार न पालें कि हर आदमी जो लिखता है, वह डम्मकाफ (dummkopf) या हड़बड़ाहट वाला (clutterhead) है। ऐसा कहना पूरी तरह से गलत होगा। मैं कुछ असाधारण भले लोगों से परिचित हो चुका हूँ। वेलेरिया सोरोक (Valeria Sorock), उनमें से एक है। जब हम आयरलैंड से (यहाँ) पहुँचे, वह मुझे बधाई देने वाली पहली थी, तबसे अबतक हम पक्के मित्र हैं, और वेरेलिया सोरोक के पास एक परम आश्चर्यजनक गुण है : वह पूरी तरह से और एकदम विश्वसनीय है। मैं बिलकुल भी गतिशील नहीं हूँ, और यदि कोई विशेष चीज होती है, जिसकी मुझे आवश्वयकता है, वास्तव में, हमेशा कोई चीज, जिसको प्राप्त करना अत्यंत कठिन है, तब वेलेरिया सोरोक वह है, जो उसको खोज लेती है। भौतिकरूप से हम (एक दूसरे से) काफी दूर रहते हैं, परंतु आत्मिकरूप से हम अत्यंत समीप हैं।

यहाँ मुझे वेलेरिया सोरोक का, उसकी अचूक स्थिरता के लिये, उसकी वफादारी के लिये, और अत्यधिक प्रयासों के लिये, जो वह, किसी भी कृपा को करने के लिये करती हैं, अभिवादन करने दें। वह किसी भी तरह से, कुल मिलाकर, कोई अत्यंत धनी औरत नहीं है, वास्तव में, उसे वह कमाने के लिये, जो वास्तव में, मात्र चबेना जैसा है, कड़ी मेहनत और अनेक मीलों की यात्रा करनी पड़ती है, फिर भी, वेलेरिया सोरोक, किसी चीज को करने में और मदद करने में, हमेशा अपने समय को बर्दाश्त कर सकती है। इसलिये वेलेरिया– मेरे आपको धन्यवाद, और उस मित्रता के लिये, जो आपने मुझे हमेशा दी है, बदले में मेरी अमर मित्रता।

काफी बड़ी संख्या में लोग हैं, जो निश्चितरूप से, अत्यंत निश्चित तौर पर, औसत से ऊपर हैं, और ये अत्यंत दुखी विचार है कि ऐसे लोग, अधिकांश समयों पर, इसप्रकार के विश्व के सामानों के साथ, बिल्कुल भी संपन्न नहीं होते। अधिकांश बार, ऐसे लोग, इतने शालीन और नरम होते है कि वे निश्चयपूर्वक, अपनी खुद की क्षमताओं को कम आंकते हैं। मैं अब दो अत्यंत प्रखर लोगों के बारे में सोच रहा हूँ, श्रीमान् और श्रीमती शेरमाक (Czermak)। वे अत्यंत कठिन समय में हैं, क्योंकि मेरी राय में वे 'अपने आपको बेचते' नहीं हैं।

श्रीमान शेरमाक एक आदमी हैं, जिनको जान कर हर आदमी गर्व महसूस करेगा, एक अच्छे प्रकार के आदमी, प्रथम श्रेणी के मस्तिष्क वाले एक आदमी और जो किसी चीज को, जो हमेशा मुझे हरा देती है, भव्य करते हैं –अंक! अंक जो जाते हैं 1 – 2 – 3 इत्यादि, उस प्रकार के नहीं, जिन पर कोई देखता है, यद्यपि मुझे कोई संदेह नहीं कि श्रीमान् शेरमाक, उन्हें देखने पर, मुझे संभवतः पीट देंगे।

तब श्रीमती शेरमाक, वास्तव में, यथार्थरूप में, अत्यंत, अत्यंत ईश्वरीय उपहार प्राप्त व्यक्ति (gifted person) हैं। उनमें सर्वाधिक असाधारण कलात्मक क्षमता है : चीनी मिट्टी का काम, फोटोग्राफी, कलात्मक क्षेत्र की कोई भी चीज, उन्हें बच्चों का खेल लगती है। यद्यपि वह अत्यधिक पूर्णतावादी होते हुए, अपनी खुद की प्रगति पर ब्रेक लगा देतीं हैं। इस विश्व में कोई पूर्णता नहीं प्राप्त कर सकता, और यदि कोई, पूर्ण पूर्णता के लिये अत्यधिक भूखा मरता है, तब वह अप्राप्य चीज पर अत्यधिक समय बर्बाद करता है।

शीघ्र ही, हम दो प्रश्नों के साथ व्यवहार कर रहें होंगे, एक श्रीमान शेरमाक का और एक श्रीमती शेरमाक का।

हाँ, लोग मुझे सभी प्रकार की अजीब समस्याओं के साथ लिखते हैं, और मैंने किसी एक व्यक्ति से, सबसे लंबा पत्र, कागज के नौ टुकड़ों पर लिखा हुआ, नौ इंच चौड़ा, तेरह फीट नौ इंच लंबा, प्राप्त किया है। ये कागज की पूरी एक लगातार शीट थी और पूरी चीज काफी पासपास टाइप की गई थी। इसलिये जैसा मैं कहता हूँ, ये सबसे लंबा पत्र है, जो मुझे मिला। आप इसके साथ क्या करेंगे? वैसा ही मैंने किया!

तब वास्तव में, वहाँ जॉन हेंडरसन (John Henderson) हैं। मैं उनके साथ एक या दो पत्रों के बाद, जो उन्होंने मुझे लिखे, परिचित हुआ। जॉन हेंडरसन एक भले आदमी हैं, अत्यधिक सक्षम, और वह अनेक 'स्थानों पर' जा रहे हैं, मेरी आशा है कि वह बाद में, अपने आध्यात्मिक पंखों को खोलने के लिये, और एक या दो पुस्तक लिखने के लिये, और ये कहते हुए कि अब उन्हें जाना चाहिए, आध्यात्मिक वापिसी प्रारंभ करने के लिये, और उसे

करने के लिये, जो कुछ दूसरे पक्ष के लोग कहते हैं, समर्थ होंगे।

हॉ, मैं कुछ अत्यंत सुंदर परिचय भी बनाता हूँ। कुछ लोग, जो लिखते हैं, उनकी अधिभौतिकी में हल्की सी भी अभिरुचि नहीं होती, परंतु इससे क्या फर्क पड़ता है, इससे क्या फर्क पड़ता है कि कोई अधिभौतिकी में रुचि रखता है, कि नहीं ? वास्तव में, श्रीमान् हंस शेरमाक के एक प्रश्न का उत्तर देना, एक अच्छा विचार हो सकता है। वह कहते हैं, 'हॉ, डॉक्टर रंपा, मेरे पास भी एक प्रश्न है। वह सबसे अधिक महत्वपूर्ण चीज क्या है, जिसको किसी व्यक्ति को करना चाहिए या वह किसी छिपी हुई गूढ़ क्षमता को विकसित करने के लिये कर सकता है, वह धारण कर सकता(ती) हो? मैं इसे इसलिये पूछ रहा हूँ क्योंकि मैं इन चीजों को प्रारंभ करते हुए कष्ट पाता दिखता हूँ, जिनका आप अपनी पुस्तकों में, स्पष्टरूप से वर्णन करते हैं, स्पष्टरूप से, मैं कुछ गलत कर रहा हूँ और मैं आश्चर्य कर रहा हूँ कि क्या किसी के मन या शरीर को तैयार करने का कोई रास्ता नहीं है।'

वास्तव में, ये यथार्थतः प्रभाव नहीं रखता कि आप जागरुक रूप से सूक्ष्मशरीरी यात्रायें करते है या नहीं, अर्थात् क्योंकि सोने के समय में, हर आदमी सूक्ष्मशरीरी यात्रायें करता है परंतु यदि आप, कुछ करने में कोई परेशानी पायें, तब, आप सुनिश्चित, वास्तव में सुनिश्चित हैं कि आप इसे करना चाहते हैं? क्या आप सुनिश्चित हैं कि हम कहें, पिछले जीवन की कुछ परेशानियों के द्वारा, कोई प्रतिबंध नहीं लगाया गया है ?

मानते हुए कि कोई व्यक्ति– ओह, वास्तव में, आप नहीं! – अपने पिछले जीवन में एक जादूगर रहे होंगे। मानते हुए कि आपको दांव पर लगा कर जलाया गया, या किसी समान रूप से दिलचस्प तरीके से उछाला गया था, तब यदि आप गूढ़विज्ञान में न्यूनाधिक दिलचस्पी के साथ इस जीवन में वापस आये, तो आपके पास कुछ गहरे डर हो सकते हैं, कि यदि आपने फिर से प्रारंभ किया तो आप दॉव पर या किसी रस्से के सिरे पर समाप्त होंगे, और इसप्रकार आपका अवचेतन रुकावटों पर ताली बजायेगा और आप कोई तरक्की नहीं करेंगे।

यदि कोई गूढ़विज्ञान के कार्य में व्यवस्थित होने में वास्तविक परेशानियॉ पाता है, तो केवल एक तरीका है, जिससे कोई आगे बढ़ सकता है :

समस्या पर ध्यान करें। क्या आप, सूक्ष्मशरीरी यात्रा या अतीन्द्रियज्ञान को करने या कार्ड्स को पढ़ने या उस क्षेत्र में कुछ भी करने की, यथार्थरूप में कर्त्तव्यनिष्ठा के साथ इच्छा रखते हैं ?

यदि आप करते हैं, यदि आप 'हॉ' कह सकते हैं, तब अपने आप से पूछें कि आप इसे क्यों करना चाहते हैं। आपको ये सारी समस्यायें पहले साफ कर देनी चाहिए।

अपने आप से पूछने की अगली चीज है, क्या आप डरते हैं कि आप इस शरीर से बाहर हो जायेंगे, और वापस आने में समर्थ नहीं होंगे, क्या आप डरे हुए हैं कि यदि आप शरीर के बाहर निकल गये तो कोई अजीब अस्तित्व आप पर हमला करेंगे ? यदि ऐसा है, तो ध्यान रखें कि यदि आप डरे हुए नहीं हैं, तो किसी भी प्रकार की कोई भी हानि नहीं हो सकती।

यदि आप सुनिश्चित हैं कि आप गूढ़ कार्य करना चाहते हैं, तब सबसे अच्छा तरीका है, इस सम्बंध में सोचने के लिये, हर दिन एक निश्चित समय, शाम को आधा घंटा भी, लगायें। और सबसे अच्छा तरीका है, जितनी प्रबलता से संभव हो सके, यह कल्पना करना कि आप वह कर रहे हैं, जिसे आप करना चाहते हैं, क्योंकि जब आप अपने अवचेतन को यह पहुँचा देते हैं, कि आप बाहर, सूक्ष्मलोक में निकालना चाहते हैं, अलंकारिक रूप से, वह दरवाजों को खोल देगा, और आपको मुक्त छोड़ देगा। अवचेतन को एक प्रकार के मूर्ख की भांति सोचें, यदि आप चाहें, एक उच्च श्रेणी का मूर्ख, जो हमेशा आदेशों का शब्दशः पालन करता है। ताकि, यदि भूतकाल में किसी समय, आपने कहा था, ''जी! पेटे के नाम पर, मुझे शरीर के बाहर मत निकलने दो! तब अवचेतन उस आज्ञा का पालन करेगा, जबतक कि आप, उसके एक–मार्गीय (one-track) विचारों पर, उस पर कब्जा न कर लें, और पुरानी आज्ञा को किसी भी दूसरे के द्वारा विस्थापित न कर दें।

परंतु ध्यान रखें कि यदि आप सोचते हैं कि आप प्रगति नहीं कर रहे हैं, आप निश्चितरूप से उतने ही समय तक हैं, जबतक आप चीजों के प्रति सजग हैं। और आपके लिये मेरी प्रबल सलाह है कि यदि आप बाधायें या कठिनाइयॉ अनुभव कर रहे हैं, तब परेशान न हों, तबतक प्रतीक्षा करें जबतक कि चीजें अपने आप व्यवस्थित न हो जायें।

वर्षों पहले, जब मैं मोर्स (morse)[9] पढ़ रहा था, मुझे 'कूबड़ (the hump)' के बारे में चेतावनी दी गई थी।

9 अनुवादक की टिप्पिणी : जब बेतार प्रणाली का आविष्कार हुआ, आवश्यक संदेश तार से भेजे जाते थे, जिन्हें कूट भाषा (morse code) जो टेपिंग कुंजी के दीर्घ (dash) या लघु (dot) सम्पर्कों से बनती थी, में लिखा जाता था।

ठीक है, इस रहस्यमय हंप ने मुझे, जबतक कि मैं पच्चीस शब्द प्रतिमिनट की गति तक नहीं पहुॅचा, परेशान किया, और कोई बात नहीं, मैंने कितना भी अधिक प्रयास किया, कोई बात नहीं, मैंने कितने घंटों का अभ्यास उसमें डाला, मैं उस हंप के बाहर नहीं निकल सका। ये मेरी तेज मोर्स की ओर प्रगति के मार्ग में, भेजने और प्राप्त करने की गति में पहाड़ सिद्ध हुआ।

एक दिन मैंने कुछ वास्तविक उपद्रवी शब्दों का, जोश के साथ उच्चारण किया। प्रभावीरूप से मैंने कहा, 'ओह ठीक है, यदि मैं और अधिक तेज नहीं जा सकता, मैं जा ही नहीं सकता।' बाद में, दिन में, मैं फिर से पुरानी मोर्स कुजीं पर बैठा और पाया कि मैं अत्यधिक तेज जा सकता हूॅ, वास्तव में, मैं लगभग तीस शब्द प्रति मिनट कर सकता था। मैंने 'हंप' पर पार पा ली थी, मैं अत्यधिक मेहनत से प्रयास करता रहा था, और मैं सोचता हूॅ कि आप शायद, अत्यधिक कठोर प्रयास कर रहे हैं, श्रीमान् शेरमाक, और आप, और आप, और आप, भी अत्यधिक कठोर प्रयास कर रहे हैं। यदि आप को बाधाऐं मिल रही हैं तो आप बुलडोजर की भांति न चलें, इसे हल्के से लें, चीजों के बारे में सोचें और आप पायेंगे कि न्यूनतम प्रतिरोध का मार्ग, आपको उस हंप से जूझने के योग्य बना चुका है, और आप परिणाम पर आश्चर्यचकित होंगे।

मैं सोचता हूॅ कि घरेलू सामंजस्य के हित में, मुझे श्रीमती शेरमाक के प्रश्न का उत्तर, उसी अध्याय में, जिसमें मैंने उसके पति के प्रश्न का उत्तर दिया था, देना चाहिए, अन्यथा मुझ पर पति–पत्नी को अलग करने का या कुछ वैसा ही, आरोप लग सकता है।

यहॉ वह है, जो श्रीमती शेरमाक लिखती हैं, एक प्रश्न; ठीक है, जबतक उन्हें रखना बहुत अत्यधिक विलंब से न हो, मैं जानती हूॅ, मैं उनसे पूरी तरह भरी रहूॅगी। ठीक अभी, केवल एक समस्या है जो कि अभी भी, अत्यधिक रूप से मेरे साथ है, और हो सकता है दूसरे लोगों को भी इससे लाभ मिले, यदि आप इस शीर्षक पर कुछ शब्द कहने की कृपा करें। ये समय है, या फिर समय की कमी। दिन में अनेक घंटे होते हैं और वे सभी चीजों को, जिन्हें मैं करना चाहती हूॅ, करने के लिये पर्याप्त ही नहीं होते। निश्चितरूप से, मैं काम से जी नहीं चुराती, परंतु जो सबसे अधिक कुंठित करने वाला है, वह है न केवल, कमोवेश सभी सांसरिक चीजों के लिये, जिन्हें कोई करना चाहता है, पर्याप्त समय है, वल्कि आध्यात्मिक चीजों के लिये, जिन्हें कोई सीखना चाहता है, कभी भी पर्याप्त बचा हुआ नहीं दिखता। यदि ये ध्यान (meditation) है, तो शनिवार को या रविवार को, एक घंटा लेट सोने के बजाय, मैं अतिरिक्त जल्दी उठने के लिये, पर्याप्त ऊर्जा रखती हुई नहीं दिखती, और यदि ये सूक्ष्मशरीरी यात्रा है, तो जैसे ही मैं तकिये पर सिर रखती हूॅ, नींद में गिरती हुई दिखती हूॅ।'

व्यापारिक प्रतिष्ठान, कारखाने और अत्यंत बड़े कार्यालय सभी के पास यही समस्या है, अर्थात् वे अक्सर उन विशेषज्ञों को क्यों बुलाते हैं, जो अपने आपको 'समय और गति (Time and Motion)' वाले लोग कहते हैं। हर किसी के पास तीन या चार गुना समय होता है, जैसा कि वे सोचते हैं, उनके पास है, परंतु सामान्यतः लोग, अधिकतर उसी तरीके से समय बरबाद करते हैं, जैसे कि लोग पानी को बरबाद करते हैं, और इसप्रकार अब पूरे विश्व में पानी की, अर्थात् पीने वाले पानी की कमी है।

समय और गति के विशेषज्ञ अध्ययन करते हैं कि लोग चीजों को कैसे करते हैं। मात्र उदाहरणस्वरूप, यदि आप रसोईघर में जायें, तो आप अपने साथ, एक समय में कितनी चीजों को वापस लायेंगे? क्या आप एक या दो चीजों को अपने साथ वापस लायेंगे, जब कि आप पूरी तरह से, अच्छी तरह से जानते हैं कि ठीक बाद में आपको दो या तीन और चीजों के लिए फिर वापस जाना पड़ेगा ? यदि लोग चीजों का, जो उन्हें करनी हैं, एक प्रखर अंदाज लगायें, तब उनके पास इसे करने के लिए पर्याप्त समय होगा।

आगे बढ़ने का सबसे अच्छा तरीका है, सभी चीजों को, जिन्हें आप किसी एक दिए गए दिन में करना चाहते हैं, एक कागज पर लिख लेना। उन चीजों को छोड़ दें, जो वास्तव में आवश्यक नहीं हैं, और शेष चीजों की योजना बनायें ताकि आप उनके सम्बंध में सबसे छोटे तरीके से जायें और उनके लिए आपको दो या तीन यात्रायें न करनी पड़ें, जबकि एक ही पर्याप्त होती। कुछ लोगों को खरीददारी करनी होती है, इसलिए वे बाहर कौने की किसी दुकान पर भागते हैं, और एक चीज ले लेते हैं, तब वे रसोईघर की ओर वापस आते हैं और उन्हें पता चलता है कि उनके पास नमक या चीनी या किसी दूसरी चीज की तंगी है, इसलिए वे फिर से वापस जाते हैं। वे हमेशा आसपास दौड़ते ही रहते हैं।

दूसरों के पास, शायद, डाक में डालने को कुछ पत्र हैं, और वे उन पत्रों को डालने के लिए, एक विशेष यात्रा करते हैं, जबकि उन्होंने यदि थोड़े समय के लिए प्रतीक्षा की होती, वे पत्रों को तब डाक में डाल

सकते थे, जब वे खरीददारी के लिए गए।

कोई अपने दिन को ठीक उसी तरीके से विभाजित कर सकता है, जैसे कि स्कूल के पाठों को विभाजित किया गया था –इतना भूगोल के लिए, इतना इतिहास के लिए, इतना गणित के लिए, इतना मनोरंजन के लिए और इतना खाने के लिए। यदि लोग, इन कामों को केवल एक समझदारी के ढंग से प्रारंभ करें, उनके पास दूसरे काम करने के लिए पर्याप्त समय होगा।

श्रीमती शेरमार्क के मामले में, उनके पास एक उच्च प्रतिभा वाला पति है, जो उन्हें उनके दिन की योजना बनाने में, प्रसन्नतापूर्वक सहायता देगा। एक कार्य, जिसको सफलतापूर्वक हाथ में लेने में, वह पूरी तरह से उपयुक्त है।

इसलिए उत्तर है, यदि लोग अपने दिनों को ठीक तरीके से योजना बनायें और उस योजना पर टिकें, तो हर चीज के लिए पर्याप्त समय होगा। ये अनुभव की आवाज है क्योंकि, जो मैं बताता हूँ, मैं –सफलतापूर्वक ढंग से! उसीका अभ्यास करता हूँ।

अध्याय – आठ

यदि आप पहाड़ पर नहीं चढ़े तो आप घाटी को नहीं देख सकते।

अपने बिस्तर में आराम करता हुआ बूढ़ा आदमी, शहर के पार, कुछ नई बन रही इमारतों और एक बहुत बड़े होटल, पूरे शहर के अग्रणी होटल को देखते हुए, बाहर की ओर देख रहा था।

कुमारी क्लियो और कुमारी टेडी सोने में व्यस्त थीं। उन्होंने एक परेशान रात पायी थी, क्योंकि बूढ़ा आदमी बहुत बीमार रहा था और, वास्तव में, जब बूढ़ा आदमी विशेष रूप से बीमार है, निश्चय ही, दो सियामी बिल्लियों को चीजों की व्यवस्था करने में परेशानी हुई। इसलिए थोड़ा सा फड़कते हुए, परंतु एक दूसरे के पास होने के कारण खुश होते हुए, नींद में घूमते हुए, वे अपनी नींद को पूरा कर रही थीं, जैसा कि सभी सबसे अच्छे लोग करते हैं। बूढ़े आदमी ने परमपूर्ण प्रेम के साथ उनके बारे में सोचा, उनके सम्बंध में सोचा, जैसे कि उसने अपने खुद के बच्चों के लिए सोचा होता, क्योंकि पशुओं की शक्ल में, ये बहुत ऊँचे अस्तित्व थे, नन्हें लोग, जो एक काम के लिए आए थे, और जो उस काम को भव्य तरीके से कर रहे थे।

अपने चार संक्षिप्त वर्षों के जीवनकाल में, उन्होंने आसपास काफी कुछ गति, काफी कुछ यात्रा, और काफी कुछ कठिनाइयॉं, और मुख्यरूप से प्रेस की अनवरत प्रताड़नाओं द्वारा उनके ऊपर लाई गईं कठिनाइयॉं पायीं। बूढ़ा आदमी, मंद प्रकाश में इस सब के सम्बंध में सोचते हुए, मोन्ट्रियल की परिस्थितियों को सोचते हुए, और उन्होंने अपनी किरायेदारी खत्म होने से पहले कैसे छोड़ा था, वहॉं लेटा था।

उन्होंने निवास के लिए सेंटजोन के शहर में व्यवस्थायें की थीं परंतु जब किसी चीज को बदलना अत्यधिक विलंब से था, व्यक्ति ने अभी भी विशाल फ्लैट (apartment) में पाया कि वह उसे छोड़ने में असमर्थ था, इसलिए परिवार के पास, किसी होटल में अधिक खर्चीले तरीके से रुकने के अलावा कोई विकल्प नहीं था; एडमिरल बीटी होटल (Admiral Beatty Hotel), सत्य ही, जैसा कि कोई होटल हो सकता था, घर जैसा था। यह एक सुखद होटल था और है, जहॉं हर कोई महाप्रबंधक, बरसों–बरसों के अनुभव वाला एक आदमी, एक आदमी, जो सभी समस्याओं को जानता है, और उनके उत्तरों को और भी अच्छे तरीके से जानता है, से संतुष्ट है।

होटल में घण्टी बजाने वाले लड़कों में से एक, ब्रियान (Brian), हमेशा सबसे अधिक मददगार और सबसे अधिक सौहार्दपूर्ण तथा बिल्लियों का प्रेमी होने के कारण, वह वास्तव में, कुमारी क्लियो और कुमारी टेडी पर मर मिटा, और उस जोड़े ने, अधिकांश लड़कियों की सरसरी तौर पर सोचने की तरह से, वास्तव में, उसे अच्छा खिलाया, उस पर दुलार किया, उसके विरुद्ध रगड़ा और अधिकांश लड़कियों की भांति, उसे ये सोचने के लिए प्रेरित किया कि अकेला **वही** था।

श्रीमती कैथरीन मेयेस (Mrs. Catherine Mayes)। बूढ़े आदमी को खाने के सम्बंध में काफी परेशानियॉं थीं और होटल की भोजन–सूची (menu) उन लोगों के लिए नहीं बनायी जाती, जो बीमार होते हैं, और कुछ निश्चित खानों तक ही सीमित होते हैं। श्रीमती कैथरीन, हर बार यह निश्चित करने के लिए कि हर चीज, उतनी अच्छी थी, जितनी कि हो सकती थी, लीक से हटकर, भोजनशाला में गईं। अब, जबकि परिवार एक अपार्टमेंट में था, फिर भी, वे श्रीमती मेयेस का आगंतुक के रूप में स्वागत करते थे।

परंतु बन्दरगाह में रोशनियॉं अधिक, और अधिक, संख्या में बढ़ती जा रही थीं। अगले कार्यकारी दिन पर अपने कार्गों को उतारने के लिए तैयार जलयान, आते जा रहे थे। दो रूसी जहाज, एक दूसरा लाइबेरिया से, एक इंडिया से, और एक साइप्रस से, सभी नीचे, अपनी प्लिमसोल लाइन (Plimsoll line)[10] से काफी नीचे तक लदे हुए, और ज्वार के आने के समय पर एक नरम सा हलका सा हिलते हुए, सभी ने गोदी के साथ–साथ लंगर डाले।

आगे चलने वाली नाव (pilot boat) एक नए आने वाले जहाज से दूर जाती जा रही थी, उसका लाल सिग्नल लैम्प जलबुझ रहा था और कांप रहा था। शीघ्र ही वह दांई ओर मुड़ गई, और एक फिसलन वाले रास्ते

10 अनुवादक की टिप्पिणी : प्लिमसोल लाइन (Plimsoll line) जहाज के ऊपर बनाई गई वह रेखा होती है, जहॉं तक जहाज को समुद्र में डुबाया जा सकता है, ताकि जहाज डूबे या पलटे नहीं। यह रेखा, नमक तथा दूसरे लवणों की सांद्रता, और पानी के ताप के कारण, समुद्र के पानी के घनत्व के अनुसार बदलती है। यह्ॉं प्लिमसोल लाइन से नीचे होने का मतलब है, कि वे अधिभारित (overloaded) थे।

पर चली गई, ताकि पायलट अगले जहाज के लिए प्रतीक्षा कर सकें।

सड़क पार क्रासिंग (level crossing) के नीचे, नारकीय रेलें आवाज कर रही थीं और ऐसी हलचल पैदा करते हुए गूंज रही थीं, जो किसी भी व्यक्ति की पीठ को, शांति भंग करने के लिए, सीधे जेल में थपथपा सकती है, फिर भी, इन अनुल्लेखनीय रेलों के कागगार ये सोचते हुए दिखाई दिए, कि पूरे शहर के सुनने की शक्ति को तोड़ देना, उनका अबाध राज्याधिकार और उनका पवित्र कर्तव्य था। बूढ़े आदमी ने आश्चर्य किया कि शहर की परिषद, इनकी ओर क्यों नहीं ध्यान देती और शहर में होकर गुजरती हुई ट्रेनों के भौंपुओं को बजाने से मनाही वाले दीर्घावधि सुरक्षित नियम, क्यों नहीं पारित करती।

परंतु बूढ़े आदमी ने सोचा, कि निरर्थक टकटकी लगाना बेकार है, जबकि पुस्तक लिखी जानी है, इसलिए उसने सोचा कि उसे वह करना पड़ेगा, जो कि शहर की परिषद को करना चाहिए था। उसने सोचा कि उसे 'अपने पीछे से बचना पड़ेगा' और काम पर लग गया।

सभी प्रश्नों से होकर गुजरते हुए, सबसे अधिक अद्‌भुत चीजों में से एक है, लोगों की संख्या, जो लिखती है, 'मृत्यु के बाद, जीवन के सम्बंध में, और मृत्यु के सम्बंध में हमें बतायें।' मैं, उस विषय पर, जिस पर मैं पहले से ही कई बार चर्चा कर चुका हूँ, फिर से लौटते हुए, लगभग शर्मिन्दा हूँ, मैं आपको यह बताने के लिए कि मैं फिर से मृत्यु के सम्बंध में लिख रहा हूँ, और मैं यह सोचने के लिए कि बटरकप की पथराई हुई निगाहें, जब वे मुझे बताती हैं कि मैं अपने आपको दोहरा रहा हूँ, लगभग डरा हुआ हूँ, लगभग शर्मिन्दा हूँ। परंतु तब कुमारी न्यूमेन (Miss Newman) और शायद ये श्रीमती न्यूमेन (Mrs. Newman) हैं, जो मृत्यु के बाद जीवन के बारे में पूछती हैं और यहाँ एक दूसरा पत्र, 'तथाकथित मृत्यु के बाद की अवस्था का पूरे, परंतु समझ में आने योग्य ज्ञान' को जानना चाहता है। इन प्रश्नों में से पुनः भरते हुए, मैं अधिक, और अधिक, लोगों को, मृत्यु के बाद जीवन के सम्बंध में पूछते हुए पाता हूँ। ठीक है, मैं खारिज किया हुआ सा लगता हूँ, ऐसा लगता है कि मुझे, मृत्यु के बाद जीवन के सम्बंध में लिखना पड़ेगा, और यदि आप इसे नहीं पढ़ना चाहते, तब, जबतक कि आप उसे हिस्से पर न आ जायें, जिसे आप पसंद करते हैं, इन पेजों में से होकर अपनी बन्द आँखों के साथ गुजरें।

हम विचार करें कि मृत्यु के आक्रमण करते समय क्या होता है। सामान्यतः कोई व्यक्ति बीमार है, और उस बीमारी के परिणामस्वरूप, शरीर का कोई भाग, इस पृथ्वी पर जीवन को जारी रखने के लिए आवश्यक, ठीक तरह से काम करने की अपनी क्षमता खो रहा है। हम मान लें कि यहाँ हम जिसकी चर्चा कर रहे हैं, वह दिल का प्रकरण है, अतः ये दिल हो सकता है। इसलिए, दिल के अपने मामले में हम कह सकते हैं कि दिल की मांसपेशियाँ, एक तंतुमय रेशेदार पिण्ड के रूप में बदल चुकी हैं, ये खून को पर्याप्त मात्रा में, मस्तिष्क तक, और अधिक, पंप नहीं कर सकता, और इसलिए आंतरिक शक्तियाँ मंद होती जाती हैं। जैसे जैसे आंतरिक शक्तियाँ मंद होती हैं, जीवित रहने की इच्छा घटती है, और दिल को परिश्रमपूर्वक पंपिंग के अपने काम को जारी रखने की प्रेरणा कम होती जाती है।

तब एक समय आता है, जब दिल और अधिक समय तक जारी नहीं रख सकता। उस स्थिति तक पहुँचने से पहले, व्यक्ति एक अवस्था में होता है, जहाँ उसके पास, दर्द को अनुभव करने के लिए कोई ऊर्जा नहीं होती, वह आधा इस विश्व में होता है, और आधा अगले विश्व में होता है, वह एक बच्चे की हालत में होता है, जो आधा संसार, जो उसकी मां है, के बाहर है और आधा उस विश्व में है, जिसे हम पृथ्वी कहते हैं। मृत्यु के सहायक, दूसरी तरफ तैयार रहते हैं। जैसे ही दिल काम करना बंद करता है, एक झटका लगता है; नहीं, नहीं, नहीं ये कष्ट का झटका नहीं है, मृत्यु का कोई कष्ट नहीं होता, ये एकदम मूर्खतापूर्ण कल्पना है। तथाकथित 'मृत्यु का कष्ट,' नाड़ियों की और मांसपेशियों की एक अनैच्छिक क्रिया मात्र है, जो शरीर के ड्रायवर के नियंत्रण से स्वतंत्र होने पर, केवल मरोड़ी और ऐंठी जाती हैं और– ठीक है, जैसा कि नाम सुझाता है, अनियंत्रित रूप से झटका देती हैं। अनेक लोग सोचते हैं कि ये कष्ट है, परंतु वास्तव में ऐसा नहीं है, क्योंकि शरीर का काबिज (मालिक) उसे छोड़ चुका है, और क्या मुंह का ऐंठना, जो केवल मांसपेशियों की ऐंठन मात्र है, होना चाहिए।–171

अपने मालिक के पीछे पागल शरीर, थोड़े समय के लिए हॉफ सकता है या पूरी तरह से धक से कांप सकता है। शरीर के अंदर, अंगों की गड़गड़ाहट हो सकती है, परंतु ये सब, ठीक कपड़े के एक पुराने सूट को, जब उसे किसी कुर्सी पर या किसी पलंग पर नीचे फैंका जाता है, नीचे गिरने की तरह से होता है। अब उसके लिए कुछ नहीं है, शरीर अब, जलाने जाने या गाड़े जाने के लिए तैयार केवल कबाड़ा है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वास्तविक क्या है।

सबसे नया काबिज, या सूक्ष्मलोक का निवासी, या शरीर का पुराना चलाने वाला, पर्यावरण के अनुकूल बनाने की प्रक्रिया में सहायता करने के लिये, कुछ भी, जो वे कर सकते हैं, करने को तैयार सहायकों के द्वारा मिला जायेगा। दुर्भाग्यवश, कई बार ये होता है कि एक वास्तविक अनजान व्यक्ति, मृत्यु के बाद जीवन में, विश्वास नहीं करेगा, इसलिए तब क्या ?

यदि कोई व्यक्ति, मृत्यु के बाद जीवन में विश्वास करने के लिए, निश्चितरूप से मना कर देता है, तो वह पूरे सम्मोहन, आत्मसम्मोहन की अवस्था में होता (ती) है, और पृथ्वी पर भी, केवल इस कारण से कि वे सोचते हैं कि वे अंधे हैं, लोगों के अंधे होने के अनेक प्रकरण हैं। लोगों के, जो केवल इस कारण से बहरे हैं, क्योंकि उन्होंने पत्नी के चिड़चिड़े शोर के कारण, शायद, अपने आप से भागने के लिए, बहरे होने की ऐसी इच्छा की थी, अनेक प्रकरण हैं, और ऐसे प्रकरण, चिकित्सा के लोगों के द्वारा प्रमाणित किए गए हैं।

यदि कोई व्यक्ति, मृत्यु के बाद किसी चीज में विश्वास नहीं करेगा, तब वह व्यक्ति एक मोटे, काले, चिपचिपे कुहासे में घेरा जाता है, और सहायक उसकी मदद नहीं कर सकते, वे उस तक नहीं पहुँच सकते क्योंकि, वह उन्हें पहुँचने नहीं देगा, वह उस हर चीज को, जिसे वे उसके लिए करना चाहते हैं, दूर हटाता है, क्योंकि वह, जीवन के बाद जैसी कोई चीज नहीं है, के विचार से इतनी अच्छी तरह सहमत बनाया गया है कि वह विश्वास करता है कि वह कुछ असुखद दुस्वप्न देख रहा है।

इस समयावधि में व्यक्ति अनुभव करना प्रारंभ करता है कि इस मृत्यु के बाद जीवन के इस कार्य में, कुल मिलाकर, कुछ होना चाहिए; वह आवाजों को क्यों सुनता है, वह लोगों को अपने पास क्यों महसूस करता है, वह शायद संगीत को क्यों सुनता है ? डूबती हुई चेतना, कि संभवतः मृत्यु के बाद कुछ चीज हो भी सकती है, के साथ मोटा, काला कुहासा हलका होता है, और भूरा बन जाता है, प्रकाश छनकर अंदर आ सकता है, वह आसपास चलती हुई धुंधली आकृतियों को देख सकता है, और वह अधिक स्पष्टता के साथ सुन सकता है। इसलिए, धीमे–धीमे, जैसे ही उसके पूर्वाग्रह और आग्रह टूटते हैं, वह अधिक, और अधिक, सजग होता जाता है कि उसके आसपास कुछ चीज घटित हो रही है। लोग लगातार उसे मदद करने का प्रयास करते हैं, वे उसे बताने का प्रयास करते हैं कि वे मदद करना चाहते हैं, वे उसे, उस मदद को उसे स्वीकार करने के लिए आमंत्रित करते हैं और जैसे ही वह अनुभव करता है कि वह मदद को स्वीकार करेगा, तब कुहांसा छंट जाता है और वह सूक्ष्मलोक की पूरी भव्यता, रंगों को, जिनमें पृथ्वी पिछड़ी रहती है, तीव्रता और प्रकाश, और आसपड़ौस के अत्यंत–अत्यंत सुखद वातावरण को देख सकता है।

हमारा बेचारा मित्र, जिसने, अनुभव करना कि मृत्यु के बाद जीवन है, केवल प्रारंभ ही किया है, उस तरफ जिसे हम एक अस्पताल, या आरामगृह या स्वास्थ्यलाभ केन्द्र, कह सकते हैं, ले जाया जाता है। वहॉ विभिन्न किरणों के द्वारा उसके मानसिक अवरोध फिर से, आगे तक छितरा दिये जाते हैं, उसके आत्मा–शरीर को मजबूत किया जाता है, और स्वस्थ बनाया जाता है, और उसका पोषण भी किया जाता है।

उसे चीजें उसे समझाई जाती हैं, वह बहुत कुछ हद तक, उसी अवस्था में होता है, जिसमें कि अभी पैदा हुआ एक नया बच्चा, सिवाय इसके कि वह उस सबको, जो उसे कहा जा रहा है, समझता है और वह उसका उत्तर दे सकता है, जबकि बच्चे को बोलना तक भी सीखना होता है। इसलिए व्यक्ति, उसका कि दूसरी ओर का जीवन कैसा है, एक स्पष्टीकरण सुनता है। यदि वह इस सम्बंध में बहस करना चाहता है, तो वह कर ही नहीं सकता, लोग उसके साथ तर्क नहीं करेंगे। उसे, जो उसे बताया गया है, केवल उस सम्बंध में सोचने के लिए छोड़ दिया जाता है, और तब वह उसे, जो उसे बताया गया है, मुक्तरूप से स्वीकार कर सकता है, व्याख्याऐं चलती रहती हैं। उसे किसी भी चीज के लिए सहमत नहीं कराया जाता, उसे किसी भी काम को करने के लिए मजबूर नहीं किया जाता, उसके पास चुनाव का अधिकार है। यदि वह विश्वास नहीं करना चाहता, तब, जबतक कि वह विश्वास करना प्रारंभ न करे, उसे कुछ हद तक एक स्थायी (steady) अवस्था में, रुकना पड़ता है।

ऐसे अनेक हैं, जो इस पक्के, परम अटूट विश्वास के साथ कि, उनका खुद का विशिष्ट धर्म ही एक मात्र धर्म है, जो अस्तित्व में बना रह सकता है, पृथ्वी के परे, अगले जीवन में चले जाते हैं। बेचारे अभागे ये, बहुत कुछ हद तक उसी स्थिति में (रहते) हैं, क्योंकि दूसरी तरफ के सहायक बहुत अच्छी तरह से जानते हैं कि, यदि केवल उनका दिखना मात्र, उनके जीवन भर के विश्वास को पूरी तरह से बंद कर देता है, तो वे नवागंतुक की मदद नहीं कर सकते। इसलिए, हम मान लें कि कोई बड़ा पक्का कैथोलिक व्यक्ति, देवदूतों (angels), शैतानों (devils) में तथा उस स्वांग (pantomime) के बाकी सभी में, विश्वास रखने वाला है। तब, जब वे दूसरी तरफ को

जाते हैं, वे वास्तव में, मोतियों वाले दरवाजों (pearl gates) को देखते हैं, वे एक बेहद बड़े बहीखाते, जिसमें वे सोचते हैं कि सभी पाप लिखे जा रहे हैं, के साथ एक दाढ़ी वाले पुराने मित्र को देखते हैं।

प्रदर्शन की भांति दिखने के लिये, जिसे भला, अनजान कैथोलिक देखना चाहता है,, हर चीज की जाती है। वह फड़फड़ाते पंखों वाले देवदूतों को देखता है, वह बादलों पर बैठ कर वीणा बजाते हुए लोगों को देखता है, और ये सोचते हुए कि वह स्वर्ग में पहुॅच गया है, थोड़े समय के लिए, पूरी तरह संतुष्ट हो जाता है। परंतु धीमे–धीमे, उसको यह स्पष्ट हो जाता है कि ये सभी सत्य प्रतीत नहीं होता, लोग, अपने पंखों को फड़फड़ाने के लिए ठीक लय–ताल में नहीं उड़ते इत्यादि–इत्यादि। धीमे–धीमे नवागंतुक को ये स्पष्ट होता जाता है कि ये सब, मंच का एक प्रदर्शन है, और वह आश्चर्य करना प्रारंभ कर देता है, कि इस सब के पीछे क्या है, पर्दों और सेट के पीछे क्या है, चीजें वास्तव में किस जैसी हैं, और जैसे ही, जितनी जल्दी, वह उस तरह से सोचना प्रारंभ करता है, वह स्वर्गिक भीड़ के मुखौटे में 'दरारों' को देखने लगता है। शीघ्र ही, एक समय आता है, जब वह इस स्वांग के साथ, और अधिक नहीं रुक सकता और वह आत्मज्ञान प्राप्त करने के लिए चीखता है। शीघ्र ही, अपने फड़फड़ाते हुए पंखों वाले देवदूत, मंद पड़ जाते हैं, शीघ्र ही, अपनी रात्रि–कमीजों (nighhtshirts) में बादल के ऊपर, बैठ कर वीणा बजाने वाले, उसे तोड़ देते हैं। उच्च प्रशिक्षित, उच्च अनुभव वाले सहायक, शीघ्र ही, नए जगे हुए नवागंतुक को माया की बजाय, यथार्थ दिखाते हैं, और माया की तुलना में, यथार्थ हमेशा ही काफी बड़ा होता है। ये दुखमय तथ्य है कि अनेक लोग, बाइबल में कुछ थोड़े से चित्र देखते हैं, और वे 'उसे शुभ संदेश (gospel), समझ लेते हैं। ठीक है, ध्यान रखें, बाइबल को समझाने के लिए, पुस्तकों के चित्रकार भी काम में लगाए जाते हैं।

कोई बात नहीं, धर्म कोई भी हो, यदि (उसके ऐसे) अनुयायी हैं, जो जनश्रुतियों, और हम कहें, उस धर्म की कल्पनाओं में अटल विश्वास करते हैं, तब ये वह है, जिसे वे तब देखते हैं, जब वे पृथ्वी को छोड़ते हैं और सूक्ष्मतल में प्रवेश करते हैं।

जब नवागंतुक, संसार, जिसमें वह है, की प्रकृति को महसूस कर सकता है, तब आगे जा सकता है। वह स्मृतियों के हाल की तरफ जाता है और वहॉ वह, अकेला ही, एक कमरे में प्रवेश करता है और वह अपने पूरे जीवन, हर चीज, जो उसने की, हर चीज, जिसका उसने करने का प्रयास किया, और हर चीज, जिसे उसने करना चाहा था, को देखता है। वह हर चीज, जो उसके साथ हुई, और हर चीज, जो उसने इस पृथ्वी पर रहते हुए सोची थी, को देखता है, और वह, अकेला, निर्णय कर सकता है कि क्या उसका जीवन सफल था या असफल।

वह, वह अकेला ही, तय कर सकता है कि क्या वह 'कॉलेज को वापस जाएगा,' और इस आशा में कि अगली बार में वह उसे सफलतापूर्वक उत्तीर्ण कर लेगा, फिर से अपने पाठ्यक्रम की नई शुरूआत करेगा।

वहॉ कोई मां या पिता या सबसे अच्छा मित्र, पास में खड़ा होने वाला, और किसी भी चीज का दोष अपने ऊपर लेने वाला, कि गलती उसने की है, नहीं है। वहॉ वह अकेला होता है, पूरी तरह से अकेला, उससे भी अधिक अकेला, जो वह तबसे रहा है, जबसे कि वह वहॉ, इससे पहले, पिछली बार उस स्थान में खड़ा रहा था। और वह स्वयं के सम्बंध में निर्णय करता है।

अपनी पूंछ को फड़काते हुए, और चुभती हुई सांस वाला कोई राक्षस, कोई शैतान, इंतजार नहीं कर रहा, कोई उस पर कांटेदार चीज से प्रहार करने के लिए नहीं जा रहा, और जैसा कि सभी ज्वालाओं के लिए है, ठीक है, वे ऐसी चीजों को केन्द्रीय उष्मीकरण (central heating) के लिए भी उपयोग में नहीं लेते!

अधिकांश लोग, स्मृतियों के हाल से, काफी हद तक कांपते हुए और सहायता और संवेदना, जो उनके सहायकों ने, बाहर बैठे हुए लोगों ने, उन्हें प्रसारित की थीं, से उल्लेखनीय रूप से प्रसन्न होते हुये उबरते हैं।

समंजन की एक अवधि आती है, एक अवधि, जिसमें नवागंतुक, उस सबके ऊपर, जो उसने देखा, सोच सकता है, उन गलतियों के ऊपर, जो उसने कीं, सोच सकता है, उस सबके ऊपर, जो वह अब करने जा रहा है, सोच सकता है। ये कुछ मिनटों में तय की जाने वाली चीज नहीं है, सभी प्रकार की चीजें ध्यान में रखनी पड़ती हैं। वापस जाना और फिर से नई शुरूआत करना अच्छा है, या क्या शायद, सूक्ष्मलोक में कुछ सौ सालों के लिए ठहरना, आगामी अधिक उचित अवस्थाओं के लिए प्रतीक्षा करना, अच्छा होगा ? परंतु तब नवागंतुक सोचता है, वह सभी लाभप्रद परिस्थितियों या वे कब आने की संभावनायें हैं, इस के बारे में, नहीं जानता। इसलिए उसे सहायकों के पास जाने के लिए आमंत्रित किया जाता है जो उसे, उस पर बिना किसी भी प्रकार का कोई भी दबाव डाले, सलाह देंगे। सभी समयों में, उसके पास चुनाव की पूरी स्वतंत्रता होती है, निर्णय की स्वतंत्रता, कोई भी उसे कुछ

चीज करने के लिए मजबूर नहीं करता। यदि वह वापस जाना चाहता है, और पृथ्वी पर थोड़ी सी तलाश करना चाहता है, ये उसकी पसंद, और केवल उसकी ही पसंद है।

कई नवागंतुक इतने सजग नहीं होते कि वे सभी सहारों, हवा से, उसके आसपास के कंपनों से, सभी पोषणों को जिनकी उन्हें आवश्यकता है, को पकड़ सकें। वे अपने पृथ्वी के जीवन के सम्बंध में सोचते हैं, वे सभी प्रकार के चुनिंदा खानों, जो उन्होंने खाना पसंद किए होते, परंतु शायद (उनका) खर्च बर्दाश्त नहीं कर पाए, की सोचते हैं। इसीलिए, यदि वे उसे चाहते हैं, वे उसे पा सकते हैं। कोई बात नहीं, किसी प्रकार का खाना क्यों न हो, ये उनके कहते ही हाजिर होता है। यदि वे मोटी सिगार या पतली सिगरेट या बदबूदार हुक्का चाहते हैं, हॉ वे उन को भी प्राप्त कर सकते हैं। कपड़े–आप कपड़ों और परिधानों की ऐसी मिलावट (melody), जैसी कि आप सूक्ष्मतल में पायेंगे, कभी नहीं देखेंगे। कोई भी, किसी भी शैली (style) के कपड़े, जिसकी उसे इच्छा हो, पहन सकता है, और ये बिलकुल भी गलत नहीं माना जाता, कोई चिन्ता नहीं करता, ये दूसरे लोगों का मामला है। इसलिए यदि एक आदमी, अपने आपको, अपने हरेक हाथ में बर्तनों के भार के साथ, हिप्पी के रूप में पाना चाहता है, वह ऐसा कर सकता है, बर्तन उसे घायल नहीं करेंगे, ये केवल तभी घायल करते हैं, जब वह पृथ्वी पर है, क्योंकि, सूक्ष्मलोक का बर्तन पूरी तरह से हानिरहित है; पृथ्वी का बर्तन भयानक रूप से खतरनाक होता है।

परंतु नवागंतुक, शीघ्र ही, कुछ नहीं करते हुए, थक जाता है, वह अपनी एड़ियों को ठुकराने और सूक्ष्मलोक के अपने आसपड़ौस को देखने के कारण, शीघ्र ही थक जाता है। भले ही वह पृथ्वी पर एक आलसी कामचोर रहा हो, एक वह, जो केवल गली के कौने तक, आसपास मटरगश्ती करना पसंद करता रहा हो, और सीटियां बजाता रहा हो, तब भी उस प्रकार का व्यक्ति, सूक्ष्मलोक के वातावरण में कुछ न करने से शीघ्र थक जाता है। वह (किसी) काम के लिए कहता है, और वह उसे पा लेता है। किस प्रकार का काम? किए जाने के लिये, वहॉ सभी प्रकार की चीजें हैं। यह कहना असंभव है कि वह किस प्रकार का काम करता है, क्योंकि यह कहना संभव है कि इस पृथ्वी पर, यदि वह अचानक ही टिम्बकटू (Timbuktu) या अल्सेस लोरेन (Alsace Lorraine) जाता, तो कोई व्यक्ति किस प्रकार का काम पाता। वे अपनी सामर्थ्य के अनुसार आवश्यक कार्य काम करते हैं, और उस काम को करने में वे विचारणीय रूप से संतोष और स्थायित्व पाते हैं।

परंतु उनके पास पूरे समय नुक्ताचीनी वाले विचार होते हैं, क्या किया जाए वाला छिद्रान्वेषी आश्चर्य? क्या उन्हें सूक्ष्मलोक में और थोड़ा अधिक देर तक रुकना चाहिए? दूसरे लोग क्या कहेंगे? वे बार–बार पूछते हैं और उन्हें बार–बार बताया जाता है, उन्हें हमेशा वही चीज बताई जाती है, और वहॉ, उन्हें कोई काम करने के लिए समझाने का कोई प्रयास, कभी नहीं होता, पसंद पूरी तरह से उनकी है।

अंत में वे तय करते हैं कि वे और अधिक समय तक फालतू नहीं घूम सकते; वे तय करते हैं कि वे पृथ्वी के स्कूल को 'छोडे हुए छात्र (drop-out)' नहीं हो सकते, उन्हें वापस जाना चाहिए, अपने पाठों को ठीक ढंग से सीखना चाहिए और परीक्षाओं को पास करना चाहिए।

वे अपने निर्णयों को जता देते हैं, और तब उनको लोगों के एक विशेष समूह के पास, जिसके पास विस्तृत अनुभव, और कुछ अत्यंत–अत्यंत उल्लेखनीय उपकरण हैं, ले जाया जाता है। यह तय किया जाता है कि उस व्यक्ति को क्या सीखना है, यह तय किया जाता है कि वह कितनी अच्छी तरह से इसे सीख सकता है– गरीब घर में जाना, क्या कुछ मदद करेगा? क्या उसे धनाढ्य परिवार में जाना चाहिए? क्या उसे एक सफेद आदमी होना चाहिए या काला आदमी? या क्या उसे काली या सफेद औरत होना चाहिए? ये सब निर्भर करता है, घपले के उस प्रकार के ऊपर, जो उसने अपने पिछले जीवन में किया था, यह निर्भर करता है कि वह, आगे आने वाले जीवन में काम करने के लिए कितने कठोर रूप से तैयार है, यह उस पर, जो उसे सीखना है, निर्भर करता है। कैसे भी, सलाहकार, उसे मदद करने के लिए अच्छी तरह से अर्हता प्राप्त हैं, वे सुझाव दे सकते हैं – और वे – माता पिता के प्रकार का, देश के प्रकार का, और परिस्थितियों के प्रकार का केवल सुझाव देते हैं। तब, जब वह उन परिस्थितियों से सहमत हो जाता है, उसके सामने कुछ निश्चित उपकरण बजाए जाते हैं, और होने वाले आवश्यक माता–पिता को तलाश जाता है। वैकल्पिक माता–पिता भी खोजे जाते हैं, और ये माता–पिता कुछ समय के लिए निरीक्षण में रखे जाते हैं। तब यदि हर चीज संतोषजनक सिद्ध होती है, वह व्यक्ति,जो पुनर्जन्म लेने के लिए तैयार है, सूक्ष्मलोक में, एक विशेष घर में जाता है। वहॉ वह बिस्तर पर जाता है, और जब वह जगता है तो वह इस पृथ्वी पर जन्म लेने की प्रक्रिया में होता है। कोई आश्चर्य नहीं, वह इस प्रकार की हलचल करता है और चीखने की निराशाजनक आवाजें निकालता है!

अनेक लोग, और अस्तित्व तय करते हैं कि वे अभी पृथ्वी पर नहीं लौटना चाहते, और इसलिए वे सूक्ष्मलोकों में रुकते हैं, जहॉ उनके पास, करने के लिए काफी काम होता है। परंतु उन पर चर्चा करने से पहले, हम एक विशेष वर्ग के लोगों की चर्चा करें, जिनके पास कोई पसंद नहीं होती; आत्महत्या वाले।

यदि किसी व्यक्ति ने, उसको आवंटित किये गये वर्षों की संख्या से पहले, इच्छापूर्वक अपने जीवन को समाप्त किया है, तब उस व्यक्ति को पृथ्वी पर लौटना पड़ेगा ताकि शेष बचे जीवन काल को जिया जा सके, ठीक वैसे ही, मानो कि वे कैदी थे, जो भागे और फिर से पकड़े गये, और उन पर थोड़ा सा अतिरिक्त दंड लगा दिया गया।

आत्महत्या करने वाला सूक्ष्मलोक में प्रवेश पाता है। उससे मिला जाता है, स्वागत किया जाता है मानो कि वह वैधानिक रूप से वापस आता हुआ साधारण व्यक्ति हो, कोई आरोप नहीं, उस प्रकार का कुछ भी नहीं, उसके साथ ठीक वैसा ही व्यवहार किया जाता है जैसा कि दूसरे प्रवेशार्थियों के साथ। उसे यथोचित समय दिया जाता है, जिसमें वह अपने भौतिक शरीर को, शायद हिंसक रूप से, छोड़ने और सूक्ष्मलोक में प्रवेश करने के सदमे से उबर सके।

जब वह पर्याप्त रूप से उबर चुकता है, उसे स्मृतियों के हॉल में जाना होता है, और वहॉ, वह सब कुछ देखता है, जो उसके साथ कभी हुआ था, वह उन त्रुटियों को देखता है, जिन्होंने वास्तव में, उसे आत्महत्या करने के लिये बाध्य किया था। और इसलिये उसे भयानक भावनाओं –विस्मययुक्त ज्ञान, एक अच्छा शब्द होगा– के साथ छोड़ दिया जाता है कि उसे पृथ्वी पर वापस आना है, और बिना बितायी हुई अवधि को व्यतीत करना है।

संभवतः आत्महत्या करने वाला व्यक्ति, कमजोर आध्यात्मिक क्षमता वाला होता है, शायद, वह पृथ्वी पर वापस जाने के लिये, आंतों से सम्बन्धित धैर्य में पिछड़ा रहता है, और वह सोचता है कि वह सूक्ष्मलोक में रहते हुए प्रसन्न है, और कोई भी इस सम्बंध में कुछ नहीं कर सकता। ठीक है, वह यहॉ गलत है, क्योंकि नियम यह है कि, आत्मघाती को पृथ्वी पर लौटना होता है; और यदि वह, अपनी स्वतंत्र इच्छा से नहीं लौटेगा तो उसे जाने के लिये बाध्य किया जायेगा।

यदि वह जाने की इच्छा रखता है, तब, विशेष परामर्शदाताओं के साथ बैठक में उसे सलाह दी जाती है कि पृथ्वी पर उसकी सजा के कितने दिन या कितने वर्ष शेष बचे है। उसे वह पूरा समय पृथ्वी पर रहना होता है, उसे वह पूरा समय भी रहना होता है, जो उसके आत्महत्या करने के बाद से, फिर से वापस पृथ्वी पर लौटने से पहले तक गुजरा था। इसलिये, यदि इसे पुष्ट करने और तय करने में कि उसे पृथ्वी पर वापस जाना है, शायद किसी ने एक वर्ष लिया था, इसलिये पृथ्वी के उसके जीवन में एक साल जोड़ दिया गया।

पृथ्वी पर ऐसी परिस्थितियॉ खोजी जाती हैं, ताकि वह लौट सके, और समान प्रकार की परिस्थितियों, जो पहले उसके जीवन को समाप्त करने का कारण बनी थीं, का सामना कर सके, और तब, निश्चित समय पर उसे सुलाया जाता है, और पैदा होने कि क्रिया के साथ जगाया जाता है।

यदि वह अवज्ञाकारी सिद्ध होता है, और पृथ्वी पर वापस आने के लिये कोई कदम नहीं उठाता, तब परामर्शदाता, उसके लिये परिस्थितियॉ, जो उसके मामले में उचित होंगी, तय करते हैं। यदि वह स्वतंत्रतापूर्वक नहीं जायेगा तब परिस्थितियॉ, उसकी तुलना जब वह स्वयं जाना चाहता है, थोड़ी कठोर होती हैं। तब उसे निश्चित समय तक सुलाया जाता है, उस मामले में जो भी हो, उसके लिये कोई पसंद न छोड़ते हुए, उसे सुलाया जाता है, जब वह जगता है, तो वह पृथ्वी पर फिर से वापस होता है।

अक्सर यही मामला होता है कि एक बच्चा, जो पैदा होता है और शायद, एक या दो महीने बाद मर जाता है, वह किसी व्यक्ति, जिसने जब वह किसी शल्यक्रिया न किये जाने योग्य असाध्य कैंसर से मर रहा था, शायद दो या तीन महीने का कष्ट के झेलने के बजाय आत्महत्या की थी, का पुर्नजन्म होता है। पीड़ित व्यक्ति ने, जब वह स्वाभाविकरूप से मरता, दो या तीन या शायद छः महीने या एक वर्ष पहले, अपना खुद का जीवन लिया हुआ हो सकता है। परंतु उसे फिर भी, वापस आना होता है और उतने पूरे समय रहना होता है, जो उसने लघुपथित (short-circuit) करने का प्रयास किया था।

कई बार ऐसा सोचा जाता है कि कष्ट बेकार की चीज है, पीड़ा बेकार की चीज है। कई बार ऐसा सोचा जाता है कि एक आदमी, जो असाध्य है, उसको मार डालना ही अच्छा होता है, परंतु क्या ये लोग, जो इस प्रकार के विधि की वकालत करते हैं, वास्तव में जानते है कि पीड़ा झेलने वाला, क्या सीखने का प्रयास कर रहा है? उसकी वही पीड़ा, उसकी बीमारी की प्रकृति ही कुछ वैसी हो सकती है, जिसको सीखने की इच्छा वह रख सकता

है।

लोग अक्सर मुझे लिखते हैं और कहते हैं, 'ओह, डॉक्टर रंपा, आपके संपूर्ण ज्ञान के अनुसार, ऐसा क्यों है कि आपको इतनी अधिक पीड़ा झेलनी पड़ती है? आप अपने आप को अच्छा क्यों नहीं कर लेते और हमेशा के लिये जिंदा क्यों नहीं रहते? परंतु, वास्तव में, ये सब बकवास है।' हमेशा के लिये कौन जीवित रहना चाहता है और जो लोग, ऐसे कथनों के साथ, मुझे ये लिखते हैं वे कैसे जानते है कि मैं क्या करने का प्रयास कर रहा हूँ? वे नहीं जानते, और इस सम्बंध में यही सबकुछ है। यदि कोई व्यक्ति, किसी निश्चित विषय की जॉच कर रहा है, तब अक्सर उस व्यक्ति को, काम को ठीक से करने के लिये, विचारणीय मात्रा में कठिनाई से गुजरना होता है। उदाहरण के लिये, ये लोग, जो घूमते–फिरते हैं, और सहायता लाते हैं, और कोढ़ियों को जीवित रखते हैं, ठीक है, वे नहीं जानते कि कोढ़ी क्या महसूस करता है, या कोढ़ी क्या सोचता है। वे कोढ़ी के भौतिक अस्तित्व को मदद कर रहे हो सकते हैं, परंतु फिर भी, वे कोढ़ी नहीं है। ऐसा ही टी. बी. या कैंसर या पैर के किसी गलत उपजे हुए नाखून (ingrown toenail) के मामले में भी है। जब तक कि किसी को वास्तव में कोई शिकायत या परिस्थिति नहीं है, कोई पूरे निश्चय के साथ, उस शिकायत या परिस्थिति पर चर्चा करने का पात्र नहीं है। मुझे ये हमेशा आनंद देता है कि रोमन कैथोलिक पादरी, जो शादीशुदा नहीं होते और जो संभवतः कभी बच्चे पैदा नहीं करते, सिवाय आध्यात्मिक अभिप्राय को छोड़कर, कभी बाप नहीं बनते, वास्तव में, बच्चे पैदा करने के सम्बंध में औरतों को सलाह देने का दुस्साहस, और वह सब कुछ, कैसे करते हैं। वास्तव में, इन कैथोलिक पादरियों में से अनेक, लम्बी छुट्टियॉ बिताने के लिये दूर चले जाते हैं और वे औरतों के बारे में बहुत कुछ जान जाते हैं। हमने वह मॉन्ट्रियल में देखा था!

तब, आत्महत्या करना निश्चित रूप से गलत है। आप केवल उस दिन को स्थगित कर रहे हैं, जब आप वैधानिक रूप में, पृथ्वी से मुक्त हो सकते हैं, आपको उस भगोड़े कैदी की तरह से वापस आना पड़ेगा, जो फिर से पकड़ा गया है, और आप स्वयं को छोड़कर, किसी को परेशान नहीं कर रहे हैं, और ये केवल आप हैं, जो अपने बारे में सोचते हैं, क्या ऐसा नहीं है? ये उन चीजों में से एक है, जिसके भी पार जाना है।

साधारण औसत व्यक्ति, जो बहुत अच्छा और बहुत बुरा नहीं है, परिवर्ती समयावधि के लिये सूक्ष्मलोक में रुकता है। ये सत्य नहीं है कि हर कोई छै सौ, एक हजार या दो हजार वर्षो के लिये रुकता है; ये पूरी तरह से परिस्थितियों पर, जो प्रत्येक के मामले में, और हर व्यक्ति के मामले में मौजूद रहती हैं, निर्भर करता है। एक औसत समय है, परंतु गली का एक औसत आदमी, और गली की एक औसत औरत भी है, और औसत समय, ठीक है, मात्र एक ऑकड़ा है।

सूक्ष्मलोक में करने के लिये अनेक कार्य होते हैं, कुछ लोग उन लोगों की मदद करते हैं, जो सूक्ष्मलोक में आने वाले हैं, कुछ लोग उनके मार्गदर्शक के रूप में कार्य करते हैं, और इस 'मार्गदर्शक' को किन्हीं आध्यात्मिक मंडलों (spritual seances) या बूढ़ी महिलाओं से, जो सोचती हैं कि उनके पास एक रेड इंडियन मार्गदर्शक या एक चीनी मेंडेरिन भाषा बोलने वाला मार्गदर्शक या एक तिब्बती लामा मार्गदर्शक है, कुछ लेना–देना नहीं होता। इन बूढ़ी महिलाओं के पास सामान्यतः, जो होता है, वह है कल्पना को अधिक मात्रा (overdose) में लेना। वास्तव में, यदि हर चीज गिनी हुई होती और हर कोई, जो किसी भारतीय मार्गदर्शक या तिब्बती मार्गदर्शक को रखने का दावा करता है, सूचीबद्ध किया गया होता, तो आसपास जाने के लिये, वहॉ काफी संख्या में भारतीय या काफी तिब्बती नहीं होते और किसी भी मामले में, दूसरी तरफ के इन लोगों के पास, अपने खुद के काम करने के लिये होते हैं, और इन कामों में, चाय के प्याले को हिलाना, ताकि कोई बूढ़ी मुर्गी उसका प्रेक्षण दे सके, शामिल नहीं होते, इसमें किसी टिन की तुरई के माध्यम से बोलना या दही छानने के कपड़े को थोड़ा सा चलाना शामिल नहीं होता। वह सभी सामिग्री, जो वास्तव में पूरी तरह से बेकार है, सामान्यतः किसी मिरगी ग्रस्त संचालक (hysterical operator) के पक्ष में, थोड़ी सी नाड़ी–ऊर्जा से आती है। दूसरी तरफ के लोगों को, पृथ्वी पर आने के लिये, अपने खुद के मामलों की देखभाल करने, और अंधेरे कमरों के आसपास खोजते हुए, गर्दन के नीचे सांस लेते हुए लोगों, जो किसी सुस्वाद रोमांच के लिये वहॉ हैं, के लिये काफी कुछ करना होता है। केवल वे, जो दूसरी तरफ से इन सियान्सों में जाते हैं, मूलभूत (elementals) कही जाने वाली निम्न प्रकार की प्रकृति–आत्मायें (nature spirits) होती हैं। वे केवल कुछ मजे के लिये वहॉ होती हैं, ये देखने के लिये कि ये तमाम मूर्ख मानव किसी भी चीज, और हर चीज, जो इन्हें कही जाती है, पर विश्वास करते हैं, क्या नहीं करते। मेरे प्रिय मित्र पाठक, बकवास के लिये अन्दर जायें, क्योंकि ये बकवास है।

ऐसा ही इस ओजा (Ouja) बोर्ड के लिये चलता है, लोग ओजा बोर्ड प्राप्त कर लेंगे, और उससे खेलेंगे और कोई मूलभूत, जो हमेशा किसी शरारती बंदर की भांति जोशपूर्ण होता है, देखेगा कि क्या किया जा रहा है, और वह निश्चितरूप से प्रेक्षणों को प्रभावित करेगा। अब आप सोच सकते हैं कि इसमें कोई हानि नहीं है, परंतु इसमें कोई भलाई भी नहीं है, और निश्चितरूप से, यदि कोई मूलभूत, दिये जाने वाले किसी संवाद को, अतिसम्भाव्य प्रतीत कराता है, परंतु वह केवल कुछ वह है, जिसे पीड़ित के खुद के अवचेतन से निकाला गया है, तब ओजा बोर्ड के इन प्रक्षणों में बड़ी हानि है। ओजा बोर्ड के इन संदेशों पर विश्वास करने से किसी व्यक्ति का पूरा जीवन, बुरे के लिये प्रभावित हो सकता है।

गलत सूचना का दूसरा बड़ा स्रोत तब होता है, जब ओजा बोर्ड को, लोगों, जो आसपास इकठ्ठे हैं, के सामूहिक विचार के अनुसार चलाया जाता है। अक्सर उसे इच्छा भरे चिंतन के साथ धकेला जायेगा, और फिर, वह कोई संदेश देगा, जो गलत सूचित किये जाने के कारण, निश्चितरूप से हानिकारक हो सकता है। बैठकों में करने के लिये सबसे सुरक्षित चीज है– जो कुछ भी हो, ओजा बोर्डों के साथ कुछ भी नहीं रखना। याद रखें, आप अपनी यात्रा के सही उद्देश्य को न जानते हुए, जानबूझकर इस पृथ्वी पर आये थे, और यदि आप, बिना किसी बहुत बहुत अपवाद के कारण, अत्यधिक जानने का प्रयास करते हैं, तब आप परीक्षा–कक्ष में जाते हुए उस विद्यार्थी के समान हैं, जो परीक्षा के प्रश्नपत्रों में से एक प्रति चुरा लेने की व्यवस्था कर लेता है, ये केवल सीधीसीधी धोखाधड़ी है, और ये आप को बिल्कुल मदद नहीं करती।

एक काम, जो सूक्ष्मलोक में किया जाना है, वह है, उनका, जो सोने की अवधि में आते हैं, उनका स्वागत करना। लोग हर समय आ रहे होते हैं, क्योंकि जब पृथ्वी के एक भाग में दिन होता है, तो दूसरे भाग में रात। इसलिये उनकी अपनी नींद की अवधि में, लोगों का आना–जाना निरंतर बना रहता है और वे स्कूल से लौटते हुए बच्चों के समान होते हैं, ठीक वैसे ही, जैसे कि बच्चे अपने माता–पिता या मित्रों के द्वारा, अभिनंदन किया जाना पसंद करते हैं, वैसे ही ये रात्रि वाले यात्री भी करते हैं।

उनके ट्रेफिक का मार्गदर्शन किया जाना है, उनको उन लोगों के संपर्क में रखा जाना है, जिनसे वे मिलना चाहते हैं और उनमें से अनेक, उस अवधि में, जो पृथ्वी पर रात्रि है, सूचना और परामर्श पाना चाहते हैं। वे जानना चाहते हैं कि वे कैसा कर रहे हैं और उन्हें आगामी कल में क्या करना चाहिए। ये अनेक लोगों के, काफी समय को लगा देता है।

तब सूक्ष्मलोक में अनेक ऐसे अस्तित्व हैं, जो पृथ्वी पर फिर से जन्म नहीं ले रहे हैं, वे चलते जा रहे हैं, चलते जा रहे हैं – ऊपर की ओर, ऊपर की ओर, अस्तित्व के और अधिक ऊंचे तल में चलते जा रहे हैं। ठीक समय पर, वे अत्यंत शांति के साथ, अत्यंत दुखरहित सूक्ष्मलोक के लिये 'मरेंगे।' वे वास्तव में, सूक्ष्मलोक में से केवल गायब हो जायेंगे और किसी उच्चतल पर प्रकट होंगे।

अधिक, और अधिक, लोग पृथ्वी पर आने वाले हैं, अधिक, और अधिक, लोग पृथ्वी पर जन्म लेने वाले हैं, और अनेक पूछताछ करने वाले, आश्चर्य करते हैं कि ऐसा क्यों होना चाहिए। उत्तर है कि पृथ्वी, धूल के लाखों धब्बों में से एक, धूल के करोड़ों अरबों धब्बों के बीच, धूल का मात्र एक धब्बा है, और जब लोग मुझे पूछते हैं कि पृथ्वी की आबादी क्यों बढ़ रही है, मैं उन्हें सत्य बताता हूँ कि अस्तित्व के निहारिका के तलों (nebulous planes) से, लोग पृथ्वी पर आ रहे हैं। शायद, कोई व्यक्ति, किसी द्विविमीय विश्व (two dimensional world) में से आता है, और अपने प्रथम अनुभव के रूप में, त्रिविमीय विश्व (three dimensional world), पृथ्वी पर आता है। इसलिये वह तीन आयामों वाले संसार में, जिसे हम पृथ्वी कहते हैं, अपने अस्तित्व के चक्र को प्रारंभ करने के लिये आता है, और क्योंकि पृथ्वी, अधिक, और अधिक, कठिनाइयों की पात्रता प्राप्त स्कूल बनती जा रही है, सभी समयों में, अधिक, और अधिक, लोग पृथ्वी पर आ रहे हैं। आप जानते हैं, इस पृथ्वी का उद्देश्य ही है, किसी को कठिनाई (की प्रकृति), और उसे कैसे झेला जाये और उस पर कैसे काबू किया जाये, सिखाना है। पृथ्वी पर, लोग अत्यंत मौजमस्ती के समय के लिये नहीं आते, वे कुछ सीखने के लिये आते हैं, ताकि पूरी जानकारी, जो वे सीखते हैं, अधिस्वयं को भेजी जा सके।

इस विश्व के बाद, सूक्ष्मलोक का तल है, और समय पूरा होने पर, कोई, सूक्ष्मतल से ऊपर की तरफ, अस्तित्व के विभिन्न तलों में तबतक पैदा होता है, जबतक कि अंत में वह पूरी तरह उन्नत अस्तित्व के रूप में अधिस्वयं से मिल नहीं जाता। अधिस्वयं इसी विधि से बढ़ता है।

यदि काफी बढ़ जाने पर, अधिस्वयं तय करता है कि काफी कुछ सीखा जाना है, तब कुछ विश्वों में, और

ताजी कठपुतलियॉ रखी जाती हैं, और जीवन के चक्रों का पूरा प्रक्रम फिर से प्रारंभ हो जाता है और हर बार, जब कठपुतलियॉ अपने चक्रों को पूरा कर लेती हैं, वे शुद्ध होकर अधिस्वयं की ओर वापस लौटती हैं, जो फिर से इस माध्यम से बढ़ता है।

जब कोई व्यक्ति सूक्ष्मलोक में रह रहा है, अर्थात् जब कोई व्यक्ति पृथ्वी पर 'मर चुका' होता है, तब वह विशिष्ट अस्तित्व, सूक्ष्मलोक के पूर्णजीवन में प्रवेश करता है, और वह मात्र कोई आगंतुक नहीं होता, जैसे कि वे लोग होते हैं, जो समय की उस अवधि में, जबकि उनका शरीर पृथ्वी पर नींद में होता है, सूक्ष्मलोक में लौटते हैं। और सूक्ष्मलोक के पूर्ण कालिक सदस्य होने के कारण, वे वैसा व्यवहार करते हैं, जैसा कि सामान्य लोग पृथ्वी पर करते अर्थात् वे सूक्ष्मलोक के दिन के अंत में सोते हैं। सूक्ष्मशरीर, जो सूक्ष्मलोक के लोगों के लिये वास्तव में पूरा ठोस है, नींद में जाता है, और फिर, अपने रजत तंतु के सिरे पर (स्थित) आत्मा, सूक्ष्मशरीर को छोड़ देती है, और फिर से, अपने से ऊॅचे तल में जाती है। जब आत्मा सूक्ष्मशरीर की ओर वापस लौटती है, वह उन चीजों को सीखती है, जो वहॉ, जिन्हें हम निम्न सूक्ष्मलोक कहते हैं, उपयोगी होगें। मत सोचें कि सूक्ष्मलोक, सर्वोच्च लोक है, मत सोचें कि ये स्वर्ग है; ये नहीं है। अनेक अनेक भिन्न चक्र, या अस्तित्व के तल हैं।

जबकि उस विश्व में, जिसे हम 'सूक्ष्मलोक' कहते हैं, हम परिवार रख सकते हैं। हम बहुत कुछ हद तक उसी तरीके से रहते हैं, जैसे कि लोग यहॉ रहते हैं, सिवाय इसके कि वहॉ झगड़े नहीं होते। क्योंकि सूक्ष्मलोक में आप उनसे नहीं मिल सकते, जिनके साथ आप अनुशीलनीय नहीं हैं। यदि आप सूक्ष्मलोक में शादी करते हैं, तब आप कोई शिकायत कर्त्ता भागीदार नहीं पा सकते। सामान्यतः इसे पृथ्वी के लोगों द्वारा नहीं समझा जाता है; जबकि सूक्ष्मलोक में आप उन लोगों से नहीं मिल सकते, जो पृथ्वी पर आपके दुश्मन थे, और आपका परिवार– ठीक है, सूक्ष्मलोक में आपका परिवार आपके लिये उतना ही ठोस होता है, जैसे कि पृथ्वी पर लोग आपके लिये थे।

सूक्ष्मलोक में मानव अकेले नहीं हैं, जानवर भी वहॉ जाते हैं। कभी भी, कभी भी ये सोचने की सर्वाधिक दुखपूर्ण गलती न करें, कि मानव, अस्तित्व की सबसे ऊॅची आकृति हैं, वे नहीं हैं। मानव, अस्तित्व की मात्र दूसरी शक्ल है। मानव एक तरीके से सोचते हैं, पशु दूसरे तरीके से सोचते हैं, परंतु ऐसे अस्तित्व हैं, जो मानवों की तुलना में मानवों से काफी ऊॅचे हैं, जैसे कि मानव, केंचुए की तुलना में ऊॅचे हैं और ये लोग भी जानते हैं कि वे उन्नयन की आखिरी आकृति नहीं हैं। इसलिये उत्कृष्ट प्राणी होने के बारे में एकदम भूल जायें, और उस काम पर, जिसे आप सबसे अच्छा कर सकते हो, ध्यान दें।

पशु सूक्ष्मलोक को जाते हैं, पशु थोड़े ऊॅचे जाते हैं, क्योंकि वे गुणों में अच्छे हैं, जैसे मानव होते हैं। ईसाई धर्म के साथ, बड़ी कठिनाइयों में से एक ये है कि, वे सोचते हैं कि मानवता ही उन्नयन की सर्वाधिक संभव, सर्वोच्च आकृति है। वे सोचते हैं कि सभी प्राणी मनुष्य के संतोष के लिये बनाये गये थे, और इसने उनका कुछ अधिक भयानक परिस्थितियों की ओर नेतृत्व किया है। ये जानते हुए कि मानव, अपने धार्मिक नायकों के द्वारा, अपने पादरियों के द्वारा, जिन्होंने वास्तव में, अपने आपको शक्ति प्रदान करने के लिये ईसाइयत को पुर्नव्यवस्थित किया, गलत निर्देशित किये गये हैं, पशु संसार, और पशुओं के मनु, अविश्वसनीय रूप से सहनशील रहे हैं।

तब, इसे तथ्य के रूप में स्वीकारें कि सूक्ष्मलोकों में आप दुबके हुए कुत्तों या भयभीत बिल्लियों को नहीं पायेगें, बदले में, आप एक भागीदार पायेंगे, जो हर तरीके से मानव के समतुल्य है और जो पूरी आसानी से, दूरानुभूति से मानव के साथ संप्रेषण कर सकता है।

अनेक लोगों ने शरीरों के सम्बंध में पूछा है क्या कोई शरीर, केवल गैसों का गुच्छा दिखाई देता है या क्या? और उत्तर है, नहीं, सूक्ष्मलोक में शरीर, आपको ठोस के रूप में दिखाई देगा, क्योंकि वह मांस का लोथड़ा है, जिसे आप अभी दो हड्डियों वाले ठूंठ के ऊपर, आसपास धकेलते हैं, और यदि दो लोग सूक्ष्मलोक में टकरायें, तो वे ठीक वैसी ही, जैसी कि जब दो लोग पृथ्वी के तल में टकराते हैं, ठोकर पायेगें।

सूक्ष्मलोक में महान प्रेम होता है, भौतिक प्रेम के साथ–साथ आध्यात्मिक प्रेम भी, परंतु वास्तव में, एक पैमाने पर, जिसको पृथ्वी के शरीर में रहते हुए, पृथ्वी के विचारों तक सीमित मन नहीं समझ सकता। सूक्ष्मलोक में अवसाद जैसी कोई चीज नहीं है, क्योंकि सभी समयों में, और दोनों भागीदारों के लिये, प्रेम पूरी तरह संतोषजनक होता है।

कुछ लोगों ने, भगवान का वर्णन करने के लिये कहते हुए लिखा है। भगवान किसी बड़े निगम का प्रमुख मात्र नहीं है, आप जानते हैं कि वह कोई बूढ़ा आदमी मात्र नहीं है, जिसकी लंबी दाढ़ी है और जो एक लाठी के

सिरे पर लालटेन ले जाता है। ईश्वर एक महान बल है, और जिसे तब, जब कोई पृथ्वी के शरीर से बाहर और सूक्ष्मलोक में हो, समझा जा सकता है। वर्तमान में, कोई पृथ्वी पर, त्रिआयामी विश्व में है, और हमें कहने दें, अधिकांश लोग, नौ आयामी वस्तु के वर्णन को नहीं समझ सकते।

हर विश्व का, विश्व का प्रभारी एक मनु है। आप कह सकते हैं कि मनु ओलंपस (Olumpus) के उन देवताओं में से एक जैसा है, जिसका इतना विचारपूर्ण वर्णन ग्रीस की किवंदतियों में किया गया था, या, यदि आप और अधिक अद्यतन चाहते हैं, तो आप कह सकते हैं कि मनु किसी बड़े प्रतिष्ठान की शाखा के महाप्रबन्धक जैसा है। उस शाखा के महाप्रबंधक के अंतर्गत– क्योंकि कुल मिलाकर, ये विश्व केवल एक शाखा है –हमारे पास विभागीय प्रबंधक हैं, जो हमारे शब्दों में, विभिन्न महाद्वीपों के और विभिन्न देशों के मनु कहे जायेंगे। ये निचले प्रबंधक, हमें कहने दें, अमेरिका, या जर्मनी या अर्जेंटीना इत्यादि, (शाखा के कामकाज को) चालू रखने के लिये उत्तरदायी होते हैं, और जैसे कि प्रायः मानवीय प्रबंधकों के स्वभाव भिन्न भिन्न होते हैं, वैसे ही मनुओं के भी होते हैं। और इसलिये सम्बंधित देश, एक भिन्न राष्ट्रीय विशेषता पाता है। जर्मन, उदाहरण के लिये, इटलीबासियों की तुलना में एकदम भिन्न हैं, और इटलीबासी, चीनियों से एकदम भिन्न है। ये इस कारण से है कि उस विभाग के प्रबंधक भिन्न हुआ करते हैं।

मनु, कोई बात नहीं, वे कितने भी भव्य दिखाई पड़ते हों, महान अस्तित्व या अधिस्वयं की कठपुतलियां मात्र हैं, जो 'ईश्वर' बनाते हैं। वह महान अधिस्वयं, बहुत कुछ हद वैसे ही, जैसे कि मानव अधिस्वयं, अनुभव प्राप्त करने के लिये, मानवों के पूरे गुच्छे का उपयोग कर सकता है, मनु का कठपुतलियों के रूप में उपयोग करता है।

एक दूसरा प्रश्न है, जो बारबार पूछा जाता है, कि, 'स्पष्टतः सूक्ष्मशरीर के पास, अपने लिये, किसी प्रकार का पदार्थ होता है। यदि इसके पास अणु हैं, कोई बात नहीं, वे कितने ही विरले बिखरे क्यों न हों, वे ऊष्मा, शीत या टकराव के माध्यम से विनाश या चोट के विषय हो सकते हैं। यदि ऐसा होता, तो कुछ बैचेनी, कष्ट, लगभग किसी भौतिक अर्थ में अस्तित्व में होता। सूक्ष्मशरीर, किसी भौतिक नक्षत्र के आसपास कैसे यात्रा करेगा? ठीक है, जब कोई अणुओं की बात करता है, तो वह पदार्थो, जो कि पृथ्वी तल में हैं, की बात कर रहा होता है। अणु एक भौतिक चीज, पदार्थ का एक कण है, परंतु जब हम सूक्ष्मलोक के बारे में बात कर रहे हैं, तब हम निम्न श्रेणी के कंपनों से जो इस पृथ्वी की हर चीज को बनाते हैं, पूरी तरह से दूर हैं। पृथ्वी पर, कोई भौतिक शरीर, किसी अन्य भौतिक शरीर से चोट पा सकता है, परंतु सूक्ष्मलोक की कोई भौतिक चीज, पृथ्वी की भौतिक चीज से, किसी भी तरह से नुकसान नहीं उठा सकती, दोनों चीजें पूरी तरह से, और एकदम अलग हैं। कोई कह सकता है, शुद्ध रूप से एक उदाहरण के रूप में, और इस पर कोई बहुत अच्छा उदाहरण भी नहीं, कोई कह सकता है कि चट्टान और प्रकाश, एक दूसरे के साथ प्रतिक्रिया नहीं कर सकते हैं। यदि हम एक चट्टान को ऊपर आकाश में फैंके, तो ये सूर्य को घायल नहीं करती। उसी तरह से, चीज जो पृथ्वी पर होती है, सूक्ष्मलोक में किसी सूक्ष्मशरीर को घायल नहीं करती, परंतु सूक्ष्मलोक में लोगों को, जो घायल करता है, वह है, एक दूसरे को दूर उछालने के प्रयास में, मानवों द्वारा पृथ्वी पर प्रदर्शित की गयी घनी मूर्खता, एक दूसरे को विभिन्न कष्टमय तरीकों से दबाना, और सामान्यतः अस्तित्व, जो पृथ्वी पर कुछ सीखने के लिए हैं, की बजाए, पूरी तरह से पागल व्यक्तियों की तरह से व्यवहार करना। वर्तमान समय में, पृथ्वी के लोग, जिस तरीके से चल रहे हैं, वह बहुत कुछ वैसा ही है, जिसमें विद्यार्थी, जो लाखों डॉलर के कम्प्यूटरों को तोड़ते हैं, जा रहे हैं। यह समय है, जब मानव बड़े हों, और ये समय है, जब विद्यार्थी सीखें कि वे उन लोगों से सीखने के लिए, जो उनसे अधिक जानते हैं, स्कूल या कॉलेज को जाते हैं।

अध्याय – नौ

याद रखें, कछुआ केवल तभी प्रगति करता है, जब वह अपनी गर्दन को बाहर निकालता है।

परमेश्वर का गुणगान हो! मैंने सोचा, सूक्ष्मलोकों, मृत्युओं, और उस प्रकार की सभी चीजों का वर्णन, मैंने अपने पीछे रख लिया था और अब यहॉ, उन्हीं सभी चीजों के ऊपर जोर डालते हुए प्रश्नों का एक दूसरा भार है। उदाहरण के लिए, 'क्या कोई परमाणु विस्फोट, जो हजारों मानव–शरीरों को एक साथ भस्म कर देता है, उसी समय में, सूक्ष्मतल में नरक को पैदा करता है, या उन्हें किस प्रकार से प्रभावित या विक्षिप्त करता है।

ये उन्हें भौतिक रूप से नुकसान पहुॅचाने के लिए कोई बुरी चीज नहीं करता, परंतु निश्चितरूप से, ये एक भयंकर फड़फड़ाहट पैदा करता है, क्योंकि सूक्ष्मलोक में, किसी भयानक भीड़भाड़ में, हजारों लोग आने वाले हैं। उनमें से अनेक भयग्रस्त बीमार होंगे, अनेक सदमे से पागल होंगे, इसलिए सभी उपलब्ध सहायक, उनको, जो तेजी से आ रहे हैं, और अत्यधिक परेशानी की अवस्था में हैं, मदद करने के लिए दौड़ पड़ते हैं। दृश्य, वास्तव में, बहुत कुछ वैसा ही होगा, जैसे कि जब पृथ्वी पर, सच ही, एक बुरी दुर्घटना, जैसे कि भूकंप या कम से कम उतनी विपदापूर्ण कोई चीज होती है, जहॉ सहायता पहुॅचाने के किसी भी संभव साधन को उपयोग करने के लिए, सहायक और स्वयंसेवी सहायक दौड़ पड़ते हैं। तब उत्तर है कि, बम–विस्फोट के द्वारा, सूक्ष्मलोक में किसी को कोई नुकसान नहीं होता, परंतु वे अतिरिक्त कार्य के द्वारा, अनेक लोगों की देखभाल करने का प्रयास करते हुए, बुरी तरह से अव्यवस्थित हो जाते हैं, क्योंकि यद्यपि ऐसी एक घटना पूर्व में देख ली गई होगी, फिर भी, 'पूर्व में देखी हुई सभी घटनायें,' संभावनायें होती हैं, और आवश्यकरूप से, वास्तविक घटना नहीं होतीं, जो होनी ही हैं।

अगला पूछता है, 'राष्ट्रों के मनु अपने राष्ट्र के मामलों को कैसे पर्यवीक्षित (supervise) करते हैं? क्या वे संयुक्त राष्ट्र के प्रतिनिधियों के माध्यम से, राष्ट्रों के प्रमुखों, उनकी मंत्रीपरिषद और सलाहकारों के माध्यम से या कैसे काम करते हैं?'

यदि संयुक्त राष्ट्र संघ वैसा होता, जैसी कि आशा थी, तब वह किसी मनु के लिए काम करने का रास्ता होता, परंतु कुछ ऐसा है कि आपको गंभीरता के साथ विचार करना होगा, ये आपके लिए बेस्वाद हो सकता है, ये आपके लिए पूरी तरह से सदमा भी हो सकता है, परंतु फिर भी, ये वास्तविक तथ्य है।

ये विशेष विश्व, कोई बहुत अधिक अग्रिम पंक्ति का विश्व नहीं है, वास्तव में, ये एक सुधार–विश्व है, एक नरक, एक कठोर पाठशाला, आप इसे जो चाहे कहें – और इस पृथ्वी के प्रभारी अनेक मनु, स्वयं भी सीख रहे हैं! जैसे ही वे अनुभव प्राप्त करते हैं, और जब वे सफल हो जाते हैं, तब ठीक एक विभागीय प्रबंधक की भांति, उनको पदोन्नत कर दिया जाता है, और यदि एक सामान्य प्रबंधक, अपनी छोटी ब्रांच में, चीजों में सफलता प्राप्त करे, तब वह उसी तरह से, बड़ी शाखा के लिए पदोन्नत किया जा सकता है।

इन चीजों को खुले दिमाग से देखना और याद रखना, वास्तव में, आवश्यक है कि जब दूसरी तरफ, सूक्ष्म लोक में, कोई बादल पर नहीं बैठता और बैंजो नहीं झंकारता या वीणा की तारों को नहीं छेड़ता, (हर) किसी को काम करना होता है।

यदि आप स्कूल की किंडरगार्टेन (kindergarten) कक्षा में हैं, आप सोच सकते हैं कि किसी उच्चतर कक्षा में, बारह वर्ष की उम्र के बड़े 'किशोर', वास्तविक महान ईश्वर हैं, जो शिक्षकों को यह बताने कि कहॉ जाना है, के सिवाय कुछ नहीं करते और ये बारह और चौदह साल की आयु के सोच सकते हैं कि छठवी साल में आगे (जाने) वाले या तेरहवीं कक्षा वाले या आप उन्हें जो कुछ भी कहना चाहें, वास्तव में, सृष्टिकर्ता ईश्वर हैं। परंतु सृष्टि के इन ईश्वरों को भी कुछ गृहकार्य करना होता है, अभी भी कक्षाओं में उपस्थित होना पड़ता है, अभी भी अनुभव प्राप्त करना होता है। ठीक है, लोग अनुभव पाने के लिए इस पृथ्वी पर आते हैं, अनुभव पाने के लिए, मनु इस पृथ्वी की (न्यूनाधिक) देखभाल करते हैं और यदि देशों के बीच थोड़ी लड़ाइयॉ हैं, ठीक है, ये मनुष्यों को शिक्षा देना है और ये मनुओं को भी शिक्षा देना है।

उच्चतर अवस्थाओं में, अर्थात्, अधिक अग्रवर्ती विश्वों में, मनु एक साथ मिल सकते हैं, और पारस्परिक सहमति से चीजों पर चर्चा कर सकते हैं, ताकि युद्ध और कोई विशेष अपराध न हों, परंतु पृथ्वी के उपद्रवी लोगों के लिए, ये अत्यधिक अग्रवर्ती है। पृथ्वी के लोग, कठिन तरीके से सीखने के लिए यहॉ हैं, क्योंकि वे नरम तरीके

से, दयापूर्ण विधि से नहीं सीखेंगे। यदि कोई बच्चा आगे बढ़ता है, और आपको डंडे से एक कठोर आघात देता है, या आपके प्याले पर जोर से मारने की जोशपूर्ण इच्छा दिखाता है, और आपको गिरा देता है, ठीक है, यह कहना निरर्थक है, 'मैं प्रार्थना करता हूँ, मेरे प्रिय साथी!, कि आप कृपा करके, इन अप्रिय आदर–सत्कारों से बाज आयेंगे।' बदले में यदि आप समझदार हैं, उसे वहाँ कहीं, जो उसको सबसे अधिक हानि पहुँचाये, ठोक देंगे, और तब उसे शोर मचाकर पुलिस को दे देंगे।

इसलिये इस पृथ्वी के मनु सीखने वाले (विद्यार्थी) हैं। वे चीजों को, ठीक वैसे ही सीख रहें हैं, जैसे कि आप, और जब वे चीजों को सुलझाना सीख लेते हैं, तब वे, कुछ अच्छी चीजों के लिए, थोड़ा सा आगे बढ़ जाते हैं। परंतु, प्रसन्न हों, कि आपको केवल सत्तर वर्ष या कुछ वैसे ही जीवनकाल के लिए ठहरना है, बेचारे मनुओं की सजा, उसकी तुलना में लंबी, काफी लंबी होती है।

अब यहाँ, अंदर लपेटा हुआ, एक छोटा प्रश्न है, 'ऐसा माना जाता है कि तेरहवे दलाई लामा तक की पूरी पंक्ति में वही आत्मा थी। क्या तेरहवें अब स्वर्णिम प्रकाश के देश (Land of the Golden Light) में हैं, और फिर भी चौदहवे के रूप में पुनर्जन्म लेते हैं ?'

ठीक है, ये उत्तर देने के लिए, सभी में सरलतम प्रश्न है, क्योंकि चौदहवे दलाई लामा स्वयं प्रेस को अपने पत्ते खोलते हुए दिखाई देते हैं और स्वीकार करते हैं कि वह महान तेरहवें का पुनर्जन्म नहीं है, वह ठीक ऐसा ही है क्योंकि महान तेरहवे, वास्तव में, सूक्ष्मलोक में बहुत अच्छा करते हुए, एक अत्यंत सक्रिय अस्तित्व हैं और बल्कि मैं दुख के साथ विश्वास करता हूँ कि भारत में निष्कासन में, 'वर्तमान नेता,' पीड़ित तिब्बतियों को सहायता पहुँचाने के लिए कुछ अधिक नहीं कर रहे हैं। परंतु इस पुस्तक के पहले अध्यायों में, मैंने इस पर कुछ विस्तार के साथ चर्चा की थी, इसलिए शायद, मैं सुंदर को और अधिक सुंदर नहीं बनाऊँगा या जब मुझे इसकी आवश्यकता नहीं है, अपने आपको नहीं दोहराऊँगा।

दूसरा व्यक्ति, 'शुक्र की मेरी यात्रा (my visit to Venus)' का संदर्भ देते हुए लिखता है, परंतु मुझे यहाँ और अब कहने दें कि मैं निश्चितरूप से, निश्चितरूप से, निश्चितरूप से, उस 'पुस्तक' की अनुशंसा नहीं करता। ये कुछ लेखों को, जिसे मैंने बरसों पहले लिखा था, रखते हुए, मात्र कुछ पेज हैं, और इसमें–ठीक है, मैं उन्हें असामान्य समझता हूँ – मेरे द्वारा नहीं किए गए कुछ चित्रण निहित हैं। मेरे काम के कुछ भागों को समेटती हुई, और तमाम विज्ञापनों से भरी हुई ये पुस्तक, पूरी तरह से बिना मेरी आज्ञा के, और मेरी इच्छाओं के पूर्णतः विरुद्ध प्रकाशित की गई थी।

'प्रार्थना की शक्ति (The power of prayer)' रिकार्ड के ऊपर भी वही लागू होता है। निश्चय ही, मैं उसकी अनुशंसा नहीं करता। उसकी गुणता निहायत ही खराब है और इसका तात्पर्य, पुनरुत्पादन करने वाले रिकार्ड के रूप में कभी नहीं था। ये केवल कुछ चीज है, जिसे मैंने अनेकों अनेक वर्ष पहले बनाया था और तब जब मैंने दक्षिणी अमरीका जाने के लिए, उत्तरी अमरीका को छोड़ा, मुझे सूचित किया गया कि महाद्वीप से मेरी अनुपस्थिति में, मेरी आज्ञा के बिना, मेरी इच्छा के बिना, ये रिकार्ड बनाया जा चुका है। यदि आप एक यथार्थ रिकार्ड पाना चाहते हैं, तब ध्यान (meditation) के रिकार्ड को खरीदें, जो मैंने विशेष रूप से, रिकार्ड के लिए बनाया है। इसे लोगों को ध्यान में मदद करने के लिए, विशेषरूप से बनाया गया था, और उसे प्राप्त किया जा सकता है।

Mr. E. Z. Sowter,
33 Ashby Road,
Loughborough,
Leicestershire,
England.

मैं आपको बताऊँगा कि श्रीमान् सोटर के पास, इस रिकार्ड के और टच स्टोन तथा अनेक दूसरी चीजों के, विश्व भर के अधिकार हैं, और वही एकमात्र व्यक्ति हैं, जिसके पास, मेरे रिकार्डों को और टचस्टोनों को बेचने के लिये मेरी पूर्ण आज्ञा और अनुबंध हैं। वह मेरी डिजायन की अनेक दूसरी चीजें भी बेचते हैं।

ये श्रीमान् सोटर, जो अत्यंत शालीन व्यक्ति हैं, और जो अच्छा होने का प्रयास कर रहे हैं, के लिए एक नि :शुल्क विज्ञापन है।

इस पुस्तक का आशय, भले लोगों का सूचीपत्र होना नहीं है, इसका आशय, विवेक के बाहरी किनारे पर घटिया जानकारी का सूचीपत्र होना भी नहीं है, परंतु मैं पुस्तक को, वास्तव में, एक अत्यंत सुखद परिवार के उल्लेख के बिना पूरी करते हुए नहीं छोड़ सकता : श्रीमती वर्स्टमान (Mrs.Worstmann) और उनकी दो बेटियॉ। आप याद कर सकते हैं कि मेरी पुस्तकों में से एक, श्रीमती वर्स्टमान, एक अत्यंत खुशनुमा, अत्यंत उच्चशिक्षित महिला, को समर्पित की गई थी, जिसको जानकर प्रसन्नता होती है, और मैं उसे कई बरसों से जानता हूँ, तब से जानता हूँ, जबकि उसका पति, इस पृथ्वी पर जीवित था, और अब जबकि वह दूसरी तरफ है, मैं उसके सम्पर्क में रहा हूँ। श्रीमती वर्स्टमान, तब, एक अत्यधिक आत्मज्ञानी प्रकार के लोगों में से हैं। निश्चितरूप से, दो प्रखर पुत्रियों को पाकर, उसे पर्याप्त आत्मज्ञान प्राप्त हुआ था। लुईस (Louise), लंदन के अच्छे अस्पतालों में से एक में नर्स है; वह एक अच्छी नर्स है, परंतु वह अनेक चीजों में उतनी ही अच्छी है। वह कलात्मक है –ठीक है, मैं उसके सभी सद्‌गुणों को सूचीबद्ध करने नहीं जा रहा हूँ, वे इन पृष्ठों में लिखने के लिए अत्यधिक हैं। मैं उसकी दूसरी प्रतिभावान बहन थेरसी (Therese) का भी उल्लेख करना चाहता हूँ। वह भी नर्स है, और वह शल्य चिकित्सक के रूप में प्रशिक्षण पाने के लिए अत्यंत इच्छुक है, इसके लिए, उसमें सभी क्षमतायें हैं, वास्तव में, पैसे के सिवाय हर चीज है। मैं, ये देखने के लिए कि कोई बीमा–योजना होती, जो एक उच्चतर ईश्वरीय देनयुक्त नौजवान महिला को शल्य चिकित्सक के रूप में प्रशिक्षण पाने के लिए पात्र बना सकती, आसपास देखता रहा हूँ। दुर्भाग्यवश, मैं ऐसे किसी स्रोत को अभी तक नहीं पा सका। इसलिए यदि आप, मेरे पाठकों में से कोई, जानता हो कि पैसा कैसे एकत्र किया जाए, जिसके द्वारा एक पूरी तरह से सक्षम नौजवान महिला, चिकित्सीय महाविद्यालय में अपने प्रशिक्षण के लिए भुगतान कर सके, तब, अब भलाई करने का ये आपका मौका है।

मैं इसे स्पष्ट करता हूँ, मैं इसे एकदम स्पष्ट करता हूँ, कि इस नौजवान महिला में, शल्य चिकित्सक के रूप में, विश्व की भलाई करने की कुछ क्षमता है, और ये विकट प्रतीत होता है कि प्रशिक्षण को वित्तीय पोषण देने में पैसे की कमी के माध्यम से, वह भलाई करने के उस अवसर से वंचित हो जाए।

होने वाले शल्य चिकित्सक के साथ व्यवहार करते हुए, हम हृदय प्रत्यारोपण पर बात करें। यहॉ मेरे पास एक प्रश्न है, 'हृदय प्रत्यारोपणों के लिये वर्तमान भीड़ और बाहरी अंगों, प्लास्टिक के वाल्वों, और नलियों इत्यादि, को शरीर में घुसाने की दूसरी मौलिक शल्यचिकित्सा, के सम्बंध में क्या? शुद्धरूप से सांसारिक, शारीरिक दृष्टिकोण से यह महत्वपूर्ण वैज्ञानिक खोज को, लगभग चमत्कारिक समझे जाने जैसा लगता है, परंतु क्या ये कोई चाल नहीं है? क्या किसी भी बाहरी पदार्थ को, इस तरीके से शरीर के अंदर प्रवेश कराये जाने पर, विभिन्न रसायनों का उपयोग, शरीर की अस्वीकार करने की सामान्य प्रवृत्ति का प्रतिरोध करेगा? या क्या ऐसी अस्वीकृति केवल इसलिये अपरिहार्य है, क्योंकि शरीर में किसी बीमार सदस्य को विस्थापित करने के लिए, उसे विस्थापित करने वाला एक स्वस्थ नया अंग, अभी भी, प्रश्न में निहित बीमार अंग तथा कृत्रिम प्रवेश कराई गई प्रतिभागी सामग्री के बीच, ईथरिक के ठीक तरीके से समन्वित होने में परिणामित नहीं होगा? और, इसके अतिरिक्त, क्या ऑपरेशन किए जाने वाले व्यक्ति विशेष के लिए, वास्तव में, कोई लाभ प्राप्त होता है, यदि उसके पास, पृथ्वी पर उसकी दीर्घकालीन अस्वस्थता के वर्तमान ठहराव के जोड़े हुए, कुछ महीने या कुछ साल भी हैं, जबकि वह पाए हुए समय का, लाभप्रद पाठों को सीखने में, जो अन्यथा दूसरे जन्म के लिए स्थगित कर दिए गए होते, यथार्थ रूप से उपयोग नहीं करता?

ठीक है, निश्चय ही, ये एक निवाला है! कई सैकड़ा शताब्यिों पहले, एटलांटिस के जमाने में, लोग प्रत्यारोपण कर सकते थे। उन दिनों में, एक भुजा या टांग में पैबन्द लगा देना, दिलों और गुर्दों और फेफड़ों को बदल देना संभव था, परंतु ये प्रकृति की एक दैवीय (प्रति)क्रिया थी, कि एक संस्कृति, जिसने ऐसी चीजों को किया, समाप्त हो गई। उन्होंने मस्तिष्कों को प्रत्यारोपित करने का प्रयास किया था, और उन्होंने अनीतिपूर्ण दैत्यों को पैदा किया था।

मौलिक रूप से, हृदय को विस्थापित करने में कुछ भी अत्यंत कठिन नहीं है। ये मात्र एक यंत्रवत् प्रक्रिया है। आपको दिल को काटकर बाहर निकालना है, और विस्थापक हृदय को, नलियों, जो छोड़ दी गई हैं, में एकदम सही फिट होने के लिये छांटना है। कोई भी सक्षम शल्य चिकित्सक इस ऑपरेशन को कर सकता है।

भौतिक विश्व में कोई अर्द्ध–अपंग होता है। कुल मिलाकर, जब कोई ऐसी मौलिक शल्यक्रिया करता है, कुछ निश्चित छोटी रक्तवाहिनियों और नाड़ियों को फिर से नहीं जोड़ा जा सकता, पूरी संरचना भ्रष्ट हो जाती है और इसलिए अत्यधिक बीमार व्यक्ति को थोड़ी और अतिरिक्त बीमारी–उसके शरीर की अपंगता दे दी जाती है।

परंतु फिर भी, ऐसा व्यक्ति, अर्द्ध–अपंगता के जीवन को जीते हुए, अनिश्चित बरसों तक चल सकता है

तथापि, सूक्ष्मलोक में दो लोग हैं, जो संकर–मिश्रित (cross-mixed) होने के द्वारा महान रूप से पीड़ित हो रहे हैं। एक व्यक्ति आधा सूक्ष्मलोक में है, अर्थात् वह केवल नींद के दौरान सूक्ष्मलोक में जाता है, और दूसरा व्यक्ति ठीक सूक्ष्मलोक में है, परंतु, क्योंकि, उसका दिल या दूसरे अंग, अभी भी, यहॉ जिन्दा हैं, वह एक प्रकार से, रजततंतु के माध्यम से, उस व्यक्ति का, जिसके पास उस व्यक्ति का अंग है, सहानुभूतिमय संलग्नक (sympathetic attachment) प्रकार का है।

आप कई बार दो रेडियो पाते हैं; आप एक ही कमरे में, शायद एक ही कार्यक्रम में, दोनों रेडियो को चालू करते हैं, और यदि आप एक को बंद कर दें, तब ये दूसरे के लिए थोड़ा सा अधिक वोल्यूम बनाता है; वहॉ दोनों के बीच कुछ अंतरक्रिया होती है और ये ही रेडियो, केवल वे चीजें हैं, जो लड़कियों के किसी सेट ने, जब वे अपने नवीनतम पुरुषमित्रों, और उनका मिनि स्कर्ट अगले मौसम में कितना छोटा होगा, के बारे में बातें करते हुए, अपने साथ रखी हैं। जब आप जीवित मनुष्यों के पास होते हैं, तब अंतर्क्रिया अधिक, और अधिक प्रबल होती है, और जुड़े हुए दूसरे व्यक्ति के शरीर के साथ सहानुभूतिमय होने के लिये, सूक्ष्मलोक में रहने वाले व्यक्ति की दक्षता को निश्चितरूप से, अत्यधिक निश्चितरूप से अपंग बना देती है।

ये मेरा दृढ़ विश्वास है कि अंगों का इस तरह से विकट रूप से बदला जाना, आपराधिक रूप से गलत है और वास्तव में, लोगों को, प्रकृति के प्रति ऐसे दुरुपयोग करने की इजाजत नहीं देनी चाहिए। दाता दिल के परावर्तन, प्राप्तकर्ता के प्रभामंडल में दिखाई देते हैं, और दो लोग एक दूसरे के साथ अनुशीलित रहे नहीं भी हो सकते हैं। तथ्य कि एक रंगीन (coloured) और दूसरा श्वेत (white) हो सकता था, को इसके साथ कुछ भी लेना–देना नहीं है। कंपनों की मूल दर, अर्थात् हर व्यक्ति की कंपन की आवृत्ति को इसके साथ, सब कुछ लेना–देना है, और मैं निश्चित रूप से आशा करता हूॅ कि ऐसे प्रत्यारोपण गैर कानूनी (outlawed) हो सकते हैं।

यदि कोई, किसी अंग को, किसी संश्लेषित अंग के साथ बदल रहा है, तो ये एक अलग मामला है, क्योंकि व्यक्ति के चश्मा पहनने, या श्रवण यंत्र लगाने, या कपड़ा पहनने, या बैसाखी का उपयोग करने में, कुछ भी खराब नहीं है।

मैं विश्वास करता हूॅ कि चिकित्सा विज्ञानियों को, कृत्रिम अंगों की युक्तियॉ, जो मानवों पर सुरक्षितरूप से उपयोग की जा सकें, खोजने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, तब दो अस्तित्वों के बीच, कोई भी क्रास बंधन, जो जबतक कि दोनों को अपने–अपने रजत तंतु से अलग न कर दिया गया हो, और दोनों सूक्ष्मलोक में न रहते हों, दोनों अस्तित्वों के लिए एक अपंगता पैदा करता है, नहीं होगा। इसलिए इस विशेष प्रश्न का उत्तर देने के लिए, मैं निश्चित रूप से अंगों के प्रत्यारोपण का विरोध करता हूॅ।

यहॉ एक दूसरा प्रश्न है, जो सामान्य अभिरुचि का होना चाहिए। ये है :–

'समर्पणपूर्वक कार्य करते हुए कुछ लोग, वैश्विक मामलों में परिवर्तन कैसे ला सकते हैं, पर सूचना या निर्देश।'

यदि थोड़े से लोग, निश्चित रूप से, किसी विशेष विषय पर, 'चरणों में' सोंचे, तब वे उस सम्बंध में जो कुछ भी सोचते हैं, वास्तव में, वैसा ही हो सकेगा। अब आजकल लोग किसी विचार को एक या दो सेकण्ड से अधिक थाम कर नहीं रख सकते हैं। यदि आप इस पर संदेह करें, तो स्वयं प्रयास करें, किसी विशेष विषय के ऊपर प्रयास करें और अपनी घड़ी की सेकण्ड की सुई को देखते हुए सोचें। यदि आप ईमानदार हैं, आप पायेंगे कि तब उस तुलना में, जितना कि संभव होने का आप विश्वास रखते हैं, आपका ध्यान, अत्यधिक तेजी के साथ हिलेगा और काफी दूर तक घूमेगा। आपका ध्यान केवल तभी अधिक टिकेगा या कम अस्थिर होगा, यदि आप किसी ऐसी चीज के बारे में सोच रहे हैं, जिसे आप स्वयं करना चाहते हैं, वह कुछ चीज, जो आप करना चाहते हैं, कुछ वह, जो आपको गहराई तक प्रभावित करता है। कोई भी दूसरी चीज, जैसे कि किसी दूसरे व्यक्ति, जिससे आप मिल चुके हैं, की मदद करना– ठीक है, आप अपनी रुचि को बहुत लंबे समय तक टिका कर नहीं रख सकते।

लोगों का विचार स्थिर नहीं है, और कोई भी, उसी चीज के लिए, उसी समय, उतनी ही तीव्रता के साथ नहीं सोचता है। वे आपस में एक दूसरे को घिसती हुई लोगों की भीड़ की भांति हैं, सभी चलते हुए, परंतु एक दूसरे से असम्बद्ध, तबकि यदि लोग, 'कदम' मिलाकर सोच रहे होते, तब वे वास्तव में, पूर्ण चमत्कारों को पा जाते। यदि आप इसके बारे में और अधिक सोचना चाहते हैं, आदमियों की सेना के ऊपर विचार करें, किसी पुल के ऊपर

चलती हुई, सैनिकों की रेजीमेन्ट के ऊपर विचार करें। यदि ये लोग कदम मिलाकर चल रहे होते, तो वे पुल को नष्ट कर देते, और उसी बजह से पुल के ऊपर जाने से पहले, लोगों को 'कदम तोड़ देने के लिए' निर्देशित किया जाता है। इसलिए वे कदम मिलाकर नहीं, लय में नहीं, टहलते हुए, अव्यवस्थित भीड़ के रूप में जाते हैं, और इसलिये कदम मिलाकर चलने में अनेक लोगों का जुड़ता हुआ प्रभाव, नष्ट हो जाता है तब वहॉ, और अधिक लंबे समय तक कोई बल नहीं होता और पुल को कोई हानि नहीं पहुॅचती।

यदि आपको, पूरी तरह से कदम मिलाकर चलते हुए लोग, काफी संख्या में मिल सकें तो वे किसी भी पुल, जिसे बनाया जा सकता हो, को तोड़ सकते हैं, और यदि किसी ने चलना जारी रखा तो वे किसी इमारत को भी नष्ट कर सकते हैं क्योंकि कदमों को लगातार नीचे रखना और ऊपर उठाना, कंपनों की एक ऐसी श्रेणी को बनायेगा कि कंपनों का आयाम या डिग्री काफी बढ़ जाएगी और उस बिन्दु के परे तक बढ़ जाऐगी, जहॉ पुल या इमारत की स्वाभाविक प्रत्यास्थता इसे घेर सके, और तब पुल टूटे हुए कॉच की तरह से चटकना शुरू हो जाएगा।

यदि कोई आधा दर्जन लोगों को पा सके, ओह, और उन्हें निश्चितरूप से, जानबूझकर सही नमूने की तरंगों में विचार करा सके, वे सरकारों को गिरा सकते हैं, या सरकारों को बना सकते हैं, वे किसी देश को दूसरे सभी से उत्तम बना सकते हैं और वे उन चीजों को कर सकते हैं, जो अभी पूरी तरह से असंभव मानी जाती हैं।

शायद ये सौभाग्य ही है कि लोगों का एक साथ, एक दिशा में, एकदम ठीक आवृति पर सोचना, अत्यधिक आसान नहीं है क्योंकि, और मैं आपको इसे पूरी गंभीरता के साथ बता रहा हूॅ, ये कोई मजाक नहीं है, यदि किसी के पास टेढ़े लोगों का गिरोह हो, जिसे ठीक ढंग से साचने के लिए प्रशिक्षित किया गया था, वे किसी बैंक की तिजोरी को तोड़ कर खेल सकते हैं। मेरे प्रिय, कितने तरस की बात है, कि मेरे पास एक छोटा, भला गिरोह नहीं है; धन का काफी अधिक जमावड़ा इकट्ठा करना, अत्यधिक सुखदायक होता, क्या ऐसा नहीं होता? फिर भी, यह सत्यतापूर्वक एकदम संभव है, और वास्तव में, एटलांटिस के दिनों में, ये रोजमर्रा की घटना होती थी।

ईसाई धर्म के मंत्र जाप, उन गुजरे हुए दिनों के अवशेष हैं, मंत्र जाप, जिसको कुछ सोचते हैं कि वे केवल दो हजार वर्ष पुराने हैं, परंतु अभी भी ऐसे मंत्र जाप हैं, जो सुमेरियन और एटलांटियन, दोनों की शक्ति पर बनाए गए मूल गाने हैं। शायद, मूझे इसे दूसरे तरीके से घुमाकर रखना चाहिये, ऐटलांटियन और सुमेरियन, क्योंकि, वास्तव में, ऐटलांटियन, दोनों में सबसे पुरानी सभ्यता वाले लोग हैं।

उन दिनों में, पत्थरों के बड़े खण्डों को, अपने संचालकों के अन्तर्गत एक ही समय में, सोचते हुए प्रशिक्षित पुजारियों की बड़ी संख्या को रखते हुए, ताकि पत्थर हवा में उठकर सीधा ही ऊपर आ जाता, विचारों के द्वारा उठाना संभव था।

यदि आप सोचते हैं कि ये अत्यधिक कल्पनानीत है, याद रखें कि आप एक ऐसी ध्वनि पैदा कर सकते हैं, जो गिलास को तोड़ देगी। यदि आप ध्वनि को बनाकर रखें, आप एक कांच या एक खिड़की को तोड़ सकते हैं और विचार, ध्वनि की मात्र वैसी ही दूसरी शक्ल, अर्थात् एक कंपन है, हर चीज एक कंपन है, और यदि आप ठीक कंपन को गति में व्यवस्थित कर सकें, आप कोई भी चीज प्राप्त कर सकते हैं।

दूसरा प्रश्न, 'पाठक आश्चर्य कर रहे हैं कि समय कैप्सूलों (time capsules) से स्वतंत्र विश्व को जानने का सही समय कब होगा।'

सही समय अभी नहीं है। इस सभ्यता के अंत तक नहीं, इस सभ्यता, जिसे हम वर्तमान में जानते हैं, के अंत तक नहीं है। बाद में–ओह। आपके जीवनकाल में नहीं, इसलिए चिन्ता न करें–काफी बाद में भूकम्प होंगे, जो वास्तव में, पृथ्वी की ऊपरी पर्त को हिला देंगे, और खुलने के लिए तैयार ये समय केप्सूल, सतह पर फैंक दिए जायेंगे। वे काफी अधिक संख्या में हैं। एक बहुत बड़ा केप्सूल मिस्र में है; मैं मानता हूॅ कि तकनीकी रूप से यह एक कैपसूल है, परंतु वास्तव में, ये मिस्री रेगिस्तान की (जगह) बदलती रहने वाली रेतों में, काफी नीचे दबाया हुआ एक बहुत बड़ा प्रकोष्ठ है। प्रकोष्ठ पूरी तरह से कलाकृतियों, जो दसियों हजार साल पहले, हॉ, दसियों हजार साल पहले अस्तित्व में थीं, का एक पूर्ण संग्रहालय है।

अभी उपयोग में आने वालों की तुलना में, अत्यंत–अत्यंत भिन्न प्रकार के हवाई जहाज हैं, हवाई जहाज, जो प्रतिगुरुत्व (anti-gravity) के द्वारा कार्य करते हैं, ताकि मोटर की शक्ति, भार को समर्थन देने में व्यय नहीं होती, वल्कि इसका उपयोग केवल विमान को आगे धकेलने में किया जाता है। मैं आपको एकदम सत्यता के साथ बताऊंगा कि एक ऐसा हवाई जहाज, मैंने देखा है।

एक युक्ति, विशेष रूप से गृहिणी के लिए, या उस व्यक्ति के लिए, जिसे भार ढोने पड़ते है, अभिरुचि की

होगी। ये एक प्रकार का हेंडिल है, जिसे, जो कुछ भी ढोना हो, उसके साथ संलग्न किया जाता है, और तब कोई हेंडल को केवल ऐसे पकड़ता है, जैसे कि आप किसी बास्केट को ले जा रहे हों। यदि पार्सल या बंडल भारी है, तब हेंडल अधिक नीचे दब जाता है, यदि पार्सल बहुत अधिक भारी नहीं है, तब हेंडिल बहुत अधिक दूरी तक नहीं दबता। इन युक्तियों से प्रत्येक, इसप्रकार बनाई गई थी, ताकि कोई बात नहीं, भले ही पार्सल एक टन या दस पौण्ड का हो, व्यक्ति को एक पौण्ड से अधिक प्रयास व्यय नहीं करना पड़ता था।

पिछले लंबे भूतकाल की शताब्दियों में, प्रति गुरुत्व पूरी तरह से सामान्य, पूरी तरह से सामान्य चीज था, परंतु उन दिनों के पुजारी, जो फौजों के नायक भी थे, आपस में एक दूसरे से भिड़ गए, और हर पक्ष ने, इस परिणाम के साथ कि उन्होंने अपनी पूरी सभ्यता को हवा में विस्फोटित कर दिया, और ये रेडियोधर्मी धूल के रूप में नीचे आई, दूसरे की तुलना में, बड़े और अच्छे हथियार पाने का प्रयास किया था।

बाद में, जब ये टाइम केप्सूल खोले जाते हैं, तीन आयामी टेलीविजन देखा जाएगा, और दो कैमराओं या दो लैंसो के माध्यम से, न केवल तीन आयामी, वल्कि एक चीज, जिसमें वास्तव में, छोटे आकार के वास्तविक लोग, नाटकों, नृत्यों और वादविवादों को भी करते हुए दिखाई देते हैं।

उन दिनों में फोटोग्राफी भी अलग थी, सपाट फोटोग्राफ, जिस तरह के हम आज देखते हैं, जैसी चीजें नहीं थीं। हर चीज 'ठोस' थी, स्वयं त्रिविमीय की तुलना में अधिक त्रिविमीय। समीपस्थ चीज है, बड़े–बड़े अपरिष्कृत होलोग्राम, जिनके साथ वैज्ञानिक अभी प्रयोग कर रहे हैं, जिसमें आप किसी फोटोग्राफ, जिसको आपने लिया है, के पीछे, लगभग देख सकते हैं। एटलांटिस के दिनों में आप (पीठ के) पीछे देख सकते थे!

सैकड़ों शताब्दियों पहले, विश्व में प्रबलतम सभ्यता थी, जिसको दुनियॉ ने उस समय तक देखा था, परंतु वहॉ ऐसी उथल–पुथल हुई कि, जो बचा था, वह लगभग पागल हो गया, और उन्हें एकदम असभ्य स्थिति से प्रारंभ करना पड़ा और विज्ञान का तथाकथित वर्तमान युग, जिसे किडंरगार्टेन चरण कहा जायेगा, आ चुका है, जबकि एटलांटिस अपने चरम पर था।

अनेक लोग, एटलांटिस में अविश्वास करते हैं, जो वास्तव में, मात्र एकदम मूर्खता है। वे उन मछुआरों की भांति हैं, जो मछली पकड़ने के लिए बाहर जाते हैं और चूंकि वे कुछ भी नहीं पकड़ पाते, वे कहते हैं कि, 'समुद्र में अब कोई मछलियां नहीं हैं, वे सब मर चुकीं हैं।'

हॉ एक एटलांटिस था और विश्व के एक निश्चित भाग में, जमीन के अंदर गहराई में, एटलांटिस के जीवित अवशेष अभी भी हैं, और मुझे इसे स्पष्ट करने दें कि विश्व का वह भाग, शास्ता पहाड़ (mount Shasta) **नहीं** है। शास्ता पहाड़ के सम्बंध में; बेमतलब की सभी बातों पर, जिन्हें आप पढ़ते हैं या जो शास्ता पहाड़ के सम्बंध में बताई गई हैं, विश्वास नहीं करें; वह केवल एक सामान्य क्षेत्र है, जिसको उन लोगों के द्वारा, जो न केवल धन वल्कि धन के बोरों को तेजी से कमाना चाहते थे, अत्यधिक प्रकाशित किया गया है।

मेरी कामना है कि मैं आपको कुछ चीजों को बता पाता, जिन्हें मैं पूर्णतः, निश्चितरूप से **जानता हूॅ**, परंतु कुछ निश्चित चीजें हैं, जिन्हें वर्तमान में बताया नहीं जा सकता। मैं *थ्रेशर (Thresher)* और *स्कार्पियोन (Scorpion)* पनडुब्बियों के बारे में वास्तविक सत्य को जानता हूॅ, और मैं जानता हूॅ कि उनके साथ क्या हुआ और क्यों। कहानी, यदि इसे बताया जा सके, तो डर और उत्तेजना के कारण, आपकी कंपकंपी छूट जायेगी (cold chills run up and down your spine), परंतु अभी (उचित) समय नहीं है। अनेक चीजें हैं, जो बताई जा सकती थीं, परंतु ठीक है, ये पुस्तकें हर जगह प्रसारित होती हैं, अनेक अनेक लोग इन्हें पढ़ते हैं, और अनेक लोग हैं, जिनको पता नहीं होना चाहिये, कि कुछ लोग जानते हैं कि वास्तव में क्या हो रहा है। यद्यपि, आप इसे ले सकते हैं, कि थ्रेशर और स्कार्पियन के रहस्य, उसकी तुलना में जिस पर आप कभी विश्वास करेंगे, अंजान चीजें हैं।

'परंतु आप जानवरों में अत्यधिक रुचि रखते दिखाई देते हैं,?' पत्र में कहा गया था, 'और फिर भी, आप कहते हैं कि आप शाकाहार में विश्वास नहीं करते। क्यों ? आप, जानवरों के प्रति प्रेम और शाकाहार के विरुद्ध नापसंदगी, दोनों का मिलान कैसे करते हैं।

मैं सर्वाधिक पक्के तौर पर विश्वास करता हूॅ कि आदमी के पास एक शरीर होता है जिसे अस्तित्व के इस मंच पर बनाये रखने के लिये मांस की आवश्यकता होती है। अब, मझे आपको कुछ चीज बताने दें। अनगिनत वर्षों पहले– वर्षो, वर्षो, और वर्षो पहले मानव का एक प्रकार था, जो पूरी तरह शाकाहारी था। वह खाने में इतना व्यस्त (रहता) था, कि उसके पास किसी भी दूसरी चीज के लिये समय नहीं था। उसके दिमाग में मांस खाना कभी नहीं आया। ताकि वह आवश्यक शाकों, फलों और मेवाओं की बहुत बड़ी राशि के साथ व्यवहार कर सका। उसके पास

एक अतिरिक्त अंग था, जिसका अल्पविकसित अंतिम अवशेष है, अपेंडिक्स (appendix)।

वह प्रयोग पूरी तरह असफल रहा। पृथ्वी के बागवानों ने पाया कि शाकाहारी आदमी अकुशल था, क्योंकि किसी उचित (worthwhile) काम करने में सक्षम बनने के लिये, उसका एक निश्चित मात्रा में आवश्यक सेल्यूलोज (cellulose) लेना, एक अत्यंत निषेधात्मक (probihitive) मामला था। वह इतने लंबे समय तक, हर समय खाना खाता ही रहेगा, कि उसके पास किसी भी रचनात्मक कार्य को करने के लिये कोई समय नहीं होगा। और इसलिये पृथ्वी के बागवानों ने उस प्रकार के मनुष्य को मिटा दिया, और यदि आप मिटा देना शब्द पसंद नहीं करते हैं तो हमें कहने दें कि उन्नयन के माध्यम से मानव जाति मांसाहारी में बदल गई।

हमें मूल तथ्यों का सामना करना है और मूल तथ्यों में से एक ये हैः सभी शाकाहारी पदार्थ सेल्यूलोज से समर्थित है। अब, आप फीते वाले पर्दो की कल्पना करें, एक सुंदर खुले हुए काम वाला जाल, और तब आप छेदों को खाने के पदार्थों वाले एक पेस्ट स्टफ से भर दें। मानते हुए कि आपको फीते वाले पर्दे खाने थे, ताकि छेदों में पैक किये गये खाने का मूल्य आपके शरीर में अवशोषित किया जा सके। ये थोड़ा कल्पनातीत लगता है, क्या ये नहीं लगता ? परंतु ये केवल वह है, जो आप तब करते हैं, जब आप काफी सारा सलाद या बंदगोभी या दूसरे शाक या फल खाते हैं। जो आप खा रहे हैं, वह सेल्यूलोज का एक स्पंज है, जिसके छेद खाने से पैक हैं, परंतु स्पंज की सामग्री बहुत सारी जगह ले लेती है, इसलिये खाने की पर्याप्त मात्रा को पाने के लिये किसी को सेल्यूलोज का अत्यधिक आयतन लेना होगा, और बेचारा, दीन शरीर, सेल्यूलोज को पचा नहीं सकता, आप जानते हैं, इसे मल के रूप में निकालना पड़ता है।

अपने पूरे जीवन में, मैं ऐसे किसी शाकाहारी से कभीनहीं, कभी नहीं मिला जो कि कोई मेहनत वाला काम कर सकता हो। वास्तव में, यदि वह, दूसरे लोगों को काम करने देते हुए, पूरे दिन अपने चूतड़ पर बैठा रहा हो, तब निस्संदेह वह बच निकल सकता था, परंतु वह बहुत अधिक प्रखर नहीं होगा। यदि किसी संयोगवश, वह प्रखर होता, तब आप समझ सकते थे कि यदि वह प्राकृतिक रूप से जीवित रहा है, तो वह किसी पैबन्द लगे हुए जैसा प्रखर (darn sight brighter) होगा।

एकदम सत्य में, क्या आपने कभी किसी नौसैनिक या किसी व्यक्ति को, जो कठोर शारीरिक कार्य करता हो, जो केवल शाकाहार और फलों पर रह सकता हो, देखा है ? आपने नहीं देखा होगा, क्या आपने देखा है, अब आप इसके ऊपर विचार करें?

परंतु हम अपने पशु वाले काम पर वापस चलें। मैं यथार्थ में पशुप्रेमी हूँ, मैं सभी पशुओं को प्रेम करता हूँ और मैं आपको आश्वस्त कर सकता हूँ कि सभी पशु जानते हैं कि उन्हें किसी समय मरना है, और यदि वे किसी लाभदायक उद्देश्य के लिये मर सकें, तो ये उनके खुद के कर्म में सहायता देता है।

पशु, जो खाने के लिये पाले जाते हैं, उनकी देखभाल की जाती है, सावधानीपूर्वक उनका प्रजनन कराया जाता है, उनका इलाज कराया जाता है। झुंड को अत्यंत सावधानी के साथ पर्यवेक्षित किया जाता है, ताकि वहॉ केवल स्वस्थ पशु ही रहें।

जंगली अवस्था में आप वे पशु पाते हैं, जो बीमार या कमजोर हैं, या जो किसी तरह से घायल हो गये हैं, या वे भी, जिनमें कैंसर या फेफड़े के कष्ट जैसी कोई बीमारी है, और उन्हें केवल अपने दीन अस्तित्व को घसीटना पड़ता है। यह मानते हुए कि किसी पशु की टांग टूट जाती है, तब जबतक कि वह दुख और भूख के कारण मर न जाये, वास्तव में, उसे एक दीनतापूर्ण अस्तित्व में जिन्दा रहना होता है, फिर भी, झुंड के किसी जानवर की तत्काल देखभाल की जायेगी।

यदि कोई भी किसी जानवर को न मारे, तब शीघ्र ही दुनियॉ हर प्रकार के जानवरों से उमड़ पड़ेगी। मवेशी बड़ी संख्या में होंगे और यदि मवेशियों की संख्या अधिक बड़ी होगी, तब हिंसक जानवरों की भी अधिक बड़ी संख्या होगी, जिसे मवेशियों की संख्या को नीचे बनाये रखने के लिये, प्रकृति स्वयं उपलब्ध करायेगी।

यदि मनुष्य मांस खाते हैं तो एक जानवर को कष्टरहित ढंग से और तेजी से मारना, उनके लाभ के लिये ही है। एक जानवर को खाने के लिये मारना भी, जानवरों की संख्याओं को कम बनाये रखना ही है और उनको नियंत्रण में रख रहा है ताकि अनियंत्रित संख्या में बढ़ने पर, और जंगली होकर दौड़ने पर, वे पदावनत न हो जाऐं।

अब भले ही हम चाहें या न चाहें, जहॉ तक कि उनकी संख्या का सवाल है, आदमियों को भी नियंत्रण में रखना पड़ता है। यदि मनुष्य अत्यधिक संख्या में होंगे, तब अपरिहार्य रूप से एक बड़ा युद्ध या गंभीर भूकम्प होगा

या किसी प्रकार की महामारी या बीमारियॉ होंगीं, जो बड़ी संख्या में मानवों को ले जाती हैं। ये वही है, जिससे पृथ्वी के बागवान, बढ़े हुए लोगों को कम करते हुए, श्रेणियों को हल्का बना रहे थे; कुल मिलाकर, लोग, मात्र एक भिन्न प्रकार के पशु हैं।

और सभी लोग, जो गौमांस का छोटा सा टुकड़ा खाने वाले व्यक्ति के इस विचार पर, कष्ट के साथ काफी जोर से चिल्लाते हैं, ठीक है, तो जीवित बन्दगोभी (lettuce) खाने वाले के सम्बंध में क्या? यदि कोई गौमांस का टुकड़ा, या चिकन खाता है, तो मांस का धारण करने वाला मूल स्वामी (पशु) तो अपने काटे जाने को महसूस करने के लिये वहॉ नहीं है, फिर भी, लोग जाते हैं और जीवित बन्दगोभी को खाते है। जीवित नाशपातियों को खाते हैं, इस प्रकार वे अपने तथाकथित मानवीय सिद्धान्तों की संगत कैसे बिठाते हैं।

विज्ञान, यद्यपि ये स्वार्थी और अविश्वासी है, ने अब खोज लिया है कि पौधों में भी भावनायें होती हैं, पौधे, यदि वे उन लोगों के द्वारा सहलाये जायें, जो उनके प्रति सहानुभूति रखते हैं, अधिक तेजी से बढ़ेंगे। पौधे संगीत के प्रति भी प्रतिसाद (response) देते हैं। उपकरण हैं, जो ये इंगित कर सकते हैं कि कोई पौधा कितना कष्ट झेल रहा है। आप किसी बंदगोभी की चीख, जब आप उसके बाहरी पत्तों को उखाड़ते हैं, नहीं सुन सकते हैं–नहीं न, क्योंकि इसके पास कोई स्वर तंतु नहीं है, और फिर भी, उपकरण हैं, जो कष्ट की उस चीख को, अपरिवर्ती के फटने के रूप में अभिलेखित (record) कर सकते हैं।

ये परियों की कहानी का मामला नहीं है, ये वास्तविक तथ्य है, ये वह सामिग्री है, जो खोजी जा चुकी है, और बारबार सिद्ध की जा चुकी है। रूस, इंग्लैंड और अमेरिका की शोधशालाओं में ये सिद्ध हो चुका है।

जब आप कुछ बेरों को तोड़ते हैं, और उन्हें अपने मुंह में ठूंस लेते हैं, ठीक है, पौधे की भावनाओं के बारे में क्या? आप नहीं चले जाते, और गाय में से कोई लोथड़ा नहीं नोंच लेते, और अपने मुंह में नहीं भर लेते, क्या ऐसा करते हैं? यदि आपने गाय के ऊपर कोशिश की होती, तो तुरंत ही वह इस पर आपत्ति करती, परंतु चूंकि कोई पौधा अपने कष्ट को बता नहीं सकता है, जब आप मांस के बदले में पौधों को खाते हैं, जो खाये जाने के कष्ट को अनुभव नहीं कर सकते, आप समझते हैं कि आप एक प्रसन्न, आश्चर्यजनक रूप से विनोदी, मानवतावादी हैं।

मैं अत्यंत खुले दिल से, विश्वास करता हूॅ कि शाकाहारी काफी कुछ सनकी और पागल होते हैं और यदि वे केवल अपने मूर्ख रवैये से बाहर आ सकें और याद रख सकें कि पृथ्वी के बागवानों ने, उनके शरीरों को कुछ निश्चित खानों के लिये बनाया था, तब वे अपने मानसिक स्वास्थ्य में बहुत कुछ अच्छे होंगे।

यदि आपके पास एक कार है, तब आप टंकी को बहायेंगे नहीं, और न हीं उसे पानी से भरेंगे, क्या आप करेंगे, और कहेंगे कि शायद आप तेल का उपयोग नहीं कर सकें, क्योंकि वह कहीं जमीन में से आता था, और जमीन के किसी को अंदर घायल करता था। यदि आप अपने शरीर को, उस खाने पर चलाने का प्रयास करें, जिसके लिये उसे डिजायन नहीं किया गया है, तो आप वैसे ही होने जा रहे हैं, जैसे कि एक व्यक्ति, अपनी कार की टंकी में तेल का उपयोग नहीं करता, परंतु बदले में, नमकीन पानी का उपयोग करता है।

यदि हम तर्कपूर्ण होने जा रहे हैं, और हम ये कहने जा रहे हैं कि शाकाहार अच्छा है, तब किसी के कमरे में, टूटे हुए फूलों के उपयोग की आदत के सम्बंध में क्या? पौधे जीवित अस्तित्व हैं, और जब आप फूलों को तोड़ते हैं, तो आप पौधों के यौनांगों (sex organs) को काटते हैं, और उन्हें गुलदस्तों में लगाते हैं, और वास्तव में, मानव भयंकर सदमे के साथ दुखी होंगे, यदि उनके यौनांग काट दिये जायें और किसी दूसरी भिन्न प्रजाति के आनंद करने के लिये, उनके गुलदानों में लगा दिया जाये।

मुझे यहॉ, ये कहने के लिये कि जब मैं अस्पताल में था, तो मुझे एक अत्यधिक सुखद आश्चर्य हुआ, विषयांतर करने दें। काफी दूर, प्रशान्त महासागर के तट से, अमेरिका से, अत्यंत दयालु महिलाओं के एक समूह ने, सेंट जोहन के शहर में, एक फूल बेचने वाले को, अस्पताल में मुझे कुछ पौधे देने के लिये तार किया था। वास्तव में, मैंने इसकी बहुत अधिक सराहना की थी। महिलाओं ने कोई पता नहीं दिया था, परंतु मैं उन्हें ढूंढने में सफल रहा!

एक व्यक्तिगत पसंद– मैं फूलों को तोड़ना पसंद नहीं करता, उन्हें काटने में, मुझे उन पर दया आती दिखती है। बदले में, मैं एक पूरे पौधे को अत्यधिक प्राथमिकता दूंगा, यहॉ किसी के पास एक जीवित वस्तु है, जो बढ़ रही है, और केवल मर नहीं रही है। मैं अक्सर उन लोगों को सोचता हूॅ, जो कटे हुए फूलों की लंबी लंबी डालियॉ भेजते हैं– ठीक है, तो छोटे बच्चों के सिर क्यों न काट लिये जायें, और उन्हें सींक में चुभा दिया जाये

और उन्हें किसी कमरे में सजा दिया जाये!

क्या आपने कभी, हमारी अपनी बूढ़ी पृथ्वी की अवस्था, जिसमें वह है, की सोची है? आप जानते हैं, ये एक बड़ा घपला है। उद्यान के साथ इसकी तुलना करें। अब, यदि उद्यान को ठीक तरह से बना कर रखा गया है, उसमें कोई जंगली खरपतवार या वैसी कोई चीज नहीं है, सभी कीटाणु नियंत्रण में रखे गये हैं, पेड़ों पर कोई कुम्हलाहट नहीं है, और फल पूरे तथा स्वस्थ हैं।

पौधों की छंटाई की जानी है, बीमार हटा दिये जाने हैं। अक्सर हर बार, फलों वाले पेड़ छांटने पड़ते हैं, कई बार उनमें कलम लगानी पड़ती है। बगीचे की सावधानीपूर्वक निगरानी करना और अवांछित प्रजातियों के बीच, संकर युग्मन (cross-pollination) को रोकना आवश्यक है। यदि बगीचे को संवारा जाये, जैसा कि होना चाहिए, तो ये सुंदरता की चीज हो जाती है।

परंतु बागवानों को दूर जाने दें, बगीचे को एक या दो साल के लिये निष्क्रिय रहने दें, खरपतवार उगेगी और काफी नाजुक पौधों को रोक देगी और मार देगी, अनियंत्रित कीट आयेंगे और पेड़ों पर मुरझाहट दिखाई देगी। और अधिक समय के लिये नहीं, वहॉ गोल, पतले फल होंगे, परंतु शीघ्र ही, वे झुर्रीदार, सभी प्रकार से बूढ़े धब्बों के साथ झुर्रीदार हो जायेंगे। एक दुखपूर्वक उपेक्षित बाग का, एक दुखान्त दृश्य होता है।

या हमको बाग से जीवित प्राणियों की ओर चलने दें, क्या आपने कभी दलदल में जंगली पौनियों को या जहॉ चराई कमजोर है, जंगली जानवरों को देखा है? वे कमजोर और नाटे हो जाते हैं, उनमें से कुछ सूखे से पीड़ित होते हैं, अनेक त्वचा की बीमारियों से पीड़ित होते हैं। सामान्यतः वे अत्यधिक अस्तव्यस्त दृश्य वाले, नन्हें बौने प्राणी, अस्तव्यस्त और बहुत बहुत जंगली होते हैं।

अब पशुशाला में अच्छी तरह से रखे गये जानवरों को देखें। यहॉ आप, सावधानीपूर्वक प्रजनन कराये गये, वास्तव में, उनमें से दोषयुक्तों को बाहर निकाले हुए, अच्छी नस्ल के पशुओं को देखेंगे। आप अच्छी नस्ल वाले घोड़ों को या सर्वोत्कृष्ट वंश वाली गायों को पाते हैं, वे स्वस्थ हैं, वे बड़ी और मजबूत दिखने वाली हैं, वे जिन्दा रहने में प्रसन्न होती दिखती हैं, और आप, ये जानते हुए कि वे आपसे डर कर भागने वाली नहीं हैं, उनको आनंद के साथ देख सकते हैं। वे जानती हैं कि उनकी देखभाल की जा रही है।

अब पृथ्वी की सोचें, यहॉ के लोगों की सोचें। जमा लोग (stock), गरीब, और गरीब, होते जा रहे हैं। लोग और अधिक अनैतिक होते जा रहे हैं, लोग अधिक भ्रष्ट संगीत को सुनते जा रहे हैं, और हमेशा ही भद्दे चित्रों को देख रहे हैं। अब अधिक समय से, ये वह युग नहीं है, जब सुंदरता और आध्यात्मिकता का महत्व होता था, अच्छे संगीत को, अच्छे चित्रों को लोग अब और अधिक प्यार नहीं करते, हर चीज को फाड़ा जा रहा है। आप किसी महान आदमी को, उसके सम्बंध में दयाहीन चीजों के कहने का प्रयास करने वाले मंद बुद्धि के धब्बे से रहित नहीं पा सकते। आधुनिक काल के एक महानतम व्यक्ति सर विंस्टन चर्चिल (Sir Winston Churchill) ने, शायद, संसार को साम्यवाद के बादल के अंतर्गत आने से बचाया था। फिर भी, केवल बुराई की भावना, जो आजकल वातावरण में व्याप्त है, के कारण, श्रीमान् विंस्टन चर्चिल के अपने आलोचक थे।

बगीचे में, जो पृथ्वी है, जो हमारा संसार है, बीज बोये गये हैं। खरपतवार झटपट उगती है। आप उन्हें गलियों में अपने लंबे बालों और गंदे रंगरूप (complexion) के साथ देख सकते हैं और यदि आप उन्हें नहीं देख सकते, आप प्रसन्न हो सकते हैं, ठीक है, आप उन्हें गजों दूर से सूंघें।

प्रजातियों को तराशना आवश्यक होता है, स्टॉक को फिर से भरपूर करना आवश्यक होता है, शीघ्र ही वह समय आयेगा जबकि पृथ्वी के बागवान, अपने समयानुकूल निरीक्षण के लिये वापस आयेगें और यहॉ की अवस्थाओं को एकदम असहनीय पायेंगे।

इस सम्बंध में कुछ किया जायेगा। मानव जाति को इतना कि विलंब हो जाये, खराब बीजों के लिये नहीं छोड़ा जायेगा। एक समय आयेगा जब मनुष्यों की सभी प्रजातियॉ एकजुट हो जायेंगी, और तब काले या सफेद या पीले या लाल लोग, नहीं होंगे; पूरा संसार टैन (tan) प्रजाति के द्वारा आबाद होगा, और वर्चस्व वाला वह रंग होगा–टैन।

टैन लोगों की प्रजाति आने के साथ, मानव प्रजाति में प्रवेश कराया गया काफी ताजा जीवन होगा। लोग फिर से, जीवन की अच्छी चीजों का मूल्य समझेंगे, लोग फिर से, आध्यात्मिक चीजों को मूल्य देंगे, और जब मानव जाति पर्याप्त अंशों तक आध्यात्मिक हो जाती है, मानव जाति के लिये, एक बार फिर, दुरानुभूति के द्वारा देवताओं के साथ– पृथ्वी के बागवानों के साथ बात करना संभव होगा।

वर्तमान में, आदमी हताशा की कीचड़ में डूब गया है, अपनी खुद की आध्यात्मिकता की कमी में डूबा हुआ, इतना नीचा डूबा हुआ है कि उसके मौलिक कंपन इस हद तक घट गये हैं कि किसी भी उच्चतर प्राणी के द्वारा, उसे दुरानुभूति से नहीं सुना जा सकता, उसके साथियों के द्वारा भी नहीं, परंतु समय आयेगा जब इस सब का इलाज हो जायेगा।

मैं आपको न तो बौद्धमत, न हीं ईसाइयत और न हीं यहूदी मत देने का प्रयास कर रहा हूँ, परंतु मैं पूरे निश्चय के साथ कह रहा हूँ कि किसी (न किसी) प्रकार के धर्म की ओर लौटना होगा, क्योंकि, केवल धर्म ही किसी को आवश्यक आध्यात्मिक अनुशासन दे सकता है, जो अपवित्र मानवों की एक भीड़ को, अनुशासित लोगों के समूह, जो प्रजाति को जमीन में जोतने के बजाय, इसको आगे ले जा सकता है, में बदल देगा, और अस्तित्वों का एक नया ताजा सेट यहॉ रखा जा सकता है।

अब, मतभेद की वर्तमान स्थिति में, ईसाई भी ईसाइयों के विरुद्ध लड़ते हैं। उत्तरी आयरलैंड में कैथोलिकों और प्रोटेस्टेंटों के बीच युद्ध–इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कौन सही है या कौन गलत, वे दोनों ही ईसाई होने के आरोपी हैं, उन दोनों पर समान धर्म पालन करने का अभियोग है। क्या इससे कोई फर्क पड़ता है कि एक संप्रदाय अपने आपको बायें हाथ से क्रॉस करता है, जबकि दूसरा दायें हाथ से करता है। ये बहुत हद तक वैसा ही है, जैसा कि 'गुलीवर की यात्रा (Gulliver's Travel)' की एक कहानी में, जहॉ एक मिथकीय देश के लोग, अंडे का कौन सा सिरा पहले खोला जाना चाहिये, छोटा सिरा या चौड़ा सिरा? के सम्बंध में युद्ध में गये थे! ईसाइयत, सम्भवतः, दूसरे राष्ट्रों के धर्म परिवर्तन का प्रयास कैसे कर सकती है, जबकि ईसाई ही, ईसाइयों के विरुद्ध लड़ते हैं, क्योंकि प्रोटेस्टेंट और कैथोलिक दोनों ही ईसाई हैं।

अध्याय – दस

घिसे बिना नग पर चमक नहीं आती, और न हीं परीक्षाओं बिना के आदमी पूर्ण होता है।

नाश्ता शीघ्र ही समाप्त हो गया। मात्र पचास ग्राम उबले हुए अंडे, ब्रेड के एक टुकड़े और पॉच ग्राम मक्खन के नाश्ते का उपयोग करने में, किसी को अधिक समय नहीं लगता। दो कप अनुमत चाय, 'झोले (पेट) में, नीचे जाने में' अधिक समय भी नहीं लेती।

बूढ़े आदमी ने अपने पलंग के बायीं ओर का बटन दबाया और मोटर घूमी, और पीठ का खंड, पैंतालीस डिग्री झुकाव पर ऊपर उठा, 'ओह!' क्लियो मुस्कराई, 'जब ये चीज ऊपर जाती है, मैं इसे प्यार करती हूॅ।'

'ठीक है, अब मुझे काम करना है, और तुम कमबख्तों को, मुझे फिर से परेशान नहीं करना चाहिये। तुम जानती हो कि हमने कल क्या मजा लिया था, नहीं न?''

कुमारी क्लियो की पूंछ का सिरा, आश्चर्य के साथ झटके से उछला और उसने अपने आदतन स्थान, खिड़की के दासे के ऊपर और रेडियेटर के ऊपर मटरगश्ती की।

'कल क्या मौज की थी?' रा'आब ने पूछा। 'कल की कोई भी मौज मुझे याद नहीं।'

बूढ़े आदमी ने ऊपर देखा और कहा, 'मैंने शाम को किताब में कुछ करने का प्रयास किया था, और मोटी बिल्ली टेडी ने कहा कि मुझे ये नहीं करना चाहिए। उसने कहा मैं पर्याप्त ठीक नहीं दिखता हूॅ, और जब मैं नहीं रुका, तो उसने मुझे फिर से कहा, और तब वह मेरे ऊपर कूदती रही और मुझे चपत मारती रही।'

'उसके लिये अच्छा है,' रा'आब ने कहा, 'वह केवल आपकी देखभाल कर रही है।'

'हॉ, निश्चित ही वह मेरी देखभाल कर रही है, परंतु वह मुझ पर कूदती रही और गड़बड़ करने के लिये चीजों को धकेलती रही, उसने मेरी छाती पर बैठने का प्रयास किया, इसलिये मैं काम नहीं कर सका, और यदि मैं नहीं चलता हूॅ और इस किताब को नहीं करता हूॅ, तो डॉक्टर के सभी बिल कौन चुकाने वाला है?'

बूढ़े आदमी ने, विचारणीय उदासी के साथ, अभी भी, अपने से धन कमाने वाले सभी लोगों के बारे में सोचा; उदाहरण के लिये, सैकर एंड वार्बर्ग (Secker & Warburg) ने पहले *द थर्ड आई (The Third Eye)* को प्रकाशित किया था– ओह, लगभग पन्द्रह वर्ष पहले, उन्होंने इसे कड़ी जिल्द (hardback) के रूप में छापा था और तब उन्होंने इसके अधिकार, एक नर्म दिल वाले प्रतिष्ठान को बेच दिये और तब से सैकर एंड वार्बर्ग, नर्म जिल्द वाले संस्करण पर रॉयल्टी का पचास प्रतिशत लेते रहे हैं। और अमेरिका में डबलडे (Doubleday) के साथ वही चीज होती है। दूसरे प्रकाशक हैं, जो अपने हाथ अन्दर डुबा रहे हैं, और जैसा कि बूढ़े आदमी ने कहा, ये आश्चर्य नहीं है कि उसके पास कभी कोई धन नहीं था, जबकि कर संग्राहकों सहित, अनेक लोग थे, जो उसमें से धन, जो उसने कमाया था, का अपना हिस्सा पाने का प्रयास कर रहे थे।

बूढ़े आदमी ने, इंग्लैंड के कोर्गी (Corgi) के विषय में, हमेशा सबसे दयालु पदों में सोचा, क्योंकि साहचर्य की पूरे लंबी अवधि में, कभी कोई असहमति नहीं हुई, न कभी कोर्गी और उसके बीच, एक शब्द का भी विवाद हुआ। उसने विचारणीय स्नेह के साथ, कष्टमय हद तक ईमानदार व्यक्ति, जिसने हमेशा अपना सर्वोत्कृष्ट और जैसा कहा, वैसा ही किया, स्टीफन आस्के (Stephen Aske) प्रतिष्ठान के अपने एजेंट, श्रीमान् ए. एस. नाइट (Mr. A. S. knight), के लिये सोचा। बूढ़े आदमी के पास, उसके लिये, विचारणीय प्रेम था। ये सब इसलिये हुआ, क्योंकि पहले वाले एक एजेंट, जिसके साथ बूढ़ा व्यवहार कर रहा था, ने कहा था, 'यदि आप किसी अच्छे एजेंट को जानते हैं, उसका पता लगा लें।' और बूढ़े आदमी ने ठीक वैसा ही किया–श्रीमान नाइट।

परंतु अब, एकबार फिर, काम करने का समय, जानकारी के कुछ और अंशों को, उन लोगों तक, जो इसकी सराहना करेंगे, भेजने का समय था। बूढ़ा आदमी अपने कागजों की ओर मुड़ा और मोटी बिल्ली टेडी ने अपना सिर उठाया और ऑखें तरेरकर देखा और प्रबल दुरानुभूति संदेश भेजा, 'कोई मजाक नहीं, आप सहसा ही अत्यधिक काम नहीं कर सकते, अन्यथा इसबार क्लियो और मैं, दोनों ही आपके ऊपर कूदेंगीं।' ऐसा कहते हुए वह आराम के साथ सिमट गई और (उसने) आगे के विकासों (developments) की प्रतीक्षा की।

बूढ़े आदमी के पास काफी संख्या में प्रश्न, काफी संख्या में पत्र आये थे। चीजें चाहते हुए, मदद चाहते हुए, सुझाव चाहते हुए लोग, परंतु अधिकांश लोग, बूढ़े आदमी को अपने साथ सहमत कराना चाहते थे, ताकि वे

अपने खुद के मनों में, न्यायसंगत हो जाऐं। अनेक लोगों ने, बूढ़े आदमी को किसी एक व्यक्ति और किसी दूसरे व्यक्ति के बीच, ये तय करने के लिये कहते हुए कि क्या वे सुखपूर्वक विवाहित होंगे और शेष सबकुछ, अपने प्रेम प्रसंगों के बारे में लिखा, परंतु अधिकांश लोग लोगों ने कोई सलाह, जिसका कोई अर्थ, कुछ नहीं करना हो, चाही। वे केवल यह कहा जाना चाहते थे कि वे संतोषजनक रूप से काम कर रहे थे, और उन्हें कोई और अधिक प्रयास करने की आवश्यकता नहीं है। वे ये बताया जाना चाहते थे कि भाग्य उनके प्रति अत्यधिक कठोर था और कि वे गहनतम सहानुभूति, और केवल त्याग देने और कुछ काम नहीं करने के लायक थे, आप भाग्य के विरुद्ध नहीं लड़ सकते। आप जानते हैं कि यदि आप करना चाहें, आप कर सकते हैं।

लोग, अत्यधिक सावधानीपूर्वक बनायी गयी योजना, जिसे वे करने जा रहे हैं, के साथ पृथ्वी पर आते हैं। वे उत्साह और निश्चय से पके हुए होते हैं। वे एकदम ठीक से जानते हैं कि वे आगामी जीवन में कितने सफल होने वाले हैं। इसलिये वे उमंग से भरपूर धर्मयोद्धाओं की भांति पृथ्वी की यात्रा प्रारंभ करते हैं। जब वे पृथ्वी पर नीचे आते हैं, और जब उनके पास, उनके पीछे, कुछ वर्षों का अनुभव होता है, उनमें जड़ता या आलस आ जाता है, वे जीवन के साथ, भ्रान्ति से मुक्त (disillusioned) हो जाते है, जो एकदम सीधे आलसी कहने का अधिक नर्म तरीका है, जो वास्तव में सत्य है। लोग अपनी जिम्मेदारियों से छिपने का, योजना, जिसका उन्होंने, स्वयं उन्होंने ही, अनुमोदित किया था, से बचने का प्रयास करते हैं, क्योंकि याद रखें, किसी भी व्यक्ति के ऊपर कुछ थोपा नहीं जाता, कोई व्यक्ति कुछ निश्चित चीजों को सीखने के लिये, कुछ निश्चित चीजों का अनुभव पाने के लिये यहॉ आता है, परंतु वे इसके लिये नहीं बने होते। उसी तरीके से, एक विद्यार्थी, जो विश्वविद्यालय को जाता है– ठीक है, उसे जाना नहीं पड़ा, उसे तबतक, जबतक कि वह सीखना नहीं चाहे, कोई चीज नहीं सीखनी नहीं होती। यदि वह नहीं सीखता तो वह वांछित अर्हताओं को नहीं पायेगा और यहॉ यही सबकुछ है, ये उसकी पसंद है।

लोग सलाह और पथ प्रदर्शन के लिये पूछते हैं, वे पूरी तरह से प्रतिज्ञा करते हैं कि वे सलाह को पूरी तरह से मानेंगे परंतु तब वे अपने सबसे खराब डांवाडोल तरीके से चलते रहते हैं, एक वह तरीका, जो कुछ एक सुअर को बाजार में चलाने का प्रयास करने जैसा है। क्या आपने कोई सुअर बाजार में चलाये जाते हुए देखा है? नहीं? ठीक है, ये इस तरह है; आपके पास, आपके हाथों में दो लंबे डंडे होते हैं, और आप सुअर के पीछे चलते हैं, और तब आप उसे आगे एक सीधी रेखा में चलाने का प्रयास करते हैं और हर हाथ की छड़ी, यदि वह अपने निर्धारित रास्ते पर न चले, उसको थोड़ा थपकी देने के लिये होती है। आजकल, बाजार के लिये के लिये, वास्तव में, सुअरों को ट्रकों में चलाया जाता है, जो एकदम अत्यधिक आसान है, परंतु लोग, स्पष्ट दिखते हुए को छोड़, हर चीज करने का प्रयास करते हैं। लोग नहीं समझ सकते कि रास्ता इधर है, ठीक उनके बगल से, ठीक उनके सामने, पथ पहुॅच के अंदर होता है। लोग विश्वास नहीं करेंगे कि, वे सोचते हैं कि उन्हें किसी आकर्षक देश की यात्रा करनी हैं, और वहॉ रास्ता खोजना है, वे सोचते हैं कि उन्हें तिब्बत जाना है, और एक मार्गदर्शक पाना है या बौद्ध बन जाना है। अनेक लोग, जो दावा करते हैं कि उनके मार्गदर्शक के रूप में तिब्बती लामा हैं–ठीक है, तिब्बत में आबादी ही नहीं है, और लोगों की संख्या, जो मुझे लिखती है और बताती है कि वे किसी लामामठ में अध्ययन करने के लिये तिब्बत जा रहे हैं, इंगित करती है कि वास्तव में, इतने कम लोग सत्य को पढ़ते हैं; वे तिब्बत नहीं जा सकते, वहॉ साम्यवादी (communists) हैं, लामामठ बंद हो चुके हैं। ये सोचना कि चूॅकि एक व्यक्ति, इस उत्साह के साथ, कि उसे उछलते हुए समुद्रों के पार और धम्म से दार्जिलिंग (Dargeeiing) की जमीन पर गिराते हुए और तब समीपस्थ लामामठ के लिये, सुदूर विस्तारित लाल गलीचे पर उसका रास्ता बनाते हुए, आवेशित किया जा सकता है, पूरी तरह से पक चुका है, मात्र मूर्खता होगी। आप क्या सोचते हैं, साम्यवादी वहॉ किसलिये हैं? वे वहॉ धर्म को रोकने के लिये हैं, वे वहॉ लामाओं की हत्या करने के लिये हैं, वे वहॉ भोलेभाले लोगों को गुलाम बनाने के लिये हैं, और वे इसे कर रहे हैं, क्योंकि, वहॉ ऐसा कोई आदमी नहीं दिखाई देता, जो तिब्बती लोगों को, उनके जंगलीपन से निकाल सके, साम्यवाद के अंधेरे में से स्वतंत्र विश्व के प्रकाश में ला सके (जैसा कि ये है)।

इसे एकबार फिर जोर देकर कहा जाना चाहिए, कि यदि लोग सलाह चाहते हैं और सलाह प्राप्त करते हैं, और तब सलाह को अनदेखा करते हैं, तब वे, उसकी तुलना में, यदि उन्होंने मामले में पहले ही सलाह नहीं ली होती, अत्यधिक खराब हैं, क्योंकि, जब उन्हें मार्ग की ओर इशारा कर दिया गया, जब उन्हें, सुझाव मांगे जाने पर, बता दिया गया कि उन्हें वास्तव में क्या करना चाहिए तब, ठीक है, यदि वे ऐसा नहीं करते हैं, तो वे अपने कर्म में थोड़ा सा और अधिक जोड़ लेते हैं। इसलिये यदि आप अपने मामले में, अपने असंतोष के सम्बंध में, कुछ नहीं

करना चाहते, तो सलाह न चाहें, अन्यथा आप अपने भार में थोड़ा सा और जोड़ रहे हैं।

अब यहॉ एक दूसरा प्रश्न है; 'विचार समेटा गया है कि किसी बीमार को इलाज देने के प्रयास, कर्म, जिसको मरीज भोग रहा है, के साथ हस्तक्षेप करते हुए, गलत समंजित किये हुए हो सकते हैं, और ऐसा सहायक, बाद में, मरीज के कर्मों के बोझ से लादा जा सकता है। यदि ये सत्य हो, तो अभी अभ्यासकर्ता डॉक्टरों के सम्बंध में क्या? उसे कर्म का कौन सा भार पाना चाहिये। प्रयास और सहायता करना और निरोग बनाना, क्या किसी से अपेक्षित है या नहीं?'

बेचारा बूढ़ा कर्म, एकबार फिर से, मार खाता है! आप जानते हैं, हर चीज कर्म के कारण नहीं है। लोग मुझे बताते है कि ऐसा कठिन जीवन पाने के लिये, मेरा कर्म भयानक होना चाहिए, परंतु वैसा बिलकुल भी नहीं है। उदाहरण के लिये, यदि आप बाहर जायें और कुछ कठोर परिश्रम करें, एक खाई खोदें या एक मील दौड़ें, तो कुछ लोगों को ये कठिनाई (प्रतीत) हो सकती है, परंतु आप इसे कर रहे होंगे, क्योंकि आप इसे पसंद करते हैं, या क्योंकि आप किसी चीज का अध्ययन कर रहे हैं। यह देखने के लिये कि क्या आप इसे करने का कोई दूसरा अच्छा तरीका खोज सकते हैं, एक खाई खोद सकते हैं।

अनेक लोग, एक निश्चित योजना के साथ कि वे एक विशिष्ट बीमारी पायेंगे, इस पृथ्वी पर आते हैं, ये टी. बी. हो सकती है, ये कैंसर हो सकता है, ये पुराना सिरदर्द भी हो सकता है। कोई बात नहीं, ये कुछ भी हो, वह व्यक्ति, कुछ निश्चित बीमारी रखते हुए, एक निश्चित योजना के साथ आ सकता है। कोई व्यक्ति, मानसिक रूप से बीमार व्यक्ति के रूप में आ सकता है, और वह, मानसिक रूप से बीमार व्यक्ति के अध्ययन का, पराकाष्ठा की हद तक, अच्छा काम कर रहा हो सकता है। इसका ये मतलब बिलकुल भी नहीं है, कि क्योंकि कोई व्यक्ति मानसिक रूप से बीमार है, वह कर्मों के बोझ से लदा हुआ है; इसके विपरीत, वे आये हुए हो सकते हैं, ताकि वे प्रत्यक्ष रूप में, मानसिक रूप से बीमार लोगों का अध्ययन कर सकें, और तब, जब वे दूसरी तरफ लौटते हैं, वे सूक्ष्मलोक के माध्यम से, उन लोगों की, जो कि पृथ्वी पर बीमार हैं, मदद कर सकते हैं।

एक चिकित्सक या शल्य चिकित्सक एक विशिष्ट वर्ग में होता है। वह उन लोगों की मदद कर सकता है, जिन्हें मदद की आवश्यकता है, वह उन पर काम कर सकता है, जो अन्यथा मर गये होते और पीड़ित, यदि वह बीमारी का अध्ययन करने के इरादे के साथ आया था (आयी थी), अध्ययन करने में सफल होता (होती) कि ऐसी बीमारी की पीड़ा कैसे कम की जा सकती है।

मुझे ये कथन करने दें; तथाकथित 'आस्था–उपचारक (faith healers)' परस्पर विरोधी (conflcting) कंपनों को व्यवस्थित करने के द्वारा विकट नुकसान करते हैं। आस्था–उपचारक पूरी तरह से अच्छे इरादे वाला हो सकता है, परंतु तब लोग कहते हैं, नर्क का रास्ता अच्छे इरादों के साथ चला जाता है (The road to Hell is paved with good intentions), और जबतक आस्था–उपचारक, किसी बीमार की वास्तविक बीमारी को नहीं जानता, तबतक उसके तथाकथित उपचारों को प्रारंभ करना, निश्चितरूप से, निश्चितरूप से हानिकारक है। ये प्रभामंडल में, मात्र झनझनाहट पैदा करता है जो, अत्यधिक आवृति वाली अवस्थाओं को, और अधिक जटिल बना देता है।

'चमत्कारिक इलाजों (miracle cure)' के इन मामलों में, दुखपूर्वक और अधिक जल्दी–जल्दी ऐसा होता है कि व्यक्ति पहले से बीमार नहीं होता और उसमें मात्र विक्षिप्तता (neurosis) होती है। कुछ लोग अपने आपको वर्षों तक छल सकते हैं, वे आत्म–सम्मोहन (auto-hypnosis) की स्थिति में जा सकते हैं– हॉ, कि उन्हें कैंसर है, हॉ, कि उन्हें टी.बी. है, हॉ, कि उन्हें हर चीज है। वे किसी डॉक्टर के प्रतीक्षा कक्ष में जा सकते हैं, दूसरे कुछ मरीजों को अपने लक्षणों की चर्चा करते हुए सुन सकते हैं और तब विक्षिप्त व्यक्ति, पूरे समूह की नकल करता है और एक के बाद एक 'बीमारी' पा जाता है। अब, कोई आस्था–उपचारक साथ आ सकता है, और अक्सर उसका 'इलाज' कर सकता है, इसके बाद वहॉ गंभीर विफलता (break down) होती है। एकदम स्पष्टरूप से, इन आस्था–उपचारकों के लिये, मेरे पास न तो कोई समय है और न हीं धैर्य।

यदि आप बीमार हैं, तो किसी मान्यताप्राप्त डॉक्टर के पास जायें, यदि आपको किसी दूसरी विशिष्ट देखरेख (attention) की आवश्यकता है, तो अर्हता प्राप्त डॉक्टर आपको सलाह देगा और आपको बतायेगा कि आप कहॉ और कैसे इसे प्राप्त करें, परंतु आप इसका पूरा धन किसी को, जो आस्था–उपचार के सम्बंध में– *टॉमकेट टाइम्स (Tomcat Times)* में विज्ञापन देता है, भेज दें, ठीक है, यह वास्तव में पागलपन है।

स्वाभाविकरूप से, कोई मान्यताप्राप्त डॉक्टर, बीमार का इलाज करने में, मदद करने में, अपने कर्म के साथ कुछ नहीं जोड़ता। कर्म का ये व्यापार इतना विकट गलत समझा गया है, ये अर्थ बिलकुल भी नहीं है कि यदि

आप किसी व्यक्ति को मदद करने जा रहे हैं, तो आप उसकी पूरी कठिनाइयों को ले लेंगे। इसका अर्थ ये कि यदि आप ऐसा करते हैं, गलत व्यक्ति की सेवा करते हैं, तब आपको वापस भुगतान करना पड़ेगा। यदि, अपनी योग्यता या अपने हिंसक मिजाज के माध्यम से, हम कहें, आप एक व्यक्ति को गोली मार दें, और काम, जो वह कर रहा था, की उपलब्धियों में बाधा डालें, तब आपको अपना खुद का रास्ता रोकते हुए भुगतान करना पड़ेगा। नर्क की आग और नर्कवास के बारे में भूल जायें, क्योंकि ऐसी कोई चीज नहीं है, कोई भी, कभी भी, हमेशा के लिये त्यागा नहीं जाता, किसी की भी, कभी भी, उत्पीड़न के लिये, हमेशा के लिये भर्त्सना नहीं की जाती। जब आप इस पृथ्वी छोड़ेंगे, केवल पीड़ा और यातना, जो आप अनुभव करेंगे, वह होती है, कि आपको स्मृति के हॉल में प्रवेश करना पड़ेगा और आप देखेंगे कि आपने क्या क्या मूर्खतापूर्ण बातें कीं हैं, और इस पर वास्तव में, सरलता से पार पा लिया जाता है; यदि आप, अभी जबकि आप, अभी भी, पृथ्वी पर हैं, वास्तव में अपना सर्वोत्तम करें। आप आश्वस्त हो सकते हैं कि स्मृति के हॉल की आपकी यात्रा, कुल मिलाकर उतनी खराब नहीं होगी। वास्तव में, आपका चेहरा लाल होगा (शर्म आयेगी) परंतु– ठीक है, अरे कोई आश्चर्य नहीं? कुछ चीजों के बारे में सोचिये, जो आपने नहीं कीं हैं।

दुरानुभूति के सम्बंध में, यहॉ एक प्रश्न है, 'क्या पशुओं और मनुष्यों के बीच, दुरानुभूति के अष्टक (octave) पर पहुॅचने के साधनों के बारे में अधिक विस्तार से बताया जा सकता है। उदाहरण के लिये, एक बिल्ली की तरंगधैर्य बीच में कैसे रोकी जा सकती है?'

यदि आप दुरानुभूति से पशुओं से बात करना चाहते हैं, तो आपको पूरी तरह से सद्भाव के साथ उन पशुओं के साथ रहना होगा, जैसा वे सोचते हैं, आपको उन्हें प्रेम करना होगा, और आपको उनके साथ बराबरी का व्यवहार करना होगा। अधिकांश लोग, पशुओं को जीवन की कुछ घटिया प्रजाति समझते हैं, वे पशुओं को किटकिटाते हुए गूंगे या गूंगे प्राणियों, जो बोल भी नहीं सकते, और इसलिये उनके पास कोई दिमाग नहीं होता, के रूप में सोचते हैं। मुझे आप को बताने दें कि अनेक मनुष्य सोचते हैं कि बहरे मनुष्य मानसिक रूप से पागल होते हैं। यदि कभी आप बहरे रहे हों, या यदि कभी लोगों ने सोचा हो कि आप बहरे थे, तो आप उन्हें अक्सर, ये कहते हुए, अपने ऊपर चर्चा करते हुए पायेंगे, 'ओह, वह दिमाग से थोड़ा सा कमजोर है, वह नहीं समझता कि हम क्या कह रहे हैं, उससे परेशान मत हो।'

पशु, हर तरह से, मानव पशु के समतुल्य हैं, वे मात्र भिन्न आकृति में हैं, वे भिन्न दिशाओं में सोचते हैं, और चूंकि वे भिन्न दिशाओं में सोचते हैं, उनकी मौलिक आवृति भिन्न होती है।

परंतु आप, विचार के लिये, मुझे एक दूसरा कारण देने दें; क्या आप, अपने साथी मनुष्य के साथ, दूरानुभूति संपर्क में हो सकते हैं। नहीं न? क्या आप जानते हैं, क्यों? वर्षों तक मनुष्य ने मनुष्यों के ऊपर अविश्वास किया है, मानव अपनी क्रियाओं को मानवों से छिपाते हैं। वहॉ हमेशा ही इरादा, कमोवेश, साथी मानव को धोखा देने का होता है, इसलिये आप, अवचेतन रूप से, अपने विचार हस्तांतरण से हटकर, दूसरे मानवों के साथ विचार हस्तांतरण की एक तरंगधैर्य बनाने का प्रयास करते हैं, तब वे आपके विचारों को नहीं पकड़ सकते। यदि इस पृथ्वी पर, वास्तविक भ्रातत्व प्रेम होता, तो हर कोई, हर दूसरे के साथ दूरानुभूति में होता। केवल मानव ही हैं, जो दूरानुभूतिपूर्ण नहीं होते, या बल्कि मानव ही हैं, जो दूरानुभूतिपूर्ण क्षमता का उपयोग नहीं कर सकते।

मैं अपनी बिल्लियों से, उतनी काफी सरलता से, पूरी तरह साफ साफ बात करता हूॅ, जितनी कि मैं किसी मानव से करता। मैं बड़ी, मोटी बिल्ली, टेडीलिंका से बात करता हूॅ, वह एकदम स्पष्टता के साथ, मेरा संदेश प्राप्त करती है, और मैं उसके उत्तर को प्राप्त करता हूॅ और अक्सर सौंदर्य की रानी क्लियो, दूसरे कमरे से दौड़ती आती है, ताकि वे किसी चर्चा में भाग ले सकें। औरतों की तरह से, वह अंतिम शब्द पाना पसंद करती है।

यदि आप जानवरों के साथ दूरानुभूति से बात करना चाहते हैं, तो आपको उन्हें प्रेम करना होगा, आपको उन्हें समान समझना होगा। आपको महसूस करना होगा कि वे मानवों से भिन्न तरीके से सोचते हैं परंतु उसके कारण, वे कम विद्वान नहीं हैं।

एक अंग्रेज और एक स्पेनवासी, अपने वाक्यों को भिन्न भिन्न तरीके से बनाते हैं, परंतु एक जर्मन और एक फ्रांसीसी भी ऐसा ही करते हैं। मूल संदेश समान है, परंतु वास्तविक संरचना भिन्न है। मानव और बिल्ली के बीच में भी ऐसा ही होता है। आपको ये चीज विचार में रखनी चाहिए कि चीजों के बारे में बिल्ली का नजरिया, एक मानव से भिन्न है। इसलिये जबतक कि आप बिल्ली के रूप में न सोच सकें, अधिकांश संदेश, जिन्हें आप प्राप्त

करेंगे, कुछ हद तक न समझने योग्य होंगे। उदाहरण के लिये, मुझे किसी चीज, जिसे मैं चाहता था, के सम्बंध में एक संदेश दिया गया,—ये था, जब मैं मॉन्ट्रियल में रहता था। मैंने उस दुकान का, जहॉ वह चीज बिक्री के लिये थी, वास्तविक चित्र पाया था। परंतु, वास्तव में, चित्र, एक बिल्ली की ऑख से देखा हुआ, जमीन से कुछ इंच ऊपर उठा हुआ दृश्य था, और उस विशेष कोण से, नाम के अक्षरों के अत्यधिक लंबे हो जाने के कारण, मैं पृथ्वी के समीप से देखे गये तल से, उस दुकान का नाम नहीं पा सका। केवल तब, जब बिल्ली, विशेष रूप से मुझे अनुग्रहीत करने के लिये, एक कार की छत पर कूदी, मैं वास्तव में, बिल्ली की ऑख के माध्यम से नाम को पढ़ सकता था। हॉ मुझे वह चीज मिली और वह पूरी तरह संतोषजनक थी।

ऐसे अनेक उदाहरण हैं। मुझे शोध के लिये किसी चीज की आवश्यकता थी, और कोई भी दुकान मुझे आपूर्ति नहीं कर सकी थी, इसलिये कुमारी टेडी, हमारी सर्वाधिक उपहार प्राप्त दूरानुभूति पूर्ण बिल्ली ने, बिल्लियों की दुरानुभूतिपूर्ण तरंग दैर्ध्य पर एक सामान्य पुकार भेजी, और हमने एक फ्रांसीसी कनेडियन बिल्ली से आवश्यक सूचना प्राप्त की। इसलिये यहॉ न्यू ब्रूंसविक (New Brunswick) में हमने क्यूवेक (Quebec) प्रांत की एक बिल्ली से एक संदेश प्राप्त किया, और एक अविलम्ब टेलीफोन वार्ता ने, वास्तव में, यथार्थ रूप से उस चीज, जिसे मैं चाहता था, का पता लगा लिया। मेरे पास कोई अनुमान नहीं था कि इसे कहॉ से प्राप्त किया जाये। परंतु बिल्लियों के संपर्क के द्वारा, शीघ्र ही, वह चीज मेरे कब्जे में थी।

हजारों मील दूर रहने वाला मेरा एक मित्र है और मैंने दूरानुभूतिपूर्ण संदेशों को प्राप्त करने के माध्यम से, उसके अनेक कष्ट बचाये गये हैं। कुमारी टेडी, एक दूरानुभूतिपूर्ण बिल्ली, जो मेरे मित्र के पास रहती है, के संपर्क में थी और ये बिल्ली, जो पूरी तरह से, अच्छी दुरानुभूतिपूर्ण है, कुछ चीजों को, स्वयं ही टेडी को सूचित करने में सक्षम थी। तब मैं अपने मित्र के संपर्क में आया, और उसे सूचना दी, और उसने पुष्टि की कि हर चीज वैसे ही थी, जो वास्तव में, मैंने बताई थी।

यदि लोग दुरानुभूति का अभ्यास करते, तो वे शीघ्र ही, टेलीफोन कंपनियों को व्यापार के बाहर कर सकते थे। शायद आप और मैं साथ मिल जायें, और एक विशेष दूरानुभूतिपूर्ण टेलीफोन संप्रेषण प्रणाली बनायें, और हम खुद ही धनाढ्य बनें!

यहॉ एक दूसरा प्रश्न है, जो संभवतः थोड़ा सा विलंबित है, और इस पुस्तक की दूसरी अन्य चीजों की भांति, सही जगह पर नहीं होगा। इससे पहले कि मैं प्रश्न के बारे में कुछ कहूं, मुझे कुछ दूसरी चीज कहने दें :—

इस पुस्तक में, मैंने प्रश्नों को जानबूझकर अस्तव्यस्त ढंग से लिया है, अन्यथा अनेक लोग, उस प्रश्न की ओर, जिसमें वे दिलचस्पी रखते हैं, या उस खंड की ओर, जिसमें वे दिलचस्पी रखते हैं, दौड़ते, और शेष पुस्तक को अनदेखा कर देते। तब वे मुझे लिखते और शिकायत करते कि मैंने अमुक अमुक चीज, जो उन्होंने नहीं पढ़ी, क्योंकि वे पेज पलटना भूल गये, पर चर्चा नहीं की।

यहॉ वह प्रश्न है; 'क्या ये आत्मा ही है, जो जीवित रहती है, क्या ऐसा नहीं है? अब जबकि एक व्यक्ति को मानसिक संताप है, क्या इसका अर्थ ये है, ये भौतिक अपंगता से अधिक, कुछ वह चीज है, जो, जब हम दूसरे अस्तित्व में गुजरते हैं, पीछे नहीं छोड़ी जायेगी, या क्या कोई व्यक्ति, जब वह दूसरे अस्तित्व में गुजरता है, स्वतः ही इससे मुक्त हो जायेगा या कोई व्यक्ति, जैसे ही आत्मा शरीर के बाहर जाती है, इससे स्वतः ही मुक्त हो जायेगा, उदाहरण के लिये, वैसे ही, जैसे कि सूक्ष्मलोक में कोई टूटी टांग को महसूस नहीं करता।'

अनेक लोग, जानबूझकर मानसिक संताप के साथ यहां आते हैं। वे स्वयं ही ये देखने के लिये आते हैं कि मानसिक अपंग होना कैसा है। इसका ये अर्थ नहीं है कि उनका कर्म, बिलकुल ही दोषपूर्ण है, इसके साथ, इसे कुछ भी लेना देना नहीं है। आप कह सकते हैं कि एक घोड़ा, जो घुड़दौड़ में अपंग है, के पास कर्म होता है, और वह बकवास होगी, क्या ये नहीं होगी।

मैं समझता हूॅ कि किन्हीं घुड़दौड़ों में, घोड़े जो लगातार विजयी होते हैं, उन में इस मामले में अपंगता होती है, कि उन्हें कुछ भार ढोने पड़ते हैं, जो उन्हें थोड़ा सा धीमा करने वाले, और दूसरे घोड़ों को अवसर देने वाले समझे जाते हैं। ध्यान दें, मैं घोड़ों के सम्बंध में बहुत कम जानता हूॅ, मैंने कभी भी, किसी घोड़े के ऊपर ब्रेक वाला पैडल नहीं देखा है, परंतु मैं ये अवश्य जानता हूॅ कि कौन सा सामने का सिरा है, और कौन सा पिछला। सामने का सिरा काटता है, और किसी को, कुछ भिन्न कारणों से, जिनके विस्तार में हमें जाने की आवश्यकता नहीं है, पिछले को भी अनदेखा कर देना पड़ता है।

किसी भी घोड़े पर, जब वह अपंग भार को ढोता है, कर्म होने का आरोप नहीं लगाया जायेगा। उसी तरह

से किसी भी आदमी पर, जब वह, जानबूझकर (किसी) अव्यवस्था, या खराब ढंग से काम करते हुए किसी अंग के साथ, इस पृथ्वी पर आता (ती) है, उस पर कर्म होने का अभियोग नहीं लगाया जायेगा, और यदि कोई व्यक्ति प्रलापी पागल के रूप में यहॉ आता है, तो वह सूक्ष्मशरीर पर कोई प्रभाव नहीं डालेगा। जब सूक्ष्मशरीर 'घर को जाता है,' अचेतन भाग बहा दिया जाता है।

व्यक्तियों के उस वर्ग के अलावा, जो जानबूझकर अपंगता लेकर आता है, ताकि वह मामले का अध्ययन कर सके, यहॉ वे भी हैं जो गलत अवसर के द्वारा, शायद दोषपूर्ण खुराक के कारण, एक मां के माध्यम से, या शायद किसी दाई के माध्यम से, या डॉक्टर के गलत तरीके से उपकरण का उपयोग करते हुए घायल किये गये हैं। उदाहरण के लिये हमें कहने दें कि (प्रसव के समय) कमोवेश, एक डॉक्टर उपकरणों का उपयोग करता है, और खोपड़ी को नुकसान पहुँचाता है, तब उस नुकसान के परिणामस्वरूप, उस व्यक्ति को निश्चित मानसिक अपंगता होगी, परंतु ये आवश्यकरूप से, ये उस व्यक्ति का, उस से वापस भुगतान कराता हुआ कर्म नहीं है। ये एक दुर्घटना, एक गलत संयोग हो सकती है, और इससे अधिक कुछ नहीं और न ही इसका ये मतलब है कि बेचारा दीन डॉक्टर अपने कर्मों में कुछ भार जोड़ लेता है क्योंकि कुछ चीजें दुर्घटनायें होती हैं, और इसका अर्थ ये नहीं है कि यदि व्यक्ति के साथ काई निश्चित अपरिहार्य दुर्घटना होती है, तो वह कर्म के साथ जीन कसने वाला है। कर्म के सम्बंध में अनेक गलत अवधारणाऐं हैं।

व्यक्ति, जो नीचे आता है और किसी संपूर्ण गलत संयोग द्वारा घायल होता है, तो उसको इसका श्रेय मिलता है, क्योंकि जीवन की असफलता उसकी की हुई नहीं थी। यदि वह बहुत बुरी तरह अपंग हुआ, अर्थात् वह, वह है, जिसे हम मानव–शाक (human vegetable) कहते हैं, तब सूक्ष्मशरीर स्वयं जायेगा और कहीं दूसरी जगह निवास करेगा, और मानवी–शाक तब, शेष संपूर्ण जीवन के लिये, न तो अच्छा और न बुरा पाते हुए, चलते रहना जारी रखेगा।

पृथ्वी पर, कोई ऐसा तरीका ज्ञात नहीं है, जिसके द्वारा पृथ्वी पर की गई क्रिया के द्वारा, सूक्ष्मशरीरी अस्तित्व को पागल बनाया जा सके। जब कोई अत्यधिक मात्रा में मादक दवायें लेता है, तब कोई इसके सबसे अधिक करीब आ सकता है। यदि कोई मादक दवायें अधिकता में लेता है, तब सूक्ष्मशरीरी अस्तित्व निश्चितरूप से प्रभावित होता है, वास्तव में, हिंसक रूप से पागल होने की सीमा तक नहीं, परंतु ये एक खराब स्नायुविक–स्थिति पैदा करता है, और उसका इलाज, सूक्ष्मलोक के अस्पताल में, एक अत्यधिक लंबे समय तक डेरा डालने के द्वारा किया जाना है।

अधिकांश समान अवस्थायें मिलती हैं, जब एक व्यक्ति वास्तव में बुझा हुआ, और बेहोश शराबी है, क्योंकि, उसने अपने पियक्कड़पन के माध्यम से सूक्ष्म और भौतिक शरीरों के बीच के बंधनों को ढीला कर लिया है, और निम्न श्रेणी के मूलभूत प्राणियों को, रजत तंतु पर हमला करने, या भौतिक शरीर को पूरी तरह से हथिया लेने के लिये भी, सक्रिय रूप से प्रोत्साहन दिया है। ये सूक्ष्मलोक के लिये एक अत्यंत गंभीर सदमा उत्पन्न करता है, और फिर, जबकि ये पागलपन नहीं पैदा करता, ये सदमा पैदा करता है। ये सदमा उसके सदृश्य है, जिसे आप तब अनुभव करते, यदि आप नींद में होते और उपद्रवी बच्चों को पूरा गिरोह ढोल बजाता हुआ, और तुरइयों की आवाज निकालता हुआ, आपके बिस्तर पर गिर पड़ता, न केवल आपके कमरे में प्रकट होता, परंतु वास्तव में, आपके बिस्तर पर कूदता। आप एक गंभीर सदमा झेलते, आपकी त्वचा फीकी हो जाती, आपका हृदय दौड़ता, आपको हृदय की धड़कन होती और आप, सामान्यतः पूरी तरह से हिलते। ठीक है, जब आपने बच्चों को पीट दिया, और उन्हें बाहर उछाल दिया, आप शायद, फिर से पूरी तरह वापस आने के एक या दो घंटे पहले होंगे। परंतु यदि आपका सूक्ष्मशरीर, किसी शराबी अवस्था या मादक दवाओं के अत्यधिक सेवन के माध्यम से, इस स्थिति में पड़ गया, तो आप उससे उबरने में, सूक्ष्मलोक में अनेक वर्षों पीछे हो जायेंगे।

ये मुझे दूसरे प्रश्न की ओर लाता है, जो है, 'शक्तियों के बारे में यह क्या है, कि जो कई बार, रजत तंतु को प्रभावित करते हुए, सूक्ष्मलोक में रहता है?'

हम वर्तमान परिस्थितियों को दृष्टिगत रखें। मान लीजिये, हम एक इमारत के शिखर पर, शायद, एक सुंदर छत के उद्यान वाले एक बहुत सुंदर सायवान में बैठे हुए हैं; हम आराम के साथ आलस में थे परंतु उसी समय, ठीक नीचे आधार तल पर एक व्यक्ति के साथ संपर्क रखते हुए, हम, यदि आप चाहें, अपने साथ एक हैंडसेट से जुड़े हुए टेलीफोन तारों और हैडसेट के साथ, आधारतल पर ठीक नीचे खड़े हुए दूसरे व्यक्ति के पास माउथ पीस माध्यम से संपर्क रख रहे थे। हम उसके प्रभावों को पकड़ रहे थे, वह सब सुन रहे थे, जो वह

कहता या सुनता था। हमारे टेलीफोन के तार ऐसे हैं कि वे बिना किसी परेशानी के पेड़ों और दीवारों में होकर गुजर सकते हैं, परंतु वे निश्चित प्रकार के अस्तित्व के द्वारा खराब हो जाते हैं।

नीचे आसपास, उपद्रवी बच्चों का चीखता, चिल्लाता, ललकारता हुआ एक गिरोह भी है। वे इस टेलीफोन के केबल को पकड़ने का प्रयास करते रहे हैं, और जब वे इसे पकड़ लेते हैं, तो उसे तोड़ने का प्रयास करते हैं, या उसे आधारतल पर, पत्थर पर भी पटकने का प्रयास करते हैं, और दूसरे पत्थर से, उसे जोरदार चोट भी मारते हैं। यद्यपि वे इसे तोड़ नहीं सकते, वे इसमें विचारणीय रगड़ और विक्षोभ पैदा करते हैं। ये कमबख्त बेचारे उस गरीब को, जो बात करने का प्रयास करता है और आसपास चलता है, रोकता भी है।

अब इसे सूक्ष्मलोक के पदों में रखें। दुर्भाग्यवश, हम यहॉ पृथ्वी पर हैं, और हमारी रजत–तंतु, ऊपर की ओर सूक्ष्मलोक तक विस्तारित होती है। यदि हम कमजोर या डरे हुए हैं, अर्थात्, यदि हमारे अधिकार का सम्मान नहीं किया जाता है, तब निम्न श्रेणी का कोई भी मौलिक अस्तित्व, जिसके क्षेत्र में होकर हमारी रजत तंतु गुजरती है, बहुत कुछ हद तक वैसे ही, जैसे कि बच्चे पृथ्वी पर टेलीफोन के तारों के साथ करने का प्रयास करते हैं, उसे पकड़ सकता है और उसको कुछ कर सकता है, या इसमें कुछ करने का प्रयास कर सकता है। शायद वे इसे छू नहीं सकते, परंतु वे ठीक उसी तरीके से जैसे कि, कोई माइक्रोफोन में, टेपरिर्काडर में बोल सकता है, और हमारे माइक्रोफोन में बोले गये संदेश, टेप पर, जो रिकोर्ड करने वाले हेड के बीच से होकर गुजरता है, चुंबकीय रूप से प्रभावित होते हैं। चुम्बकीय किरण के द्वारा इसके संकेतों को प्रभावित कर सकते हैं। अब मानते हुए कि हम टेप पर कुछ अंकन कर रहे हैं; हम अपना सर्वोत्तम शब्द चयन करते हुए, अपनी सर्वोत्तम संरचना करने में व्यस्त हैं, और हम अपने काम के लिये, जिसे हम कर रहे हैं, काफी गर्व करते हैं, और तभी कोई हमारे पीछे, धीमे धीमे आगे बढ़ता है, और माइक्रोफोन में चीखता है, 'बू (Boo)!' ये एक विक्षोभ पैदा करता है, ये हमको पूरी तरह से हिला देता है, और ये उस व्यक्ति में, जो उस रिकोर्ड किये हुए को सुन रहा हो, कुछ चिड़चिड़ापन पैदा करता है।

यदि बच्चे किसी का सम्मान करते– और उसके लिये वास्तव में, उनमें से दिन के प्रकाशों को छोड़ देते तो वे ऐसी चीजों को नहीं करते, जैसे कि प्रयास करना और माइक्रोफोन में जोर से चीखना, इत्यादि। उसी तरीके से, किसी को परम रूप से, और पूरा पूरा प्रदर्शित करना चाहिए कि कोई मूलभूत तत्वों से थोड़ा सा भी डरा हुआ नहीं है। मूलभूत तत्व, सूक्ष्मशरीरी यात्रा करने वाले मानवों को, अपने से डराने का प्रयास करने का कार्य करने के लिये कठोर मेहनत करते हैं, वे स्वयं को तीव्रता से बाहर निकालते हैं, वे अपने तीक्ष्णतम दिखावे को धारण करते हैं, और वे सर्वाधिक विचित्र चीखें, जिनकी कोई कल्पना ही कर सकता है, निकालते हैं। वास्तव में, निम्नतर सूक्ष्म लोक, मौलिक तत्वों का संसार, वास्तव में, बहुत कुछ हद तक, स्थानीय अस्पताल में पागल वार्ड जैसा ही है। तथापि, बशर्ते कोई अनुशासन बना के रखता है, और ये आसान है, और बशर्ते कि कोई इन मूर्ख मौलिक तत्वों से डरा हुआ नहीं है, और ये अभी भी, और अधिक आसान है, तो ये कभी भी, हस्तक्षेप के प्रति चिंतित होने का कारण नहीं है। स्मरण रखें कि कुछ भी आपको विचलित या परेशान नहीं कर सकता, या घायल नहीं कर सकता, जबतक कि आप डरे हुए न हों। यदि आप आतंकित हैं, तब आपकी खुद की डरे हुए होने की अवस्था और केवल वही, आपके रसायनों को अव्यवस्थित करने का कारण बनेगी। यदि कोई व्यक्ति खराब भय प्राप्त करता है, वह इसे भौतिक शरीर में पाचन क्रिया को अव्यवस्थित कर देती है, और ठीक है, ये सब वहॉ उस के लिये है; आपको वास्तव में, घायल नहीं किया जा सकता, परंतु आपको परेशान भी नहीं किया जा सकता, यदि आप भयभीत या धमकाये हुए होने से मना कर दें।

अब यहॉ एक प्रश्न है, जो एक मां के द्वारा पूछा गया था। प्रश्न है, 'जब बच्चे दूसरी ओर को जाते हैं, वे बड़े होते हैं या वे फिर भी बच्चे ही बने रहते हैं? तब माता–पिता अपने बच्चों को कैसे पहचानते हैं? क्या वे उनकी ऑखों के सामने बड़े होते हैं?''

नहीं, मॉ, मैं आपके नाम का उल्लेख नहीं करूॅगा क्योंकि मैंने आपसे समय रहते नहीं पूछा और मैं व्यक्ति की वास्तविक आज्ञा के साथ के सिवाय, किसी भी नाम का उल्लेख नहीं करूॅगा। इसलिये–मॉ–आपने इसे पूरा गलत समझा। अब इसे ध्यान से पढ़ें; लोग दूसरी तरफ अर्थात् सूक्ष्मलोक में हैं। वे बच्चे नहीं हैं, और वे बूढ़े भी नहीं हैं, वे केवल वे हैं, जिन्हें कोई, एक औसत, अनिश्चित आयु वाले कह सकता है, क्योंकि दूसरी ओर साल अलग होते हैं, परंतु कैसे भी, ये व्यक्ति, जिसे हम वयस्क कहें, पृथ्वी पर वापस जाने का निर्णय करता है; वह पूरे बड़े वयस्क के रूप में वापस नहीं जा सकता, क्या वह जा सकता है? कोई कह सकता है, उसे सामान्य मार्गों से होकर जाना पड़ेगा, और इसलिये, ये व्यक्ति नींद में चला जाता है, और जब वह उठता है, तो वह एक शिशु

के रूप में पैदा होने की प्रक्रिया में होता है।

तब वह थोड़ा सा बढ़ता है, और इस उद्देश्य के लिये हमें कहने दें कि जब वह है– ओह, हम क्या कहेंगे? –जब वह दस साल की आयु का है, वह मर जाता है, और उसे दफना दिया जाता है, तो उसके शरीर में से सूक्ष्मशरीर मुक्त होता है और वह वापस दूसरी ओर जाता है, और प्रभावी रूप से कहता है, 'ठीक है, कि ये एक संक्षिप्त ठहराव था, भगवान को धन्यवाद। अब मैं आगे क्या करूं?' दूसरी तरफ, वह और अधिक बच्चा नहीं है, परंतु मानते हुए कि किन्हीं अत्यंत अत्यंत महत्वपूर्ण कारणों से उसे, उनके साथ, जो पृथ्वी पर उसके माता–पिता थे, संपर्क में आना पड़ता है, उन पर अपने आप को वयस्क के रूप में ये छाप छोड़ना, मानो कि कोई शायद अपने माता–पिता से अधिक आयु का हो, कुछ अच्छा नहीं होगा। इसलिये वह, उनके अवचेतन पर, अपने आपको एक बच्चे के रूप में देखें जाने की दृष्टि का प्रभाव डालता है, और शौकीन माता–पिता अपने दस साल के बच्चे की आत्मा, जो स्वर्ग से यह कहने के लिये आई, ''हाय, लोगो,'' या ये जो कुछ भी रहा हो, जो वह कहना चाहता था, को देखकर आनंदित होते हैं।

अनेक अधिकृत मामले हैं, जिनमें लोग, कुछ विशेष कारणों से, फिर से, पृथ्वी पर घनीभूत हुए हैं, और कुल मिलाकर, वास्तव में, यदि वे पहचाने जाना चाहते हैं, कि घनीभूत होने का मुख्य कारण ये है, तब उन्हें उस एक तरीके से घनीभूत होना पड़ता है, जो उन लोगों को, जो उस व्यक्ति को उसकी मृत्यु से पहले जानते थे, सरलता से पहचाने जाने योग्य हो। इसलिये व्यक्ति सदा ही, उस आयु समूहों के, जिससे वह सम्बंधित था, जब वह गुजरा, एक बहुत स्वस्थ नमूने के रूप में घनीभूत होता है। वह हमेशा ही, उस तुलना में, जब पृथ्वी का बच्चा था, अधिक सुंदर दिखाई देता है, और ये माता–पिता के हृदयों को आनंदित करता है।

यदि माता–पिता, 'बच्चे को' वास्तव में प्यार करते हैं, वे सूक्ष्मलोक में उससे मिल सकते हैं, और बच्चा पहले ठीक वैसा बच्चा दिखाई देता है, जो पृथ्वी पर मरा और फिर सूक्ष्मलोक में पैदा हुआ। परंतु जैसे ही माता पिता उसे पहचान सकते हैं, तब बच्चा पुनः अपने स्वाभाविक रूप में प्रकट होता है।

आपको याद रखना चाहिए कि यद्यपि आपके पास, इस जीवन में, एक मां और एक पिता हैं, आवश्यक रूप से, वे वैसे माता–पिता नहीं हैं, जिन्हें आप छै सौ वर्षो के समय में पायेंगे। आप, अपने लिंग के ऊपर निर्भर करते हुए, वास्तव में, पिछले जीवन में, मां या पिता रहे हो सकते हैं। वास्तव में, पृथ्वी पर लोग, मंच पर आते हुए तमाम कलाकारों की तरह, ठीक वैसे ही हैं; वे भूमिका, जिसे वे अदा करने जा रहे हैं, के अनुसार अपने कपड़े पहनते हैं, इसलिये यदि किसी अस्तित्व को औरत के रूप में कुछ सीखना होता है, तो उस अस्तित्व के लिये पृथ्वी पर एक आदमी के रूप में आना निरर्थक ही होगा, इसलिये बदले में, वह औरत के रूप में आती है, और औरतों के उस वर्ग में, जो उसे उन चीजों को सीखने के लिये, जिन्हें सीखने के लिये वह आई थी, सक्षम बनायेगा, आती है।

'मैं आश्चर्य करता हूँ कि ऐसा क्यों है कि काफी अस्तित्व, पहली बार इस विश्व में आते हैं, और भूख, गरीबी, अन्याय इत्यादि का सामना करते हैं, जबकि उनके पास कोई पुराने ऋण नहीं हैं, और क्योंकि कार्मिक न्याय उनके लिये विपरीत नहीं होना चाहिये।'

ठीक है, कैसे भी, उन्हें आना होता है, क्या उन्हें नहीं आना होता? किसी व्यक्ति के लिये, इस पृथ्वी पर, पहली बार ही राजा या रानी के रूप में आना असंभव है। आप कह सकते हैं कि वे 'नये लड़के' हैं। स्कूल में नये बच्चे, आप जानते हैं, नये बच्चों में से नवीनतम बच्चे के पास, अधिकांश बार, खराब परिस्थितियॉ होती हैं, सामान्यतः पुराने बच्चे उन पर टूट पड़ते हैं, और जबतक कि वे 'अपने तरीके से काम' नहीं करते, वे शिक्षकों के साथ भी, आवश्यक रूप से लोकप्रिय नहीं होते।

यदि कोई एक प्रशिक्षु (intern) के रूप में प्रारंभ करता है तो उसे सबसे खराब कार्य, (जैसे) औजारों का साफ करना, उपकरणों को साफ करना, फर्श को पोंछा लगाना और शेष सब कुछ, करने के लिये मिलते हैं, और चूंकि वे केवल प्रशिक्षु हैं, उनके पास अधिक धन नहीं होता, कई अवसरों पर, वे भूखे भी अनुभव कर सकते हैं। इसका अर्थ ये नहीं है कि उनके कर्म में कहीं दोष है, यदि वे पृथ्वी पर केवल पहली बार ही आये हैं, तब उनके पास अधिक कर्म नहीं होता, क्या होता है?

परंतु हमें कहीं से तो शुरूआत करनी ही है। कोई व्यक्ति, पहली बार, धरती से जुड़ता हुआ आता है, और लगभग सदा ही, वह व्यक्ति किसी आदिम जाति का सदस्य होता है, निश्चित रूप से, आदिम जाति का कोई, जहॉ उसे हर जगह रगड़ा जाता है (he gets the rough corners knocked off), और वह कुछ प्रशिक्षण पाता है, कोई

बात नहीं, ये कितना भी अल्पविकसित क्यों न हो, मानव इसी तरह चलना जारी रखते हैं।

किसी व्यक्ति के लिये, हम कहें, पहले जन्म के रूप में, यूरोप या उत्तरी अमेरिका आना, अनसुना है। वह किसी असभ्य आदिम जाति, पिछड़ी हुई जाति के सदस्य के रूप में, उन स्थानों में से एक, जैसे कि अफ्रीका या ऑस्ट्रेलिया में, जहॉ तथाकथित सभ्यता ने मुश्किल से स्पर्श ही किया है, आ सकता है। तब उसे, उन उपकरणों के अनुसार, जो उसके पास हैं, अर्थात् क्या वह अच्छी प्रकृति का आदमी है या वह नकचढ़ा नखरैल प्रकृति का है? रहना पड़ता है। यदि वह भली प्रकृति का है, तब वह एकदम ठीक से आगे चलेगा। यदि वह असुखद है, वह किसी भी समाज में, बिल्कुल भी नहीं चल पायेगा। इसलिये किन्हीं असभ्य जातियों में भी, अच्छी प्रकृति का कोई आदमी, खराब प्रकृति के किसी आदमी की तुलना में अच्छा करता है।

बाद में, व्यक्ति अग्रणी और अधिक अग्रणी समाजों में जन्म ग्रहण करता है। उस समय तक, वास्तव में, उसने, केवल अपने विरुद्ध नहीं, बल्कि अपने पक्ष में भी, थोड़े से कर्म जमा कर लिये होते हैं। इसलिये अनेक, एकदम मूर्खतापूर्ण संकेत, कि कर्म उत्पीड़न है, पाते हैं, और ये बिलकुल भी वैसा नहीं है। ये बैंक के खाते की तरह से है। यदि आप किसी व्यक्ति का भला करेंगे तो आपके खाते में धन जमा हो जायेगा, और यदि आप किसी व्यक्ति का बुरा करेंगे, तो आपके बैंक के खाते में से धन कम हो जायेगा और आप ऋण में आ जायेगें। और यदि आप ऋणी हैं, तो आपका कर्म खराब है। यदि आपके बैंक में धन है, तो आपके पास बकाया जमा होगा और वह कर्म की पूंजी है। यदि आपका कर्म अच्छा है, तो आप, उन चीजों को जो आप करना चाहते हैं, कर सकते हैं, और आप, उतने समय तक, जबतक कि आप इतनी अधिक खरीद फरोख्त (horse trading) न करें कि आपके अच्छे कर्म या आपकी जमा राशि गायब हो जाये, और आप कर्जे में आ जायें, अपने भले कर्मों का व्यापार भी कर सकते हैं, क्योंकि तब आपको ऋण से बाहर आने के लिये, कड़ी मेहनत से काम करना होगा।

'ऐसा कहा जाता है कि हम अनेक जन्म लेते हैं, परंतु समय, जब हम सूक्ष्मलोक में रुकते हैं, उन्नयन, जहॉ तक हम पहुॅचे हैं, की कोटि के अनुसार बदलता है। काफी संख्या में लोगों को, शायद, गिरना पड़ेगा, या भविष्य में स्थिर रहना पड़ेगा, इसलिये उन सभी आत्माओं का, जो अपने पुर्नजन्म को जारी रखने के लिये, इस सांसारिक विश्व में नहीं आ सकते, क्या होता है ? या क्या उन्हें सूक्ष्मलोक में, उसकी तुलना में, जिसकी उसका कर्म आज्ञा देता है, लंबे समय तक रहना पड़ेगा ?'

परंतु आप कर्म के सम्बंध में इस चर्चा को फिर से देखें, लोगों को अपने कर्म के कारण पुर्नजन्म नहीं लेना पड़ता, वे पुर्नजन्म लेते हैं, क्योंकि वे कुछ और चीज सीखना चाहते हैं। आप किसी दूसरे को भुगतान करने के लिये अनावश्यक रूप से कॉलेज नहीं जाते। आप कॉलेज जाते हैं, क्योंकि, आप कुछ सीखना चाहते हैं। ठीक उसी तरह से आप पृथ्वी पर आते हैं, क्योंकि आप कुछ सीखना चाहते हैं। यदि आप कर्म का भुगतान करना चाहते होते, तो आप सूक्ष्मलोक में बने रहकर भी कर्म का भुगतान कर सकते थे। वहॉ करने के लिये बहुत कुछ है, और दूसरों भी भलाई करते हुए, आप कर्म का भुगतान करते हैं, परंतु यदि आप सूक्ष्मलोक में टिके ही रहते हैं–ठीक है, आप यथास्थिति में बने रहते हैं, और आप शायद, पृथ्वी पर स्कूल को छोड़े हुए होते हैं। यदि आप अधिक प्रगति करना चाहते हैं, तो आप पृथ्वी पर वापस आते हैं और कठिनाइयों, सहिष्णुता, धैर्य और सभी प्रकार की चीजों के कुछ अतिरिक्त पाठों को सीखना चाहते हैं। इसे एकदम स्पष्ट समझें, आप केवल इसलिये पृथ्वी पर नीचे नहीं आते, क्योंकि किसी दूसरे ने बताया था कि आप को पृथ्वी पर नीचे वापस आना है या नहीं आना और केवल कुछ पीड़ायें पानी हैं, क्योंकि, आपने अपने साथ दुर्व्यवहार किया है। आप सीखने के लिये आते हैं, और यदि अवस्थायें थोड़ी कठोर हैं, तब बेचारे बूढ़े कर्म को इसके लिये दोष लगाना ठीक नहीं है, ये वह है, जिसे आप स्वयं चुनते हैं, ये वे परिस्थितियॉ हैं, जिन्हें आप अपने लिये व्यवस्थित करते हैं। काफी लोग, ये कहने में एक विशेष संतोष पाते हैं, 'ओह, मैं मदद नहीं कर सका, मेरा कर्म मेरे विरुद्ध था।'

वास्तव में, कर्म है, परंतु तब, वास्तव में, बैंक के खाते भी हैं। यदि बेचने के लिये आपके पास कोई चीज, या कुछ वह जिसे दूसरे लोग चाहते हैं, है, तब आप धन को पा सकते हैं। यदि दूसरे व्यक्ति के पास कुछ है, जिसे आप चाहते हैं, तो उसके लिये आपको भुगतान करना पड़ेगा, और इस का अर्थ है कि आप धन खर्च करते हैं। उसी तरीके से, कर्म के साथ, यदि आप दूसरों के साथ भलाई करें, तो आप अच्छे कर्मो को जमा कर रहे हैं, परंतु यदि आप दूसरों के प्रति बुराई करते हैं, तो आप अपने भले का नाश कर रहे हैं, और बुरे कर्मों का कर्ज पा रहे हैं, जिसका भुगतान, कहीं, किसी जगह किया जाना है, परंतु आवश्यक रूप से इस पृथ्वी पर नहीं। ध्यान रखें कि काफी भिन्न भिन्न विश्व हैं, और जैसे कि आपको स्कूल में एक कक्षा से दूसरी कक्षा में या एक साल से दूसरे साल में जाना पड़ा था, आप विभिन्न विश्वों में जायेंगे।

अध्याय – ग्यारह

इससे पहले कि भुना हुआ एक तीतर उसके अंदर जा सके,
आदमी को अपना मुंह लंबे समय के लिये खुला रखना पड़ता है।

बूढ़े आदमी ने विचारमग्न होने की टीस में खर्राटे भरे; ये सभी पत्र, ये सभी प्रश्न, इन्हें एक पुस्तक के दायरे में कैसे समेटा जाये, उत्तर, जो लोगों को बास्तव में मदद करें, क्योंकि पुस्तक का यही उद्देश्य है, है, ना? मदद करना या आनंद देना। और ये हास्यप्रसंगों का संस्करण नहीं है, ये मदद करने के लिये है, इसलिये हम पहले प्रश्न के साथ आगे चलते हैं।

'मैं, इस कर्म व्यापार के मामले में, पूरी तरह से स्पष्ट नहीं हूॅ। इसलिये हर चीज, जो हम करते हैं, वह किसी दूसरे को भी प्रभावित करती है, क्या करती है? हमारे पास कर्म की भयंकर थप्पी होनी चाहिए, बिना ये जाने हुए कि ये हमें कैसे प्राप्त हुई थी।'

नहीं, ये बिलकुल भी सत्य नहीं है। लोगों के पास, कर्म के सम्बंध में अजीब विचार हैं, शायद उन्होंने मेरी पुस्तकें ठीक से नहीं पढ़ी हैं। मुझे कई बार, एक व्यक्ति से एक पत्र मिलता है, जो इतनी प्रसन्नता से लिखता है, 'ओह, डॉक्टर रंपा, मैंने ''पुरातनों की बुद्धिमत्ता (Wisdom of Ancients)' कल रात को पढ़ी। आज रात को मैं 'जीवन के अध्याय (Chapters of Life)' पढ़ने वाला हूॅ। मैंने 'तुम सदा के लिये (You for Ever)' दो घंटे में पढ़ने की व्यवस्था की।' ठीक है, वास्तव में, ये मात्र समय का अपव्यय है, ये किसी का भी कोई भला नहीं करता और उस तरह से, ये जानकर कि उसकी पुस्तकें सरसरी निगाह से पढ़ी जा रही हैं, ये किसी लेखक का भी कोई भला नहीं करता। ये पुस्तकें अध्ययन किये जाने के लिये बनी हैं। हम सभी के लिये, कर्म अत्यधिक महत्व का है, और मेरी पुस्तकों में, आपको यह जानने का कि कर्म किस सम्बंध में है, एक अवसर मिलता है। इसका संक्षेप में मतलब है, कि यदि आप कुछ गलत करेंगे, तो आपको इसका भुगतान करना पड़ेगा। यदि आप कुछ भला करेंगे तो कुछ चीज आपको भुगतान करती है। जैसा मैंने पहले कहा है, ये बैंक के खाते की तरह है, आप एक भंडारी की तरह से हैं, जिसकी दराजों (drawers) में भला और बुरा है। यदि आप कुछ चीज बेचते हैं, जो भली है, तब आपको भलाई के द्वारा भुगतान किया जा सकता है, यदि आप कुछ चीज बेचते हैं जो बुरी है, तो आपको कर्जे के द्वारा भुगतान किया जाता है। अब इसे पूरी अच्छी तरह समझ लें; आप जो कुछ भी करते हैं, आवश्यकरूप से और स्वतः ही, किसी दूसरे व्यक्ति या प्राणी पर प्रभाव नहीं डालता। ये पूरी तरह से परिस्थितियों पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिये, यदि आप एक खंजर लें और उसे किसी व्यक्ति में उतार दें, तब, वास्तव में, आप कोई अच्छा काम नहीं कर रहे हैं, क्या आप कर रहे हैं? तब, उस मामले में, कर्म आपके विरुद्ध होगा। परंतु यदि आप कोई काम करें, जिसका प्रभाव उस व्यक्ति के ऊपर है, जिसके सम्बंध में आपने सुना भी नहीं है, बुरा प्रभाव, एक प्रभाव जिसके बारे में, निश्चितरूप में, आपने आशा भी नहीं की थी, तब आपको उस व्यक्ति को भुगतान करने के लिये वापस नहीं आना पड़ेगा। आपको यद्यपि, मैं अपनी पुस्तकों को अधिक सघनता के साथ पढ़ने की सलाह देता हूॅ, और तब आप कर्म के सम्बंध में काफी कुछ जानेंगे।

प्रश्नः 'हम यहॉ क्या कर रहे हैं, कैसे भी? जब हम यहॉ से छोड़ते हैं, तो हमारा उद्देश्य क्या है, केवल सूक्ष्मलोक में खेलना नहीं, परंतु हम वास्तव में, अंततः क्या करना चाहते हैं?'

अधिस्वयं अपने आप में, इच्छाओं, पीड़ाओं, आनंद आदि का अनुभव नहीं कर सकता। जैसा कि हम, इस पृथ्वी पर जानते हैं, इसलिये अधिस्वयं के पास, ज्ञान प्राप्ति की कुछ दूसरी विधियों का होना आवश्यक है। लोग, इस पृथ्वी पर अधिस्वयं, जो ज्ञान प्राप्त कर सकता है, के विस्तार मात्र हैं। उदाहरण के लिये, मान लें आपके पास एक बैग है, और आप बैग के अंदर नहीं आ सकते, और आप बैग के अंदर देख नहीं सकते। यदि आप, इसमें अपना हाथ, आपका हाथ, जो आपके दूसरे संज्ञानों का एक विस्तार मात्र है, डालने के लिये इसे खुलवा सकें, आप बैग में अंदर, आसपास अनुभव कर सकते हैं, और मस्तिष्क को बता सकते हैं कि अंदर क्या है। अधिस्वयं भी, अधिकांशतः उसी तरीके से, विस्तारों के माध्यम से, मानव प्राणी कहे जाने वाले विस्तारों के माध्यम से सूचनायें प्राप्त करता है।

जब अधिस्वयं के पास पर्याप्त ज्ञान हो जाता है, जब अधिस्वयं इतना अग्रवर्ती (advanced) होता है कि उसे पृथ्वी के इस चक्र में और अधिक ज्ञान वांछित नहीं होता, तब वह सभी कठपुतलियों को, जो मानव हैं, घर

वापस बुलाता है, और वे फिर से अधिस्वयं में मिल जाती हैं, वे 'एकपन (oneness)' में संयुक्त हो जाती हैं; ये अस्तित्व का अंतिम स्वरूप है, क्योंकि यद्यपि यह मात्र एक हस्ती (entity) दिखाई देता है, हस्ती का प्रत्येक भाग, दूसरे भाग के साथ सहयोग में रहता है। आप जुड़वां आत्माओं के बारे में सुन चुके हैं–ठीक है, पृथ्वी के तल में जुड़वां आत्माओं का एकसाथ आना असंभव है, परंतु जब वे अधिस्वयं को लौटती हैं, तब ये जुड़वॉ आत्मायें, फिर से, एक पूर्ण संपूर्ण बनाने के लिये संयुक्त होती हैं; और वे बहुत अधिक आशीर्वाद के साथ तबतक जिंदा रहती हैं, जबतक कि अधिस्वयं को ऐसा न लगे कि शायद, अभी भी, ज्ञान का एक उच्चतर रूप है, जिसका अनुसंधान किया जाना चाहिए। और तब, अधिस्वयं कठपुतलियों को पृथ्वी तल पर नहीं, परंतु किसी अच्छे अधितल (super super plane) पर बाहर भेजता है, और पूरा चक्र दुहराया जाता है। कठपुतलियॉ, पूरी अवधि में, जो हमारे लिये एक युग का समय है, ज्ञान को इकठ्ठा करती हैं। फिर जब पर्याप्त अनुभव या ज्ञान संचित कर लिये जाते हैं, अधिस्वयं कठपुतलियों को वापस बुलाता है, जुड़वां आत्मायें, फिर से, आनन्द की और भी अधिक बड़ी अवस्था में संयुक्त होती हैं।

अब यहॉ कुमारी न्यूमैन की ओर से एक प्रश्न है। वह कहती है, 'पशुओं को किस प्रकार नष्ट किया जाना चाहिए, ताकि मृत्यु कष्टरहित हो और उनके सूक्ष्मशरीर को कोई हानि न पहुॅचे।'

सबसे अच्छा तरीका है, किसी दवा, जो पशुओं में चेतना को खो देने का कारण होती है, को इंजेक्शन से उनमें देना, और तब पशु को ठिकाने लगाना उतना महत्वपूर्ण नहीं है, क्योंकि, उसे तब कोई कष्ट नहीं होगा। यदि किसी पशु को पहले अचेत कर लिया जाता है, तब उसे, किसी तीव्र गति से मृत्यु पैदा करने वाली दवा से मारा जा सकता है और ये न तो सूक्ष्मशरीर के लिये और न हीं अधिस्वयं के लिये कष्ट उत्पन्न करता है। वहॉ सूक्ष्मलोक में, कष्ट केवल तभी होता है, जब धीमे मारने के द्वारा, भौतिक शरीर को पीड़ा पहुॅचाई जाती है।

अब यहॉ कुछ है, ये एक नौजवान आदमी, जिसे हम 'आर्गी (Argie)' कहते हैं, की ओर से एक प्रश्न है। वह अपने आपको पहचानेगा। वह उल्लेखनीय रूप से, एक प्रखर नौजवान है, जो स्वयं ही अपना सबसे बुरा शत्रु है। वह यथार्थ रूप से असामान्य बुद्धियों वाला एक नौजवान है, और वह उन बुद्धियों का, सर्वाधिक लाभ के लिये उपयोग नहीं कर रहा है, क्योंकि वह सम्पूर्ण प्रभुत्व (authority) के विरुद्ध विद्रोह करना चाहता है। आर्गी का समय, अधिकांशतः अपने खुद के द्वारा खराब बनाया हुआ था। हम आर्गी के दो प्रश्न देंगे। पहला हैः 'बच्चों में प्रखर; कोई बच्चा कैसे प्रबुद्ध बन जाता है?'

अधिकांश मामलों में, दूसरी तरफ का अस्तित्व, पृथ्वी पर वापस आने से पहले महसूस करता है कि यहॉ कुछ विशेष है, और विशिष्ट कार्य किया जाना है। ये महसूस करता है कि कुछ निश्चित वर्षो के बाद वह (अस्तित्व) छोड़कर जा सकता है, और अपने बदले में, शायद किसी 'देखभाल करने वाले (caretaker)' को छोड़ सकता है, इसलिये अस्तित्व योजनायें, जिनके द्वारा वह इस पृथ्वी पर नीचे आता है, बनाता है और एक शरीर में, एक स्मृति, और जो उसे करना है, उसे करने की योग्यता के साथ जन्म लेता है। उदाहरण के लिये, कोई अस्तित्व निर्णय कर सकता है कि संगीत के किसी निश्चित स्वरूप के सम्बंध में कुछ किया जाना है, इसलिये वह उसकी लगभग एकदम सही संजोई हुई स्मृति के साथ नीचे आता है। तब, ठीक वैसे ही, जैसे कि वह अपनी खुद की इच्छा शक्ति के साथ बोल सकता है, चल सकता है, अस्तित्व पाता है कि वह रचना कर सकता है, या बजा सकता है, और तब ये कहा जाता है, 'हमारे पास एक प्रखर व्यक्ति है, हमारे पास एक चमत्कारपूर्ण शिशु है।' बेचारा बच्चा, अधिकांशतः, एक सिनेमा कैमरे या वैसे ही किसी के सामने बंध जाता है या उन लोगों के लिये, जो नहीं जानते कि ये सब किस सम्बंध में है, धन कमाने के लिये मंच में गाड़ दिया जाता है और बच्चा धन कमाने में इतना व्यस्त हो जाता है कि अनुगत (inherited) स्मृति गायब हो जाती है।

उन मामलों में, जहॉ मंचीय प्रदर्शन और सिनेमा के कोई प्रदर्शन नहीं होते, बच्चा दिव्यता को प्रदर्शित कर सकता है, और उत्कृष्ट संगीत बना सकता है और तब जब वह एक निश्चित आयु, हम कहें, बीस वर्ष की आयु पर पहुंचता है, अस्तित्व अनुभव करता है कि उसका काम पूरा हो चुका है, और वह अपना स्थान ग्रहण करने के लिये किसी दूसरे अस्तित्व को भेजता है, जबकि वह मूल धारक चलता जाता है। ये परकाया प्रवेश कहलाता है, और ये जैसा सामान्यतः समझा जाता है, उसकी तुलना में, बहुत बहुत सामान्य है।

आर्गी के पास एक दूसरा प्रश्न है, और वह है; 'नीग्रो लोग (Negroes), संगीत के उपकरणों को बजाने में, मुश्किल से ही ट्यूशन की आवश्यकता महसूस करते हैं?'

नीग्रो, लोगों का एक विशेष प्रकार है। उनके मूल कंपन ऐसे हैं कि वे ब्रह्मांड के संगीत के साथ लयबद्ध

हैं। अक्सर कोई नीग्रो उस संगीत को गुनगुना सकता है, जो उसने पहले कभी नहीं सुना हो, अक्सर वह एक संगीत उपकरण को पकड़ सकता है, और उसे बजाता है, क्योंकि ये उसका मूलभूत बनाव है।

आपको निश्चित वर्ग के लोग प्राप्त होते हैं, जैसे कि उत्तरी यूरोपियन, जो बहुत ठंडे और बहुत विश्लेषक होते हैं। वे अपने रवैये में बहुत ठंडे होते हैं। ये उनका बनाव है। परंतु यदि आप लैटिन प्रकार के लोगों को पायें वे अपने बनाव में गर्म होते हैं, मुस्कराने में तेज, मजाक करने में तेज। वे चीजों के मजाकिया पहलू को देख सकते हैं– विशेष रूप से, यदि किसी दूसरे के साथ दुर्भाग्य घटित होता हो। ये उनका बनाव है।

नीग्रो लोगों ने, अनेक वर्षो के लिये कठोर जीवन, अत्याचार का जीवन पाया, और केवल मात्र चीजें, जिन्होंने उन्हें बचाये रखा, उनका संगीत का बनाव, तथा 'धार्मिक संगीत से' सांत्वना और एकांत व्युपन्न करने की उनकी क्षमता रही है। वैसे तो, ये उनके जन्मसिद्ध अधिकार का एक अंग, उनकी परम्परा का एक हिस्सा, उनकी मूलभूत बनावट का एक हिस्सा है। नीग्रो सामान्यतः, बहुत बहुत संगीतमय होते हैं, क्योंकि, उनकी मूल आवृति ऐसी है कि वे अवचेतन रूप से, दूसरे स्रोतों के संगीत को अधिकतर उसी ढंग से पकड़ लेते हैं, जैसेकि श्रवण मशीन पहनने वाला कोई बेचारा आदमी, कई बार टैक्सी कैब (taxi-cab) कंपनी के स्थानीय रेडियो से आने वाले प्रसारणों को पकड़ लेता है!

परंतु हम इस पर और आगे बढें; यहॉ एक प्रश्न है, 'मैं पॉच साल के बच्चे की स्नेहमयी मां हूॅ, और आपकी पुस्तकें, जैसी कि वे सत्य हैं, मुझे, उसके लिये, जो उन घटनाओं के कारण, जो स्वयं की तुलना में बहुत बड़ी हैं, मेरे बेटे और दूसरे जवान बच्चों को भुगतना पड़ेगा, चौंकाती हैं। मैं उसे परमाणु बम और उसके समान सभी खराब चित्रों के द्वारा टुकड़ों में टूटता हुआ देख सकती हूॅ। लगभग तीस या चालीस की आयु के बीच, उसके दोनों हाथों पर, उसकी जीवन रेखायें अचानक ही टूटी हुई हैं। मैं आपकी पुस्तकों से, उसके लिये, जो मेरी मृत्यु से संबंधित है, कुछ सांत्वना प्राप्त कर सकती हूॅ, परंतु क्या किसी भी धर्म की, किसी भी मां ने अपने इकलौते बेटे की मृत्यु पर खुशी मनाई है?'

अब, आप पहले से ही मान रहे है कि आने वाले युद्ध में, आपका बच्चा अपरिहार्य रूप से मार दिया जायेगा या अपंग हो जायेगा, परंतु ध्यान रखें कि यदि आप उसे अच्छी शिक्षा दें और उसे किसी चीज में विशेष योग्यता प्राप्त करने दें, तो वह बचे हुए लोगों में से एक हो सकता है। ये एक दुखद विचार है कि 'कानून का चारा (cannon fodder) सामान्यतः वह व्यक्ति होता है, जिसे सरलता से विस्थापित किया जा सकता हो, जबकि यदि एक आदमी एक विशेषज्ञ, अपने देश के लिये उपयोगी है, तो उसका संरक्षण किया जायेगा। इसलिये अपने बच्चे को वास्तव में अच्छी शिक्षा दिलायें। और हस्तरेखा के मामले में कृपया आश्वस्त रहें कि जीवन के समाप्त होने का यदि केवल यही एक संकेत है, तो इसका अर्थ संभवतः, व्यवसाय में परिवर्तन से अधिक कुछ नहीं है। आपको इसको कि मृत्यु होगी, कभी भी, निश्चयात्मक नहीं समझना चाहिए, जबतक कि लगभग सात पुष्टिकारक संकेत न हों। हस्तरेखा विशेषज्ञ, अक्सर, ये कहने में कि कोई व्यक्ति मरने वाला है, इत्यादि इत्यादि, आपराधिक उपेक्षा (criminal negligence) के दोषी होते हैं, जबकि इसका अर्थ केवल ये है कि वे काम और अवस्थिति (location) में बदलाव लाने वाले हैं।

'आप हमेशा कहते हैं कि अपने खुद के निर्णय की पीड़ाओं को छोड़कर, मृत्यु और मृत्यु के बाद (death and after death), कष्टरहित होते हैं, परंतु बार्डो थोडल (Bardo Thodal) में, और विशेषरूप से कोनयिड (Chonyid) अवस्था में, पीड़ा भयंकर (atrocious) होती दिखती है।'

बार्डो थोडल अंग्रेजी में नहीं लिखा गया था, इसे केवल उस भाषा (अंग्रेजी) में, किसी छद्मवेशी ईसाई के द्वारा, जिसने ईसाई धर्म की आस्थाओं में, नर्क की आग (hellfire) और नरक (damnation) को जोड़ने के लिये, चीजों को थोड़ा सा बदल दिया, अनुवादित किया गया था। वहॉ नर्क की आग या नर्क जैसा कुछ भी नहीं है। कुल मिलाकर, ये पादरियों के द्वारा, अपनी खुद की सत्ता के समर्थन को पोषित करने के लिये, बहुत कुछ हद तक उसी तरीके से, जैसे कि कुछ गलत निर्देशित माता–पिता, अपने बच्चों को, यदि वे ठीक से व्यवहार नहीं करते, किसी पुलिसमैन को एक टेलीफोन करने की धमकी देते हुए, गलत तरीके से डराते हैं, एक गलत अवधारणा है। वास्तव में, जब हम अपने आपको निर्णीत करते हैं, जब हम देखते हैं कि हम कितने मूर्खतापूर्ण, मिट्टी के लोंदे रहे हैं, हम प्रसन्न नहीं होते। ये वास्तव में, हमको कष्ट देता है। आत्मनिंदा, वास्तव में, पूरी तरह से नारकीय, और भलीभांति 'नर्क की आग' का तर्कयुक्त वर्णन हो सकती है। चूंकि कोई, जो पूरी तरह से याद कर सकता है, मैं आपको अधिक जोर देते हुए बताता हूॅ, कि कोई प्रताड़ना नहीं होती, कोई भयानक कष्ट, कोई उग्र पीड़ा नहीं

होती।

'आत्मायें, जो पुराने घरों को अभिशापित करती हैं, क्या उन्होंने अभी तक पुर्नजन्म ग्रहण नहीं किया है?'

आत्मायें, जो पुराने घरों को अभिशापित करती हैं, उन्हें वर्तमान अस्तित्व के साथ, कुछ लेना–देना नहीं होता। उदाहरण के लिये, कोई व्यक्ति दुखांत परिस्थितियों में मरता है, और काफी ऊर्जा उत्पन्न होती है, परंतु व्यक्ति, पूरी तरह से भिन्न तल में जा सकता है और पुर्नजन्म भी ले सकता है, जबकि ऊर्जा, जो पैदा हुई थी, अभिशापों के रूप में बिखर जायेगी। ये बहुत कुछ हद तक वैसा ही है, जैसे कि धातु के किसी टुकड़े को गर्म करना; यद्यपि, धीमे धीमे मंद पड़ती हुई उष्मा, गर्म करने वाले स्रोत को हटा लेने के बाद भी, काफी लंबे समय तक धातु में रहती है। यहॉ आपके लिये एक विचार है–एक व्यक्ति, जो सीमांत कठिन परिस्थितियों में मरता है, के लिये, अपनी ऊर्जा, जो किसी स्थान को अभिशापित करती है, को विचार आकृति के रूप में पाना, और नये पैदा हुए बच्चे, जिसने पहले मामले में पूरा कष्ट पैदा किया था, को भी अभिशापित करना, पूरी तरह संभव है।

'क्या मनुष्य कभी पशुओं के रूप में भी जन्म लेते हैं, इस मामले में बार्डो पूरी तरह बेतुका दिखाई देता है, या हो सकता है कि मैं नहीं समझता।'

नहीं, मानव कभी पशु के रूप में पुर्नजन्म नहीं लेते, और पशु कभी मानव के रूप में जन्म नहीं लेते[11]। किसी भी तरीके से आप बंदगोभी को गाय में नहीं बदल सकते, न हीं, किसी रायनोसेरस (rhinoceros) को गुलाब में बदल सकते हैं, परंतु मैंने इस पर पिछले पेजों में काफी कुछ लिखा है।

'स्नायुविक बल (nervous force) क्या है, कैसे भी? हमें स्नायुविक बल के बारे में बताने में क्या भलाई है, यदि हमारे पास ये विचार न हो, कि ये क्या है?'

स्नायुविक बल, वह शक्ति है, जो इथरिक को पैदा करती है, और ठीक तरह से निर्देशित किया गया स्नायुविक बल, जैसा कि मैंने अपनी पुस्तकों में से एक में कहा था, कागज के किसी बेलन को घुमा सकता है। हर कोई, चाहे वह पशु हो या मानव, विद्युत का उत्पादक है, पृथ्वी भी अपना चुम्बकीय बल, अपना चुंबकीय क्षेत्र, यदि आप कहने में प्राथमिकता देना चाहें, रखती है। और ठीक वैसे ही, जैसे कि किसी रेडियो कार्यक्रम में, उसको समर्थन देने के लिये, एक वाहक तरंग (carrier wave) होती है, मानव को एक इथरिक स्नायुविक बल या ऊर्जा, जो प्रभामंडल को संचालित करती है, रखना होता है। बदले में, ये मस्तिष्क के कुछ निश्चित प्रकोष्ठों से पैदा होता है। खाना, जो हम खाते हैं, खून में जाता है, और उसमें से ऑक्सीजन के साथ भलीभांति मिलाया हुआ कुछ खाना, मस्तिष्क की उच्च विशेषता प्राप्त कोशिकाओं को जाता है, और विद्युत धारा, जो विचार आवेगों को शक्ति प्रदान करती है, के उत्पादन के लिये, खाना उपलब्ध कराता है। ये स्नायुविक बल है। यदि आप इस पर विश्वास करना मुश्किल पायें, तो ध्यान रखें कि आप एक कार्बन की छड़ को अपने अंदर रखते हुए, थोड़े से रसायनों के साथ, एक जस्ते के खोल की बनी हुई एक युक्ति (सूखा सैल) पा सकते हैं। यदि आप उसे, कांच के बल्ब के अंदर, जिसमें से हवा निकाल दी गई है, एक तार के साथ जोड़ें, तो आप प्रकाश प्राप्त करते हैं, क्या नहीं?, विद्युत की रोशनी। इसलिये आप, रासायनिक समीकरण से विद्युत पाते हैं, और मानव में, रासायनिक समीकरण से, खाना, जो हम खाते हैं, उसके द्वारा उपलब्ध कराई गई विद्युत पाते हैं।

मेरे पास यहॉ, श्रीमान् एच. (Mr. H) से एक पत्र है। श्रीमान् एच. लिखते हैं, 'मैंने दो प्रश्न नत्थी किये हैं, आप जिनका उत्तर देने की चिंता कर सकते हैं। मैं पहले प्रश्न के उत्तर में अत्यंत दिलचस्पी रखूंगा, और उसे

---

11 अनुवादक की टिप्पिणी : यहॉ वैदिक धर्म एकदम विपरीत विचार रखता है, वैदिक धर्म में चौरासी लाख योनियॉ बताई गयीं हैं, मनुष्य–योनि को छोड़कर, शेष सभी योनियॉ, भोग योनियॉ मानी जाती हैं, केवल मनुष्य–योनि ही कर्मयोनि कही जाती है, अर्थात् मनुष्य को कर्म करने का अधिकार है। वह अपनी इच्छा से कर्म करने को स्वतंत्र है। मनुष्य योनि में किये गये कर्मों को भोगने के लिये उसे कर्मफलानुसार भिन्न–भिन्न भोगयोनियों में जन्म लेना पड़ता है। पापी मनुष्यों के नीच योनियों में जन्म लेने के असंख्य उदाहरण धर्मग्रन्थों में भरे पड़े है।

यहॉ मुझे एक घटना याद आती है, मध्यप्रदेश के मुरैना जिले में नूराबाद के पास करह नामक स्थान में एक प्रसिद्ध आश्रम है। आश्रम में बंडा नाम का एक कुत्ता था, जो बिना नागा एकादशी का ब्रत रखता था, खिलाने पर भी कुछ नहीं खाता था। कोई आश्रम के संत जी से पूछता कि बाबाजी एकादशी कब है, तो बाबाजी कहते, बंडा से पूछो, वही ठीक जानता है। बाबाजी और सभी भक्तों की दृष्टि में बंडा, पिछले जन्म की पुण्यात्मा थी, जो कर्मवश या स्वेच्छा से, इस योनि में आई थी। बंडा के मरने पर सभी ने मिल कर विधिपूर्वक उसका अंतिम संस्कार किया।

तंत्र में सर्पयोनि को मनुष्ययोनि से भी ऊॅचा माना जाता है, उसका जीवन सैकड़ों साल का होता है, माना जाता है कि अनेक आत्मज्ञानी संत, सर्पयोनि में रहते हुए साधनारत रहते हैं।

थोड़ा सा बढ़ाना चाहूंगा। व्यक्तिगत जिम्मेदारी के मामले के अतिरिक्त, जो मैं अत्यंत आवश्यक सोचता हूँ, मैं 'व्यक्तिगत पहचान (personal identity)' के मामले में भ्रमित हूँ। वास्तव में ये, मैं शब्द की परिभाषा से संक्षेपित हुआ आता है, जबकि मैं अनेक विधियों से देख सकता हूँ कि मैं, वही मैं नहीं हूँ, जो कि मैं बीस साल पहले था, और संभवतः यहाँ से आगे बीस वर्षो के बाद, वैसा ही नहीं रहूंगा, फिर भी, इन भिन्न भिन्न मैं ओं (I's) के बीच, 'मैं' पहचान का एक संज्ञान होता है।'

'तथापि, यदि कोई अधिस्वयं, दस कठपुतलियों को संचालित कर सकता है, तो 'मैं' के संज्ञान का क्या होता है, और जब सभी कठपुतलियाँ मर जाती हैं, तब क्या अधिस्वयं, दस सूक्ष्म कठपुतलियों का संचालन जारी रखता है, और विचार को भविष्य में जारी रखता है, क्या होता है, यदि दसों कठपुतलियाँ, स्वयं को मुक्त करने में सफल हो जायें।'

'अधिक विशेष टिप्पणी के साथ, मैं, आश्चर्यचकित होता हूँ कि अपनी पश्चिम की यात्रा के लिये, आपको, एक ऐसे कठिन रूट का चुनना क्यों आवश्यक था। क्या आपके लिये भारत या यूरोप में, किसी विश्वविद्य ालय में जाना संभव नहीं हुआ होता, और क्या आपके उपयोग के लिये, पश्चिम में निधियों को जमा नहीं कराया जा सकता था? आपके अनेक कष्ट, धन की कमी के कारण पैदा हुए प्रतीत होते हैं।'

ठीक है, श्रीमान् एच., हम देखें कि आपके प्रश्न का उत्तर देने के लिये हम क्या कर सकते हैं। वास्तव में, मैं सोचता हूँ कि उनमें से अधिकांश, इस पुस्तक में, या पिछली पुस्तकों में, उत्तरित किये जा चुके हैं, परंतु हम आपको एक काल्पनिक पत्र लिखें।

'प्रिय श्रीमान् एच., वास्तव में, आप भ्रम की अवस्था में हैं, हैं न? आपका अधिकांश भ्रम, इस तथ्य से उत्पन्न होता है कि किसी को तीन आयामी पदों में लिखना होता है और कहें, वह अस्तित्व के नौ विमीय तल में, किसी अधिस्वयं के संचालन के काम का वर्णन करने का प्रयास करता है।

'आपका कहना है कि आप सोचते हैं कि एक कठपुतली अपनी व्यक्तिगत पहचान खो देती है। परंतु वास्तव में, यदि आप इसके बारे में सोचें, ये वैसा मामला नहीं है।''

''मामले को इसप्रकार देखेंः शरीर के बाहर, किसी चीज के बारे में सब कुछ भूल जायें, और इस स्पष्टीकरण के उद्देश्य के लिये मान लें कि शरीर 'पूरक (compartmental)' है। मस्तिष्क, तब अधिस्वयं को निरूपित करता है और हर एक जानता है कि मस्तिष्क हाथों को, उंगलियों इत्यादि को निर्देश देता है। उंगलियाँ, कठपुतलियों को निरूपित करती हैं और मस्तिष्क सुझाव दे सकता है कि उंगलियाँ कुछ करें, परंतु, फिर भी, उंगलियाँ पृथक अस्तित्व या पृथक व्यक्ति हैं, वे अनुभव कर सकती हैं और अच्छी तरह से दक्ष हो सकती हैं। वास्तव में, कई बार वे अपनी स्वयं की इच्छा पर काम करती दिखतीं हैं।

'हृदय दूसरी यांत्रिकी है, जिसे (असमान्य मामलों को छोड़कर) अधिस्वयं–मस्तिष्क के द्वारा नियंत्रित नहीं किया जा सकता, क्योंकि यदि हमारे अधिस्वयं को निरूपित करता हुआ मस्तिष्क, खराब मिजाज में हुआ, तब संभावितरूप से, ये दिल को धड़कने से रोक सकता है, और मस्तिष्क–अधिस्वयं की और अंग–कठपुतलियों की पूरी यांत्रिकी को नष्ट कर सकता है। इसलिये, आप देखें, वास्तविक अधिस्वयं, पदार्थ, जिससे मानव का सूक्ष्मशरीर बनता है, उपलब्ध कराता है, और प्रत्येक अस्तित्व या मानव शरीर, हमेशा पूरा नियंत्रण और क्रिया का पूरा चुनाव रखता है, बशर्ते कि ऐसी क्रिया, अधिस्वयं–मानव जीवों को जोखिम में नहीं डालेगी।

'कई शाखाओं वाले एक बड़े प्रतिष्ठान को लें। उसमें संचालक मंडल का एक अध्यक्ष या एक सभापति होता है। आपके पास अनेक विभागीय प्रमुख और सभी जिला शाखाओं के कर्मचारियों के लिये, अनेक महाप्रबंधक होते हैं, और ये सभी लोग, कंपनी की नीतियों के ढांचे के अंतर्गत काम करते हुए, अपनी निजी जिम्मेदारी के साथ काम करते हैं। उन्हें संचालक मंडल के अध्यक्ष को हर छोटी चीज बताने की आवश्यकता नहीं होती, और न ही वे निर्णयों, जिनको करने के लिये वे पात्र हैं, के बारे में, हर क्षण टेलीफोन प्राप्त करते हैं।

संचालक मंडल का अध्यक्ष या सभापति, आप उसे जो भी कहना चाहे कहें, अधिस्वयं को निरूपित करता है, और सभी विभागीय प्रमुख और प्रबंधक कठपुतलियाँ हैं।

'आप पूछते हैं, क्या होता है, जब कठपुतलियाँ मर जाती हैं, आप बतायें, क्या अपनी दस या वैसी ही कठपुतलियों से वंचित अधिस्वयं, गतिहीन (immobilised) हो जाता है। मैं आपसे एक प्रश्न पूछता हूँ; क्या होता है, यदि कोई शाखा प्रबंधक सेवानिवृत हो जाता है, या किसी विशेष कारण से हटा दिया जाता है? प्रतिष्ठान या शाखा बंद नहीं हो जाती। बदले में, एक नया प्रबंधक या कठपुतली, नियुक्त की जाती है। और कैसे भी, इस

अध्याय में, और संभवतः पिछले अध्याय में, मैं पहले ही चर्चा कर चुका हूँ कि कठपुतलियॉ, अधिस्वयं की ओर कैसे लौटती हैं।'

हॉ, मैं एक आसान रास्ता ले सकता था, मै विश्वविद्यालय को जा सकता था, मैं अपने आसपास चारों ओर सोना जमा कर सकता था, परंतु मुझे बतायें, श्रीमान् एच. तब मुझे किस प्रकार का ज्ञान प्राप्त होता? मैं दूसरे लोगों के ज्ञान का परावर्तन मात्र होता, इस में से कुछ, स्वीकार्य रूप से, दोषपूर्ण होता। मेरा विश्वास करें, मुझे जीवन का वह ज्ञान प्राप्त नहीं होता, जो मैंने वर्तमान में पाया है, जो अत्यंत कष्टपूर्वक प्रत्यक्ष है। लोग, जो विश्वविद्यालय को जाते हैं, और हर चीज को नर्म तरीके से पढ़ते हैं, छपे हुए पन्नों से, जो वर्षों पुराने हो सकते हैं, मात्र दूसरों के विचारों को सीख पाते हैं। विश्वविद्यालय में, कोई विद्यार्थी, दूसरे के ज्ञान के सम्बंध में प्रश्न पूछने का दुस्साहस नहीं कर सकता। किसी को सिखाया जाता है कि किसी काम को, सिवाय उस रास्ते से, जो विशेष रूप से, उस पाठ्यपुस्तक में बताया है, करना असंभव है, परंतु लोग, जो विश्वविद्यालय में कभी नहीं रहे, उस असंभव कार्य को, कैसे भी कर देते हैं।

'रॉल्स–रॉयस का रॉयस (Royce of Rolls-Royce), एडीसन (Edison), फोर्ड (Ford), और हजारों दूसरे अत्यंत विद्वान आदमी किसी विश्वविद्यालय में नहीं गये, इसलिये वे नहीं जानते थे कि चीज, जिसे वे करना चाहते थे, 'असंभव' थी, वे नहीं जानते थे कि ऐसी कोई चीज 'असंभव' थी, क्योंकि उन में, पाठ्यपुस्तकों को पढ़ने की, जो वास्तव में, दूसरे लोगों की राय है, शिक्षा (!) की कमी थी। इसलिये रॉयस, एडीसन, फोर्ड और दूसरे लोग आगे चले गये, और उन चीजों का आविष्कार किया, जिनको पाठ्यपुस्तकें 'असंभव' कहती थीं। इसलिये किसी विश्व़विद्यालय में उपस्थिति, कोई कमी हो सकती है।

'इसे आपके लिये कुछ प्रश्नों को सीधा (सरल) करना चाहिए। श्रीमान् एच., और मैं आशा करता हूँ कि अब आप पाते होंगे कि आपके विचार अधिक व्यवस्थित हैं।'

दूसरा प्रश्न पूछता है कि हमें बीमारियॉ क्यों होती हैं, और प्रभामंडल के द्वारा बीमारियों की पहचान कैसे संभव होगी। ठीक है, रुग्णता और व्याधि या तो अंदर से या बाहर से आती है। जब वे बाहर से आती हैं, दूसरे व्यक्ति से कोई कीट या वायरस पकड़ा जा सकता है, और ये शरीर, जो इसे पकड़ता है, का दोष नहीं है।

जब हमारे पास अंदर से रुग्णता का एक मामला होता है, अर्थात्, जब रुग्णता अंदर से आती है, शरीर के रसायन प्रभावित होते हैं, क्योंकि हर चीज विचार से आती है, जिसे बिजली वाले विद्युत वाहक बल (electromotive force) कहते हैं, वह भूमिका निभाता है। विचार विद्युत आवेग हैं। जब हम सोचते हैं, तब हम विद्युत पैदा करते हैं। इस प्रकार से, विद्युत, एक विद्युत वाहक बल है, जो हमारी मांसपेशियों को काम करने के लिये चलाता है, या हमारे शरीर के रसायनों को भी अव्यवस्थित करता है। यदि कोई व्यक्ति अवसादग्रस्त, चिंतित, दुखी, बुरे मिजाज में इत्यादि है, या उसके पास कोई असामान्य भावना है, उसके विचार, एक विद्युत धारा पैदा करते हैं, जो बचावकारी होती है। ये आवश्यक उचित तरंग आकृति (necessary correct waveform) नहीं हो सकती, और चूंकि विद्युत धारा बचावकारी है, ये ग्रंथियों में जाने के लिये गलत संदेश पैदा करती है, और उन गलत विचारों और उन गलत विचारों के द्वारा पैदा किये गये गलत संदेशों का सामना करने के लिये, ग्रंथियों के स्राव बदल जाते हैं। कुछ समय बाद, सबसे अधिक प्रभावित भाग, बदले हुए स्रावों, या शरीर के बदले हुए संतुलन से प्रभावित होता है। ये मांसपेशियॉ हो सकती हैं, जो प्रभावित हो सकती हैं, और इसलिये कोई शायद, मांसपेशियों का गलत विकास पाता है, या हड्डियों के साथ कुछ हो सकता है, ये जोडों का दर्द (arthiritis) हो सकता है, या यदि कोई गलत संदेश, पेट में विक्षोभ पैदा करता है, तो पेट के जूस (peptic juices) अत्यधिक प्रबल अम्ल, हो सकते हैं, और तब हमें पेट का फोड़ा (peptic ulcer) हो सकता है। यदि संदेश, घर के समीप, अत्यधिक स्थानीयकृत हों, और मस्तिष्क को प्रभावित करें, तो मस्तिष्क में गांठ (brain tumour) हो सकती है।

यदि रसायनिक क्रिया का अध्ययन किया जा सके, तो उसे हार्मोन के इलाज के द्वारा सुधारा जा सकता है या यदि इसे समय पर पकड़ लिया जाये, तो बीमारी का कोई और दूसरा इलाज इलाज किया जा सकता है। यदि अत्यधिक नुकसान हो चुका है, तो इसका इलाज नहीं किया जा सकता, परंतु उसे घटाया जा सकता है। व्यक्ति को, चीज या भावना का, जिसने नुकसान किया था, अधिक संतुलित विचार (मन में) लाते हुए, भावनाओं को नियंत्रित करते हुए, या परिस्थितियों, जैसे नई नौकरी, नया सहभागी इत्यादि, के सेट को बदलते हुए, प्रारम्भिक स्थिति में ही इलाज करना चाहिए।

ये सभी चीजें प्रभामंडल में देखी जा सकती हैं। शरीर में जो कुछ भी होता है, उसे प्रभामंडल में देखा जा

सकता है। प्रभामंडल को देखना, राडार (radar)[12] के चित्रों को देखने जैसा है। आप भूमि को, या तूफान, जो सामान्य दृष्टि के एकदम परे है, के विक्षोभ को देख सकते हैं।

भले ही कोई बीमारी, 'अंदर' से शुरू हो, या 'बाहर' से, इसको प्रभामंडल से पहचाना जा सकता है। यदि कोई, किसी दूसरे व्यक्ति से संक्रमण ग्रहण करता है, तो उस बीमारी को भौतिक शरीर में, पर्याप्त मात्रा में प्रकट होने में कुछ निश्चित समय लगता है, फिर भी, ये प्रभामंडल में, तत्काल ही, जब संक्रमण हुआ था, एकदम स्पष्टरूप से प्रदर्शित होता है, ये तनाव की रेखाओं की भांति प्रदर्शित होता है।

यदि बीमारी 'अंदर' से पैदा हुई है, तब समय समय पर प्रभामंडल का परीक्षण, बीमारी के खतरे को, शरीर के गंभीर रूप से प्रभावित होने से काफी समय पहले, प्रदर्शित करेगा और इसलिये बीमारी का इलाज, लगभग उससे पहले कि ये प्रकट हो, किया जा सकता है।

इसके सम्बंध में, मैं ऐसे मामले में, पूरे जीवन भर काम करता रहा हूँ, और सबसे बड़ी परेशानी, लोगों से उनके कपड़े उतरवाने में रही है। इंग्लैंड में, एक निश्चित भद्र महिला थी, जिसके साथ मैं इस मामले पर चर्चा कर रहा था। इस सम्बंध में हम केवल बातचीत ही कर रहे थे, और इस भद्र महिला, जो शादीशुदा रही थी, और जिसके पास अपना खुद का परिवार था, ने कहा, 'ओह, आप नंगे शरीरों को चाहते हैं। सर्वाधिक निश्चिततापूर्वक, मुझे किसी बात का, जो किसी औरत से अपने कपड़े उतरवा देना, या अपने शरीर के कुछ हिस्सों को अनावरित कराना चाहती है, विरोध करने के लिये, हर चीज करनी चाहिए। मैं महान संयम के साथ, भद्र महिला को ध्यान दिलाते हुए कि, उसे भी, अपने शरीर के कुछ निश्चित भाग, अनावरित करने पड़े थे, ताकि उसके बच्चे पैदा हो सकें, उससे जुदा हुआ।

12 अनुवादक की टिप्पिणी : राडार (RADAR), रेडियो डिटेक्शन एण्ड रेजिंग (Radio Detection And Ranging) का संक्षिप्तीकरण है। ये विद्युत चुम्बकीय तरंगों (Electro Magnetic Waves) की सहायता से दूर स्थित वस्तुओं और अवरोधों की पहचान करता हैं। इसका उपयोग विशेषरूप से हवाई अड्डों पर, आकाश में विमानों की अवस्थिति का पता लगाने और उनके आवागमन को नियंत्रित करने के लिये किया जाता है।

अध्याय – बारह

यदि आप दूसरों पर विश्वास नहीं करते, तो दूसरों से अपने ऊपर
विश्वास किये जाने की अपेक्षा कैसे करते हैं?

बूढ़ा आदमी, पीठ के बल अपने बिस्तर पर लेटा। शाम का सूर्य, सेंट जॉन नदी के शांत जल पर चमकती हुई अपनी अंतिम किरणों को निचली पहाड़ियों के पीछे भेजते हुए, ढलने ही वाला था।

दूर बायीं ओर, कागज का कारखाना, जैसा कि ये दिन के चौबीसों घंटे करता था, अभी भी, आकाश को धुंधला बनाते हुए, और वातावरण को दूषित करते हुए, धुंए और भाप के गुस्सैल बादलों को उगल रहा था। सभी बेकार पदार्थ, सेंट जॉन की हवा में एक अविश्वसनीय दुर्गंध, एक दुर्गंध, जिसके बारे में हर कोई शिकायत करता था, और जिसके बारे में, किसी ने कुछ नहीं किया, पैदा करते हुए, नदी में उड़ेले जाते थे।

बर्फ तेजी से पिघल रही थीं। यह बसंत था, बसंत का प्रारंभ, परंतु अभी पहाड़ियों के पीछे, तेजी से डूबते सूर्य के साथ, अपने घर, घौंसलों में जाने के लिये जल्दी करती हुई, चिड़ियां, झुंडों में, तेजी से दौड़ रहीं थीं, जबकि रोशनी अभी ठहरी हुई थी।

खिड़की के ठीक नीचे, पड़ौस की सभी मादा बिल्लियों को आने के लिये, और उसके द्वारा स्वागत किये जाने के लिये निमंत्रण देता हुआ एक दुरानुभूतिपूर्ण बिल्ला, सिनजिन (Sinjin), तन्हाई का एक गाना गा रहा था। उसकी आवाज, अपनी भावनाओं की तीव्रता के साथ कांपते हुए, उठी और गिरी। समय समय पर वह रुका, अपने सिर को ऊँचा उठाया और एक खरगोश की भांति, अपनी पिछली टांगों पर सीधे होकर बैठने के साथसाथ, उसने, आशय सहित, किसी पुकार को सुना कि क्या उसका आमंत्रण स्वीकार किया जा रहा था। निराश होते हुए कि उसके पास ऐसी कोई सूचना नहीं थी, वह फिर से अपनी चारों टांगों पर गिरा, और भावना के साथ अपनी पूंछ को हिलाते हुए, अपने सामान की आवाज, 'कोई पुराना लोहा, कोई पुराने चिथड़े,' लगाते हुए, पुराने जमाने के लंदन के फेरी वाले की तरह से, वह फिर से शुरू हुआ, परंतु, कुछ नहीं; ये एक भिन्न प्रकार की पुकार थी : मुक्त प्रेम करो, जल्दी आओ, मैं प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

कारें, दहाड़ती हुई और चटाक की एक आवाज के साथ चलती हुई आईं, तथा भंडार रक्षक और उनके सहायक, उन्हें अधिक जोश के साथ चलाकर, पार्किंग लॉट में ले गये और दरवाजों को जोर से बंद करते हुए और विद्युत चालित सीढ़ियों में अपना स्थान प्राप्त करने के लिये, लगातार लड़ते हुए तेज कदमों के साथ चलने से पहले, 'शुभरात्रि – शुभरात्रि' कहते हुए, अपनी कारों में से उतरे।

बूढ़ा आदमी वापस लेटा और उसने भूतकाल पर सोचा, इस जीवन की कठिनाइयों पर सोचा, तथा कुछ थोड़े से आनंदों और अनेक अनेक कठिनाइयों के ऊपर सोचा। एक कठोर जीवन, हॉ, उसने सोचा। परंतु खुशी हो, ये उसके चक्र का अंतिम समय था, इस पृथ्वी पर अंतिम समय। और अब, उसने सोचा, मैंने सफाई, जो करनी थी, के लगभग करीब हूँ, उन सभी खाली कोनों को साफ कर दिया है, अटारी को साफ कर दिया है, और कूड़े करकट को बाहर भी फेंक दिया है।

'ऐसा नहीं, ऐसा नहीं,' एक सर्वाधिक परिचित और भले–प्रिय स्वर ने कहा।

'काम अभी समाप्त नहीं हुआ है। आपने, जिसे आप करने के लिये आये थे, उससे ज्यादा कर लिया है– परंतु काम अभी भी समाप्त नहीं हुआ है।'

बूढ़े आदमी ने अपनी करवट बदली और उसके ठीक समीप, लामा मिंग्यार डोंडुप की मुस्कराती और सुनहरी चमक के साथ दमकती हुई अधि–सूक्ष्मशरीरी (super-astral) आकृति थी। 'आपने मुझे काफी चौंका दिया।' बूढ़े आदमी ने कहा, 'और मेरी कामना है कि आप अपनी रोशनियों को धीमा कर देंगे, ये मुझे उस समय का ध्यान दिलाता है, जब मैं इंग्लैंड में था।

'ओह, वह क्या था?' लामा मिंग्यार डोंडुप ने पूछा। 'क्या ये कोई वह चीज है, जिसे मैं नहीं जानता?'

'मेरा ख्याल है, कि ये होनी चाहिए,' बूढ़े आदमी ने कहा, 'मुझे इसके बारे में बताने दें। मैं देर रात को दक्षिण केन्सिंगटन (Kensington) की एक इमारत में था, और मैं सोचते हुए, चीजों के ऊपर केवल सोचते हुए, केवल ध्यान लगाते हुए, अंधेरे में बैठा हुआ था, और किसी कारण से मैंने परदों को नहीं खींचा था। सहसा नीचे के दरवाजे पर थपथपाहट की एक जोरदार आवाज आई। मैं फिर से चेतना में वापस आया और ये देखने के लिये

कि हलचल का कारण क्या था, नीचे गया। लंदन के दो बड़े मांसल पुलिसमैन वहॉ थे।' 'श्रीमान,' एक ने कहा–एक सार्जेंट, मैंने पट्टियों से देखा–'तुम इस इमारत में क्या कर रहे हो,' 'कर रहे हो,' मैंने जवाब दिया। 'मैं नहीं सोचता कि मैं कुछ कर रहा था। यथार्थ में, मैं केवल सोचते हुए, बैठा हुआ था।' 'ठीक है,' सार्जेंट ने कहा, 'हमें बहुत जल्दी में, यहॉ बुलाया गया है, क्योंकि आप अत्यंत तेज रोशनियों को खिड़की के बाहर चमका रहे थे। ओह,' मैंने जबाव दिया। ' सर्वाधिक निश्चितरूप से, ये मैं नहीं था, परंतु यदि मैं होता, तो क्या ये अपराध है?''

'सार्जेंट ने अपने अधीनस्थ को देखा, और अपने कंधों को हिलाते हुए कहा, 'ठीक है, हो सकता है, तुम जानते हो। हो सकता है कि तुम किसी अपराधी गिरोह को कोई संदेश, कि रास्ता साफ है, या कुछ वैसा ही, दे रहे हो। तब वह एक निर्णय पर पहुॅचा। 'मैं इस स्थान की तलाशी लेना चाहता हूॅ।' मैंने कहा, 'क्या आपके पास तलाशी का वारंट है?' 'नहीं,' उसने जबाव दिया, 'परंतु यदि आप मुझे इस स्थान की तलाशी लेने की इजाजत नहीं देते हैं, तो जबतक मैं जांऊ और आवश्यक वारंट को लाऊॅ, मैं आपकी निगरानी करने के लिये, सिपाही को यहॉ छोड़ सकता हूॅ।'

इसलिये, मैंने अपने कंधे हिलाये और कहा, 'ठीक है, तुम जहॉ जाना चाहते हो जाओ, तुम जहॉ देखना चाहो देखो।' इसलिये दोनों पुलिसमैन आसपास घूमे, हर चीज को देखा, और अत्यधिक असाधारणरूप से, उन्होंने मेरी मेज की दराजें खोल लीं और अंदर देखा। मैं नहीं जानता कि उन्होंने क्या सोचा कि वे उसे वहॉ पा जायेंगे। परंतु कैसे भी, लगभग तीन चौथाई घंटे के समय के बाद, वे संतुष्ट होकर प्रकट हुए, और जब वे छोड़ रहे थे सार्जेंट ने कहा, 'कृपया इसे दोबारा मत करना, श्रीमान्, इससे काम बहुत बढ़ जाता है।' और वे चले गये।

लामा मिंग्यार डोंडुप हॅसे, 'तुम जो कुछ भी करो, लामा लोबसांग,' उन्होंने कहा, 'तुम गलत प्रकार के अवधान (attention) को आकर्षित करते हुए दिखाई देते हो। मैं किसी भी सम्बंध में सोच नहीं सकता, जो लगभग जब वह सोच रहा था, मात्र अपने प्रभामंडल को दिखाते हुए गिरफ्तार हो जाता। बूढ़ा आदमी, जब उसने कहा, 'इसलिये आपका सोचना है कि अभी मेरा काम पूरा नहीं हुआ है, एह? अब मैंने क्या नहीं किया है,?' थोड़ा सा उदास दिख रहा था। लामा मिंग्यार डोंडुप ने उत्तर दिया, प्रश्न ये नहीं है कि तुमने कोई चीज बिना किये हुए छोड़ दी है, तुमने अधिक, जिसे करने तुम यहॉ आये थे, उससे काफी अधिक किया है। परंतु ऐसा है कि दूसरों के असफल होने के कारण, यहॉ अभी भी, और अधिक करने को है।

'क्या?' बूढ़े आदमी ने पूछा।

लामा मिंग्यार डोंडुप ने अपनी नाक के नीचे देखा, और ज्योंही उन्होंने कहा, 'एक और पुस्तक होनी है, बारहवीं, न मुस्कराने का प्रयास किया। हमें इसके सम्बंध में सोचना पड़ेगा। निश्चितरूप से, इसकी सराहना की जायेगी, परंतु किसी एक आविष्कार, जिसका इस भौंचक्के विश्व में, अभी विस्फोट हो सकता है, के सम्बंध में, छोटा सा एक दूसरा काम भी है, जो किया जाना है।'

कुछ समय तक बूढ़े आदमी, और लामा मिंग्यार डोंडुप ने चीजों पर चर्चा की, परंतु जो कहा गया था, उन सब चीजों को खोलने के लिये, ये स्थान नहीं है। बूढ़े आदमी ने, लगभग मरने के लिये बीमार और चिकित्सा के बिलों के माध्यम से बढ़ते हुए खर्चे और दूसरे प्रमुख खर्चों पर आश्चर्य किया, कि वह उससे अभी कुछ महीने और आगे तक कैसे चिपकने वाला था। अंत में लामा मिंग्यार डोंडुप का अधि–सूक्ष्मशरीर (super astral) मंदा हो गया। और सोटे से पीटते हुए दिन के प्रकाश ने, एकबार फिर से, (अपना) आधिपत्य जमा लिया।

समय। ये कृत्रिम समय भी कैसी अजीब चीज है। पलक झपकने भर में, कोई सूक्ष्मलोक से यहॉ तक और वापस यात्रा कर सकता है, और फिर भी, यहॉ, नीचे इस पृथ्वी पर, कोई, घड़ी और घड़ी को नियंत्रित करती हुई सूर्य की गति के द्वारा बंधा हुआ था। यहॉ न्यू ब्रूंसविक में सूर्य डूब रहा था। कुछ हजार मील दूर, जॉन हेंडरसन, अभी भी, लगभग शाम के मध्य में, अपने काम में व्यस्त होंगे। उतनी दूर नहीं, वफादारी और शुद्धता का आदर्श नमूना वेलेरिया सोरोक, संभवतः अपने कार्यालय को छोड़ रही होगी, और संभवतः अपनी चाय की सोच रही होगी। हॉ– सर्वाधिक निश्चय के साथ, बूढ़े आदमी ने सोचा, वेलेरिया अपनी चाय की सोच रही होगी, (उसकी) एक कमजोरी ये थी, कि वह खाने के बारे में, हमेशा बहुत अधिक सोचती थी! 'मुझे उससे, उसकी खुराक के बारे में बात करनी होगी,' बूढ़े आदमी ने स्वयं में सोचा।

दूसरी दिशा में, वर्स्टमान महिलायें, शाम को अत्यधिक विलंब से, शायद रेडियो सुनती हुई, शायद अध्ययन करती हुई, सम्भवतः घर में होंगी, और शायद उनमें से एक, रात्रि की ड्यूटी पर जाने वाली होगी।

परंतु यहॉ महिलायें टेडी और क्लियो, एक पसंदीदा खिलौने का पीछा करते हुए अपने शाम के खेल को

खेल रही थीं, और पसंदीदा खिलौना, नर्म, और ड्रेंसिग गाउन का ऊनी बेल्ट, अच्छा था। बूढ़े आदमी ने टेडी और क्लियो के बारे में सोचा कि जब से वह पैदा हुई थीं, कैसे उनको मानवीय बच्चों के समान व्यवहार दिया गया, उन्हें महसूस कराने के लिये, कि वे, किन्हीं मानवों के समान, अधिक महत्वपूर्ण अस्तित्व थीं, कैसे हर चीज की गई, और यह काम बहुत अच्छी तरह फलदायक रहा है, परिणाम सर्वाधिक संतोषजनक रहे हैं, क्योंकि ये दो नन्हें लोग, वास्तव में, यथार्थ लोग थे। अर्धरात्रि से अर्धदिवस तब, कुमारी क्लियो के नाम का उल्लेख पहले किया जाता था, परंतु अर्धदिवस से अर्धरात्रि तक कुमारी टेडी का नाम पहले उल्लेखित किया जाता था, और इसप्रकार, उन्हें बिना किसी पक्षपात के चिन्ह के, काफी समान व्यवहार आश्वस्त किया गया था।

विशाल, मांसल और आराम में दिखती हुई कुमारी टेडी, किसी भी खरोचें जाने वाले गद्दों के पीछे दुबकना पसंद करती है, जबकि अत्यंत सुंदर, बहुत पतली, बहुत भव्य, कुमारी क्लियो, ऊपर नीचे उछलती है और बिल्लियों जैसी, बड़ी बड़ी असंभव कसरतों को करती है।

परंतु रात्रि गहराती जा रही थी, हवा ठंडी होती जा रही थी, आसपास चुटकी भर पाला था। बाहर, थर्मामीटर का लाल निशान नीचे गिर रहा था, सड़क पर बाहरी लोग भलीभांति ओढ़े हुए थे।

बूढ़ा आदमी, आज तक, उस दिन को, जबकि ग्यारहवीं पुस्तक पूरी होगी, और वह लेखन के सभी विचारों को एक तरफ को दबा सकेगा और कहेगा, 'अब और अधिक नहीं, ये सब समाप्त, और अधिक लेखन नहीं, अब पृथ्वी पर मेरा समय लगभग समाप्त होने को है,' आगे की ओर देखता रहा था, परंतु अब अधि–सूक्ष्मलोक से लामा मिंग्यार डोंडुप की यात्रा–ठीक है, बूढ़े आदमी ने सोचा कि क्या किसी का काम कभी समाप्त नहीं होता, क्या किसी को जर्जर पुरानी कार की तरह चलाया जा सकता है, जबतक कि वह अंतिम रूप से, टुकड़ों में टूट न जाये? मैं अब टुकड़ों में टूटने ही वाला हूँ, उसने सोचा। परंतु ऐसा है, जो होना है, वह होगा ही, और जब कोई काम किया जाना है, ये तबतक नहीं होगा, जबतक कि इसे करने के लिये कोई दूसरा करने वाला न हो। इसलिये बूढ़े आदमी ने सोचा, दूसरी पुस्तक लिखने के लिये, मुझे थोड़ा और लम्बे समय तक लटकने का प्रयास करना चाहिए, और कौन जानता है? अंग्रेजी में संख्या को बारह तक बढ़ाना, अच्छा हो सकता है। उसने सोचा, 'मैं हर एक को, पूरे विश्व में हर एक को बताना चाहूंगा, कि ये सभी पुस्तकें सत्य हैं, इन पुस्तकों में संकलित की गई हर चीज सत्य है और ये एक निश्चित कथन है।'

इसलिये हम उस अंत तक आते हैं, जो कुल मिलाकर, एक पूर्ण दिन नहीं है, क्योंकि काम अभी समाप्त नहीं हुआ है, अंतिम लड़ाई अभी जीती नहीं गई है, और अभी काफी कुछ करने का समय है, और थोड़ा समय और थोड़ा सा स्वास्थ्य बचा है, जिसके साथ इसे करना है। हम कोशिश तो ही कर सकते हैं।

यहॉ और अभी, मैं श्रीमती शीलगाह राउस, उर्फ बटरकप को, उसकी अत्यधिक देखभाल और काम के प्रति समर्पण, जो उसने मेरी पुस्तकों को टाइप करने में किया है, और जिसकी देखभाल और काम की, उससे अधिक, जितना वह जानती है, सराहना की गई है, अपनी सर्वाधिक कृतज्ञता और धन्यवाद प्रस्तावित करता हूँ।

मैं, अत्यधिक देखभाल और परिशुद्धता के लिये, जिसके साथ उसने हर चीज की जांच की, और वास्तव में, मूल्यवान सुझाव दिये, और उसने मेरे काम में मदद की, रा'आब को अपने धन्यवाद प्रस्तावित करता हूँ।

और अंत में, परंतु किसी भी तरह से सबसे कम नहीं, मुझे कुमारी टाडालिंका और कुमारी क्लियोपेट्रा रंपा को, प्रोत्साहन और मनोरंजन, जो उन्होने मुझे दिया है, के लिये धन्यवाद देने दें। इन दो नन्हे प्यारे व्यक्तियों ने इसे थोड़ा लंबा जारी रखने के लायक बनाया है, क्योंकि उन्होंने अपने चार वर्ष के जीवनकाल में, मुझे कभी भी कोई क्रोध, कोई बुरा मिजाज, और कोई खिजलाहट भी नहीं प्रदर्शित नहीं की। यदि मानव, इन दोनों की तरह उतनी ही बराबरी करने योग्य, और मधुर स्वाभाव वाले होते, तो पृथ्वी पर कोई कष्ट, कोई युद्ध नहीं होता। तब ये वास्तव में स्वर्ण युग होता, जिसके लिये लोगों को अभी प्रतीक्षा करनी है।

और इस प्रकार, हम इस पुस्तक में, उस समय तक आते हैं, जब हम कह सकते हैं, 'समाप्ति।'